

“महाराष्ट्रातील अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास”

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे
तात्त्विक व सामाजिक शास्त्रे विद्याशाखेंतर्गत ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र
विषयातील विद्यावाचस्पती (पीएच. डी.)
पदवीसाठी सादर केलेला प्रबंध



॥ संशोधक ॥

तृप्ती सुभाष अंब्रे

नोंदणी क्रमांक: १६११०००४६२७

॥ मार्गदर्शक ॥

डॉ. भाऊसाहेब एम. पानगे

ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र विभाग

ऑगस्ट २०१८

मार्गदर्शकांचे प्रमाणपत्र

प्रमाणित करण्यात येते की, **तृती सुभाष अंब्रे** यांनी टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठाच्या सामाजिकशास्त्रे विद्याशाखेतर्गत ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र विषयातील **पीएच.डी. (विद्यावाचस्पती)** या पदवीसाठी सादर केलेला “**महाराष्ट्रातील अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास**” या विषयावरील प्रबंध माझ्या मार्गदर्शनाखाली पूर्ण केला आहे.

प्रस्तुत संशोधन स्वतंत्र आणि नवे असून ह्यापूर्वी ते कोणत्याही पदवीसाठी, कोणत्याही विद्यापीठात सादर केलेले नाही. सदर प्रबंध टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठाच्या **पीएच. डी.** पदवीसाठी सादर करण्यास माझी अनुमती आहे.

मार्गदर्शक

डॉ. भाऊसाहेब एम. पानगे

दिनांक : /०८/२०१८

स्थळ : पुणे

प्रतिज्ञापत्र

मी तृती सुभाष अंब्रे प्रतिज्ञापूर्वक प्रमाणित करते की, “महाराष्ट्रातील अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास” या विषयावरील प्रबंध मी टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठाच्या सामाजिकशास्त्रे विद्याशाखेंतर्गत ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र या विषयातील पीएच. डी. पदवीसाठी सादर केलेला आहे. हे संशोधन स्वतंत्र आणि नवे असून आवश्यक तेथे संदर्भनिर्देश केलेले आहेत. यापूर्वी हा प्रबंध कोणत्याही विद्यापीठात, कोणत्याही पदवीसाठी सादर केलेला नाही.

अभ्यासक

तृती सुभाष अंब्रे

दिनांक : /०८/२०१८

ऋणनिर्देश

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ पुणे या मान्यवर संस्थेमध्ये ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र विषयातील पीएच.डी. पदवीकरिता संशोधन करण्याची संधी मला उपलब्ध करून दिली त्याबद्दल सर्वप्रथम मी आदरणीय कुलगुरु डॉ.दीपक टिळक आणि सर्व पदाधिकाऱ्यांचे आभार मानते.

प्रस्तुत संशोधन प्रबंधासाठी मला वेळोवेळी मार्गदर्शन करणारे आणि शोधकार्यासाठी योग्य दिशा दर्शविणारे माझे मार्गदर्शक व जयकर ग्रंथालयाचे सहाय्यक ग्रंथपाल डॉ.भाऊसाहेब पानगे यांनी आपला बहुमोल वेळ देऊन मला मार्गदर्शन केल्याबद्दल मी त्यांच्याबद्दल कृतज्ञता व्यक्त करते.

प्रस्तुत संशोधन प्रबंध सादर करण्याची संधी देणाऱ्या ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र विभागप्रमुख व टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठाच्या ग्रंथपाल डॉ.धनिष्ठा खंदारे यांचे मी मनःपूर्वक आभार मानते. तसेच या प्रबंधासाठी मला सहकार्य करणाऱ्या ग्रंथालयीन सहाय्यक व सर्व सेवकांचेही मी विशेष आभार मानते.

महाराष्ट्र ग्रंथालय संचालक मा.किरण धांडोरे, माजी संचालक मा.श्री.बा.ए. सनान्से, मा.गणेश तायडे, सहा. ग्रंथालय संचालक मा.ध.बा. वळवी, मा.सु.हि. राठोड यांनी सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या बाबतीत योग्य मार्गदर्शन केले. तर मा.डॉ.एन.बी. दहीभाते, मा.डॉ.सुषमा पौडवाल, मा.डॉ.राजेंद्र चिकटे, मा.ग्रंथपाल सौ.मीनाक्षी कुंभार, डॉ.व्ही.डी. पाटील, डॉ.पांडुरंग भोसले यांचेही सहकार्याबद्दल मनःपूर्वक आभार.

सार्वजनिक ग्रंथालयाची माहिती संकलित करित असताना जिल्हा 'अ' वर्ग व तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयाचे ग्रंथपाल, व्यवस्थापन मंडळाचे पदाधिकारी यांनी आपला बहुमोल वेळ देऊन ग्रंथालयांविषयी माहिती उपलब्ध करून दिली. त्यांची मी ऋणी आहे.

संशोधनाविषयी आस्थेने चौकशी करणारे आदरणीय डॉ.एन.डी. पाटील, डॉ.मनोहर सासने, सौ.मीनलताई सासने, मा.प्राचार्य डॉ.अरविंद बुरुंगले, रयत शिक्षण संस्थेचे सचिव

मा.प्राचार्य डॉ.भाऊसाहेब कराळे, मा.प्राचार्य डॉ.अशोक भोईटे, प्राचार्य डॉ.बी.ए. राजपूत,
डॉ. तुकाराम रोंगटे यांचीही मी ऋणी आहे.

माझ्या पंखात ज्ञानात्मक बळ देणारे माझे आई-बाबा पुढील शिक्षणास प्रोत्साहन देणारे
सासू-सासरे, संशोधनासाठी मला वेळ मिळावा म्हणून सहकार्य करणारे माझे पती प्रा.डॉ.संजय
मेस्त्री, माझी मुले क्रिश् आणि ओम यांच्याविषयी कृतज्ञता व्यक्त करते.

टंकलेखन करणारे श्री.मोरेश्वर नेरकर व श्री.अशोक कुडले यांच्या सहकार्यामुळे संशोधन
वेळेत पूर्ण करणे सोपे झाले. त्यांचेही मनःपूर्वक आभार.

तृती सुभाष अंब्रे

अनुक्रमणिका

| अनु. | प्रकरणांची नावे | | पान.नं. |
|--------------------|---|---|---------------|
| प्रकरण १ ले | प्रास्ताविक | | १ - १५ |
| | १.१ | प्रस्तावना | २ |
| | १.२ | संशोधन विषयाचे महत्त्व | ३ |
| | १.३ | संशोधन समस्या | ५ |
| | १.४ | संशोधनाची उद्दिष्टे | ६ |
| | १.५ | गृहितके | ६ |
| | १.६ | संशोधन पद्धती | ६ |
| | १.७ | संशोधन व्याप्ती | ८ |
| | १.८ | सर्वेक्षण/पाहणी तंत्र | ८ |
| | १.९ | संशोधन साधने | १० |
| | १.१० | प्रकरण आराखडा | १२ |
| | | सारांश | १४ |
| | | संदर्भसूची | १५ |
| प्रकरण २ रे | संशोधन पूर्वाभ्यास व वाचन साहित्याचा शोध | | १६-४४ |
| | २.१. | प्रस्तावना | १७ |
| | २.२. | संबंधित साहित्याच्या समालोचनाची उद्दिष्टे | १८ |
| | २.३. | संदर्भ साहित्याचा आढावा | १८ |
| | २.३.१. | संदर्भग्रंथ | १८ |
| | २.३.२. | संशोधन नियतकालिकातील वाचनसाहित्याचा आढावा | २५ |
| | २.३.३. | वेबसाईट | ३२ |
| | २.३.४. | दैनिक वर्तमानपत्रे | ३३ |

| | | | |
|--------------------|---|--|---------------|
| | २.४. | एम. फिल. लघु शोधप्रबंधिका | ३५ |
| | २.५. | पीएच. डी. शोधप्रबंध | ३६ |
| | | सारांश | ३७ |
| | | संदर्भसूची | ३८ |
| प्रकरण ३ रे | सार्वजनिक ग्रंथालयांचा पूर्वइतिहास | | ४५-१४० |
| | ३.१ | प्रस्तावना | ४७ |
| | ३.२ | सार्वजनिक ग्रंथालये | ४८ |
| | ३.२.१ | सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या दृष्टीने एडवर्ड एडवर्डस यांचे योगदान | ५७ |
| | ३.२.२ | युनेस्को : सार्वजनिक ग्रंथालयांचा जाहिरनामा | ५८ |
| | ३.३ | सार्वजनिक ग्रंथालयाचा जागतिक पातळीवरील इतिहास | ६१ |
| | ३.३.१ | अमेरिकेतील सार्वजनिक ग्रंथालये | ६४ |
| | ३.३.२ | रशियातील सार्वजनिक ग्रंथालये | ६७ |
| | ३.३.३ | ऑस्ट्रेलियातील सार्वजनिक ग्रंथालये | ७० |
| | ३.३.४ | चीनमधील सार्वजनिक ग्रंथालये | ७२ |
| | ३.३.५ | इंग्लंडमधील सार्वजनिक ग्रंथालये | ७५ |
| | ३.४ | भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालयाचा विकास | ७९ |
| | ३.५ | भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालयाची चळवळ | ८२ |
| | ३.५.१ | महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयाची चळवळ | ८६ |
| | ३.५.२ | सिन्हा समिती | ९१ |
| | ३.५.३ | फैजी समिती | ९३ |
| | ३.५.४ | राष्ट्रीय ज्ञान आयोग | ९५ |
| | ३.५.५ | महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालय पद्धतीची रचना | ९८ |
| | ३.६ | महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा | १०२ |
| | ३.६.१ | महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्यातील नियमात झालेले बदल | ११९ |

| | | | |
|--------------------|--------------------------------------|---|----------------|
| | ३.७ | सार्वजनिक ग्रंथालयातील सेवक | १२५ |
| | ३.८ | महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची सद्यःस्थिती | १२९ |
| | ३.९ | सार्वजनिक ग्रंथालयांपुढील समस्या | १३३ |
| | | सारांश | १३७ |
| | | संदर्भसूची | १३८ |
| प्रकरण ४ थे | माहितीचे संकलन आणि विश्लेषण | | १४१-२१८ |
| | ४.१. | प्रस्तावना | १४२ |
| | ४.२. | माहिती संकलन | १४३ |
| | ४.३. | ग्रंथपाल प्रश्नावलीच्या माहितीचे विश्लेषण | १४३ |
| | ४.४. | जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या माहितीचे विश्लेषण | १४४ |
| | ४.५. | तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या माहितीचे विश्लेषण | १८३ |
| | | सारांश | २१८ |
| प्रकरण ५ वे | आदर्श ग्रंथालयासाठीचे प्रारूप | | २१९-२५७ |
| | ५.१. | प्रस्तावना | २२० |
| | ५.२. | ग्रंथालयाची जागा | २२० |
| | ५.३. | ग्रंथालयाची इमारत | २२१ |
| | ५.४. | ग्रंथालयाची रचना व आंतरव्यवस्था | २२६ |
| | ५.५. | ग्रंथालयाचा ग्रंथपाल आणि ग्रंथालय कर्मचारी | २३१ |
| | ५.६. | वाचन साहित्यसंग्रह | २३२ |
| | ५.७. | ग्रंथालयीन सेवा व विभाग | २३७ |
| | ५.८. | सार्वजनिक ग्रंथालयाने वाचक वृद्धीसाठी राबवावयाचे उपक्रम व कार्यक्रम | २४५ |
| | ५.९. | ग्रंथालय विस्तार योजना | २४६ |
| | ५.१०. | सार्वजनिक ग्रंथालये आणि माहिती तंत्रज्ञानाचा स्वीकार | २४८ |

| | | | |
|--------------------|------|---|----------------|
| | | सारांश | २५६ |
| | | संदर्भसूची | २५७ |
| प्रकरण ६ वे | | निष्कर्ष आणि शिफारशी | २५८-२८४ |
| | ६.१. | प्रस्तावना | २५९ |
| | ६.२. | निष्कर्ष | २५९ |
| | | जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाचे निष्कर्ष | २५९ |
| | | तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाचे निष्कर्ष | २६४ |
| | ६.३. | शिफारशी | २६९ |
| | ६.४. | उद्दिष्टांची पडताळणी | २८० |
| | ६.५. | गृहितकांची पडताळणी | २८२ |
| | ६.६. | पुढील संशोधनासाठी दिशा | २८३ |
| | | सारांश | २८४ |
| | | परिशिष्टे | २८५-३१२ |
| | अ | ग्रंथपाल प्रश्नावली | २८६ |
| | ब | जिल्हा 'अ' वर्ग व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांची सूची | २९२ |
| | क | महाराष्ट्रातील शासनमान्य जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांची यादी | २९४ |
| | ड | महाराष्ट्रातील शासनमान्य तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांची यादी | २९६ |
| | इ | शतकोत्तर जिल्हा अ वर्ग व तालुका अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांची सूची | ३०२ |
| | ई | नागरिकांची सनद ग्रंथालय संचालनालय, महाराष्ट्र राज्य, मुंबई | ३०६ |
| | उ | जिल्हा व तालुका अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय स्थानदर्शक नकाशे | ३११ |
| | | संदर्भसूची | ३१३-३१६ |

तक्त्यांची यादी

| अनु.क्र. | तक्ता क्र. | तक्त्यांचे नाव | पान नं. |
|----------|------------|--|---------|
| १ | ३.१ | सार्वजनिक ग्रंथालय पद्धती | ९८ |
| २ | ३.२ | भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियमांतील तरतुदींचा तुलनात्मक तक्ता | १०३ |
| ३ | ३.३ | सार्वजनिक ग्रंथालय शासनमान्यतेच्या वर्गनिहाय अटी | ११३ |
| ४ | ३.४ | सार्वजनिक ग्रंथालयांचे अनुदान | ११४ |
| ५ | ३.५ | ग्रंथालय संघांना मिळणारे अनुदान | १२० |
| ६ | ३.६ | डॉ. आंबेडकर पुरस्कार स्वरूप | १२३ |
| ७ | ३.७ | शासनमान्य सार्वजनिक ग्रंथालयांना देण्यात येणारे परिरक्षण अनुदान | १२८ |
| ८ | ४.१ | महाराष्ट्रातील विभागनिहाय जिल्हा ग्रंथालये | १४६ |
| ९ | ४.२ | सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या कामकाजांच्या वेळेविषयी माहिती | १४७ |
| १० | ४.३ | सामाहिक सुट्टीचा वार आणि सुट्टीची वेळ | १४९ |
| ११ | ४.४ | सार्वजनिक ग्रंथालयातील कर्मचारी संख्या | १५० |
| १२ | ४.५ | कर्मचारी आकृतिबंध पूर्तता | १५१ |
| १३ | ४.६ | ग्रंथपालाची शैक्षणिक पात्रता | १५२ |
| १४ | ४.७ | ग्रंथालयास मिळणारे शासकीय अनुदान | १५४ |
| १५ | ४.८ | ग्रंथालयातील दैनंदिन वाचक संख्या | १५५ |
| १६ | ४.९ | ग्रंथालयातील ग्रंथसंख्या | १५७ |
| १७ | ४.१० | ग्रंथालयातील नियतकालिकांची संख्या | १५९ |
| १८ | ४.११ | ग्रंथालयातील वृत्तपत्र संख्या | १६१ |
| १९ | ४.१२ | जिल्हा ग्रंथालयातील सीडी, हस्तलिखिते व इतर दुर्मिळ साहित्य | १६२ |
| २० | ४.१३ | ग्रंथालयाच्या अन्य सुविधा | १६३ |
| २१ | ४.१४ | सामाजिक-सांस्कृतिक विकास उपक्रम | १६५ |

| | | | |
|----|------|--|-----|
| २२ | ४.१५ | शैक्षणिक विभाग आणि उपक्रम | १६७ |
| २३ | ४.१६ | महिला, बाल, ज्येष्ठ नागरिक व अंध वाचकांसाठी विशेष उपक्रम | १७१ |
| २४ | ४.१७ | ग्रंथालयातील सभागृहाची उपलब्धता | १७३ |
| २५ | ४.१८ | जिल्हा ग्रंथालयातील संगणक संख्या | १७३ |
| २६ | ४.१९ | संगणक कौशल्य प्राप्त कर्मचारी | १७५ |
| २७ | ४.२० | जिल्हा ग्रंथालयातील संगणक प्रणाली | १७६ |
| २८ | ४.२१ | जिल्हा ग्रंथालयातील संगणक नोंदीविषयक माहिती | १७८ |
| २९ | ४.२२ | जिल्हा ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञानाचे उपयोजन | १७९ |
| ३० | ४.२३ | जिल्हा ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञान व उपकरणे | १८१ |
| ३१ | ४.२४ | महाराष्ट्रातील विभागनिहाय तालुका ग्रंथालये | १८३ |
| ३२ | ४.२५ | महाराष्ट्रातील विभाग व जिल्हानिहाय अ वर्ग तालुका ग्रंथालयांची माहिती | १८५ |
| ३३ | ४.२६ | सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या कामकाजाविषयी माहिती | १८६ |
| ३४ | ४.२७ | साप्ताहिक सुट्टीचा वार आणि सुट्टीची वेळ | १८८ |
| ३५ | ४.२८ | सार्वजनिक ग्रंथालयातील कर्मचारी संख्या | १८९ |
| ३६ | ४.२९ | कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता | १९० |
| ३७ | ४.३० | ग्रंथपालाची शैक्षणिक पात्रता | १९१ |
| ३८ | ४.३१ | ग्रंथालयास मिळणारे शासकीय अनुदान | १९३ |
| ३९ | ४.३२ | ग्रंथालयातील दैनंदिन वाचकसंख्या | १९४ |
| ४० | ४.३३ | ग्रंथालयांमधील ग्रंथसंख्या | १९५ |
| ४१ | ४.३४ | ग्रंथालयांतील नियतकालिकांची संख्या | १९७ |
| ४२ | ४.३५ | ग्रंथालयातील वृत्तपत्र संख्या | १९८ |
| ४३ | ४.३६ | ग्रंथालयातील सीडी, हस्तलिखिते व इतर दुर्मिळ साहित्य | १९९ |
| ४४ | ४.३७ | ग्रंथालयाच्या अन्य सुविधा | २०० |
| ४५ | ४.३८ | सामाजिक-सांस्कृतिक विकास उपक्रम | २०२ |

| | | | |
|----|------|--|-----|
| ४६ | ४.३९ | शैक्षणिक विभाग आणि उपक्रम | २०४ |
| ४७ | ४.४० | महिला, बाल, ज्येष्ठ नागरिक व अंध वाचकांसाठी विशेष उपक्रम | २०६ |
| ४८ | ४.४१ | ग्रंथालयातील सभागृहाची उपलब्धता | २०८ |
| ४९ | ४.४२ | ग्रंथालयातील संगणक संख्या | २०९ |
| ५० | ४.४३ | संगणक कौशल्यप्राप्त कर्मचारीसंख्या | २१० |
| ५१ | ४.४४ | तालुका ग्रंथालयातील संगणकप्रणाली | २११ |
| ५२ | ४.४५ | तालुका ग्रंथालयातील संगणक नोंदीविषयक माहिती | २१३ |
| ५३ | ४.४६ | तालुका ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञानाचे उपयोजन | २१४ |
| ५४ | ४.४७ | तालुका ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञान व उपकरणे | २१६ |
| ५५ | ५.१ | आदर्श ग्रंथालयासाठी संशोधकाने सुचविलेला प्रारूप आराखडा | २५५ |

आलेखांची यादी

| अनु.क्र. | आलेख क्र. | आलेखाचे नाव | पान नं. |
|----------|-----------|--|---------|
| १ | ४.१ | सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या कामकाजाच्या वेळेविषयी माहिती | १४८ |
| २ | ४.२ | साप्ताहिक सुट्टीचा वार आणि सुट्टीची वेळ | १४९ |
| ३ | ४.३ | कर्मचारी आकृतिबंध पूर्तता | १५१ |
| ४ | ४.४ | ग्रंथपालाची शैक्षणिक पात्रता | १५३ |
| ५ | ४.५ | ग्रंथालयातील दैनंदिन वाचकसंख्या | १५६ |
| ६ | ४.६ | ग्रंथालयातील ग्रंथसंख्या | १५८ |
| ७ | ४.७ | ग्रंथालयातील नियतकालिकांची संख्या | १६० |
| ८ | ४.८ | ग्रंथालयातील वृत्तपत्रांची संख्या | १६१ |
| ९ | ४.९ | ग्रंथालयाच्या अन्य सुविधा | १६४ |
| १० | ४.१० | सामाजिक-सांस्कृतिक विकास उपक्रम | १६६ |
| ११ | ४.११ | शैक्षणिक विभाग आणि उपक्रम | १६८ |
| १२ | ४.१२ | महिला, बाल, ज्येष्ठ नागरिक व अंध वाचकांसाठी विशेष उपक्रम | १७१ |
| १३ | ४.१३ | जिल्हा ग्रंथालयातील संगणकसंख्या | १७४ |
| १४ | ४.१४ | जिल्हा ग्रंथालयातील संगणकप्रणाली | १७७ |
| १५ | ४.१५ | जिल्हा ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञानाचे उपयोजन | १८० |
| १६ | ४.१६ | जिल्हा ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञान व उपकरणे | १८२ |
| १७ | ४.१७ | सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या कामकाजाविषयी माहिती | १८७ |
| १८ | ४.१८ | साप्ताहिक सुट्टीचा वार आणि सुट्टीची वेळ | १८८ |
| १९ | ४.१९ | कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता | १९० |
| २० | ४.२० | ग्रंथपालांची शैक्षणिक पात्रता | १९२ |
| २१ | ४.२१ | ग्रंथालयातील दैनंदिन वाचकसंख्या | १९७ |
| २२ | ४.२२ | ग्रंथालयांमधील ग्रंथसंख्या | १९६ |

| | | | |
|----|------|--|-----|
| २३ | ४.२३ | ग्रंथालयाच्या अन्य सुविधा | २०० |
| २४ | ४.२४ | सामाजिक-सांस्कृतिक विकास उपक्रम | २०२ |
| २५ | ४.२५ | शैक्षणिक विभाग आणि उपक्रम | २०५ |
| २६ | ४.२६ | महिला, बाल, ज्येष्ठ नागरिक व अंध वाचकांसाठी विशेष उपक्रम | २०६ |
| २७ | ४.२७ | ग्रंथालयातील संगणकसंख्या | २०९ |
| २८ | ४.२८ | तालुका ग्रंथालयातील संगणकप्रणाली | २१२ |
| २९ | ४.२९ | तालुका ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञानाचे उपयोजन | २१५ |
| ३० | ४.३० | तालुका ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञान व उपकरणे | २१७ |

नकाशांची यादी

| अनु.क्र. | नकाशा क्र. | नकाशाचे नाव | पान नं. |
|----------|------------|---|---------|
| १ | १ | जिल्हा अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय स्थानदर्शक नकाशा | ३११ |
| २ | २ | तालुका अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय स्थानदर्शक नकाशा | ३१२ |

आकृत्यांची यादी

| अनु.क्र. | आकृत्या क्र. | आकृतीचे नाव | पान नं. |
|----------|--------------|---|---------|
| १ | ५.१ | अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय | २२४ |
| २ | ५.२ | ब वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय | २२५ |
| ३ | ५.३ | क वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय | २२५ |
| ४ | ५.४ | ड वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय | २२६ |
| ५ | ५.५ | संशोधकाने सार्वजनिक ग्रंथालयासाठी सुचविलेला प्रारूप आराखडा (मॉडेल) | २५४ |

संक्षिप्त चिन्हांची यादी

| | | |
|------------|---------------------|---|
| APA | ए.पी.ए. | अमेरिकन सायकोलॉजिकल असोसिएशन |
| CD | सी.डी. | कॉम्पॅक्ट डिस्क |
| DVD | डी.व्ही.डी. | डिजिटल व्हिडिओ डिस्क/ डिजिटल व्हर्साटाईल डिस्क |
| E-LEARNING | ई-लर्निंग | इलेक्ट्रॉनिक लर्निंग |
| E-Mail | ई-मेल | इलेक्ट्रॉनिक मेल |
| HTTP | एच.टी.टी.पी. | हायपर टेक्स्ट ट्रान्स्फर प्रोटोकॉल |
| IFLA | इफ्ला | इंटरनॅशनल फेडरेशन ऑफ लायब्ररी असोसिएशन |
| LAN | लॅन | लोकल एरीया नेटवर्क |
| OPAC | ओपॅक | ऑनलाईन पब्लिक अॅक्सेस कॅटलॉग |
| RFID | आर.एफ.आय.डी. | रेडिओ फ्रिक्वेन्सी आयडेंटिफिकेशन |
| RRRLF | आर.आर.आर.एल. एफ. | राजा राममोहन रॉय लायब्ररी फाऊंडेशन |
| UNESCO | युनेस्को | युनायटेड नेशन्स एज्युकेशनल सायंटिफिक अँड कल्चरल ऑर्गनायझेशन |
| WiFi | वाय फाय | वायरलेस फिडीलिटी |
| WWW | डब्लू.डब्लू. डब्लू. | वर्ल्ड वाईल्ड वेब |

प्रकरण पहिले
प्रास्ताविक

प्रकरण १ ले

प्रास्ताविक

| अ.क्र. | तपशील | पृष्ठ क्रमांक |
|--------|------------------------|---------------|
| १.१ | प्रस्तावना | २ |
| १.२ | संशोधन विषयाचे महत्त्व | ३ |
| १.३ | संशोधन समस्या | ५ |
| १.४ | संशोधनाची उद्दिष्टे | ६ |
| १.५ | गृहितके | ६ |
| १.६ | संशोधन पद्धती | ६ |
| १.७ | संशोधन व्याप्ती | ८ |
| १.८ | सर्वेक्षण/पाहणी तंत्र | ८ |
| १.९ | संशोधन साधने | १० |
| १.१० | प्रकरण आराखडा | १२ |
| | सारांश | १४ |
| | संदर्भसूची | १५ |

प्रकरण १ ले

प्रास्ताविक

१.१. प्रस्तावना :

ग्रंथालय म्हणजे ग्रंथाचे घर. ज्या ठिकाणी ग्रंथ एकत्रित केले जातात ती जागा म्हणजे ग्रंथालय. ग्रंथालय ही सामाजिक संस्था असून तिला मोठा इतिहास आहे आणि तो मानव संस्कृतीशी समांतर आहे. ग्रंथालये ही सामाजिक संस्कृतीचा वारसा जपणारी केंद्रे आहेत.

ग्रंथालये ही अशी ठिकाणे आहेत की ज्या ठिकाणी वाचकांना भावी आयुष्यात उपयोगी पडेल असे ज्ञान प्राप्त होते. कोणत्याही व्यवसायाचे धोरण ठरविण्यासाठी, निर्णय घेण्यासाठी, एखाद्या कार्याची अमंलबजावणी करण्यासाठी किंवा कार्यक्रम यशस्वीरित्या पार पाडण्यासाठी ग्रंथालयातील संग्रहीत माहिती उपयुक्त ठरते. अशा रितीने ग्रंथालयीन माहिती ही आज आपली मुख्य गरज बनली आहे. प्रा. कौल जी. एन. यांच्या मतानुसार भारतातील ग्रंथालये ही शिक्षण, ज्ञान, विकास व तंत्रज्ञान इत्यादींशी निगडित आहेत. या सर्व क्षेत्रात ग्रंथालयांनी महत्त्वाची भूमिका पार पाडली आहे.^१

आजच्या एकविसाव्या शतकात ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र क्षेत्रात अनेक बदल होत आहेत. ग्रंथालयाने आपले पारंपारिक रूप बदलून आधुनिकतेचे रूप धारण केले आहे. आज सर्वच क्षेत्रात संगणक व माहिती तंत्रज्ञानाचा वापर मोठ्या प्रमाणात होत आहे. इंटरनेट आणि डिजिटल तंत्रज्ञानाच्या विकासामुळे माहिती इलेक्ट्रॉनिक स्वरूपात प्रकाशित करणे आता शक्य झाले आहे. याच पार्श्वभूमीवर ग्रंथालयामध्ये संगणकीकरण आणि आधुनिकीकरण करण्यात येत आहे.

प्रस्तुत अभ्यासात सार्वजनिक ग्रंथालयातील व्यवस्थापकांना, ग्रंथपालांना व ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांना जाणवणाऱ्या समस्यांचा प्रामुख्याने विचार करून त्यावर उपाययोजना शोधण्याचा अभ्यासकाचा मानस आहे. दिवसेंदिवस बदलत चाललेली परिस्थिती, माहितीत होणारी अफाट वाढ, शिक्षण पद्धतीतील बदल आणि या बदलांना सामोरे जाण्यासाठी सार्वजनिक ग्रंथालयात होणारे बदल आत्मसात करण्याची मानसिकता सार्वजनिक ग्रंथालयातील ग्रंथपाल व ग्रंथालय

कर्मचाऱ्यांमध्ये निर्माण व्हावी. तसेच सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक योगदानाचा तेथील आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या उपयोजनांचा आढावा घेऊन सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या विविध समस्यांचे व विकास अवस्थेचे नेमके आकलन व्हावे यासाठीच “महाराष्ट्रातील अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास” हा विषय अभ्यासकाने संशोधनासाठी निवडला आहे.

या अभ्यासासाठी महाराष्ट्रातील ३५ जिल्हा अ वर्ग ग्रंथालये व ११० तालुका अ वर्ग ग्रंथालये निवडली आहेत. हा प्रबंध ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र अभ्यासकांना/ व्यावसायिकांना उपयोगी पडावा असा करण्याचा अभ्यासकाचा प्रयत्न आहे.

१.२. संशोधन विषयाचे महत्त्व :

“जिज्ञासा ही मानवाची मूलभूत प्रवृत्ती आहे.”^२ प्रत्येक गोष्टीच्या मुळाशी जाऊन त्यातून नवीन ज्ञान माहिती मिळविणे हा माणसाचा स्थायी भाव आहे. संशोधनाची सुरुवात जिज्ञासा व कुतूहलामुळे निर्माण होणाऱ्या प्रश्नात्मकतेमधून होते आणि अखेर निष्कर्षात संशोधन हा शब्द सं + शोधन या दोन शब्दांनी बनलेला आहे. ‘सं’ म्हणजे संपूर्ण किंवा समग्र असा ज्ञात अज्ञाताचा शोध होय. संशोधनाला इंग्रजीत Research असे म्हणतात. याचा अर्थ पुन्हा पुन्हा शोध घेणे होय. नवीन तत्त्वे आणि तथ्ये शोधण्यासाठी आणि जुनी तत्त्वे किंवा तथ्यांच्या परिक्षणासाठी केलेला चिकित्सक व पद्धतीशीर अभ्यास म्हणजे संशोधन होय.

‘नही ज्ञानेन सदृशं पवित्रं इह विद्यते’ ज्ञानासारखे पवित्र दुसरे काहीही नाही, भगवद्गीतेतील हा श्लोक माहिती तंत्रज्ञानाच्या युगातही तितकाच पवित्र ठरत आहे.

कोणत्याही विषयाचा विकास हा त्या विषयाचा अभ्यास आणि संशोधनावर अवलंबून असतो. संशोधनाशिवाय ज्ञानवृद्धी, प्रगती होऊ शकत नाही. आधुनिक काळात राष्ट्राची प्रगती ही त्या राष्ट्राकडे असलेल्या ज्ञान भांडारावर मोजली जाते. सर्व प्रकारच्या संशोधनासाठी ग्रंथालये महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावत असतात.

ग्रंथालयाच्या प्रकारांपैकी सार्वजनिक ग्रंथालयही समाजात लोकप्रिय आहेत. “ग्रंथालये ही स्वयंशिक्षणाची विद्यापीठे समजली जातात. ग्रंथालय या संज्ञेला विकसित देशात व्यापक

आशय आहे. ग्रंथपालाला तेथे माहिती शास्त्रज्ञ असे संबोधले जाते. आज आंतरराष्ट्रीय पातळीवर ग्रंथालयाचे स्वरूप अद्यावत माहिती केंद्र, अभ्यास केंद्र किंवा संशोधन केंद्र असे झाले आहे. ज्ञानाच्या कक्षा रुंदावत आहेत आणि माहितीचे जाळे विस्तारत आहे. या पार्श्वभूमीवर ग्रंथालयांना फार मोठी भूमिका व जबाबदारी पार पाडायची आहे.^३

सार्वजनिक ग्रंथालय ही 'सामान्य' माणसाच्या अधिक जवळची असतात. सार्वजनिक ग्रंथालये ही वाचनसाहित्याचे संकलन संवर्धन करतात. विनामूल्य किंवा अल्पमूल्य सेवा दिल्यामुळे स्वयं-शिक्षणास सहकार्य होते. सुसंस्कृत व सूज्ञ समाजासाठी, वैचारिक दर्जा वाढविण्यासाठी सार्वजनिक ग्रंथालये मोठ्या प्रमाणात मदत करतात. त्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालये ही एक प्रकारची लोक विद्यापीठे आहेत. शालेय आणि महाविद्यालयामधील ग्रंथालयांमध्ये फक्त तेथील विद्यार्थ्यांनाच ग्रंथालयीन सेवा दिली जाते. समाजातील अन्य व्यक्तींना तेथे प्रवेश मिळत नाही. म्हणून समाजातील ज्ञानार्थी, जिज्ञासू, अभ्यासक, संशोधक आणि वाचनप्रेमी व्यक्तींना ग्रंथालयीन सेवा मिळविण्यासाठी सार्वजनिक ग्रंथालये उपयुक्त ठरतात. तसेच शाळा, महाविद्यालये व विद्यापीठातील विद्यार्थ्यांनाही या सार्वजनिक ग्रंथालयाचा लाभ घेता येतो. समाजातील अनेक व्यक्तींना, काही अडचणींमुळे शिक्षणापासून वंचित रहावे लागते. त्यांना देखील ही ग्रंथालये ज्ञान देऊ शकतात. म्हणजे शिक्षणाचा ज्यांचा ज्यांचा हक्क आहे, त्यांच्यापर्यंत ज्ञानाच्या रूपात शिक्षणाच्या सोयी जाऊ शकतात. सर्वांच्या आनंदासाठी, फायद्यासाठी व विकासासाठी लोकशाही पद्धतीच्या संस्था म्हणजे ही ग्रंथालये असतात.

सर्वसामान्य जनतेत जागृती निर्माण करण्याचे ते एक साधन असते, त्यामुळे सर्वांचा जीवनस्तर उंचावण्यास मदत होते. अशाप्रकारे सामान्य जनतेला शिक्षणाचा फायदा मिळवून देण्यासाठी सार्वजनिक ग्रंथालये महत्त्वाची भूमिका बजावतात. कारण त्या जनतेसाठी, त्या शैक्षणिक संस्थाच असतात. तेथे 'स्वयंशिक्षणा'ची (Self Education) मूलस्थाने असतात. कारण ग्रंथालयात वाचनसाहित्य संग्रह असतो. तो व्यापारी तत्त्वाच्या फायद्यासाठी नसतो, तर सामाजिक हेतूसाठी असतो. त्यातील वाचनसाहित्य हे तत्कालिन व भविष्यातील समाजाच्या सेवेसाठी असते. वाचक व ग्रंथ यांचा परस्परसंबंध जोडण्याचे कार्यही सार्वजनिक ग्रंथालये सतत करीत असतात. वाचन साहित्या व्यतिरिक्त उपयुक्त योजनांबाबतची छापील भिक्तीपत्रके, तक्ते व माहितीपत्रके उपलब्ध करून देणे आवश्यक आहे. एकदा आपल्या ग्रंथालयातून आपल्याला

आवश्यक ते वाचनसाहित्य सहज उपलब्ध होऊ शकते. ही भावना जनतेच्या मनात रूजली की सार्वजनिक ग्रंथालयांचे भवितव्य आजच्यापेक्षा अनेक पट उज्ज्वल झाल्याचे दिसेल. अशा वेगवेगळ्या उपक्रमांमुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या मोहिमेत जनतेचा जास्तीत जास्त सहभाग मिळून ग्रामीण माहितीकेंद्राचे स्थान ग्रंथालये मिळवू शकतील.

२०१० साली महाराष्ट्रात एकूण १०,७३० सार्वजनिक ग्रंथालये कार्यरत होती. त्यात ३५ जिल्हा 'अ' वर्ग व ११० तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालये होती. ही सार्वजनिक ग्रंथालये 'माहिती केंद्र' म्हणून मर्यादित न राहता अन्य उपयुक्त उपक्रम जसे व्याख्यानमाला, काव्यस्पर्धा, पुस्तक प्रदर्शने, कला प्रदर्शने, व्यवसाय मार्गदर्शन कार्यशाळा-शिबीरे राबवितात. यामुळे त्यांचे स्वरूप सांस्कृतिक केंद्र म्हणून विकसित होऊ पाहत आहे. आधुनिक काळाच्या गरजेनुरूप हा बदल अपेक्षित आहे. त्यामुळे समाजविकासास चालना मिळते. या भूमिकेतून महाराष्ट्राच्या सार्वजनिक ग्रंथालयांची सद्यस्थिती जाणून घेण्यासाठी व त्यांच्या भावी वाटचालींमध्ये सुव्यवस्था आणि सुनियोजितपणा येण्यासाठी "महाराष्ट्रातील अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास" हा संशोधन विषय मी निवडला आहे.

१.३. संशोधन समस्या :

भारताचे माजी राष्ट्रपती, भारतरत्न डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम यांच्या मते सन २०२० ला भारत जागतिक महासत्ता म्हणून उदयाला येईल. यासाठी नैसर्गिक साधनसंपत्ती दृष्ट्या सक्षम असलेल्या आपल्या देशातील. 'मानवी संसाधन विकास' गतिमान झाला पाहिजे. सामाजिक विकास हा ज्ञानप्रसारावर अवलंबून आहे. याकामी शिक्षणसंस्था व ग्रंथालयाची जबाबदारी मोठी आहे. परंतु शिक्षणसंस्थामध्ये प्रवेश प्रक्रियेची अट असते. सार्वजनिक ग्रंथालयात हा अडथळा येत नाही. त्यामुळे या माध्यमातून लोकशिक्षण व संस्कृती संवर्धनाचे कार्य चांगल्या पद्धतीतून करता येऊ शकते. या दृष्टीने भारतासारख्या देशात अशा संस्थांचीही जबाबदारी मोठी आहे. काही सार्वजनिक ग्रंथालये योग्य पद्धतीने जबाबदारी पेलतात. जी सार्वजनिक ग्रंथालये याकामी कमी पडताना दिसतात. त्यांच्या अडचणी व समस्यांचे आकलन करून घेऊन त्यावर योग्य उपाय योजना सुचविणे, तसेच उत्तम रितीने कार्य करणाऱ्या व खऱ्या अर्थाने 'सांस्कृतिक केंद्र' बनू पाहणाऱ्या ग्रंथालयाच्या माहितीच्या आधारे आदर्श ग्रंथालयाचे

प्रारूप रेखित करण्यासाठी “महाराष्ट्रातील अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास” हा संशोधन विषय मी निवडला आहे.

सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या व्यवस्थापन व कार्यपद्धतीत सुधारणा करण्यासाठी व निकोप ज्ञानप्रसार व संस्कृती संवर्धनाच्या कामी या संशोधनाचा उपयोग होईल.

१.४. संशोधनाची उद्दिष्टे :

१. महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा अभ्यासणे.
२. महाराष्ट्रातील शासनमान्य जिल्हा व तालुका ‘अ’ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांतील सद्यस्थितीचा अभ्यास करणे.
३. जिल्हा व तालुका ‘अ’ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांमार्फत दिल्या जाणाऱ्या सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक योगदानाचा आढावा घेणे.
४. महाराष्ट्रातील शासनमान्य जिल्हा व तालुका ‘अ’ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या उपयोजनांचा आढावा घेणे.
५. जिल्हा व तालुका ‘अ’ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विविध समस्यांचा अभ्यास करणे.
६. सार्वजनिक ग्रंथालयांचा समाजासाठी अधिक उपयोग होण्याच्या दृष्टीने आदर्श नमुन्याचे प्रारूप सादर करणे.

१.५. गृहितके :

समाजाच्या सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक विकासात सार्वजनिक ग्रंथालयांचे योगदान महत्त्वपूर्ण असते. या दृष्टीने जिल्हा व तालुका स्तरावरील ‘अ’ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांमधून माहिती व अन्य योग्य त्या सेवा वाचकांना दिल्या जातात.

१.६. संशोधन पद्धती :

संशोधन म्हणजे ज्ञानप्राप्तीसाठी घेतला गेलेला शोध होय.^४ संशोधन म्हणजे सत्याचा व अज्ञाताचा अत्यंत पद्धतशीर घेतला गेलेला शोध होय. कोणत्याही विषयाचा विकास हा त्या

विषयाचा अभ्यास आणि त्याविषयातील संशोधन यावर अवलंबून असतो. संशोधन अनेक हेतुंनी केले जाते. ज्ञानाचा वापर करून नवीन ज्ञान निर्मिती करणे हा संशोधनाचा मूळ हेतु आहे. ज्ञान निर्मितीसाठी आणि पर्यायाने ज्ञानाधिष्ठित समाज निर्मितीसाठी संशोधन आवश्यक असल्याने संशोधनाचे महत्त्व दिवसेंदिवस वाढत आहे. रोममध्ये राज्यकर्त्यांनी स्थापन केलेल्या सार्वजनिक ग्रंथालयाचे बोधवाक्य होते की संशोधन वृत्ती ही सामाजिक हिताची गोष्ट आहे.

ज्ञानाचे क्षेत्र व्यापक करण्याकरिता, समस्यांचे आकलन व निवारण करण्याकरिता आणि एकंदरित मानवी जीवन प्रगतिशिल व समृद्ध करण्याकरिता संशोधन हे महत्त्वाचे साधन आहे. ग्रंथालये ही सर्व ज्ञानशाखांच्या संशोधनात केंद्र घटक म्हणून कार्य करित असल्याने ग्रंथालय शास्त्रातील संशोधन हे आपोआपच अन्य ज्ञानशाखांच्या विकासाला पर्यायाने वैश्वीक कल्याणाला पोषक ठरते.

“महाराष्ट्रातील अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास” या विषयांवर संशोधनात्मक अभ्यास करण्यासाठी वर्णनात्मक संशोधन पद्धतीचा तसेच सर्वेक्षण तंत्राचा उपयोग केला आहे. सदर संशोधन विषयाच्या अनुषंगाने माहिती संकलनासाठी प्रश्नावली या साधनाचा व निरीक्षण तंत्राचा उपयोग करून संकलित माहितीच्या शास्त्रीय पद्धतीने केलेल्या विश्लेषणावरून निष्कर्ष काढले आहेत.

वर्णनात्मक संशोधन पद्धती :

John W. Best- “A Descriptive study describes and interprets what is. it is concerned with conditions or relationships that exist, opinions that are held processes that are going on effects that are evident, or trends that are developing. It is primarily concerned with the present, although it often considers past events and influences as they relate to current conditions.”⁴ वर्णनात्मक संशोधन पद्धती ही सत्यशोधनाशी संबंधीत असून एखादे सामाजिक कार्य, उपक्रम आणि योजना याची सद्यस्थिती काय आहे याचा सखोल अभ्यास करून त्यातील गुण-दोषांचा अभ्यास करून शिफारशी मांडता येतात. ग्रंथालयातील वाचन साहित्याचे स्वरूप, ग्रंथालयातील विविध सुविधा, ग्रंथालय देत असलेल्या सेवा, ग्रंथालयातील संगणकीकरण, संदर्भसेवा, संदर्भ साधने इत्यादींचा सद्यस्थितीचा शिस्तबद्ध अभ्यास करणे हे वर्णनात्मक संशोधन पद्धतीद्वारे होते. काय घडले आहे किंवा काय सद्यस्थिती आहे

याचा शोध वर्णनात्मक संशोधनात घेतला जातो. यामध्ये संशोधन अभ्यासासाठी निवडलेल्या सहभागी ग्रंथालयांची विविध स्तरांची सविस्तर माहिती घेऊन त्याचे वर्णन करणे हे प्रमुख उद्दिष्ट असते.

वर्णनात्मक संशोधनात घटनांच्या संदर्भात जशी संख्यात्मक माहिती गोळा केली जाते तसेच गुणात्मक माहितीही गोळा केली जाते. त्यासाठी निरीक्षण, प्रश्नावली, मुलाखती इ. चा उपयोग केलेला आहे. महाराष्ट्रातील जिल्हा व तालुका अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाचे संशोधन करित असतांना या दोन्ही प्रकारच्या ग्रंथालयाविषयीचे काही शासकीय निकष भिन्न आहेत. तसेच जिल्हा व तालुक्यांचे प्रादेशिक व सामाजिक महत्त्व भिन्न असल्यामुळे जिल्हा व तालुका ग्रंथालयांचे वेगळे आलेख, तक्ते यांच्या सहाय्याने वेगवेगळे विश्लेषण केलेले आहे व त्यानुसार निरीक्षणे नोंदवून निष्कर्ष काढले आहेत.

१.७. संशोधन व्याप्ती :

महाराष्ट्रातील ३५ जिल्हा 'अ' वर्ग व ११० तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालये आहेत. महाराष्ट्रातील एकूण १४५ सार्वजनिक ग्रंथालयांचा अभ्यास सदर संशोधनात केला आहे. सदर संशोधन हे १४५ सार्वजनिक ग्रंथालयापुरतेच मर्यादित असून ही या संशोधनाची आखुन घेतलेली मर्यादा आहे. सदर संशोधनातील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या अभ्यासासाठी महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालय संचनालयाकडून मार्च २००९ मध्ये प्रसिद्ध झालेली यादी विचारात घेतली आहे. तर संशोधनासाठी २०१०-११ वर्ष विचारात घेतले आहे. यामध्ये ग्रंथालयांतील ग्रंथसंग्रह, वाचकांना देण्यात येणाऱ्या सेवा सुविधा, ग्रंथालयाचे विविध विभाग, संगणकीकरण व इतर अवांतर उपक्रम या सर्व बाबींचा विचार करण्यात येणार आहे. सदरची माहिती ग्रंथपाल, ग्रंथालयातील सेवक, ग्रंथालय व्यवस्थापन मंडळ यांच्याकडून घेतली आहे.

१.८. सर्वेक्षण/पाहणी तंत्र :

सामाजिक संशोधनातून तथ्ये गोळा करण्यासाठी ही एक महत्त्वपूर्ण पद्धती आहे. यामुळे एखाद्या विशिष्ट प्रदेशातील, विशिष्ट गटाची त्यांच्या समस्यांनुसार सर्वांगीण माहिती मिळविता

येते. एखाद्या विशिष्ट सामाजिक घटकाकडून योग्य पद्धतीने माहिती मिळविणे म्हणजे सर्वेक्षण होय.^६

वेबस्टर यांनी विश्वकोशात सर्वेक्षणाची केलेली व्याख्या, अचुक माहिती देणारी चिकित्सक तपासणी म्हणजे सर्वेक्षण.^७

सर्वेक्षण/ पाहणी हे सामाजिक घटनांशी संबंधित असेल तर त्याला सामाजिक सर्वेक्षण म्हटले जाते. सामाजिक सर्वेक्षणाचा उद्देश वैज्ञानिक पद्धतीचा उपयोग करून एखाद्या सामाजिक समस्येवर उपाययोजना सुचविणे व त्यामुळे समाजकल्याणाच्या योजनेसाठी सहाय्यक होणे हा असतो. संशोधन घटकांची वैशिष्ट्ये जाणून घेण्यासाठी, त्यांचे वर्णन करण्यासाठी नमुन्याआधारे केलेल्या संशोधनाला सर्वेक्षण म्हणतात.

सामाजिक सर्वेक्षणाचे प्रकार :

१. नियमित व नैमित्तिक सर्वेक्षण : ठराविक कालावधीनंतर केले जाणारे सर्वेक्षण ते नियमित सर्वेक्षण होय. विशिष्ट हेतूने केलेले सर्वेक्षण ते नैमित्तिक सर्वेक्षण होय.
२. प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सर्वेक्षण : तथ्यांचे सांख्यिकीय विश्लेषण शक्य होते ते प्रत्यक्ष सर्वेक्षण होय. माहितीचे विश्लेषण करून निष्कर्ष काढले जातात. ते अप्रत्यक्ष सर्वेक्षण होय.
३. प्राथमिक किंवा दुय्यम सर्वेक्षण : संशोधकाने वैयक्तिकपणे गोळा केलेली माहिती, आकडेवारी, तथ्ये ही प्राथमिक सर्वेक्षणात मोडतात. उपलब्ध माहितीतून एखाद्या प्रश्नाद्वारे केलेले सर्वेक्षण हे दुय्यम सर्वेक्षण होय.
४. व्यक्तिनिष्ठ किंवा व्यक्तिनिरपेक्ष सर्वेक्षण :- प्रत्यक्ष व्यक्तिकडून तीच्या विषयी माहिती मिळवणे हे व्यक्तिनिष्ठ तर अभ्यास विषयासंबंधी त्रयस्थकडून माहिती मिळविणे म्हणजे व्यक्तिनिरपेक्ष सर्वेक्षण होय.
५. खुले किंवा व्यक्तिनिरपेक्ष सर्वेक्षण :- या सर्वेक्षणात माहिती सर्वांसाठी असते तेव्हा ते खुले सर्वेक्षण असते. सर्वेक्षणातील माहिती जेव्हा सर्वांसाठी नसते ती काही घटकापुरतीच मर्यादित असते तेव्हा ते गोपनीय सर्वेक्षण होय.

६. व्यापक व मर्यादित सर्वेक्षण :- सर्वेक्षणात जेव्हा विविध प्रकारची माहिती संग्रहीत असते, संग्रह क्षेत्र व्यापक असते तेव्हा ते व्यापक सर्वेक्षण होय. जेव्हा संग्रहीत माहिती क्षेत्र मर्यादित असते तेव्हा ते मर्यादित सर्वेक्षण होय. ह्या पद्धती सामाजिक शास्त्रामध्ये जास्त लोकप्रिय आहे. यामुळे समस्येचे स्वरूप लवकर ज्ञात होते. त्यामुळे समस्येच्या कारणांवर उपाय करणे शक्य होते. यातील निष्कर्षाचा उपयोग सर्वाना होतो. तसेच विकासाला चालना मिळते.^८

१.९. संशोधन साधने :

कोणत्याही संशोधनाचे महत्त्व व संशोधनांती काढण्यात आलेले निष्कर्ष तसेच त्यावर आधारित माहिती ही पुर्णतः गोळा केलेल्या माहितीवर अवलंबून असते. म्हणूनच माहिती गोळा करण्यासाठी पाहणीतंत्रामध्ये प्रामुख्याने निरीक्षण, प्रश्नावली व मुलाखत ही साधने वापरली जातात. या साधनांचा माहिती संकलनासाठी योग्य उपयोग होण्यासाठी त्यांचा कौशल्यपूर्ण वापर करणे आवश्यक असते. प्रस्तुत अभ्यासासाठी प्रश्नावली व मुलाखत ही दोन साधने वापरली आहेत.

१. प्रश्नावली :

टायरस हिल्वे यांनी त्यांच्या Introduction to Research मध्ये असे म्हटले आहे की, “पाहणीद्वारे केवळ सत्यशोधनाचाच हेतू सफल होतो असे नसून पाहणीची परिणती एखाद्या सिद्धांताच्या मांडणीत किंवा समस्येची उकल होण्यातही होते.^९ ज्या वेळी पाहणीसाठी निवडलेला लक्ष्यसमुहाचा नमुना भौगोलिक दृष्ट्या दूरवर पसरलेला असतो तेव्हा प्रश्नावलीद्वारेच माहिती जमा केली जाते. हिल्वे यांनी प्रश्नावली परिणामकारक होण्यासाठी आठ निकष सुचविले आहेत.

१. प्रश्नावली फार लांबलचक नसावी.
२. जी माहिती आधीच उपलब्ध आहे त्या माहितीबद्दल अकारण विचारणा करू नये.
३. प्रश्नावलीत प्रश्न हे विषयाच्या संदर्भातील महत्वाच्या गोष्टीसंबंधीच असावेत.
४. प्रश्न असे तयार करावेत की त्यांना देण्यात येणाऱ्या उत्तरातून वस्तुस्थिती स्पष्ट होईल. केवळ मते व्यक्त होणार नाहीत.

५. उत्तरदात्यांना ज्ञात असलेल्या संज्ञांचाच प्रश्नकर्त्यांनी वापर करावा.
६. मुद्यानुरूप प्रश्नावलीची वेगवेगळ्या भागांत विभागणी करावी.
७. प्रश्नावली तयार करताना उत्तरदात्याच्या वेळेचे प्रश्नकर्त्यांनी भान ठेवणे जरूरीचे आहे.
८. उत्तरे कशा प्रकारे नोंदवावीत याबद्दल योग्य त्या सूचना त्यात दिलेल्या असाव्यात. प्रश्नावली दोन प्रकारे तयार करता येते.

१. मुक्त प्रश्नावली, २. रचनात्मक प्रश्नावली

मुक्त प्रश्नावलीत फक्त प्रश्नांची सरळ मालिका असते. उत्तरदाता त्याच्या मनाप्रमाणे प्रत्येक प्रश्नाचे उत्तर लिहितो. रचनात्मक प्रश्नावलीत प्रत्येक महत्वाच्या प्रश्नापुढे संशोधक वस्तुनिष्ठ उत्तरे सूचित करतो. अनेक पर्यायापैकी उत्तरदाता त्याला योग्य वाटतो तो पर्याय निवडतो.

प्रस्तुत अभ्यासासाठी संशोधकाने सार्वजनिक ग्रंथालयाची माहिती मिळविण्यासाठी प्रश्नावली तयार करून घेतली आहे.

२. निरीक्षण :

निरीक्षण हे माहिती किंवा ज्ञान मिळविण्याचे सर्वात जुने तंत्र आहे. निरीक्षण हे नियमनावर आधारित असते. निरीक्षण म्हणजे एखाद्या घडामोडीकडे किंवा घटनेकडे हेतुपुरस्कर पाहणे किंवा माहिती गोळा करण्याच्या हेतुने बघणे.^{१०} यंगच्या मते, पद्धतशीरपणे पाहणे आणि पाहिलेल्या घटनांची चिकित्सा करणे म्हणजे निरीक्षण होय.^{११}

निरीक्षणाचे प्रकार :

१. सहभागी निरीक्षण - यामध्ये संशोधक अभ्यास विषयक घटकांमध्ये येऊन त्यांच्यात सहभागी होवून निरीक्षण करून माहिती गोळा करतो.
२. असहभागी निरीक्षण - यामध्ये संशोधक अभ्यास विषयक घटकांचे लांबून निरीक्षण करतो. त्यांच्यात सहभागी होत नाही.
३. संमिश्र निरीक्षण - यामध्ये संशोधकाला संशोधन कार्यात सहभागी व असहभागी निरीक्षणाच्या सीमारेषा ठरविणे कठीण जाते. तो दोन्ही पद्धतीचा उपयोग करतो.

४. नियंत्रित निरीक्षण - संशोधक अभ्यास घटकांचे निरीक्षण करण्यासाठी ती परिस्थिती हेतूत: मुद्दाम निर्माण करतो, यावेळी हे नियंत्रित निरीक्षण असते. यामध्ये संशोधकाने अभ्यास घटकावर नियंत्रण ठेवणे व स्वतःच्या निरीक्षणावर नियंत्रण ठेवणे या गोष्टी समाविष्ट असतात.
५. अनियंत्रित निरीक्षण - नैसर्गिक घटना ज्या पद्धतीने घडतात त्यांचे निरीक्षण करणे हा या निरीक्षणाचा हेतू असतो. सामाजिक शास्त्रात ही पद्धत उपयोगी पडते. सामाजिक संशोधनातील निरीक्षण हे एक महत्वाचे तंत्र आहे. यामुळे अभ्यास विषयाचे वस्तुनिष्ठ ज्ञान संशोधकाला होते. त्यामुळे विश्वसनीय निष्कर्ष मांडणे सोपे होते.

१.१०. प्रकरण आराखडा :

प्रकरण १ ले : प्रास्ताविक

या प्रकरणात संशोधन विषय निवड, संशोधन विषयाची आवश्यकता, संशोधन समस्या, संशोधनाची उद्दिष्टे, गृहितके, संशोधन पद्धती, संशोधन व्याप्ती, सर्वेक्षण पाहणी तंत्र आणि संशोधन साधने यावर चर्चा केली आहे.

प्रकरण २ रे : संशोधन पूर्वाभ्यास व वाचन साहित्याचा शोध

या प्रकरणात वाचन साहित्य संकलन करून उपयुक्त वाचनासाठी त्याच्या आढाव्याचे वर्णन केले आहे. या प्रकरणात माहिती संकलन करताना विचारात घेतलेले पैलू, सरकारी आदेश-कागदपत्रे, सार्वजनिक ग्रंथालयाचे प्रसिद्ध झालेले अंक व नियतकालिके, संदर्भग्रंथ, नियतकालिके आणि वर्तमानपत्रातील लेखांचे वाचन करून पूर्वाभ्यास संदर्भ दिले आहेत. तसेच संशोधनाच्या संबंधीत विषयाच्या एम.फिल व पीएच.डी.च्या प्रबंधांचाही पूर्वाभ्यास करण्यात आला, इंटरनेट साहित्याचा आढावाही घेतला आहे. यामुळे अभ्यासकार्यात विविध बाबींची सखोल चर्चा करण्यास मदत होऊन आवश्यक तेथे सदर माहितीचा वापर केला आहे. संदर्भ देताना एपीए स्टायल चा वापर करण्यात आला आहे.

प्रकरण ३ : सार्वजनिक ग्रंथालयाचा पूर्वइतिहास

सदर प्रकरणात विषयाच्या पूर्वइतिहासाचा आढावा घेतला आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयाची कार्ये, युनेस्कोचा जाहिरनामा व सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या दृष्टिने एडवर्ड एडवर्डस् यांचे योगदान देण्यात आले आहे. जागतिक पातळीवरील इतिहासाची नोंद घेऊन भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या चळवळीमधील वेगवेगळ्या समितीच्या शिफारशीची माहिती घेण्यात आली. तसेच महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्यातील तरतुदी स्पष्ट करण्यात आल्या आहेत. सार्वजनिक ग्रंथालयातील सेवक आकृतीबंधांची माहिती घेऊन सार्वजनिक ग्रंथालयांची सद्यस्थिती व समस्यांचा आढावा घेतला आहे.

प्रकरण ४ : माहितीचे संकलन आणि विश्लेषण

या प्रकरणात सर्वेक्षणातील संकलित माहितीचे सादरीकरण तक्ते व आलेख इत्यादींद्वारे केले आहे. तसेच या माहितीचे विश्लेषण व स्पष्टीकरण देऊन अनुमानाचे सादरीकरण केले आहे.

प्रकरण ५ : आदर्श ग्रंथालयांसाठीचे प्रारूप

महाराष्ट्रातील जिल्हा आणि तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालये अधिकाधिक समाजाभिमुख व्हावी या हेतूने ग्रंथालयाची जागा, इमारत, फर्निचर अंतर्गत विभागाची रचना कशी असावी. ग्रंथ, नियतकालिके, वृत्तपत्रे यांचा संग्रह, ग्रंथालयीन सेवेचे स्वरूप, ग्रंथालयातील बालविभाग, महिला विभाग, अंध-अपंग विभाग, व ज्येष्ठ नागरिक विभाग तसेच ग्रंथालयाद्वारे रुग्णालयांतील रुग्ण, तुरुंगातील कैदी, अंध-अपंग व सर्वसाधारण वाचकांसाठीची फिरत्या ग्रंथालयाची सुविधा आणि एकुणच ग्रंथालयांसाठी उपयुक्त ठरू शकेल असे माहिती तंत्रज्ञानाच्या उपयोजनाचे स्वरूप वर्णनात्मक स्वरूपात व तक्ता आणि आकृती आराखडयाच्या माध्यमातून या प्रकरणात मांडले आहे.

प्रकरण ६ : निष्कर्ष आणि शिफारशी

संकलित माहितीचे विश्लेषण केल्यानंतर संशोधनातून निर्देशित निष्कर्ष देण्यात आले आहे. निष्कर्षावरून शिफारशी केलेल्या आहेत. संशोधनाच्या उद्दिष्टांची व गृहितकांची

पडताळणी या प्रकरणात केलेली आहे. उद्दिष्टांची पडताळणी झाल्यावर शेवटी पुढील संशोधनासाठीची दिशा सूचविण्यात आली आहे. त्यामुळे दुर्लक्षित राहिलेल्या परंतु महत्त्वाच्या असलेल्या विषयाबाबत इतर संशोधकांना संशोधन करणे शक्य होणार आहे.

परिशिष्टे

सदर विभागामध्ये ग्रंथपाल प्रश्नावली, जिल्हा अ वर्ग व तालुका अ वर्ग ग्रंथालयांची सूची, महाराष्ट्रातील शासनमान्य सार्वजनिक जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालयांची यादी, महाराष्ट्रातील शासनमान्य तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालये, शतकोत्तर जिल्हा अ वर्ग व तालुका अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांची सूची, नागरिकांची सनद ग्रंथालय संचालनालय, महाराष्ट्र राज्य, मुंबई, जिल्हा व तालुका अ वर्ग ग्रंथालय स्थानदर्शक नकाशे दिले आहेत.

संदर्भसूची

सदर संशोधन विषयासंदर्भातील कार्य पूर्ण करण्यासाठी जेथे जेथे तात्त्विक सैद्धांतिक आधार घेतला आहे अशा सर्व संदर्भग्रंथाचा, नियतकालिकांचा, वर्तमानपत्रातील लेखांचा, लघुशोध प्रबंध, शोधनिबंध, वेबसाइटचा उल्लेख सदर संदर्भसूचीमध्ये केला आहे. सदर संदर्भसूची लिहिण्यासाठी अमेरिकन सायकॉलॉजिकल असोसिएशन(एपीए) स्टॉईल मॅन्युअलचा उपयोग करण्यात आला आहे.

सारांश

सदर प्रकरणांमध्ये संशोधनविषयाचे महत्त्व, संशोधन समस्या, संशोधनाची उद्दिष्टे, गृहितके, संशोधन पद्धती, संशोधनाची व्याप्ती, सर्वेक्षण पाहिणी तंत्र, प्रश्नावली व मुलाखत या विषयीची माहिती तसेच प्रबंधाची प्रकरणशः आराखडा इत्यादींची माहिती देण्यात आली आहे.

संदर्भसूची :

१. गुप्ता, ओ.पी.(१९९८) ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र सेवा. विद्यापीठ आणि महाविद्यालय ग्रंथालय. दिल्ली : रिलायन्स पब्लिकेशन हाऊस, पृ. ४७.
२. पाटील, व. भा. (१९९८) सामाजिक संशोधन पद्धती. नागपूर : मंगेश प्रकाशन, पृ. ३८.
३. ग्रंथालय चळवळ : अगतिकता आणि आधुनिकता
<http://www.maharashtratimes.com/articleshow.p-२>.
४. पवार, एस.पी. आणि इतर (२०००) ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र. कोल्हापूर : फडके प्रकाशन, पृ.३०२.
५. भिंताडे, वि. रा. (२००६) शैक्षणिक संशोधन पद्धती. पुणे: नित्यनुतन प्रकाशन, पृ.१०६.
६. कोण्णूर, एम.बी. आणि कोण्णूर, सुजाता (२००८) ग्रंथालय व माहितीशास्त्रकोश. पुणे : डायमंड पब्लिकेशन्स, पृ.३१४.
७. नाडगौडे, गुरूनाथ द. (१८८३) सामाजिक संशोधन पद्धती. कोल्हापूर : फडके प्रकाशन, पृ.२२७.
८. कोण्णूर, एम.बी. आणि कोण्णूर, सुजाता (२००८) ग्रंथालय व माहितीशास्त्रकोश. उनि., पृ. ३१५.
९. रिसवाडकर, म.रा. (२००८) माहिती संकलन, विश्लेषण आणि सादरीकरण. नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, पृ. ५.
१०. तत्रैव, पृ. ७.
११. कोण्णूर, एम.बी. आणि कोण्णूर, सुजाता (२००८) ग्रंथालय व माहितीशास्त्रकोश. उनि. पृ. ८९.

प्रकरण दुसरे

**संशोधनपूर्व अभ्यास व वाचन
साहित्याचा शोध**

प्रकरण दुसरे

संशोधन पूर्वाभ्यास व वाचन साहित्याचा शोध

| अ.न. | तपशील | पृष्ठ क्र. |
|--------|---|------------|
| २.१. | प्रस्तावना | १७ |
| २.२. | संबंधित साहित्याच्या समालोचनाची उद्दिष्टे | १८ |
| २.३. | संदर्भ साहित्याचा आढावा | १८ |
| २.३.१. | संदर्भग्रंथ | १८ |
| २.३.२. | संशोधन नियतकालिकातील वाचनसाहित्याचा आढावा | २५ |
| २.३.३. | वेबसाईट | ३२ |
| २.३.४. | दैनिक वर्तमानपत्रे | ३३ |
| २.४. | एम. फिल. लघु शोधप्रबंधिका | ३५ |
| २.५. | पीएच. डी. शोधप्रबंध | ३६ |
| | सारांश | ३७ |
| | संदर्भसूची | ३८ |

प्रकरण दुसरे

संशोधन पूर्वाभ्यास व वाचन साहित्याचा शोध

२.१. प्रस्तावना :

संशोधन प्रकल्पाच्या या प्रकरणात संशोधनासाठी कोणत्या बाबींचा पूर्वाभ्यास केला, याचे विवेचन करण्यात आले आहे. सार्वजनिक ग्रंथालये समाज घडविण्यासाठी फार मोठी जबाबदारी पार पाडत असतात. समाजातील तळागाळातील लोकांपर्यंत सार्वजनिक ग्रंथालयाची संकल्पना पोहचणे, तिचा प्रसार होणे गरजेचे आहे. या सर्व गोष्टींसाठी ग्रंथालय करीत असलेल्या कार्याचा अभ्यास करणे महत्त्वाचे आहे.

संशोधन करत असताना पूर्व साहित्याचा आढावा घेणे हा संशोधनाचा महत्त्वाचा पाया म्हणावा लागेल. कोणतेही संशोधन हे पूर्वसाहित्याच्या आढाव्यापासून सुरू होते. त्या आधारे संशोधन प्रकल्प व्यवस्थितरित्या पूर्ण करता येतो. पूर्वीच्या संशोधकांनी कशाप्रकारे संशोधन केले आहे याचे ज्ञान होते. तसेच त्या संशोधकांनी मांडलेल्या संशोधन समस्येची सत्यता लक्षात येते. त्यामुळे आपल्या संशोधनातील द्विरूक्ती टळते. संशोधकाने सदर संशोधनाशी संबंधित इतर काही संशोधन झालेली आहे की नाही, याबाबत अभ्यास करण्यासाठी संशोधन पूर्वाभ्यास व वाचन साहित्याचा शोध घेतला आहे. त्यासाठी खालील ग्रंथालये व ग्रंथालय संचालनालयांकडून माहिती मिळविली.

१. महाराष्ट्र राज्य ग्रंथालय संचालनालय, मुंबई.
२. विभागीय ग्रंथालय संचालनालय, पुणे.
३. राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालय, मुंबई.
४. महाराष्ट्रातील जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालये.
५. महाराष्ट्रातील तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालये.
६. जयकर ग्रंथालय, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे.
७. टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ ग्रंथालय, पुणे.

८. संशोधन विषयाच्या अनुषंगाने इंटरनेटवर जे वाचन साहित्य उपलब्ध झाले, तेही अभ्यासात समाविष्ट करण्यात आले आहे.

२.२. संबंधित साहित्याच्या समलोचनाची उद्दिष्टे :

१. संशोधनाची पुनरावृत्ती टाळणे.
२. संशोधनाचा विषय निवडण्यास मार्गदर्शन मिळविणे व निवडलेल्या विषयासंबंधी पूर्वी झालेल्या संशोधनाची माहिती मिळविणे.
३. सदर संशोधनाची दिशा निश्चिती करणे.
४. संशोधन विषयासंबंधी गृहितकाच्या मांडणीबद्दल निश्चित माहिती मिळविणे.
५. सदर संशोधन विषयासंबंधी योग्य संशोधन पद्धती, माहिती संकलन साधने व तंत्रे यांच्याबद्दल माहिती मिळविणे.

२.३. संदर्भ साहित्याचा आढावा :

२.३.१. संदर्भग्रंथ :

१. कोणूर (२००८) यांनी आपल्या ग्रंथात संशोधन व्याख्या, संशोधनासाठी माहिती संकलनाची तंत्रे जसे प्रश्नावली, निरीक्षण, सर्वेक्षण यांची माहिती दिली आहे. ग्रंथालय व्याख्या, ग्रंथालयाचे प्रकार, भारतातील ग्रंथालये, भारतातील ग्रंथालय चळवळ, सार्वजनिक ग्रंथालय, सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा, ग्रंथालयाचे संगणकीकरण, राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठानचे योगदान इत्यादी माहिती दिली आहे.^१
२. पौडवाल व सावे (२०१४) यांनी आपल्या ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालयांचा प्रारंभ आणि प्रगती तसेच सार्वजनिक ग्रंथालयांचे सामाजिक महत्त्व, सार्वजनिक ग्रंथालयांची अपेक्षित कार्ये, सार्वजनिक ग्रंथालयांचा वापर, महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालये, राष्ट्रीय ज्ञान आयोग या संदर्भातील माहिती दिली आहे.^२
३. महाजन (२०११) यांनी आपल्या ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालयाची व्याख्या, सार्वजनिक ग्रंथालयाचा कारभार, सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७, नागरिकांची सनद,

महाराष्ट्रातील ग्रंथालय चळवळ, युनेस्कोचा जाहिरनामा इत्यादी संदर्भातील माहिती दिली आहे. संशोधकाला या माहितीचा उपयोग झाला.^३

४. बालेकर (२०१२) यांनी आपल्या ग्रंथात राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालये, विभागीय ग्रंथालये, जिल्हा ग्रंथालये, तालुका ग्रंथालये व या ग्रंथालयांची कार्ये इत्यादी संदर्भातील माहिती लेखकांनी दिली आहे.^४
५. नरगुंदे (२००७) यांनी आपल्या ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालयांचे स्वरूप, कार्ये, ध्येये व उद्देश, ग्रंथालयातील विविध विभाग, युनायटेड स्टेट्स्मधील सार्वजनिक ग्रंथालय सेवा इत्यादी संदर्भातील माहिती दिली आहे.^५
६. पाटील (२०१४) यांनी आपल्या ग्रंथात महाराष्ट्रातील १०० वर्षे पूर्ण झालेल्या सार्वजनिक ग्रंथालयांची माहिती दिली आहे.^६
७. कांबळे व सावे (२०१४) यांनी आपल्या ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालयाची संकल्पना, इतिहास यांची सविस्तर माहिती व भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याची ओळख व त्यांचा तौलनिक अभ्यास दिला आहे. याशिवाय परदेशातील निवडक सार्वजनिक ग्रंथालय यांच्या सेवा दिल्या आहेत. याचा संशोधकाला संशोधनासाठी उपयोग झाला.^७
८. जैन (२००९) या ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान, ग्रंथालय समिती, ग्रंथोपार्जन, ग्रंथोपस्कार, नियतकालिके, देवघेव पद्धती, ग्रंथ पडताळणी व संदर्भ सेवा या संदर्भात माहिती दिली आहे.^८
९. फडके (२००७) यांनी सदर ग्रंथात, ग्रंथालयातील बारकोड तंत्रज्ञान, आर. एफ. आय. डी. तंत्रज्ञान संदर्भातील माहिती दिली आहे.^९

१०. बुवा (२००७) यांनी सदर ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालय म्हणजे काय, शासनमान्य सार्वजनिक ग्रंथालय वर्गवारीनुसार कर्मचारी संख्येबाबत विहित आकृतिबंध तसेच सामाजिक ग्रंथालयांना देण्यात येणारे शासकीय परिरक्षण अनुदानाच्या कमाल दराचे विवरणपत्र या संदर्भातील माहिती दिली आहे. संशोधकाला या माहितीचा संशोधनासाठी उपयोग झाला.^{१०}
११. कुलश्रेष्ठ (१९८८) यांनी सदर ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालयासंदर्भातील माहिती दिली आहे.^{११}
१२. थिटे (२०००) यांनी सदर ग्रंथात संशोधन विषयाची माहिती दिली आहे. या ग्रंथातील संशोधन स्पष्टीकरणाचा संशोधकाला उपयोग झाला.^{१२}
१३. मोरे (२०१०) यांनी या ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालयाची उद्दिष्टे, महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा, सार्वजनिक ग्रंथालयांना शासनमान्यता व अनुदान, राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान स्वरूप संदर्भातील माहिती दिली आहे.^{१३}
१४. नाडगौडे (१९८६) यांनी या ग्रंथात सर्वेक्षण पद्धतीची व्याख्या, नमुना निवड संदर्भातील माहिती दिली आहे. संशोधकाला या माहितीचा प्रश्नावली आणि सर्वेक्षणासाठी उपयोग झाला.^{१४}
१५. रिसवाडकर (२०००) यांनी सदर ग्रंथात संशोधन व्याख्या, संशोधनासंदर्भातील माहिती दिली आहे. संशोधन संदर्भातील माहितीचा उपयोग संशोधकास झाला.^{१५}
१६. भिंताडे (२००६) यांनी सदर ग्रंथात लेखकाने माहिती संकलनातील सर्वेक्षण तंत्राविषयीची माहिती दिली आहे. संशोधकाला या ग्रंथातून सर्वेक्षण तंत्राची व्याख्या व सर्वेक्षण संदर्भातील माहितीचा उपयोग माहितीच्या विश्लेषणासाठी आणि अनुमानासाठी झाला.^{१६}

१७. मुळे (१९८७) यांनी सदर ग्रंथात लेखकाने वर्णनात्मक संशोधन संदर्भात माहिती दिली आहे. संशोधकाला यासंदर्भातील माहितीचा उपयोग झाला.^{१७}

१८. जगताप (२००१) यांनी या ग्रंथात प्रचलित जागरूकता सेवा, निवडक माहिती प्रसारण सेवा, अनुदान सेवा संदर्भातील माहिती सविस्तर दिली आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयांचे कार्य समजावून घेण्यासाठी त्याचा उपयोग झाला.^{१८}

१९. झोडगे (२००९) यांनी महाराष्ट्र राज्य अंतर्गत अर्थसहाय्यक विविध योजनांची 'माहिती पुस्तिका' या माहिती पत्रिकेत राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठान व ग्रंथालय संचालनालय यांच्या सार्वजनिक ग्रंथालय विविध योजना व अर्थसहाय्याच्या संदर्भातील माहिती दिली आहे. या माहितीचा उपयोग संशोधकाला संशोधन पूर्ण करण्यासाठी झाला.^{१९}

२०. हंचाटे (२००५) यांनी सदर ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालय मार्गदर्शकामध्ये सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या योजना, सार्वजनिक ग्रंथालय वर्गीकरणाच्या अटी, सार्वजनिक ग्रंथालय शासन मान्यतेबाबतचे विहितनमुन्यातील प्रस्ताव, सार्वजनिक ग्रंथालयास आवश्यक असणारे व्यवस्थापकीय वर्ग, आर्थिक तरतूदीसंदर्भातील माहिती दिली आहे.^{२०}

२१. गुर्व (१९९८) यांनी या ग्रंथात युनेस्कोचा जाहिरनामा, २१ व्या शतकातील ग्रंथालयाचे स्वरूप इत्यादी संदर्भात माहिती दिली आहे.^{२१}

२२. पारखी (२००८) यांनी या ग्रंथामधून महाराष्ट्रातील ग्रंथालय चळवळ, ग्रंथालय संघाचे उद्देश, राष्ट्रीय पातळीवर कार्यरत भारतातील प्रमुख संघ, परदेशातील राष्ट्रीय पातळीवरील संघ तसेच ग्रंथालय कायद्याची आवश्यकता, महाराष्ट्रातील ग्रंथालय कायद्याचे स्वरूप, ग्रंथालय व्यवस्थापन, ग्रंथालय सहकार, सहकारी ग्रंथोपार्जन, सहकारी पुस्तक संच, आंतरग्रंथालयीन देवघेव, सहकारी तालिकीकरण, साखळी योजना, बहिःशाल योजना तसेच बालग्रंथालय व महिला ग्रंथालय यासंदर्भात उपयुक्त माहिती मिळते.^{२२}

२३. बावनकर (२०१०) या ग्रंथामधून महाराष्ट्रातील ग्रंथालयांची परंपरा, सार्वजनिक ग्रंथालयाची चळवळ, मुद्रणपूर्व कालखंड, मुद्रणोत्तर कालखंड, स्वातंत्र्योत्तर कालखंडातील ग्रंथालय चळवळीचा विकास याबाबत उपयुक्त माहिती मिळाली, त्याचा संशोधनास उपयोग झाला.^{२३}
२४. Widdowson (१९६८) यांनी सदर ग्रंथातून संशोधन व्याख्या संदर्भातील माहितीचा उपयोग संशोधकाला झाला.^{२४}
२५. Thomas(२००५) यांनी या ग्रंथात राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठानच्या असमान अर्थसहाय्य योजनेसंदर्भातील माहिती दिली आहे.^{२५}
२६. महाजन (२०११) यांनी या ग्रंथात १९२१ ते २०१० या काळातील महाराष्ट्रातील ग्रंथालय चळवळीस कोणी योगदान दिले याविषयीचे सविस्तर माहिती दिली आहे.^{२६}
२७. दाइंगडे (२०१६) यांनी या ग्रंथात महाराष्ट्र ग्रंथालय कायदा (१९६७) कायद्याची ठळक वैशिष्ट्ये, महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय सेवा, भारतातील ज्या राज्यात ग्रंथालय कायदे आहेत, त्या सर्व राज्यांतील कायद्याची सविस्तर माहिती दिली आहे. संशोधकाला महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याचा अभ्यास करण्यासाठी या माहितीचा उपयोग झाला.^{२७}
२८. आगलावे (२०००) यांनी या ग्रंथामध्ये संशोधन पद्धतीबाबत संशोधनास सहाय्यक अशी माहिती दिली आहे. लेखकाने संशोधन पद्धती, त्याची तंत्रे, प्रश्नावली, मुलाखत या तंत्रांविषयी माहिती दिलेली आहे. सदर ग्रंथाचा उपयोग संशोधिकेला प्रश्नावलीची व्याख्या तसेच विषयाला अनुसरून प्रश्नांची निवड कशी करावी हे जाणून घेण्यासाठी झाला.^{२८}

२९. कच्हाडे (१९९७) यांनी संशोधन पुस्तकात संशोधन पद्धती म्हणजे काय? हे संशोधनाच्या विविध व्याख्या देऊन स्पष्ट केलेले आहे. त्याचप्रमाणे संशोधन पद्धतीचे सिद्धांत स्पष्ट केले आहेत. या ग्रंथाचा उपयोग संशोधकाला संशोधन करीत असताना झाला.^{२९}
३०. करमरकर (१९९६) यांनी सदर पुस्तकात आदर्शग्रंथालयाचे संघटन कसे करावे याविषयी माहिती दिली आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयाचे संघटन कसे असावे याविषयीची माहिती संशोधकाला या ग्रंथातून उपलब्ध झाली.^{३०}
३१. पाटील (२००५) यांनी प्रस्तुत ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालयाची सखोल माहिती विविध प्रस्तावांच्या आणि पत्रांच्या विहित नमुन्यासह दिली असल्याने त्याच्या आधारे सार्वजनिक ग्रंथालय सुरू करण्यास, चालविण्यास व प्रगतिपथावर नेण्यास शासनाच्या व राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठानाच्या विविध योजनांचा व निधीचा लाभ घेण्यास व उत्तम प्रकारे कामकाज करण्यास उपयुक्त अशी माहिती दिलेली आहे.^{३१}
३२. चितळे (१९९०) यांनी ग्रंथात ग्रंथालयीन प्रशासन कसे असावे? हे प्रशासन चालवत असताना कोणत्या बाबी विचारात घ्याव्यात? वाचकानुसार ग्रंथालयात कोणत्या प्रकारचे वाचन साहित्य असावे? तसेच प्रशासन कशा प्रकारे हाताळावे, या प्रशासनाची तत्त्वे कोणती असावीत आणि या तत्त्वानुसार व्यवहार कसे असावेत? याची सखोल चर्चा लेखिकेने 'ग्रंथालय प्रशासन तंत्र आणि व्यवहार' या ग्रंथात केलेली आहे.^{३२}
३३. कर्णिक (२००२) यांनी सदर ग्रंथात संशोधन म्हणजे काय हे सांगून नवीन संशोधन करणाऱ्या संशोधकांना विषयाची निवड करण्यापासून ते संपूर्ण प्रबंध पूर्ण होईपर्यंत मार्गदर्शन करणारा असा हा मार्गदर्शक ग्रंथ आहे. सदर ग्रंथाचा उपयोग संशोधिकेला संपूर्ण प्रबंध कसा लिहावा हे जाणून घेण्यासाठी झाला.^{३३}
३४. भांडारकर (१९८१) यांनी प्रस्तुत ग्रंथामध्ये संशोधन प्रक्रिया, संशोधन समस्या, गृहितके, त्यांचे स्वरूप, इ.विषयी विवेचन केलेले आहे. तसेच तथ्य संकलन, त्यांची

विविध तंत्रे, प्रश्नावली, निरीक्षण यांचे संशोधनातील महत्त्व याविषयीचे विवेचन केलेले आहे. सदर ग्रंथाचा उपयोग संशोधन प्रक्रिया, संशोधन समस्या, गृहितकृत्ये त्यांचे स्वरूप इत्यादीविषयीची माहिती घेण्यासाठी झाला.^{३४}

३५. नरगुंदे (२०१३) यांनी या ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालयाचे स्वरूप व महत्त्व, सार्वजनिक ग्रंथालयाची कार्ये, ध्येये व उद्देश, कार्य, ग्रंथसहाय्य उद्देश, राजा राममोहन रॉय लायब्ररी फाऊंडेशनची उद्दिष्टे, कार्य, ग्रंथसहाय्य कार्यक्रम, विशेष कार्यक्रम यांची माहिती दिली आहे. युनायटेड किंग्डममधील व युनायटेड स्टेट्समधील सार्वजनिक ग्रंथालय सेवांची माहिती यातून मिळते. त्याचा संशोधकाला संशोधनासाठी उपयोग झाला.^{३५}

३६. आर्वीकर (२००७) यांनी या ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालय आणि ग्रंथालय संघाचे उत्तरदायित्व, सार्वजनिक ग्रंथालयाची स्थिती, अडचणी आणि मार्ग, सार्वजनिक ग्रंथालयातील वाचन साहित्य, सार्वजनिक ग्रंथालयातील ग्रंथपाल, सार्वजनिक ग्रंथालय, सार्वजनिक ग्रंथालयाचे निधी स्रोत इत्यादींची माहिती दिली आहे.^{३६}

३७. Princeton (१९५८) या ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या इमारतीची व ग्रंथालय आराखड्यासंबंधी, माहिती व तसेच ग्रंथालयातील विविध विभागांचा आराखडा दिला आहे. संशोधकाला या माहितीचा उपयोग संशोधनासाठी झाला.^{३७}

३८. निकोसे (२००७) यांनी या ग्रंथात ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र क्षेत्रातील संशोधनाचा आढावा घेतला आहे. संशोधनातील ग्रंथपालाची भूमिका, साहित्य शोध, त्यांचे महत्त्व व उद्दिष्टे याबाबत विवेचन केले आहे. तसेच ग्रंथपाल व माहितीशास्त्रात पूर्व संशोधनाचा आढावा कसा घ्यावा, त्यासाठी कोणती साधने वापरावी ह्याची माहिती दिली आहे. तसेच लेखनतंत्र, तळटिपा, संदर्भसूची याबाबतचे विवेचन केले आहे.^{३८}

३९. पारखी (१९३३) यांनी ह्या ग्रंथात ग्रंथालये भारतात कशी व कधी सुरू झाली. ग्रंथालयांचा विकास कसा झाला. त्या काळात ग्रंथालयाची स्थिती याबाबत सर्व माहिती विस्तृतपणे विषद केलेली आहे.^{३९}

४०. लेले (२०१२) ह्यांच्या ग्रंथात प्रकरण ३ मध्ये भारतातील सार्वजनिक प्रणाली, ग्रंथालय कायदा, सार्वजनिक ग्रंथालयासाठी राष्ट्रीय धोरण, सार्वजनिक ग्रंथालयांसंबंधी राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठानचे योगदान याची माहिती आहे.^{४०}

४१. नातु (१९८४) यांनी या ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालयातील वाचनालय काही चांगली सार्वजनिक ग्रंथालये व त्यांचे उपक्रम, सार्वजनिक ग्रंथालयांचे वाचकवृद्धीसाठीचे उपक्रम, नाशिक जिल्हयातील ग्रंथालयाचा प्रसार सार्वजनिक ग्रंथालयापुढील काही समस्या, सार्वजनिक ग्रंथालयांना मिळणारी विविध अनुदाने त्याप्रमाणे सार्वजनिक ग्रंथालयाची तपासणी इत्यादींची माहिती दिली आहे.^{४१}

२.३.२. संशोधन नियतकालिकातील वाचनसाहित्याचा आढावा :

१. सोनावणे व पाटील (२०१३) यांच्या लेखात अभ्यासकाने संशोधन संबंधीच्या अनेक गोष्टी विचापूर्वक मांडल्या आहेत. त्यात प्रामुख्याने संशोधन म्हणजे काय, त्याची गरज, व्याख्या आणि संशोधनाचे नीतीशास्त्र यावर चर्चा केली आहे. संशोधनाचे प्रमुख उद्देशही सांगितले आहेत.

ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र या विषयात संशोधन करताना वाचकांचा कसा फायदा होईल, ते पाहून खालील बाबींचादेखील विचार केला पाहिजे .

१. ग्रंथालय विकासात आणि माहितीशास्त्राच्या सिद्धान्तात भर टाकणे.

२. विवेक विचार, निर्णय क्षमता उद्धृत करणे.

३. ग्रंथालय संचालित नाविन्यपूर्ण बदल.

सामाजिक, व्यावसायिक बांधिलकी आणि जबाबदारी

या लेखनाच्या अभ्यासावरून संशोधन कार्य करताना एकाग्रता, चिकाटी, प्रमाणिकपणा, संयम, वस्तुनिष्ठता, गोपनीयता, कार्यक्षमता आणि सामाजिक जबाबदारी या गोष्टींचे भान ठेवून काळजी घेतली, तर संशोधन उत्कृष्ट दर्जाचे होऊन समाजाला त्याचा फायदा होऊ शकतो. असे मत मांडले आहे.^{४२}

२. चिकटे (२०१२) यांनी या लेखात संशोधन अहवाल लेखनाची तंत्रे हा विषय चर्चीला आहे. संशोधन अहवाल तयार करित असताना कोणकोणत्या प्रकारचे साहित्य पाहिले पाहिजे, त्यासाठी मत कसे मांडावे, अहवाल कशाप्रकारे तयार करावा आणि तो तयार करताना काय काळजी घेतली पाहिजे इत्यादी विषयी मार्गदर्शन या लेखात केले आहे. यासाठी लेखकाने खालील मुद्द्यांचा आधार घेतला :

१. साधनांची ओळख आणि मूल्यमापन (Identifying and Evaluating Resources)

२. वाङ्मयचौर्य टाळा आणि साधनांना तळटीपा द्या. (Avoiding plagiarism and Quoting Sources)

३. उद्धृत का आणि कसे करावे (Why and How Should Quote)

४. अर्थानुवाद (Paraphrasing)

५. मजकुरातील आणि ग्रंथसूचीतील संदर्भ (Referencing in texts and in Bibliographies)

संशोधन अहवाल तयार करते वेळी जसा सुयोग्य संशोधन आराखडा तयार करणे गरजेचे असते. तसेच हा अहवाल लिहिण्यापूर्वी जर नवीन अभ्यासकाने वरील मुद्द्यांचा पर्यायाने या लेखाचा विचारपूर्वक अभ्यास केला, तर तो अहवाल निश्चितच चांगला होईल. या लेखाच्या अभ्यासावरून संशोधन करताना कोणत्या गोष्टी टाळाव्यात आणि कोणत्या गोष्टी पाळाव्यात हे लक्षात आले.^{४३}

३. बर्वे आणि महाले (२०१२) यांनी संशोधनाचे असाधारण महत्त्व जसे संशोधकाला महत्त्वाचे आहे. तसेच ते ग्रंथपालांनादेखील समजावे या करता 'संशोधनातील विविध टप्प्यांत ग्रंथालयाचे उपयोजन' या विषयावर लेख लिहिला आहे. संशोधकाला त्याचे संशोधन करित असताना माहितीची आवश्यकता असते. ती तो ग्रंथालयाकडून, इंटरनेटच्या माध्यमातून, ऑनलाईन, ऑफलाईन, व्यक्तीकडून, संस्थेकडून, विद्यापीठे, संशोधन संस्था यांकडून मिळवीत असतो. परंतु प्रत्येक संशोधकांस माहिती मिळतेच असे नाही. यांकरिता ग्रंथालयांकडून त्याला संदर्भसेवा पुरविली जातेच परंतु त्याहीपेक्षा

जास्त किंवा वेगळ्या सेवेची त्याला अपेक्षा असते. दिवसेंदिवस वैज्ञानिक प्रगती होत चालली आहे. यामुळे योग्य माहिती जलदगतीने संशोधकास दिल्यास त्याचा वेळ, पैसा व श्रम वाचतात. त्याचबरोबर संशोधनकार्यही प्रभावी होण्यास मदत होते. प्रस्तुत लेखात याविषयी अधिक विस्तृत माहिती दिलेली आहे.^{४४}

४. रेहपाडे आणि पराडकर (२००९) यांनी या लेखात ए.पी.ए., एम.एल.ए. आणि सी.एम.एस. या लेखनशैली मार्गदर्शिकांविषयी चर्चा केली आहे. संशोधनाच्या अहवालात ज्या तऱ्हेचे लेखन केले जाते, त्याला आपण विवेचनात्मक लेखन असे म्हणतो. आपल्या विवेचनाच्या पुष्ट्यार्थ अनेकदा संशोधकाला आधी झालेल्या संशोधनाचे दाखले द्यावे लागतात. त्याचप्रमाणे तज्ज्ञांची मते उद्धृत करावी लागतात. अशी मते ही विशिष्ट प्रकारची लेखनशैली वापरून लिहावी लागतात म्हणून या लेखाचा अभ्यास शैक्षणिक संशोधन कामी उपयुक्त ठरला.^{४५}

५. बुवा आणि वायंगणकर (२००७-०८) यांनी या लेखात संशोधन करताना संशोधक वेगवेगळ्या पद्धतीने संशोधक प्रबंधाची मांडणी करतो. प्रबंध लिहिताना ज्या निरनिराळ्या पद्धती उपलब्ध आहेत, त्यांतील मुलभूत फरक यांविषयी माहिती दिली आहे. यात स्टार्डल मॅन्युअल्सचा संक्षेपाने परिचय करून देण्यात आला आहे. शोधलेख, प्रबंध, ग्रंथ यांतील साहित्यस्रोतांची साठवण करण्यासाठी शिकागो स्टार्डल मॅन्युअल तयार करण्यात आले. या मॅन्युअल्समध्ये वापरावयाची स्पेलिंग्ज, संक्षेपरूपे, सामान्यनामे, पर्याय संज्ञा ह्यादेखील प्रमाणित करणे गरजेचे असते. हे या अभ्यासातून लक्षात येते. ए.पी.ए. स्टार्डल मॅन्युअल्स हे अमेरिकन सायकॉलॉजी असोसिएशन नियतकालिकांच्या प्रकाशनासाठी प्रमाणित केलेले आहे. यातील नमुने हे मानसशास्त्र व शिक्षण यांसंबंधी शास्त्रीय लेखनासाठी अधिकृत दर्जा असलेले आहेत. ही माहिती या लेखावरून समजली.^{४६}

६. कांबळे (२००९) यांनी या लेखात सार्वजनिक ग्रंथालयांचा गुणात्मक व संख्यात्मक विकास व्हावा, या विचाराने १९७० च्या नियमांत जे बदल झाले, ते सांगितले आहे. ते थोडक्यात पुढीलप्रमाणे :

१. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या शासनमान्यतेच्या अटींतील बदल
२. वार्षिक परिरक्षण अनुदानाच्या दरात झालेले बदल
३. सार्वजनिक ग्रंथालय निर्मितीत झालेली वाढ
४. नवीन शासकीय जिल्हा ग्रंथालयाची स्थापना
५. सार्वजनिक ग्रंथालये व कार्यकर्ते यांच्या कार्यास उत्तेजन देणारे पुरस्कार इत्यादीची माहिती या लेखातून झाली.^{४७}

७. कुंभार (२००९) यांनी राष्ट्रीय ज्ञान आयोग आणि सार्वजनिक ग्रंथालये या लेखात सार्वजनिक ग्रंथालयाचा आधुनिकीकरण करण्याच्या संदर्भात ग्रंथालयासाठी कोणकोणत्या प्रकारची मोफत आज्ञावली इंटरनेटवर उपलब्ध आहेत, ह्याची माहिती दिलेली आहे. Koha, New Genlib यांसारख्या आज्ञावलींचा वापर करून ग्रंथालयातील उपार्जनापासून देवघेवीपर्यंतची सर्व कार्ये संगणकाच्या पद्धतीने करता येतात, हे सांगितले आहे. राष्ट्रीय ज्ञान आयोगाने ग्रंथालयासंबंधी २००६ मध्ये शिफारशी केल्या आहेत. या शिफारशींमधून राष्ट्रीय ज्ञान आयोगाच्या ग्रंथालयासंबंधीच्या अपेक्षा लक्षात येतात. राष्ट्रीय ज्ञान आयोगाने सार्वजनिक ग्रंथालयांचे नेटवर्कींगच्या संदर्भात २०११ पर्यंत देशातील ६४,००० ग्रंथालयांचे नेटवर्कींग पूर्ण करावे, असे आयोगाने सुचविले आहे. हे तीन टप्प्यात करावे. त्यासाठी मोफत आज्ञावली विकसित व्हावी, असे सुचविले.^{४८} हे या अभ्यासातून लक्षात आले.

८. कोरे (२००९) यांच्या 'वाचाल तर वाचाल' या लेखात यांच्या मते पुस्तके तारूप्यपणात मार्गदर्शन करतात आणि वृद्धपणी मनोरंजन करतात. परंतु अलिकडे दूरदर्शनमुळे वाचण्याऐवजी ऐकण्यात व पाहण्यातच मने गुरटून गेली. अशा परिस्थितीत बदलत्या ज्ञानाचा वेध घेऊन, वाचकांना अद्ययावत माहिती पुरवून आपले व्यावसायिक

कौशल्य वाढविण्याकरता वाचनाची कास धरली पाहिजे. म्हणूनच 'वाचाल तर वाचाल' ही सध्याच्या काळाची हाक सयुक्तिक वाटते व त्यासाठी ग्रंथालयांनी प्रयत्नशील व्हायला हवे. असे मत सदर लेखात लेखकाने मत मांडले आहे.^{४९}

९. पाटील (२०१०) यांनी आपल्या लेखात आजच्या टी. व्ही. च्या युगात वाचनाची प्रवृत्ती झपाट्याने कमी होत आहे. आजच्या युगात बहुसंख्य सुखवस्तू मध्यमवर्गीय कुटुंबात टी. व्ही., टेपेकॉर्डर आढळते. मात्र पुस्तकाचे कपाट आढळतेच असे नाही. महाराष्ट्रासारख्या पुरोगामी व प्रगतीशील समजल्या जाणाऱ्या राज्यात गाव तेथे शाळा झाली आहे. गाव तेथे ग्रामपंचायत झालेली आहे. मात्र गाव तेथे ग्रंथालय अद्यापही नाही. ग्रंथालयाच्या वृद्धीकडे लक्ष देणे आता काळाची गरज आहे. त्यासाठी सार्वजनिक ग्रंथालयाची निर्मिती होणे गरजेचे आहे.^{५०}

१०. साखळकर (२००६) यांच्या वाचन संस्कृती संवर्धनासाठी गोवा सरकारचा अनुकरणीय उपक्रम या लेखात गोवा शासनाचे शिक्षण संचालनालयाने २७ मे २००५ च्या आदेशाने इयत्ता आठवीपासून पुढे प्रवेश घेणाऱ्या प्रत्येक विद्यार्थ्याने त्याच परिसरातील कोणत्याही सार्वजनिक वाचनालयाचे सभासद होणे अनिवार्य केले आहे. या सुसंस्कृत उपक्रमामुळे विद्यार्थी वाचक वर्ग वाचक ग्रंथालयामध्ये येईल. केवळ त्याच्या कुटुंबातही यामुळे वाचनसंस्कृती वाढीला लागेल. वाचक कमी झाल्याने मरगळ आलेली आपली ग्रंथालयेही अधिक कार्यक्षम होऊ शकतील. त्यांच्या मते, केवळ अनुदान वाढीने वाचन संस्कृती निर्मिती अशक्य आहे.^{५१} हे निरीक्षण मार्गदर्शक ठरले.

११. शेवाळे (२०११) या लेखामध्ये ग्रंथालय शिक्षण, त्याचे महत्त्व, भारतीय ग्रंथालय चळवळीचे जनक डॉ.एस.आर. रंगनाथन यांचे ग्रंथपाल प्रशिक्षणासंदर्भातील कार्य, त्याचे ऐतिहासिक महत्त्व, भारतीय शिक्षण आयोग- डॉ.राधाकृष्णन समिती अहवाल, विद्यापीठ अनुदान आयोग, कोठारी आयोग, रंगनाथन समिती, कौला समितीनी त्यांनी

ग्रंथालय शिक्षण क्रमात सुचविलेली पुनर्रचना यासंदर्भात माहिती मिळते. आधुनिक काळानुरूप ग्रंथालय व्यवस्थापन व शिक्षणात बदल झाल्याचे यातून लक्षात येते.^{५२}

१२. कोणूर (२००३) यांनी शिक्षण संक्रमणासाठी ग्रंथालये : बहिःशल कामे या लेखात त्यांनी ग्रंथालयाचे प्रकार, ग्रंथालयात वाचक कशा प्रकारे आकृष्ट होतो. त्याचप्रमाणे वाचकसंस्कृती कशी वाढवावी समाजाला वाचनाकडे कसे वळवावे. वाचनाची आवड निर्माण होण्याची कारणे कोणती? अशा रितीने ग्रंथालय समृद्ध होण्यासाठी कशी मदत होईल. वाचन संस्कृती जोपासण्यासाठी काय करता येईल, यासाठी कोणते बहिःशल उपक्रम करता येतील याबाबत माहिती दिली आहे.^{५३}

१३. खले (२००७) यांनी सुसंस्कृत समाजाच्या घडणीसाठी वाचन संस्कृतीची आवश्यकता या लेखात त्या लिहितात, आज विविध प्रकारची साहित्य संमेलने भरविली जातात. त्यांच्या माध्यमातून वाचन संस्कृती जागी करण्याचे कार्य मोठ्या प्रमाणावर केले जात आहे. गाव तेथे ग्रंथालय ही चळवळ सुरू झालेली आहे. त्यामुळे खेड्यातला प्रत्येक माणूस चावडीत बसून त्यांचे वाचन करून त्यावर संवाद, चर्चा करतो आहे. त्याचबरोबर ग्रंथांचा महिमा, ग्रंथाचा उपयोग, ग्रंथाच्या बाबत असणारी कालची व आजची परिस्थिती कशी बदलते आहे, याचे वर्णन त्यांनी केले आहे.^{५४}

१४. बारसे (२०११) यांनी या लेखात ग्रंथालय संगणकीकरण उपक्रमाबाबत माहिती दिली आहे. ती माहिती देताना कोहा या मोफत संगणक प्रणालीची ओळख करून दिली आहे. माहिती संप्रेषण तंत्रज्ञानातील बदलत्या घडामोडींमुळे ग्रंथालयाची उत्क्रांती, पारंपरिक ग्रंथालयापासून ते इलेक्ट्रॉनिक ग्रंथालये, डिजिटल ग्रंथालये व व्हर्च्युअल ग्रंथालये अशी झालेली दिसून येते. माहिती तंत्रज्ञानाचा प्रभाव ग्रंथालयांवरही पडलेला यातून दिसून येतो. या प्रभावांमुळे अनेक ओपन सोर्स सॉफ्टवेअर अस्तित्वात आली आहेत. अशी सॉफ्टवेअरर्स हाताळायला सोपी आणि कमी किमतीची असतात. हे या अभ्यासावरून समजले.^{५५}

१५. देवधर (२०१०) यांनी या लेखात 'ग्रंथालय आणि माहिती' जाळी यांविषयी सखोल चर्चा केली आहे. माहिती तंत्रज्ञान युगात ग्रंथालयांना उच्च दर्जाच्या, अधिक परिणामकारक सेवा देण्यासाठी माहिती आणि ज्ञानसाधनांचा संग्रह, पुनःप्राप्ती या सेवा सहज, सुलभ, विनाविलंब होण्यासाठी ग्रंथालयांना माहिती तंत्रज्ञानाचा अंगिकार करणे अनिवार्य झाले आहे. संगणक हे एक महत्त्वाचे साधन ग्रंथालयात वापरण्यात येऊ लागल्याने ग्रंथालय जाळे वाचकांत प्रिय होऊ लागले आहे. देशातील कोणत्याही कोपऱ्यातील ज्ञानसंपदा आता सर्वांना उपलब्ध होऊ लागली आहे. एका ग्रंथालयाचा दुसऱ्या ग्रंथालयाशी संपर्क प्रस्थापित करण्यास जाळे हातभार लावते. यामुळे विचार कल्पनांची देवघेव कमी वेळात, कमी खर्चात होत आहे. प्रकाशित वाचन साहित्यात प्रचंड प्रमाणात वाढ, प्रकाशनांच्या वाढत्या किंमती, वाचकांच्या विविध मागण्या, घटते मनुष्यबळ आणि तंत्रज्ञानाचा वाढता प्रभाव यामुळे ग्रंथालय जाळ्यांमध्ये वाढ होत आहे. हे या लेखाच्या अभ्यासावरून स्पष्ट झाले.^{५६}

१६. कुंभार (२००७) यांनी सदर लेखात राष्ट्रीय ग्रंथालय मंडळाची कार्ये, ग्रंथालय सेवांसाठी आकृतिबंध, विविध प्रकारच्या ग्रंथालयांसाठी आवश्यक असणारे मनुष्यबळ, वाचनसाहित्यसंग्रह विकासासाठी मार्गदर्शक सूचना, सार्वजनिक ग्रंथालयातील वाचनसाहित्य संग्रह, ग्रंथालयांनी पुरवावयाच्या सेवांचे प्रकार, सार्वजनिक ग्रंथालयांचे नेटवर्किंग कसे करावे, याविषयी विस्तृत माहिती मांडली आहे.^{५७}

१७. घुगे (२०१०) यांनी सदर लेखात विद्यार्थी व समाजातील सर्व क्षेत्रातील सर्व नागरिकांना पुरक ठरणारी व सहाय्यक ठरणारी ग्रंथालये असतात. मात्र आता शिक्षणाबरोबरच आवश्यक असणारी माहिती ज्ञान किंवा डेटा ही राष्ट्रीय संपत्ती मानली जाते. तिच्यासाठी संपूर्ण सामाजाकडून मागणी येत राहते. व्यापक माहिती व वाढती मागणी या गोष्टी आधुनिक तंत्रशिवाय पूर्ण करता येत नाहीत. म्हणून ग्रंथालयात माहिती तंत्रज्ञानाचा उपयोग केला जातो. गरजेची माहिती वाचकांना अल्पवेळेत मिळाली तरच वाचक ग्रंथालयाकडे वळू शकतो, असे मत मांडले.^{५८}

१८. कुंभार (२००८) यांनी या लेखात ओपन सोर्स सॉफ्टवेअर म्हणजे काय? अशा सॉफ्टवेअर्सचा उद्देश, स्वरूप आणि फायदे यांबाबतची माहिती दिली आहे. ग्रंथालयाशी संबंधित ओपन सोर्स सॉफ्टवेअर्स कोणते आहेत, ते सांगितले आहेत.^{५९}

१९. पाठक (२००६) यांनी या लेखात सार्वजनिक ग्रंथालयाची वेबसाईट कशी तयार करावी, या संदर्भात माहिती दिली आहे.^{६०}

२०. पंडित (२००७) यांनी या लेखात हस्तलिखिते म्हणजे काय, हस्तलिखितांचे प्रकार, हस्तलिखितांच्या लेखनाची सामग्री या संदर्भातील माहिती दिली आहे. सदर शोधप्रबंध पूर्ण करण्यासाठी संशोधकाने संदर्भातील माहितीचा उपयोग केला.^{६१}

२१. जोशी (२०१२) 'लोकप्रभा' या मासिकातून 'परवड सेवकांची' या सदरामधील ग्रंथालय सेवक, मानवी जीवनात सार्वजनिक ग्रंथालयाचे महत्त्व इत्यादी मुद्याची माहिती दिली आहे.^{६२}

२.३.३. वेबसाईट :

१. ग्रंथालय चळवळ (२०११) ग्रंथालय चळवळ : अगतिकता आणि आधुनिकता या लेखात Articleshow या वेबपेजवरून ग्रंथालय संदर्भातील माहिती घेतली.^{६३}

२. ग्रंथालय संचालनालय (२०११) सार्वजनिक ग्रंथालयांना शासन मान्यता व अनुदान या वेबवरून परिरक्षण अनुदान संदर्भातील माहिती घेतली.^{६४}

३. Need of legislation (2011) सदर Need of legislation या वेबपेजवरून ग्रंथालय कायद्याची यासंदर्भातील माहिती घेतली.^{६५}

२.३.४. दैनिक वर्तमानपत्रे :

१. दै. लोकसत्ता (२०१०) 'वाचन संस्कृतीच्या संवर्धनासाठी सार्वजनिक ग्रंथालयाची आवश्यकता' या लेखामध्ये, वाचन संस्कृतीच्या संवर्धनासाठी सार्वजनिक ग्रंथालये कशी उपयुक्त आहेत, हे सांगितले आहे. तसेच ती अजून कशी चांगली होऊ शकतात याची दिशा स्पष्ट करून ग्रंथालयांच्या विकासीतील समस्यांची चर्चा केली आहे.^{६६}
२. दै. लोकसत्ता (२०११) पुणे मराठी ग्रंथालय, ग्रंथाइतकेच कार्यकर्त्यांचेही वैभव या वृत्तपत्र लेखात पुणे मराठी ग्रंथालयाचा पूर्वइतिहास दिला आहे. १९११ साली स्थापन झालेल्या या ग्रंथालयाचे शतक महोत्सवी वर्ष साजरे झाले. तसेच मागील शंभर वर्षांपासूनच्या नियतकालिकांचा संग्रह असल्याची माहिती दिली आहे. या लेखामधून सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या व्यापक सामाजिक कार्याची माहिती मिळते.^{६७}
३. दै. लोकमत (२०११) 'ग्रंथालयातल्या कपाटात गुदमरलेल्या पुस्तकांना मिळेल चिमूटभर प्रकाश, थोडा वारा आणि वाचकांचा स्पर्श' या वृत्तपत्र लेखात राजाश्रय व लोकाश्रय नसलेल्या महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयातील वातावरण व सार्वजनिक ग्रंथालयात चालणाऱ्या कामकाजांची व वाचक प्रतिसादाची माहिती दिली आहे.^{६८}
४. दै. लोकमत (२०१२) 'राज्यातील ग्रंथालय अनुदान ५० टक्के वाढले.' या वृत्तपत्र लेखात शासनमान्य ग्रंथालय अनुदान १ एप्रिल २०१२ पासून ५० टक्के वाढ केल्याची माहिती दिली आहे. त्याचबरोबर 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाचा दर्जा निकष बदललेले आहेत. या संदर्भात माहिती दिली आहे.^{६९}
५. दै. सकाळ (२०१०) 'ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांची फाईल लटकली मंत्रालयात' या वृत्तपत्र लेखात राज्यातील सार्वजनिक ग्रंथालयातील सेवकांच्या वेतनश्रेणी व सेवाशर्तीच्या प्रश्नासंदर्भातील फाईल मंत्रालयात आहे. परंतु प्रशासन व शासनाच्या उदासिनतेमुळे त्याकडे

दुर्लक्ष होत आहे व राज्यातील ग्रंथालय कर्मचारी वेतनश्रेणी व सेवाशर्तीपासून वंचित आहेत. यासंबंधी माहिती मिळते. यातून ग्रंथालय सेवकांच्या समस्या ध्यानी देतात.^{७०}

६. दै. लोकमत (२०११) 'जागेचं काय करायचं' या लेखात सार्वजनिक ग्रंथालयास भेडसावणाऱ्या जागेच्या समस्येची थोडक्यात माहिती दिली आहे. त्याचबरोबर १९६७ च्या कायदानुसार इमारत अनुदान कमी असल्याची माहिती दिली आहे.^{७१}
७. दै. महाराष्ट्र टाईम्स (२०१३) 'लायब्ररीही आता होतहेत 'हायटेक'' या वृत्तपत्र लेखात पुस्तके, माहितीच्या लिंकसाठी 'क्यू आर कोड' चा वापर कसा करावा, कोणत्या कामासाठी ग्रंथालयात 'क्यू आर कोड' वापरतात. तसेच सर्वात महत्त्वाचे म्हणजे हा कोड मोफत उपलब्ध आहेत. यांची माहिती मिळते. कर्वे समाज सेवा संस्थेत प्रायोगिक तत्त्वावर ही योजना संस्थेच्या लायब्ररीत अमलातही आणली. याविषयीची माहिती दिली आहे.^{७२}
८. दै. लोकमत (२०१७) 'ग्रंथालयांच्या प्रश्नाचे काय?' या वृत्तपत्र लेखात सार्वजनिक ग्रंथालयात वाढ झाली पाहिजे. 'गाव तिथे वाचनालय' ही उभारले गेले पाहिजे. या संदर्भात माहिती मिळते तसेच ग्रंथालयामध्ये कार्यरत असणाऱ्या ग्रंथसेवकांच्या वेतनश्रेणीबाबत माहिती दिली आहे.^{७३}
९. दै. सकाळ (२०११) ग्रंथालय अनुदानात वाढीची शक्यता या वृत्तपत्र लेखात राज्यात एकूण किती ग्रंथालये आहेत. त्यात किती कर्मचारी कार्यरत आहेत, त्यांना ग्रंथालय संचालनालयाकडून किती निधी देण्यात येतो. याबाबत माहिती मिळते.^{७४}
१०. दै. लोकसत्ता (२०१६) 'सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा कालबाह्य' या वृत्तपत्र लेखात गोवा राज्यातील ग्रंथालय कायद्याविषयी माहिती दिली आहे. गोव्यातील सार्वजनिक ग्रंथालये कशाप्रकारे योजना राबवून वाचकांमध्ये वाचनाची आवड निर्माण करतात, यामधून याची माहिती मिळते.^{७५}

२.४. एम. फिल. लघुशोध प्रबंधिका :

१. राऊत (२००८) यांनी 'सातारा शहरातील नगर वाचनालयातील साखळी योजनेचा अभ्यास' या लघुशोध प्रबंधिकेमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालय सेवकांचे शिक्षण, अर्वाचीन काळातील ग्रंथालय, महाराष्ट्रातील ग्रंथालय चळवळीचा उदय आणि विकास आदी मुद्द्यांचा सदर संशोधनामध्ये उपयोग केला.^{७६}
२. क्षीरसागर (२००८) 'सातारा जिल्ह्यातील सार्वजनिक ग्रंथालय चळवळीचा अभ्यास' या लघुशोध प्रबंधिकेमध्ये सातारा जिल्ह्यातील सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या चळवळीचा शोध घेतला आहे.^{७७}
३. लोखंडे (२००९) यांनी 'महाराष्ट्रातील राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७ नुसार करवीर तालुक्यातील सार्वजनिक ग्रंथालयाचा विकास : एक अभ्यास' या लघुशोध प्रबंधिकेमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालय म्हणजे काय, सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७, सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या विविध प्रस्तावाबाबतची माहिती दिली आहे.^{७८}
४. पाटोळे (२००८) यांनी 'सातारा जिल्ह्यातील सार्वजनिक ग्रंथालय राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठानचे योगदान' या लघुशोध प्रबंधिकेमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालय म्हणजे काय, सार्वजनिक ग्रंथालयास मिळणारे विविध प्रकारचे आर्थिक योगदान, राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठान सार्वजनिक ग्रंथालयास कोणकोणत्या प्रकारचे आर्थिक साहाय्य करते. इत्यादी बाबींचा अभ्यास केला आहे.^{७९}
५. मोरे (२००८) यांनी 'सोलापूर जिल्ह्यातील 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयातील सेवक : एक अभ्यास' या लघुशोध प्रबंधिकेमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालयातील सेवक, सेवक पदनाम, सेवकांची शैक्षणिक पात्रता, सेवकांचे वेतन, शासनाचा सेवक आकृतिबंध, सेवकांची संघटना, त्यांना मिळणाऱ्या सवलती, रजा तसेच महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७, सार्वजनिक ग्रंथालयांचा इतिहास इत्यादी बाबींचा अभ्यास केला आहे.^{८०}

६. पाटील (२००८) यांनी 'कोल्हापूर जिल्ह्यातील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या गरजा आणि समस्या यांचा अभ्यास' या लघुशोध प्रबंधिकेमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालयाचे महत्त्व, महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालय चळवळ, महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७, ग्रंथालय स्थापनेचे निकष, राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान, कोल्हापूर जिल्ह्यातील सार्वजनिक ग्रंथालय चळवळ, कोल्हापूर जिल्ह्यातील अ व ब दर्जाच्या ग्रंथालयाचा आढावा इत्यादी मुद्द्यांचा अभ्यास केला.^{८१}

७. खलाटे (२००९) यांनी 'फलटण शहरातील सार्वजनिक ग्रंथालयातील वाचकांच्या वाचन अभिरूचीचा अभ्यास' या लघुशोध प्रबंधिकेमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालयाचे महत्त्व, सार्वजनिक ग्रंथालयात येणारा मोठा वाचकवर्ग, ग्रंथालयाचा उपभोग घेणारा वाचक कोणकोणत्या प्रकारच्या साहित्याची मागणी करतात, इत्यादी बाबींचा अभ्यास केला आहे. या लघुशोध प्रबंधामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विविध घटकांची आणि सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या पूर्वस्थितीची माहिती मिळते. त्याचा सदर अभ्यासास संशोधकास उपयोग झाला. ^{८२}

२.५. पीएच. डी. शोध प्रबंध :

१. नगुरतीनखुमा (२००७) यांनी 'An Assessment of Role State and District Libraries in the Socio-Cultural and Educational Development of Mizoram' हा प्रबंध ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्रांच्या पीएच. डी. पदवी अभ्यासक्रमासाठी मिझोरम विद्यापीठास सन २००७ साली सादर केला. या शोध प्रबंधिकेमध्ये मिझोरामच्या सांस्कृतिक सामाजिक व शैक्षणिक विकासातील जिल्हा ग्रंथालयाची भूमिका यांचा अभ्यास केला आहे.^{८३}

२. सुधा (२०११) यांनी 'Ganisation, Administration, Resources, Services And Utilisation Of The Public Libraries In Malabar' हा प्रबंध ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्राच्या पीएच. डी. पदवी अभ्यासक्रमासाठी कलीकुट (नेपाळ)विद्यापीठास सन २०११ साली सादर केला.^{८४}

३. वर्मा (२०१०) यांनी 'User Satisfaction in Public Libraries of Raipur City : A Survey' हा शोध प्रबंध ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्राच्या पीएच. डी. अभ्यासक्रमासाठी रवीशंकर शुक्ला विद्यापीठ, रायपूर विद्यापीठास सन २०१० साली सादर केला.^{८५}
४. देशपांडे (१९९८) 'The Role Of District Libraries in the development of Public Library Movement in Maharashtra' हा शोध प्रबंध ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्राच्या पीएच. डी. अभ्यासक्रमासाठी पुणे विद्यापीठास सन १९९८ साली सादर केला.^{८६}
५. मोरे (२०१२) यांनी 'पुणे विभागातील 'अ' वर्ग ग्रंथालयातील व्यवस्थापन, अनुदान, सेवा अभ्यास' हा प्रबंध ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्राच्या पीएच. डी. पदवी अभ्यासक्रमासाठी टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठास सादर केला.^{८७}
६. जाधव (२०११) यांनी 'वारणा क्षेत्रांतर्गत सार्वजनिक ग्रंथालयाचा अभ्यास' हा प्रबंध ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्राच्या पीएच. डी. पदवी अभ्यासक्रमासाठी टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठास सादर केला.^{८८}

सदर शोध प्रबंध पूर्ण करण्यासाठी संशोधकाने या संदर्भातील माहितीचे वाचन केले.

सारांश :

उपरोक्त पूर्वाभ्यासामुळे सार्वजनिक ग्रंथालये व त्यांची कार्ये पद्धती सामाजिक विकासात त्यांचे महत्त्व या दृष्टीने महत्त्वाचे ग्रंथ, नियतकालिके, वेबसाईड, दैनिकांमधील लेख तसेच एम. फिल. व पीएच. डी. चे शोध प्रबंधांचा अभ्यास केल्यामुळे संशोधन विषयासंबंधी उपयुक्त माहिती मिळाली यामध्ये याअभ्यासामधून सार्वजनिक ग्रंथालयांचे कामकाज, त्याद्वारे मिळणाऱ्या विविध ग्रंथालयीन सेवा, ग्रंथालयीन कर्मचाऱ्यांच्या विविध समस्या ध्यानी आल्या. सदर संशोधनाच्या दिशा निश्चितीसाठी आणि विश्लेषण तसेच आदर्श ग्रंथालय (नमूना) प्रारूप मांडतांना त्यांचे साहाय्य झाले.

संदर्भसूची :

१. कोण्णूर, एम. बी. आणि इतर (२००८) ग्रंथालय व माहितीशास्त्रकोश. पुणे : डायमंड पब्लिकेशन्स.
२. पौडवाल, सुषमा व सावे, वसंत (२०१४) सार्वजनिक ग्रंथालये : प्रगती आणि वस्तुस्थिती. पुणे : माधवी प्रकाशन.
३. महाजन, शां. गं. (२०११) महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयाचे व्यवस्थापन. पुणे : पुणे विद्यार्थीगृह प्रकाशन.
४. बालेकर, राजशेखर शं. (२०१२) सार्वजनिक ग्रंथालय : एक अभ्यास. नांदेड : संगत प्रकाशन.
५. नरगुंदे, रेवती (२००७) ग्रंथालये आणि सामाजिक विकास. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.
६. पाटील, रवींद्र (२०१४) महाराष्ट्रातील शतायू अक्षरदालने. सांगली : नाग-नालंदा प्रकाशन.
७. कांबळे, नागेश व सावे, वसंत (२०१४) सार्वजनिक ग्रंथालये. नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ.
८. जैन, प्रकाश व इतर (२००९) सुलभ ग्रंथालयशास्त्र. नागपूर : विश्व पब्लिशर्स अँड डिस्ट्रीब्युटर्स.
९. फडके, द. ना (२००७) ग्रंथालय संगणकीकरण आणि आधुनिकीकरण. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.
१०. बुवा, जी. ए. (२००७) व्यवस्थापनाचे नवे प्रवाह. बांद्रा : श्री. साई प्रकाशन.
११. कुलश्रेष्ठ, अजय (१९८८) सार्वजनिक पुस्तकालय संघटन. जयपूर : रचना प्रकाशन.
१२. थिटे, पुरुषोत्तम (२०००) समाजकार्य संशोधन आणि प्रबंध लेखन. पुणे : विद्या प्रकाशन.
१३. मोरे, कुंडलिक बापू (२०१०) सार्वजनिक ग्रंथालयाचे प्रबोधन. अकलुज : शिवसृष्टी प्रकाशन.
१४. नाडगौड, गुरुनाथ द. (१९८६) सामाजिक संशोधन पद्धती. कोल्हापूर : फडके प्रकाशन.

१५. रिसवाडकर, म. रा. (२०००) संशोधन प्रक्रिया आणि पद्धती. नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ.
१६. भिंताडे, वि. रा. (२००६) शैक्षणिक संशोधन पद्धती. पुणे : नित्यनूतन प्रकाशन.
१७. मुळे, रा. शं. आणि उमाठे, वि. तू. (१९८७) शैक्षणिक संशोधनाची मुलतत्त्वे. नागपूर : महाराष्ट्र विद्यापीठ ग्रंथ निर्मिती मंडळ प्रकाशक.
१८. जगताप, तारा. पा. आणि पौडवाल, सुषमा (२००१) माहिती सेवा आणि तंत्रे. नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ.
१९. झोडगे, दि. भा. (२००९) राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान कोलकत्ता आणि ग्रंथालय संचालनालय. महाराष्ट्र राज्य अंतर्गत अर्थसहाय्यच्या विविध योजनांची माहिती पुस्तिका. कोल्हापूर शासकिय जिल्हा ग्रंथालय.
२०. हचांटे, राजकुमार (२००५) सार्वजनिक ग्रंथालय मार्गदर्शिका. सोलापूर : नंदादिप बुक सर्व्हिसेस.
२१. गुरव, अनंत (१९९८) विश्व ग्रंथालयाचे. डोंबिवली : आरती प्रकाशन.
२२. पारखी, गंगाधर र. (२००८) ग्रंथालयशास्त्र परिचय. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.
२३. बावनकर, हर्षदा (२०१०) ग्रंथालय : संघटन. पुणे : श्लोक पब्लिकेशन.
२४. Widdowson, Henry (1968) New Oxford Advanced Learners Dictionary. Oxford: University Press.
२५. Thomas, V. K. (2005) Public Library Financing Analysis of RRRIF Scheme org. Assistance. Kolkatta : RRRIF Publisher.
२६. महाजन, शां. गं. (२०११) महाराष्ट्राच्या ग्रंथालय चळवळीचे शिल्पकार. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.
२७. दाइंगडे, श्याम जनार्दन (२०१६) भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालय कायदे. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.
२८. आगलावे, प्रदीप (२०००). संशोधन पद्धतीशास्त्र व तंत्रे. नागपूर : विद्या प्रकाशन.
२९. कऱ्हाडे, स.दा. (१९९७) संशोधन सिद्धांत आणि पद्धती. मुंबई : लोकवाङ्मयगृह.
३०. करमरकर, प्रकाश गणेश (१९९६) आदर्श ग्रंथालय संघटन. मुंबई : मंगेश प्रकाशन.

३१. पाटील, सी.श्री. (२००५) विश्व महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचे. सिंधुदुर्ग : स्नेहल एजन्सीज.
३२. चितळे, चि.भा. (१९९०) ग्रंथालय प्रशासन तत्त्व आणि व्यवहार. मुंबई : मंगेश प्रकाशन.
३३. कर्णिक, प्रदीप (२००२) संशोधन प्रकल्प : स्वरूप व लेखन पद्धती. नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ.
३४. भांडारकर, पु.ल. (१९८१) सामाजिक संशोधन पद्धती. नागपूर : महाराष्ट्र विद्यापीठ ग्रंथ निर्मिती मंडळ.
३५. नरगुंदे, रेवती (२०१३) ग्रंथालय आणि सामाजिक विकास. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.
३६. आर्वीकर, भा. बा व सातारकर, सु. प्र. (२००७) सार्वजनिक ग्रंथालय : सद्यस्थिती आणि बदलते स्वरूप. औरंगाबाद : शांभवी प्रिंटर्स अँड पब्लिशर्स.
३७. Princeton, N. J. (1958) Planning The Public Library. New Your : Remington Rand.
३८. नीकोसे, सत्यप्रकाश (२००७) ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र संशोधन पद्धती. नागपुर : प्रज्ञा प्रकाशन.
३९. पारखी, रघुनाथ शतानंद (१९३३) ग्रंथालय शास्त्राचा ओनामा. पुणे : समर्थ भारत.
४०. लेले, वंसत वि (२०१२) ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्रातील पैलू. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.
४१. नातु, श्रीराम (१९८४) सर्वांसाठी ग्रंथालये. पुणे : मोदीखाना.
४२. सोनावणे, कल्पना आणि पाटील, प्रदीप (२०१३) संशोधनाचे नीतीशास्त्र (Research Ethics) ज्ञानगंगोत्री, डिसेंबर-मे.
४३. चिकटे, राजेंद्र (२०१२) संशोधन अहवाल लेखनाची तंत्रे, ज्ञानगंगोत्री, जून-नोव्हें.
४४. बर्वे, प्रकाश आणि महाले, संजीवनी (२०१२) संशोधनातील विविध टप्प्यांत ग्रंथालयाचे उपयोजन. ज्ञानगंगोत्री, डिसेंबर-मे.
४५. रेहपाडे, रीना आणि पराडकर, अश्विनी (२००९) ए.पी.ए., एम.एल.ए. आणि सी.एम.एस. या लेखनशैली मार्गदर्शिकांचा तुलनात्मक अभ्यास. ज्ञानगंगोत्री, सप्टें.-फेब्रु.

४६. बुवा, जी.ए. आणि वायंगणकर, सायली (२००७-०८) स्टार्इल मॅन्युअल्स. ज्ञानगंगोत्री, डिसें. ते फेब्रु.
४७. कांबळे, एन.बी. (२००८-०९) महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्यातील नियमांत झालेले बदल. ज्ञानगंगोत्री, सप्टें.- फेब्रु.
४८. कुंभार, राजेंद्र (२००८-०९) राष्ट्रीय ज्ञान आयोग आणि सार्वजनिक ग्रंथालये. ज्ञानगंगोत्री, सप्टे. - फेब्रु.
४९. कोरे, देविदास (२००९) वाचाल तर वाचाल. ग्रंथपरिवार, मार्च.
५०. पाटील, संजय (२०१०) सार्वजनिक ग्रंथालय : भविष्यातील माहिती केंद्रे. ग्रंथपरिवार, औरंगाबाद : औरंगाबाद जिल्हा ग्रंथालय संघ.
५१. साखळकर, एम. बी. (२००६) वाचनसंस्कृती संवर्धनासाठी गोवा सरकारचा अनुकरणीय उपक्रम ग्रंथपरिवार : औरंगाबाद जिल्हा ग्रंथालय संघ.
५२. शेवाळे, मधुकर (२०११) ग्रंथपालाचा इतिहास : आधुनिक काळ. ज्ञानगंगोत्री, जून- नोव्हें.
५३. कोण्णूर, सुजाता (२००३) शिक्षण संक्रमण. पुणे : मुद्रांकन.
५४. खले, जयश्री (२००७) शिक्षण संक्रमण. पुणे : मुद्रांकन.
५५. बारसे, नारायण (२०११) ग्रंथालय संगणकीकरण उपक्रम. ज्ञानगंगोत्री, जुन - नोव्हें.
५६. देवधर, विजय (२०१०) ग्रंथालय आणि माहिती जाळी. ज्ञानगंगोत्री, मार्च-मे.
५७. कुंभार, राजेंद्र (२००७) राष्ट्रीय ज्ञान आयोगाने ग्रंथालयासंबंधी भारत सरकारला केलेल्या शिफारशी - भाग २. ज्ञानगंगोत्री, सप्टें.- नोव्हें.
५८. घुगे, प्रभाकरराव (२०१०) समाजाच्या विकासात शिक्षण आणि सार्वजनिक ग्रंथालयाचे योगदान. ग्रंथपरिवार : औरंगाबाद जिल्हा ग्रंथालय संघ.
५९. कुंभार, राजेंद्र (२००८) ओपन सोर्स सॉफ्टवेअर : स्वरूप आणि फायदे. ज्ञानगंगोत्री मार्च - मे.
६०. पाठक, मोहन (२००६) सार्वजनिक मराठी ग्रंथालयाची वेबसाईट. ज्ञानगंगोत्री, मार्च - मे.
६१. पंडित, अजय (२००७) हस्तलिखितशास्त्र ग्रंथालयशास्त्राची एक ज्ञानशाखा. ज्ञानगंगोत्री, सप्टें. - नोव्हें.

६२. जोशी, शेखर (२०१२) 'परवड ग्रंथ सेवकांची'. लोकप्रभा, मुंबई : द इंडियन एक्सप्रेस लिमिटेड.
६३. <http://www.maharashtra.com/articleshow>
६४. <http://www.dolmaharashtra.org>
६५. <http://www.netugc.com>
६६. वाचन संस्कृतीच्या संवर्धनासाठी सार्वजनिक ग्रंथालयाची आवश्यकता (२८ डिसेंबर २०१०) दै. लोकसत्ता, पुणे आवृत्ती.
६७. करमरकर, विनायक (१३ नोव्हें. २०११) पुणे मराठी ग्रंथालय, ग्रंथाइतकेच कार्यकर्त्यांचेही वैभव दै. लोकसत्ता. सोलापूर आवृत्ती.
६८. कुलकर्णी मिलिंद (४ एप्रिल २०११), ग्रंथालयातल्या कपाटात गुदमरलेल्या पुस्तकांना मिळेल चिमुटभर प्रकाश, थोडा वारा आणि वाचकांचा स्पर्श. दै. लोकमत. सोलापूर आवृत्ती.
६९. राज्यातील ग्रंथालय अनुदान ५० टक्के वाढले. (२८ जाने. २०१२) दै. लोकमत, सोलापूर आवृत्ती.
७०. ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांची फाईल लटकली मंत्रालयात (६ डिसें. २०१०) दै. सकाळ, सोलापूर आवृत्ती.
७१. जागेचं काय करायचं (२३ एप्रिल २०११) दै. लोकमत, सोलापूर आवृत्ती.
७२. पानसरे, प्रसाद (२५ फेब्रु. २०१३) लायब्ररीही आता होताहेत. 'हायटेक' दै. महाराष्ट्र टाईम्स, पुणे आवृत्ती.
७३. ग्रंथालयांच्या प्रश्नाचे काय? (२८ नोव्हें. २०१७) दै. लोकमत, पुणे आवृत्ती.
७४. येतसेकर, गोविंद (११ मार्च २०११) 'ग्रंथालय अनुदानात वाढीची शक्यता'. दै. सकाळ, मुंबई आवृत्ती.
७५. गोगटे, मनोज (२६ मार्च २०१६) 'सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा कालबाह्य'. दै. लोकसत्ता.
७६. राऊत, स्मिता (२००८) 'सातारा शहरातील नगर वाचनालयातील साखळी योजनेचा अभ्यास'. एम.फिल. प्रबंधिका, पुणे: टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ.

७७. क्षीरसागर, सं. रा. (२००८) सातारा जिल्ह्यातील सार्वजनिक ग्रंथालय चळवळीचा अभ्यास. एम.फिल. प्रबंधिका, नाशिक: यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ.
७८. लोखंडे, साईनाथ शिवाजी (२००९) महाराष्ट्रातील राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७ नुसार करवीर सार्वजनिक ग्रंथालयाचा विकास : एक अभ्यास. एम.फिल. प्रबंधिका, नाशिक: यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ.
७९. पाटोळे, स्मिता (२००८) सातारा जिल्ह्यातील सार्वजनिक ग्रंथालय राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठानचे योगदान. एम.फिल. प्रबंधिका, पुणे: टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ.
८०. मोरे, वैशाली वसंतराव (२००८) सोलापूर जिल्ह्यातील 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयातील सेवक : एक अभ्यास. एम.फिल. प्रबंधिका, पुणे: टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ.
८१. पाटील यु. आ. (२००८) कोल्हापूर जिल्ह्यातील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या गरजा आणि समस्या यांचा अभ्यास. एम.फिल. प्रबंधिका, नाशिक: यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ.
८२. खलाटे, बाबुराव (२००९) फलटण शहरातील सार्वजनिक ग्रंथालयातील वाचकांच्या वाचन अभिरूचीचा अभ्यास. एम.फिल. प्रबंधिका, पुणे: टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ.
८३. नगुरतीनखुमा, आर. के. (२००७) An Assessment of Role state and District libraries in the Socio-Cultural and Educational Development of Mizoram. पीएच.डी. प्रबंध, मिझोराम: मिझोराम विद्यापीठ.
८४. सुधा, ए. (२०११) Ganisation Administration, Resources, Services And Utilisation Of The Public Libraries In Malabar. पीएच.डी. प्रबंध नेपाळ: कलिकूट विद्यापीठ.
८५. वर्मा, माया (२०१०) User Satisfation in Public Libraries of Raipur city : A Survey. पीएच.डी. प्रबंध, रायपूर: पंडित रवीशंकर शुक्ला विद्यापीठ.
८६. देशपांडे, एन. जे. (१९९८) The Role of District Libraries in the Development of Public Library Movement in Maharashtra. पीएच.डी. प्रबंध, पुणे: पुणे विद्यापीठ.

८७. मोरे, वैशाली (२०१२) पुणे विभागातील 'सोलापूर जिल्ह्यातील 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयातील सेवक : एक अभ्यास'. पीएच.डी.प्रबंध, पुणे: टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ.
८८. जाधव, संदीप (२०११) 'वारणा क्षेत्रांतर्गत सार्वजनिक ग्रंथालयांचा अभ्यास'. पीएच.डी. प्रबंध, पुणे: टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ.

प्रकरण तिसरे
सार्वजनिक ग्रंथालयांचा पूर्वइतिहास

प्रकरण तिसरे

सार्वजनिक ग्रंथालयाचा पूर्वइतिहास

| अ.क्र. | तपशील | पृष्ठ क्र. |
|--------|---|------------|
| ३.१ | प्रस्तावना | ४७ |
| ३.२ | सार्वजनिक ग्रंथालये | ४८ |
| ३.२.१ | सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या दृष्टीने एडवर्ड एडवर्डस् यांचे योगदान | ५७ |
| ३.२.२ | युनेस्को : सार्वजनिक ग्रंथालयांचा जाहिरनामा | ५८ |
| ३.३ | सार्वजनिक ग्रंथालयांचा जागतिक पातळीवरील इतिहास | ६१ |
| ३.३.१ | अमेरिकेतील सार्वजनिक ग्रंथालये | ६४ |
| ३.३.२ | रशियातील सार्वजनिक ग्रंथालये | ६७ |
| ३.३.३ | ऑस्ट्रेलियातील सार्वजनिक ग्रंथालये | ७० |
| ३.३.४ | चीनमधील सार्वजनिक ग्रंथालये | ७२ |
| ३.३.५ | इंग्लंडमधील सार्वजनिक ग्रंथालये | ७५ |
| ३.४ | भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालयाचा विकास | ७९ |
| ३.५ | भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालयाची चळवळ | ८२ |
| ३.५.१ | महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयाची चळवळ | ८६ |
| ३.५.२ | सिन्हा समिती | ९१ |
| ३.५.३ | फैजी समिती | ९३ |
| ३.५.४ | राष्ट्रीय ज्ञान आयोग | ९५ |
| ३.५.५ | महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालय पद्धतीची रचना | ९८ |
| ३.६ | महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा | १०२ |
| ३.६.१ | महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्यातील नियमांत झालेले बदल | ११९ |

| | | |
|-----|--|-----|
| ३.७ | सार्वजनिक ग्रंथालयातील सेवक | १२५ |
| ३.८ | महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयाची सद्यःस्थिती | १२९ |
| ३.९ | सार्वजनिक ग्रंथालयापुढील समस्या | १३३ |
| | सारांश | १३७ |
| | संदर्भसूची | १३८ |

प्रकरण तिसरे :

सार्वजनिक ग्रंथालयाचा पूर्वइतिहास

३.१. प्रस्तावना :

लॅटिन भाषेतील लायबर (Liber) म्हणजे 'अ बुक' (A book) या संज्ञेपासून 'लायब्ररी' (Library) या संज्ञेची उत्पत्ती झालेली आहे.^१ बुक या अर्थाने मराठीमध्ये ग्रंथ आणि पुस्तक हे शब्द रूढ आहेत. महाराष्ट्र शासनाच्या सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्यामध्ये पुस्तक अथवा ग्रंथाविषयी पुढील व्याख्या आढळते : "पुस्तक या संज्ञेत कोणत्याही भाषेतील प्रत्येक ग्रंथ, ग्रंथाचा भाग किंवा विभाग व पत्रिका आणि स्वतंत्ररीत्या मुद्रित किंवा शिलामुद्रित केलेले संगीताचे, नकाशाचे, सागरी नकाशाचे किंवा मानचित्राचे प्रत्येक पान, वृत्तपत्रे, नियतकालिके, दृकश्रुती माहितीसाठी वापरण्यात येणारी रंगचित्रे, चलचित्रे, सरकचित्रे, तबकड्या व फिती आणि अशाप्रकारच्या इतर साहित्याचा समावेश होईल."^२ म्हणजेच ज्यामध्ये ज्ञान ग्रथित केले जाते, संग्रहित केले जाते ते ग्रंथ होत. यामध्ये सर्व प्रकारच्या ज्ञानसाहित्याचा समावेश होतो. हस्तलिखिते, पुस्तके, संदर्भग्रंथ, माहितीपर ग्रंथ, संशोधनपर ग्रंथ, प्रबंध, मानके, चित्रे व नकाशे यांचाही समावेश होतो. ग्रंथांमुळे ज्ञानाचे संचयन केले जाते आणि एका पिढीकडून दुसऱ्या पिढीकडे संक्रमित केले जाते. ज्ञानाचा वारसा एका पिढीकडून दुसऱ्या पिढीकडे सुपूर्द करण्याचे हे एक महत्त्वाचे साधन आहे. आवश्यक असे ग्रंथ आणि माहिती ग्रंथालयात संग्रहित केली जाते आणि ती ग्रंथालयाद्वारे उपलब्ध करून दिली जाते. मराठी विश्वकोशानुसार "ग्रंथालय म्हणजे ग्रंथ संग्रहाचे स्थान जेथे वाचनसाहित्य उपयोगासाठी ठेवले जाते. ग्रंथालय ही प्राचीन सामाजिक संस्था असून तिला मोठा इतिहास आहे आणि तो मानवी संस्कृतीशी समांतर आहे."^३ ग्रंथ, वाचक आणि ग्रंथालयीन कर्मचारी हे ग्रंथालयाचे तीन मुख्य घटक आहेत. एका अर्थाने ग्रंथालय म्हणजे ग्रंथांचे घर होय. या ठिकाणी सर्व ग्रंथ एकत्रित ठेवले जातात आणि वाचकांना उपलब्ध करून दिले जातात. या सामाजिक संस्थेमुळे ज्ञानात्मक सांस्कृतिक वारसा जपला जातो.

ग्रंथालये ही प्राचीन सामाजिक संस्था आहे. अभ्यासकांच्या मते ग्रंथालये ही देवालये, मठ यांसारख्या धार्मिक संस्थांमधून विकसित झाली आहेत. राजेरजवाड्यांनी त्यांच्या छंदासाठी ग्रंथसंग्रह केले. परंतु पूर्वीच्या काळी ग्रंथसंग्रह ही समाजातील उच्च वर्गाची मक्तेदारी असायची. त्यावेळी ग्रंथालयात ग्रंथ जतन करून ठेवताना ते साखळदंडाने टेबलाशी जखडून ठेवले जात.

ग्रंथपालाची भूमिका ही ग्रंथसंरक्षकाची असायची. कालप्रवाहात ग्रंथ समस्त समाजासाठी उपलब्ध झालेले दिसतात.

ग्रंथालय व्यवस्थापन या ग्रंथामध्ये डॉ. शां. ग. महाजन म्हणतात, “ग्रंथांचा संग्रह म्हणजे ग्रंथालय. हा संग्रह म्हणजे गोदाम नव्हे. ग्रंथांचा संग्रह करण्याचा प्रधान हेतू तो वाचला जावा, हा आहे. वाचकांना तो उपयोगी पडले, अशी त्याची रचना करावयास हवी. आपल्या ग्रंथालयाचे वाचक कोण आहेत, त्यांच्या गरजा काय आहेत, याचा अभ्यास करून ते ग्रंथ आणून वाचकांना उपलब्ध करून दिले पाहिजेत. विविध प्रकारच्या वाचकांच्या गरजा लक्षात घेऊन ग्रंथसंग्रह समृद्ध करणे व तो वाचकांना उपलब्ध करून वाचकांच्या गरजा भागविण्याचे ठिकाण म्हणजे ग्रंथालय होय असे म्हणता येईल.”^४ ग्रंथालये ही सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्ये जतन करणारी आणि संवर्धन करणारी केंद्रे आहेत. ज्ञानार्थींना ज्ञानप्राप्तीसाठी सहकार्य करणे, आधार देणे हे ग्रंथालयांचे कर्तव्य आहे.

विविध विषयांची जुळणी आणि नवनवीन माहिती व ज्ञान वाचकांना पुरविणे, त्यांच्या ज्ञानात्मक जिज्ञासेचे क्षमन करणे, त्यांच्या विचारांच्या कक्षा व्यापक बनविणे, वाचकांना पुस्तकांच्या वाचनातून मनोरंजन करण्यासाठी मदत करणे, तसेच आत्मिक विकासाकरिता आध्यात्मिक, धार्मिक, वैज्ञानिक ग्रंथ व माहिती उपलब्ध करून देणे हे ग्रंथालयांचे उद्दिष्ट असते.

त्यामुळे ग्रंथालय म्हणजे एक वास्तू नसून सर्वज्ञान, विज्ञान, धर्म, विचार, पंथ, कल्पना, इतिहास यांची जोपासना करणारी व मानवी सहसंबंधांचे दृढीकरण करणारी एक महत्त्वाची सांस्कृतिक विकास साधणारी सामाजिक संस्था आहे. सामान्यतः वाचकांच्या गरजांनुसार ग्रंथालयांचे मुख्य प्रकार पुढीलप्रमाणे आहेत : १. सार्वजनिक ग्रंथालये, २. शैक्षणिक ग्रंथालये, ३. विशेष ग्रंथालये.

३.२. सार्वजनिक ग्रंथालये :

सार्वजनिक ग्रंथालय म्हणजे, जी ग्रंथालये जनतेसाठी जनतेकडूनच चालविली जातात, अशी ग्रंथालये होत. ही ग्रंथालये सर्व प्रकारच्या वाचकांसाठी खुली असतात. या प्रकारच्या ग्रंथालयांमध्ये कोणताही भेदभाव केला जात नाही. सार्वजनिक ग्रंथालये ही विनामूल्य सेवा देत असतात.

इफला-युनेस्कोच्या सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या जाहीरनाम्यानुसार सार्वजनिक ग्रंथालयांना ज्ञानाचे स्थानिक प्रवेशद्वार संबोधले आहे आणि व्यक्ती आणि सामाजिक गटांचा सांस्कृतिक विकास घडविण्याचे मूलभूत-पायाभूत साधन मानले आहे. या जाहीरनाम्यानुसार, “सार्वजनिक ग्रंथालय हे माहितीचे स्थानिक केंद्र आहे. ते सर्व प्रकारचे ज्ञान आणि माहिती आपल्या वाचकांना त्वरित उपलब्ध करून देते. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या सेवा सर्वांना समानतेने ग्रंथालयात प्रवेश या तत्वावर आधारीत दिल्या जातात. या सेवा देताना वय, वंश, लिंग, धर्म, राष्ट्रीयत्व, भाषा अथवा सामाजिक दर्जा या प्रकारे कोठलाही भेदभाव करता कामा नये. जे वाचक काही ना काही कारणाने ग्रंथालयाच्या नेहमीच्या सेवा आणि साधनांचा उपयोग करू शकत नाहीत, अशा वाचकांना विशेष सेवा आणि साधने त्यांनी पुरविली पाहिजेत. उदा. भाषिक अल्पसंख्यांक, अपंग, दुर्बल, विकलांग वाचक अथवा इस्पितळ अथवा तुरुंगातील लोक. सर्व वयोगटाच्या वाचकांना त्यांना हवे असलेले ज्ञानसाहित्य मिळाले पाहिजे. ग्रंथालयांनी ग्रंथसंग्रह आणि ग्रंथालय सेवा देण्यासाठी सर्व प्रकारची माध्यमे, आधुनिक तंत्रज्ञान, तसेच पारंपरिक साहित्य यांचा वापर करावयास हवा. हे ज्ञानसाहित्य उच्च गुणवत्तेचे आणि स्थानिक गरजा आणि परिस्थितीला अनुसरून असले पाहिजे. या ज्ञानसाहित्यामध्ये सध्याच्या समाजातील बदलाचे, प्रवाहाचे, समाजाच्या उत्क्रांतीचे आणि मानवी धडपड, प्रयत्न, कल्पकता यांचे प्रतिबिंब पडले पाहिजे. राजकीय, धार्मिक अथवा व्यापारिक दबावाखाली ग्रंथसंग्रह करता कामा नये, तसेच सेवाही देता कामा नये.”^५

सार्वजनिक ग्रंथालय ही समाजासाठी निर्माण केली जातात, ती समाजासाठी समाजातूनच चालविली जातात. त्यांचा हेतू हा समाज सुसंस्कृत करणे हा असून सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये निरनिराळे विभाग असतात. या ग्रंथालयांचा प्रसार व्हावा म्हणून सार्वजनिक ग्रंथालयांकडे बहिःशाल योजना, मुक्तद्वार धोरण योजना इत्यादी योजनांची अमलबजावणी केली जाते. सार्वजनिक ग्रंथालये ही सर्वधर्मसमभावाची प्रतीके असून देशाच्या एकंदर सामाजिकस्थितीचे, संस्कृतीचे दर्शन या ग्रंथालयांमधून होते. तसेच विचारांचीही देवाणघेवाण या व्यासपीठावरून होते. सार्वजनिक ग्रंथालयांचे कार्य आणि सेवांची व्याप्ती इतर सर्व ग्रंथालयांपेक्षा मोठी आणि आगळीवेगळी आहे. एक प्रकारे ती लोकविद्यापीठे आहेत.

ग्रंथालय सल्लागार समिती (१९५९) यांच्या मते सार्वजनिक ग्रंथालय म्हणजे,

- अ) जे ग्रंथालय अधिकांश लोकनिधीने संचलित आहे.
- ब) जे ग्रंथालय वाचकांच्या उपयोगासाठी कोणतेही शुल्क आकारीत नाही व जे कोणताही जातीभेद, लिंगभेद न मानता संपुर्ण जनतेच्या उपयोगासाठी खुले असते.
- क) जे शैक्षणिक संस्थेच्या रूपात सहाय्यक ठरते आणि स्वयंशिक्षणाचे साधन सिद्ध होते.
- ड) जे अभ्यासनीय साहित्य संग्रहीत करून कोणताही पक्षपात न करता विभिन्न विषयावर वाचकांच्या आवडी-निवडी पूर्ण करण्याकरिता विश्वसनीय माहिती देते.^६

“जनतेसाठी जनतेकरवीच जनतेने चालवलेली ग्रंथालये असा त्यांचा पाया असतो.”^७ ही ग्रंथालये कायद्याच्या मार्गदर्शक तत्वांनुसार चालतात.

सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये येणारा वाचक हा विभिन्न प्रकारचा असतो. बालवाचकांपासून वृद्धांपर्यंत, गरिबांपासून श्रीमंतांपर्यंत आणि अशिक्षितांपासून उच्च शिक्षितांपर्यंत इत्यादी सर्व स्तरांतील वाचकवर्ग या ग्रंथालयामध्ये येत असतो. त्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालये ही विविध प्रकारच्या वाचकवर्गात सुसंवाद प्रस्थापित करण्याचे कार्य करत असतात. त्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयाची व्याख्या पुढीलप्रमाणे, “सार्वजनिक ग्रंथालय म्हणजे समाजातील लहान-मोठे, सर्व जाती-धर्माचे स्त्री-पुरुष असे कोणतेही भेद न करता ज्या ठिकाणी वाचनसाहित्य उपलब्ध होते, अशा ग्रंथालयांना सार्वजनिक ग्रंथालय म्हटले जाते.”^८

डॉ. शि. रा. रंगनाथन यांच्या मते, “A Public library is a Public institution or establishment changed with the care of collection of books and duty of making them accessible to those who require use of them.”^९ सार्वजनिक ग्रंथालयांविषयी महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्यामध्ये पुढीलप्रमाणे माहिती आढळते. “जनतेच्या उपयोगासाठी राज्य सरकारने स्थापन केलेले व चालविलेले ग्रंथालय, ग्रंथालय निधीमधून सहाय्यक अनुदान देण्याच्या प्रयोजनासाठी संचालकाने मान्यता दिलेले ग्रंथालय व या अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ राज्य सरकार शासकीय राजपत्रातील अधिसूचनेद्वारे सार्वजनिक ग्रंथालय म्हणून जाहीर करेल, असे कोणतेही इतर ग्रंथालय होय.”^{१०} सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये विविध विषयांमधील विविध प्रकारची माहिती कोणत्याही पूर्वग्रहाशिवाय, भेदभावाशिवाय समाजातील वाचकांसाठी उपलब्ध करून दिली जाते. यासाठी विविध शैक्षणिक व माहितीप्रधान साधने एकत्रित केलेली असतात.

ही सेवा विनामूल्य दिली जाते. अशा संस्थेला सार्वजनिक ग्रंथालये म्हणतात. सार्वजनिक ग्रंथालयांचे कार्य व सेवांची व्याप्ती इतर सर्व प्रकारच्या ग्रंथालयांपेक्षा मोठी व वेगळ्या प्रकारची आहे. एका अर्थाने ती जनतेची विद्यापीठे आणि निरंतर शिक्षणाची केंद्रे आहेत.

सार्वजनिक ग्रंथालयांचे १. बालग्रंथालये, २. फिरती ग्रंथालये आणि ३. सर्वसाधारण सार्वजनिक ग्रंथालये असे तीन प्रकार पडतात.

१. बालग्रंथालये :

बालग्रंथालयांमध्ये बालवाचकांना रुचेल, पचेल असे वाचनसाहित्य ठेवले जाते. यामध्ये छोट्या रंजक गोष्टी, वैज्ञानिक प्रयोगांची पुस्तके, सामान्य ज्ञानाची पुस्तके, संस्कारक्षम वाचनसाहित्य, आरोग्य व क्रीडाविषयक वाचनसाहित्य, छोटी चित्रे, तसेच ग्रंथेतर साहित्यामध्ये खेळाची साधने इत्यादी साहित्य असावयास हवे. या ग्रंथालयातील सेवक हा प्रशिक्षित, बालकांची मने आणि मनोगत जाणून घेणारा असावा. तसेच बालवाचकांना त्याची भीती वाटणार नाही, असे त्याचे वर्तन असावे. या ग्रंथालयातील वाचक लहान असल्यामुळे ग्रंथालयाचे फर्निचर बनवताना त्यांची बालवाचकांची उंची लक्षात घेणे गरजेचे आहे.

२. फिरती ग्रंथालये :

“महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७ नुसार ज्या ठिकाणची लोकसंख्या ५०० पेक्षा जास्त आहे, त्या ठिकाणी सार्वजनिक ग्रंथालय निर्माण करता येते. परंतु ज्या ठिकाणची लोकसंख्या ५०० पेक्षा कमी आहे, त्या ठिकाणी फिरत्या ग्रंथालयाची शिफारस केलेली आहे.”^{११} या फिरत्या ग्रंथालयांसाठी एक वाहनचालक व दुसरा ग्रंथालयीन सेवा देणारा सेवक असतो. हे ग्रंथालय ५०० पेक्षा कमी लोकसंख्या असलेल्या गावात अथवा वाडी, वस्ती या ठिकाणी सेवा देते. वाचकांना ठरावीक वार आणि वेळ सांगून त्या दिवशी, त्या वेळी बससारख्या वाहनातून ग्रंथालयीन साहित्य वाचकांपर्यंत पोहोचविले जाते. या ठिकाणी पहिली दिलेली पुस्तके परत घेतली जातात आणि नवीन पुस्तके दिली जातात. समाजातील छोट्याच छोटा घटकही वाचनापासून वंचित राहू नये, हे सूत्र ग्रंथालय कायद्यामध्ये मांडलेले आहे. त्याच्या पालनाकरिता फिरते ग्रंथालय ही व्यवस्था केलेली आहे.

३. सर्वसाधारण सार्वजनिक ग्रंथालये :

५०० पेक्षा जास्त लोकवस्तीच्या ठिकाणी हे ग्रंथालय स्थापन करता येते. यामध्ये लोकसंख्यानिहाय आणि ग्रंथालयीन साहित्यानुसार अ, ब, क, ड अशी श्रेणीव्यवस्था आहे. या ग्रंथालयात साधारणतः शैक्षणिक, सामाजिक, ऐतिहासिक व अन्य विषयांवरील विविध प्रकारचे, विविध भाषांमधील वाचनसाहित्य ठेवलेले असते.

सार्वजनिक ग्रंथालयांचे कार्य : माहिती, साक्षरता, शिक्षण आणि संस्कृती इ.शी संबंधित खालील महत्त्वाची कार्ये सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या सेवेतून अपेक्षित असतात.^{१२}

१. बालकांमध्ये लहानपणापासून वाचनाची आवड आणि गोडी निर्माण करणे.
२. सर्व स्तरांवरचे औपचारिक शिक्षण, तसेच व्यक्तींचे आणि स्वयंशिक्षण घेणाऱ्या प्रयत्नांना साहाय्य करणे.
३. व्यक्तिगत निर्मितीक्षमतेचा विकास साधण्यासाठी संधी उपलब्ध करून देणे.
४. बालक आणि युवकांमध्ये कल्पना, प्रतिभा आणि निर्मितीक्षमता जोपासण्यास उत्तेजन देणे.
५. सांस्कृतिक वारसा, वैज्ञानिक प्रगती आणि संशोधन यांविषयी जाण निर्माण करणे. कलेचे गुणग्रहण करण्यासाठी प्रोत्साहन देणे.
६. संगीत, नाटक, नृत्य, अभिनय यांच्यातील आविष्कारविविधता जोपासणे.
७. विविध संस्कृतींमध्ये संवाद साधणे आणि सांस्कृतिक विविधता जोपासणे.
८. मौखिक परंपरेचे जतन करणे.
९. नागरिकांना सर्व प्रकारची सामाजिक समाजगटाविषयी माहिती पुरविणे.
१०. स्थानिक उद्योजकांना, संस्था-संघटनांना व स्वयंसेवी संस्थानां पुरेशी माहितीसेवा देणे.
११. माहिती आणि संगणक साक्षरतेची कौशल्य विकसित करण्यासाठी सुविधा प्राप्त करून देणे.
१२. सर्व वयोगटाच्या वाचकांसाठी साहित्यिक कार्यक्रम-उपक्रमांना साहाय्य देणे आणि त्यामध्ये सहभागी होणे, अशा उपक्रमांना साहाय्य करणे.

सार्वजनिक ग्रंथालयाची भूमिका स्पष्ट करताना, 'अमेरिकन लायब्ररी असोसिएशनच्या तज्ज्ञांनी पुढील कार्ये महत्वाची मानली आहेत.

१. समाजातील प्रत्येक घटकास अनौपचारिक शिक्षण देणे.
२. शिक्षण घेणाऱ्या व्यक्ती ज्या विषयातील औपचारिक शिक्षण घेऊ इच्छितात, त्या त्या विषयांवरील माहिती - साधनांचा उत्तम संग्रह करणे.
३. समाजातील प्रत्येक जिज्ञासूच्या, माहितीविषयक गरजा भागविण्याचा प्रयत्न करणे.^{१३}

आधुनिक काळ हा विज्ञान-तंत्रज्ञानाचा व रोजच माहितीच्या ज्ञानाच्या भंडाराची भर पडण्याचा आहे. काळासोबत राहण्यासाठी वाचकांच्या बदलत्या वाचनसवयीनुसार पारंपरिक वाचनसामुग्रीसोबत सार्वजनिक ग्रंथालयात संगणक, संगणकीय महाजाल (नेट), डिजीटल ग्रंथ, विविध ज्ञान-विज्ञानाच्या सी.डी., डी. व्ही. डी., व्हिडिओ उपलब्ध होणे गरजेचे आहे.

सार्वजनिक ग्रंथालयांची वैशिष्ट्ये :

१. निःशुल्क ग्रंथालय सेवा :

ग्रंथालयात बसून वाचणे अथवा ग्रंथ घरी नेणे, अथवा संदर्भसेवा देणे यासाठी वाचकांकडून वर्गणी घेतली जात नाही. वाचकांना ज्ञानसाहित्याचा आस्वाद घेण्याचा हक्क प्रदान करण्यात येतो. म्हणजेच सार्वजनिक ग्रंथालये सार्वजनिक निधीतून चालतात. त्याचा आर्थिक भार शासनाने सोसून समाजातील सर्व समाजघटकांना विनामोबदला (निःशुल्क) सेवा द्यायला हवी.

२. सार्वजनिक पैशातून उदरनिर्वाह :

समाजाच्या विकासासाठी सार्वजनिक ग्रंथालयांची स्थापना झाल्यामुळे त्याचा विकास करणे व देखभाल ठेवणे ही शासनाची जबाबदारी आहे. यासाठी जनतेकडून विशिष्ट असा ग्रंथालय महसूल वसूल करण्यात येतो आणि त्याद्वारे स्थानिक स्वराज्य संस्था, राज्य आणि केंद्र शासनाकडून तो ग्रंथालयांना पुरविला जातो.

३. स्वयंशिक्षणाची केंद्रे :

समाजामध्ये सार्वजनिक वाचनालयांनी वाचनसंस्कृती वाढविण्यासाठी, तसेच शैक्षणिक गरजांच्या पलीकडची ज्ञानलालसा भागविण्याचे कार्य ग्रंथालये करतात. ज्या विद्यार्थी अथवा नागरिकांना शाळा, महाविद्यालयांतील औपचारिक शिक्षण घेणे शक्य झाले नाही किंवा विविध प्रकारच्या अडचणींमुळे शिक्षणाची प्रक्रिया अर्धवट सोडावी लागली, अशा व्यक्तींना या ग्रंथालयातून स्वयंशिक्षण घेता येते. त्यामुळे ही ग्रंथालये ज्ञानाची मुक्त विद्यापीठे आहेत. समाजातील सर्वांना मुक्त प्रवेश असलेल्या या संस्थेमध्ये वाचक स्वतःच्या प्रयत्नांनी ज्ञानवृद्धी करून व्यक्तिमत्त्वाचा विकास घडवून आणतात. एक प्रकारे स्वात्मसाधनेद्वारे आत्मविकास घडवून आणणारे हे ज्ञानसाधना केंद्र आहे. समाजातील दुर्बल घटक आणि निरक्षर व्यक्ती यांनाही ज्ञानप्रक्रियेत सहभागी होण्यासाठी या ग्रंथालयांनी सहकार्य करणे अपेक्षित असते.

४. वैधानिक मान्यता :

देशातील सार्वजनिक ग्रंथालये कायदानुसार स्थापन केली, तर त्यांना शासकीय मान्यता मिळते व ती दीर्घ काळ टिकून राहू शकतात आणि ती समाजासाठी ग्रंथालयसेवा उपलब्ध करून देऊ शकतात. म्हणून या ग्रंथालयांना शासनमान्यता असावयास हवी. त्यांना कायद्याद्वारे आर्थिक पाठबळ उपलब्ध व्हायला हवे. लोकांनी लोकांसाठी चालविलेली लोकनियंत्रित संस्था म्हणून त्यांची निर्मिती कायद्याच्या पायावर व्हायला हवी.

५. माहिती व ज्ञानाचे केंद्र :

आजचे आधुनिक युग हे ज्ञान व माहितीचे युग मानले जाते. सार्वजनिक ग्रंथालये ही समाजातील विविध व्यक्ती आणि संस्थांना आवश्यक ती माहिती व ज्ञान उपलब्ध करून देतात. या ग्रंथालयात समाजातील सर्वांना सुलभ प्रवेश असल्याने माहिती व ज्ञान मिळवण्याचे हे महत्त्वाचे केंद्र आहे.

६. सांस्कृतिक वारसा जतन करणारे केंद्र :

सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये जगभरातील आणि स्थानिक लोकसंस्कृतीचा इतिहास, धर्म, पंथ, लोकजीवन, साहित्य व ज्ञान-विज्ञानविषयक माहिती समाजाला उपलब्ध होत असल्याने विविध जाती-धर्म-पंथाच्या लोकांना त्याद्वारे आपला सांस्कृतिक वारसा जोपासता येतो. या ग्रंथालयांद्वारे व्यक्ती आणि समाजाच्या सांस्कृतिक संचितामध्ये वाढ होऊन समाजाचा विकास घडतो. त्यामुळे ही ग्रंथालये सांस्कृतिक वारसा जतन करणारी आणि त्यात विकास घडवून आणणारी केंद्रे आहेत. भारतासारख्या सांस्कृतिक विविधता असलेल्या देशामध्ये तर सांस्कृतिक एकात्मता निर्माण करण्याच्या कामी या ग्रंथालयांना विशेष महत्त्व प्राप्त होते.

७. निःपक्षपाती लोकशाहीपूरक संस्था :

सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये ग्रंथालयसुविधा देताना जाती-धर्म-लिंग-वर्ण-वर्गनिरपेक्षता पाळली जाते. त्यामुळे निःपक्षपातीपणे वाचकांना ग्रंथालयीन सेवा देणारी ही महत्त्वाची संस्था आहे. समाजातील सर्वांना स्वतःच्या व्यक्तिमत्त्वाचा विकास करण्याची संधी प्राप्त होते. एक प्रकारे ज्ञानात्मक समता निर्माण करणारी ही ग्रंथालये लोकशाहीपूरक संस्था आहेत.

सार्वजनिक ग्रंथालयाचे स्वरूप :

१. हे ग्रंथालय सार्वजनिक पैशांच्या आधारवर सुरू असते.
२. वाचकांकडून जादा वर्गणी न स्वीकारताही वाचकांना वाचनाच्या विविध सोयीसवलती उपलब्ध करून देण्यासाठी कार्यशील असते.
३. जात, धर्म, स्त्री, पुरुष, बाल, प्रौढ, संशोधक, विद्यार्थी इ. अनेक स्तरांवरच व विविध वयोगटातील वाचक वर्ग येत असतो. त्यांच्यामध्ये सार्वजनिक ग्रंथालय वाचन सेवा देताना कुठलाही दुजाभाव करित नाही.
४. शैक्षणिक, ज्ञानवर्धक, माहिती परिपूर्ण विषयाचे सर्व वाचनसाहित्य वाचकांना उपलब्ध करून देणे.

सार्वजनिक ग्रंथालयाचा उद्देश:

१. समाजातील सर्व वर्गांच्या अध्ययन व माहिती संबंधीच्या गरजा विनाशुल्क अथवा अल्प शुल्क घेऊन पूर्ण करणे.
२. समाजातील सर्व स्तरावरील लोकांची सेवा करणे.
३. नवसमाजाची निर्मिती करण्यास मदत करणे.
४. ज्ञानाचे सामाजिकीकरण करणे.
५. मनोरंजनात्मक व सांस्कृतिक स्वरूपाचे कार्य करणे.

‘पब्लिक लायब्ररी इन द युनायटेड स्टेट्स’ या आपल्या ग्रंथात, ‘रॉबर्ट ले’ (Robert Leigh) यांनी सार्वजनिक ग्रंथालये म्हणजे सामाजिक संस्था असतात, असे म्हणून त्यांच्या उद्दिष्टांचा सारांश पुढील मुद्द्यांमधून स्पष्ट केले आहे.

- ग्रंथ व इतर निवडक शैक्षणिक साहित्याचा संग्रह करणे, त्यांची योग्य व्यवस्था करणे आणि त्यांच्या मदतीने समजाला मार्गदर्शन व प्रोत्साहन देऊन विकासास मदत करणे. या मार्गाने उत्तम नागरिकत्व व वैभवपूर्ण व्यक्तिगत आयुष्य उपलब्ध करून देणे.
- अधिकृत माहितीचे केंद्र म्हणून समाजाला माहिती सेवा देणे.
- बालके व तरुण, स्त्री व पुरुष, नागरी व ग्रामीण अशा सर्व घटकांना शिक्षणाच्या व माहिती मिळविण्याच्या वेगवेगळ्या संधी पुरविणे व ते सातत्याने शिकत राहतील व माहिती मिळवीत राहतील अशी योजना करणे, यासाठी प्रत्येक नागरिकाला स्वयंशिक्षणाची सोय उपलब्ध करून देणे. याखेरीज सामान्यपणे पुढील उद्दिष्टे असावीत-
- साधारणपणे जास्त मागणी येऊ शकेल अशा प्रत्येक विषयाशी संबंधित ‘प्रचलित’ (Current) माहिती देणाऱ्या साधनांचा संग्रह करणे. मात्र कोणतीच माहिती-साधने हानिकारक नसावीत.
- समाजाच्या शैक्षणिक, आर्थिक, राजनैतिक, औद्योगिक व सांस्कृतिक अशा सर्व क्षेत्रांशी संबंधित असणाऱ्या सर्वाना माहिती- सेवा देणे व समाजाच्या सर्वांगीण विकासास हातभार लावणे.^{१४}

३.२.१. सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या दृष्टीने एडवर्ड एडवर्ड्स यांचे योगदान :

एडवर्ड एडवर्ड्स हे मॅचेस्टर येथे स्थापन झालेल्या पहिल्या सार्वजनिक ग्रंथालयाचे ग्रंथपाल होते. त्यांनी आपल्या सार्वजनिक ग्रंथालयाविषयक तत्त्वप्रणालीने इंग्लंडमधील जनतेला ग्रंथालयाचे महत्त्व पटवून दिले. या कार्याच्या यशस्वीतेसाठी कठोर परिश्रम घेऊन त्यांनी असंख्य लेख व ग्रंथ प्रकाशित करून सार्वजनिक ग्रंथालयांची उपयुक्तता समाजास पटवून दिली.

सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याची अंमलबजावणी व सेवांविषयी त्यांनी जी तत्त्वे सन १८४९ मध्ये निश्चित केली ती आजही प्रभावी असल्याचे जाणवते. एडवर्ड एडवर्ड्सच्या मते-

“सार्वजनिक ग्रंथालय सेवा ही कोणत्याही इच्छुक नागरिकास विनामूल्य उपलब्ध करून देण्यात आली पाहिजे. त्याचप्रमाणे ग्रंथालय सेवा ही स्थानिक जबाबदारी मानून त्यासाठी लागणाऱ्या खर्चाची तरतूद करदात्यांनी सरकारला दिलेल्या रकमेतून करण्यात आली पाहिजे. करदाते या सेवांचा वापर करो अथवा न करो, सर्व प्रकारचे ग्रंथ या संग्रहात समाविष्ट होणे आवश्यक आहे.”^{१५}

एडवर्ड एडवर्ड्स यांनी मांडलेल्या सिद्धांताची योग्य छाननी केल्यास सार्वजनिक ग्रंथालयांची समाजोपयोगी संकल्पना स्पष्ट होऊ लागते. यातील नोंद घेण्यासारखा पहिला मुद्दा म्हणजे ही ग्रंथालये सर्वांसाठी विनामूल्य असावी हा होय.

सार्वजनिक ग्रंथालयातील विनामूल्य सेवा या बाबीवर लक्ष केंद्रित केल्यास ही ग्रंथालये शैक्षणिक किंवा विशेष ग्रंथालयांपेक्षा कशी वैशिष्ट्यपूर्ण आहेत याचा आपण विचार करणार आहोत. सार्वजनिक ग्रंथालयांसमोर समाजकल्याण हे उद्दिष्ट असल्याने त्यांनी वाचकांना विनामूल्य सेवा देणे क्रमप्राप्त ठरते. अँडर मॉरिस यांच्या मते “प्रत्येक ग्रंथालय हे आंतरराष्ट्रीय सामंजस्याचे केंद्र असून त्याच्या अस्तित्त्वामुळे व ते प्रसिद्धीपराड्मुख असल्याने सामाजिक शांतता व लोकशाहीचे रक्षण करते.”

एडवर्ड एडवर्ड्सच्या तत्त्वप्रणालीनुसार जनतेच्या करातून सार्वजनिक ग्रंथालयाची स्थापना, परिरक्षण व विकास झाला पाहिजे. समाजातील नागरिक हे या ग्रंथालयांचे आधारस्तंभ मानल्यास ग्रंथालये त्यांच्याकडून मिळणाऱ्या प्रतिसादावर स्वायत्त व स्वयंपूर्ण होऊ शकतात. ही

ग्रंथालये स्थानिक वाचकांना प्राथमिक ग्रंथालय सुविधा पुरवीत असल्याने त्यांची आर्थिक जबाबदारी सर्वसाधारणपणे स्थानिक जनतेवरच येते.

सद्यः स्थितीतही एडवर्ड एडवर्डस् यांची मार्गदर्शक तत्त्वे सार्वजनिक ग्रंथालयांचे जाळे तयार होण्यासाठी पायाभूत मानली जातात. त्यांच्या लेखनातून सार्वजनिक ग्रंथालयांची स्थापना, त्यांच्याकडून अपेक्षित सेवा यांबाबत जी मते मांडली गेली त्यांचा प्रभाव इंग्लंडचा सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १८५० तयार करताना झालेला दिसून येतो.

३.२.२. युनेस्को : सार्वजनिक ग्रंथालयांचा जाहीरनामा :

युनेस्को या शैक्षणिक, शास्त्रीय व सांस्कृतिक मंचाची स्थापना जनमाध्यमातून शांतता प्रसार, अध्यात्मिक कल्याण यांसाठी झालेली असल्याने या जाहीरनाम्यानुसार सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या स्थापनेची व परिक्षणाची जबाबदारी राष्ट्रीय व स्थानिक पातळीवर सरकारने कर्तव्य म्हणून उचलावी असे प्रतिपादले आहे.

युनेस्कोने आपला सार्वजनिक ग्रंथालयांचा हा जाहीरनामा प्रथम १९४९ साली प्रसिद्ध केला. पुढे युनेस्कोने 'सार्वजनिक ग्रंथालये लोकशिक्षणाची जीवनशक्ती' या नावाने सुधारीत जाहीरनामा तयार केला व तो 'इफ्ला' या आंतरराष्ट्रीय ग्रंथालय संघटनेने १९७२ आणि १९९४ साली प्रसिद्ध केला.^{१६} लोकांनी, लोकांकरिता चालविलेली लोकनियंत्रित संस्था म्हणून सार्वजनिक ग्रंथालयांची निर्मिती कायद्याच्या पायावर व्हावी. सार्वजनिक ग्रंथालय ही लोकशाही तत्त्वावर चालवली जाणारी संस्था असून संस्कृती संवर्धनाचे शिक्षण व माहिती देण्याचे कार्य करते. त्याचप्रमाणे या संस्थेद्वारे मानवाच्या विचारांचे, कल्पना शक्तीचे संकलन करून वाचनीय साहित्याद्वारा ते जनतेला विनामूल्य उपलब्ध करून दिले जाते. वाचकाला आनंद मिळवून देण्यासाठी व उल्हासित ठेवण्यासाठी लागणारे ग्रंथ व वाचनीय साहित्य उपलब्ध करून देणे, विद्यार्थीवर्गास शैक्षणिक, तांत्रिक, शास्त्रीय व समाजोपयोगी माहिती देणे यांसाठी या ग्रंथालयांना ग्रामपातळीपासून राष्ट्रीय स्तरापर्यंत कायद्याच्या आधार असणे आवश्यक आहे. त्याचप्रमाणे आंतरग्रंथालयीन देवघेव पद्धतीचा अवलंब करून जगातील प्रत्येक वाचकाला सर्व राष्ट्रांच्या वाचनसंपत्तीचा पुरेपूर फायदा करून देण्याकरिता आंतरराष्ट्रीय करार असणेही आवश्यक आहे.

अशा प्रकारे वाचकांची सोय करण्यासाठी ही ग्रंथालये वाचकांना सहज जाता येईल अशा जवळच्या अंतरावर असणे, तेथे त्यांना विनामूल्य सेवा मिळणे, जात, लिंग, राष्ट्रीयत्व, वय, भाषा, सामाजिक स्थान किंवा शैक्षणिक पात्रता यांबाबतचा अडसर न राहता सर्वांना सर्व प्रकारच्या सेवा मिळतील अशी तरतूद कायद्याद्वारेच होणे आवश्यक आहे.

या जाहीरनाम्याच्या पुढे दिलेल्या साराशांवरून युनेस्कोने पुढील बाबींवर भर दिल्याचे आपणास दिसून येईल.

१. विनामूल्य सेवा
२. सहज पोहचता येईल अशा मोक्याच्या ठिकाणी ग्रंथालय असणे.
३. कायद्याचा आधार

वरील तीन तत्वांनुसार वाचनसेवा देताना कुठलाही अडसर न येणे व ग्रंथालय सेवा उच्च प्रतीची असणे हे युनेस्कोला अभिप्रेत आहे. असे आपणास दिसून येते.

या व्यतिरिक्त बाल वाचक, महिला तसेच अपंग व्यक्तींना द्यावयाच्या वाचनसेवेचा विचारही युनेस्कोने प्रतिपादन केला आहे. बालवाचकांचा बौद्धिक व सांस्कृतिक विकास घडवून त्यांना वाचनाची गोडी लावणे हेही युनेस्कोच्या जाहीरनाम्यात अभिप्रेत आहे.

अपंग व्यक्तींना द्यावयाच्या सेवांमध्ये यांत्रिक वाचन सेवा, मोठ्या अक्षरातील भिक्तीपत्रके दृक, श्राव्यफिती इस्पितळातील रूग्णास द्यावयाची ग्रंथालय सेवा, फिरते ग्रंथालय यांचाही समावेश असून त्यामुळे त्यांना त्यांच्या मानसिक, शारीरिक एकाकीपणाचा व अपंगत्वाचा विसर पडू शकेल. विद्यार्थ्यांना व महिलांना त्यांचे नियमित शिक्षण पूर्ण झाल्यावर अवांतर माहिती देणारी भविष्यकालीन आधार केंद्रे म्हणून ग्रंथालयांनी काम करावे असेही युनेस्कोचे मत आहे.

याशिवाय युनेस्कोची अशी अपेक्षा आहे. की ग्रंथालयांनी ग्रामीण व शहरी भागांत ठिकठिकाणी शाखा सुरू करून ग्रंथालय सेवेचा पुरेपूर वापर होण्यासाठी प्रशिक्षित व कार्यक्षम सेवकांची नियुक्ती करावी. उपर्युक्त विवेचनावरून युनेस्कोच्या सार्वजनिक ग्रंथालय जाहीरनाम्याची वैशिष्ट्ये खालीलप्रमाणे दाखवता येतील :

सार्वजनिक ग्रंथालयांनी :

१. विनामूल्य वाचनसेवा द्यावी.
२. जनसंपर्काचे माध्यम म्हणून कार्य करून व्यक्तिगत व सामुदायिक समाजकल्याण, शांतता व आंतरराष्ट्रीय सामंजस्यासाठी प्रयत्न करावे.
३. समाजातील सर्व घटकांना उपेक्षित अशी वाचन सेवा बाल-वाचक, प्रौढवाचक, विद्यार्थी, महिला, अपंग, इत्यादी वाचकांना उपलब्ध करून द्यावी.
४. विशेष वाचकांना ग्रंथ व दृक-श्राव्य फितीद्वारे अत्याधुनिक व अद्ययावत सेवा द्यावी.
५. ग्रंथालयाच्या ग्रामीण व शहरी भागांत शाखा सुरू करून आंतरग्रंथालयीन देवघेवीला प्रोत्साहन द्यावे.
६. प्रशिक्षित व कार्यक्षम सेवक ग्रंथालयातून उपलब्ध करून द्यावे.
७. माहिती केंद्रे, उद्बोधन केंद्र व सांस्कृतिक विकास केंद्रांचे कार्य करावे.

उपयुक्त उद्दिष्टांआधारे जगातील सर्व सार्वजनिक ग्रंथालये कार्यप्रवण झाल्यास निरक्षरता दूर होण्यास व वाचनाची सवय लागण्याच्या दृष्टीने वाचकांना ग्रंथालयांकडे आकर्षित करण्याचे कार्य सुलभरित्या पूर्ण करता येईल व ज्ञानाची क्षितिजे विस्तारण्यास मदत तर होईलच परंतु ग्रंथालयांचे जाळे निर्माण होण्याची प्रक्रिया गतिमान होईल.

वरील विवेचनावरून सार्वजनिक ग्रंथालयाची व्याख्या करावयाची झाल्यास, “जात-पात, वर्ण, लिंगभेद न मानता लोकशाही तत्त्वावर आधारित विनामूल्य वाचनसेवा देणारी सार्वजनिक सामाजिक संस्था म्हणजे ग्रंथालय.” अशी करता येईल.

सार्वजनिक ग्रंथालयांची बदललेली संकल्पना :

युनेस्कोने आपल्या जाहीरनाम्यात सार्वजनिक ग्रंथालये निधीतून चालवली जात असल्यामुळे या ग्रंथालयातून दिल्या जाणाऱ्या सेवा विनाशुल्क दिल्या जाव्यात. अशी अपेक्षा व्यक्त केली आहे. पण सार्वजनिक ग्रंथालयांतून दिल्या जाणाऱ्या सेवा विनामूल्य दिल्या जाव्यात या युनेस्कोच्या विचारसरणीत अलीकडे बदल घडून आला आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयांवर होणारा खर्च वाढत आहे. तो शासनाला परवडणारा नाही हे युनेस्कोच्या ध्यानात आले आहे आणि म्हणून युनेस्कोने आपल्या सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या मूळ व्याख्येत थोडा बदल

करून सांगितले आहे, 'जी ग्रंथालये समाजातील सर्व लोकांना विनाशुल्क किंवा अल्पशुल्क आकारून ग्रंथालय सेवा देतात ती सार्वजनिक ग्रंथालयेच असतात.'

युनेस्कोनेही सार्वजनिक ग्रंथालयांची नव्याने व्याख्या केली आहे. या व्याख्येनुसार युनेस्कोने सार्वजनिक ग्रंथालये आणि वर्गणी ग्रंथालये यांच्यामध्ये भेदभाव केला नाही हे जाणवते. ज्या ग्रंथालयाचे दरवाजे सर्वांना उघडे असतील आणि जर ती अल्प वर्गणी आकारून वाचकांच्या गरजा भागवत असतील तर ती ग्रंथालये सार्वजनिकच आहेत असे मानायला हरकत नाही. असे युनेस्कोने आपल्या या नव्या व्याख्येतून सूचित केले आहे. आपली सार्वजनिक ग्रंथालये वाचकांकडून वर्गणी घेत असली तरी ती ग्रंथालये समाजातील सर्व लोकांना कोणताही भेदभाव न करता ग्रंथालय सेवा देतात. युनेस्कोच्या या नव्या व्याख्येप्रमाणे आपल्या ग्रंथालयांना सार्वजनिक मानणे चुकीचे ठरणार नाही.^{१७}

३.३. सार्वजनिक ग्रंथालयांचा जागतिक पातळीवरील इतिहास :

ग्रंथालय ही प्राचीन सामाजिक संस्था असून तिला मोठा इतिहास आहे आणि तो मानव संस्कृतीशी समांतर आहे. अलिकडील उत्खननात प्राचीन काळातील शहरांचे जे अवशेष सापडले त्यावरून जगातील सर्वात प्राचीन ग्रंथालये सुमेरियन व बॅबिलोनियन संस्कृतीच्या काळात अस्तित्वात होती, असे सिद्ध होते. उदा. ख्रिस्त पूर्व २७०० वर्षे धार्मिक व शासकीय ग्रंथालये होती. टेयो येथील एका ग्रंथालयात तीस हजार ग्रंथ होते. चुनखडीपासून तयार केलेल्या विटांवर, धातू अथवा लाकूड यांपासून तयार केलेल्या लेखणीने क्यूनिकॉर्म लिपित लिहिलेल्या इष्टिकाग्रंथांचा संग्रह म्हणजे जगातील पहिला ग्रंथसंग्रह होय. धार्मिक वचने, प्रार्थना, मंत्रतंत्र, लोककथा, न्यायनिवाडे यांबरोबरच तत्कालीन सामाजिक, राजकीय व तात्त्विक वाङ्मयाचे नमुनेही या इष्टिकाग्रंथात आढळले आहेत.

बॅबिलोनियन संस्कृतीला सुमेरियन संस्कृतीचा वारसा मिळालेला होता. ह्याकाळी देवालये व राजवाडे यांमधून ग्रंथसंग्रह केला जाई. बॉर्सिपा येथे एक महत्त्वाचे ग्रंथालय होते. व्यापार, दैनंदिन घटनांच्या नोंदी, राजकीय व धार्मिक आदेश यांच्यासाठी इष्टिकांचा वापर होई.

बॅबिलोनियन संस्कृतीच्या काळात अॅसियन राजघराणे अस्तित्वात होते. ग्रंथपालन हा व्यवसाय या काळाइतका पुरातन आहे, असे मानले जाते. असुर बनिपाल (इ.स. पू. ६६८ ते

६२७) या राजाने निनेव्ह येथील एका मंदिराजवळ एक मोठे ग्रंथालय स्थापन केले होते. बॉर्सिपा येथील ग्रंथालयातील ग्रंथाच्या नकला त्याने करवून घेतल्या, अनेकांची भाषांतरे केली व सुमेरियन भाषेतील सु. २०,००० ग्रंथ एकत्रित केले. १८५० साली ऑस्टिन लेअर्ड याने उत्खनन केले तेव्हा त्याला निनेव्ह येथे हे ग्रंथालय सापडले. या ग्रंथालयातील इष्टिकाग्रंथात प्राचीन आर्ष ग्रंथाच्या प्रती होत्या. या ग्रंथाचे वर्गीकरण व सूचिलेखनही केलेले होते. हे ग्रंथ बाहेर वाचावयास दिले जात. तसेच ते मुक्तद्वार ग्रंथालय होते. या ग्रंथालयातील काही इष्टिकाग्रंथ ब्रिटीश म्युझियममध्ये ठेवलेले आहेत.

प्राचीन ईजिप्तमधील गीझा येथे इ.स. पूर्व. २५०० मध्ये एक मोठे ग्रंथालय अस्तित्वात होते. इ.स. पूर्व १२५० च्या सुमारास थीब्ज येथे दुसरा रॅम सीझ यानेही एक ग्रंथालय स्थापन केले होते. इदफू, मेंडीझ, मेफिस आणि हीलिऑपोलिस या ठिकाणी ग्रंथालये अस्तित्वात होती. ईजिप्तमधील सर्वात महत्त्वाचे ग्रंथालय अॅलेकझांड्रिया येथे होते. ग्रीक राजा पहिला टॉलेमी या राजांनी हे ग्रंथालय अधिक समृद्ध केले. सीझरने ज्यावेळी या ग्रंथालयाचा नाश केला, त्यावेळी या ग्रंथालयात ७,००००० (सात लाख) ग्रंथ होते. त्याकाळी पपायरससारखे दुर्मिळ लेखन साहित्य आणि लेखनविसांची मर्यादित संख्या असताना देखील इतक्या मोठ्या प्रमाणावर केलेला हा ग्रंथसंग्रह पाहून आश्चर्य वाटते. डीमीट्रिअस, झिनॉडोटस, अपोलोनियस, ऑरिस्टोफेनीस आदी नामवंत विद्वानांनी या ग्रंथालयाचे ग्रंथपाल पद भूषविले होते. त्यांनी अनेक ग्रंथ जमविले, त्यांची भाषांतरे केली व १२० विषयांत त्यांचे वर्गीकरण करून सूचीही तयार केली.

अॅलेकझांड्रिया प्रमाणेच पर्गामम येथेही एक ग्रंथालय दुसऱ्या यूमिनीस याने स्थापन केले होते. विद्याप्रसार व कलाक्रीडा यांबाबत या दोन ग्रंथालयात नेहमी स्पर्धा चाले. पर्गामम येथील ग्रंथनिर्मिती इतकी वेगवान होती, की ईजिप्तशियननांनी मत्सरामुळे त्यांना पपायरस वनस्पतींचा पुरवठा करण्याचे बंद करून टाकले. या चुरशीमधूनच चामड्यावरील ग्रंथाची निर्मिती झाली. अँटोनीने पर्गाममचे ग्रंथालय क्लीओपात्राला भेट म्हणून दिले. त्यावेळी या ग्रंथालयात दोन लाख ग्रंथ होते, असे प्लिनी हा इतिहासकार म्हणतो.

जर्मन संशोधक अलेकझांडर कोंज याने १८७६ ते १८८६ या काळात जेव्हा उत्खनन केले, तेव्हा त्याला पर्गामम ग्रंथालयाची चार दालने सापडली होती.

इ.स. पूर्व पाचव्या शतकात खाजगी ग्रंथालयेही अस्तित्वात होती. त्यात युरिपिडीझ, ऑरिस्टॉटल व प्लेटो यांच्या ग्रंथालयांचा उल्लेख करण्यात येतो. अकादमीच्या स्थापनेमुळे तेथेही ग्रंथसंग्रह असावा असे दिसते.

रोमन सम्राटांनी सार्वजनिक ग्रंथालये स्थापन केली होती. पपायरस, कातडे या माध्यमांवरच ग्रंथ लिहिले जात. कोडेक्स व्हॅटिकेनस हे सर्वात प्राचीन रोमन हस्तलिखित चौथ्या शतकातील आहे. इ.स. पूर्व दुसऱ्या शतकापासून रोमन सरदार ग्रीसमधील ग्रंथसंग्रह युद्ध प्रसंगी लुटून आणत असत. हीच गुंडगीरी पुढे या सरदारांच्या ग्रंथविषयक आवडीचे भूषण बनली. असिनिअस पोलिओ या सम्राटाने पहिले सार्वजनिक ग्रंथालय स्थापले. रोमन ग्रंथालयांतून ग्रीक व लॅटिन ग्रंथ विषयावर वेगवेगळे लाऊन ठेवलेले असत. त्याचबरोबर पपायरसच्या असंख्य गुंडाळ्याही ग्रंथालयातील वाचनगृहात ठेवलेल्या असत. हे सर्व ग्रंथ तेथेच वाचावे लागत. चौथ्या शतकामध्ये रोम या एकाच शहरात २८ सार्वजनिक ग्रंथालय होती. इटलीमधील अन्य शहरांमधून देखील अशीच सार्वजनिक ग्रंथालये स्थापन झाली होती. या ग्रंथालयाची व्यवस्था धर्माधिकाऱ्यांकडे सोपविलेली असे. रोमन ग्रंथालयांचा विशेष म्हणजे ग्रंथालये व वस्तुसंग्रहालये यांमधील भेद स्पष्ट होऊन ग्रंथाची मांडणी व संरक्षण स्वतंत्रपणे होऊ लागले. पुढे रोमवर सुरू असलेल्या रानटी टोळ्यांच्या हल्ल्यात रोमन संस्कृती बरोबरच ही सर्व ग्रंथालयेही नष्ट झाली. सुमारे पाचवे शतक ते सुमारे १५ वे शतक या कालखंडात ग्रंथसंग्रह जतन करण्याचे फार मोठे कार्य धर्म मठांनी केले. कातड्यांवरील ग्रंथ हे याकाळातील ग्रंथसंग्रहाचे वैशिष्ट्य होय. या काळी ग्रंथाच्या नकला करण्यासाठी नकलनवीसांचा एक फार मोठा ताफाच बाळगला जाई. ग्रंथ चोरले जाऊ नये म्हणून ग्रंथांना साखळीने बांधून ठेवलेले असत व त्यांचा वापर धर्मगुरू पुरताच मर्यादित असे. कॉन्स्टँटिनोपलच्या कारकीर्दीत या धर्म मठांमधील ग्रंथालयांना शासकीय ग्रंथालयाचे स्वरूप प्राप्त झाले होते. कॅसिओडोरस याने माँटी कासिनो (इटली) येथे मठ स्थापना करून बायबल, होमर व व्हर्जिल यांची काव्ये, ग्रीक नाटके आणि अन्य प्राचीन शास्त्र व तत्त्वज्ञान विषयक ग्रंथांच्या प्रती करवून घेऊन तेथील ग्रंथालयात संग्रहित केल्या. दहाव्या शतकापासून युरोपमध्ये विद्यापीठाची स्थापना होऊ लागली व विद्यार्थ्यांची संख्या जसजशी वाढू लागली, तसतसे विद्यापीठातून ग्रंथसंग्रह वाढू लागले.

युरोपात १६ व्या शतकाच्या सुमारास प्रबोधनकाळ अवतरला. कागदाचा शोध, देशी भाषांचा उदय व मुद्रण कलेचा शोध या तीन क्रांतिकारक गोष्टींनी सांस्कृतिक प्रबोधनाला गती मिळाली. ग्रंथसंख्येत प्रचंड वाढ होऊ लागली.

३.३.१. अमेरिकेतील सार्वजनिक ग्रंथालये

अमेरिका हा इंग्लंड व युरोपातून स्वदेशाचा त्याग करून आलेल्या लोकांच्या वसाहतीच्या रूपाने नव्यानेच वसलेला देश होय. अनेक देशातील लोक या देशात आले आणि स्थायिक झाले. या लोकांनी आपली वाचनाची हौस भगविण्यासाठी स्वतः बरोबर आणलेल्या ग्रंथामधून हळूहळू अमेरिकेत काही खाजगी ग्रंथालयांची स्थापना झाली. ही ग्रंथालये लहान असली तरी या ग्रंथालयांनी अमेरिकेतील ग्रंथालय चळवळीचा पाया घातला असेच म्हणावे लागेल. कारण या ग्रंथालयापासून स्फूर्ती घेऊन विविध भागातील लोकांनी ग्रंथालये स्थापन केली. अमेरिकेत सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या कल्पनेचा उगम झाला. तो बेंजामिन फ्रँकलिन यांच्यामुळे १७९३ मध्ये स्थापन केलेल्या लायब्ररी कंपनी ऑफ फिलाडेल्फियाची स्थापना केली व वाचक प्रेमी लोकांना सभासद होण्याचे आवाहन केले. या आव्हानाला चांगला प्रतिसाद मिळाला आणि देशाच्या विविध भागांत ग्रंथालये स्थापन झाली. सामाजिक ग्रंथालय पद्धतीचे जनक म्हणून अनेकदा बेंजामिन फ्रँकलिन यांचा उल्लेख केला जातो.

अमेरिकेत जसजशी औद्योगिक प्रगती होऊ लागली. तसतशी सामाजिक परिस्थितीही बदलू लागली. कारखानदारी वाढली, तसतशी तंत्रज्ञ आणि कामगारांची संख्या वाढली. या कामगारांना व्यावसायिक शिक्षण देण्यासाठी, त्यांचे मनोरंजन करण्यासाठी कारखानदारांनी 'मेकॅनिक्स ग्रंथालये' स्थापन केली. या ग्रंथालयांनी देशातील शैक्षणिक प्रगतीस बराच हातभार लावला. १९ व्या शतकाच्या उत्तरार्धात ग्रंथालय कार्यकर्त्यांच्या प्रेरणेने देशातील ग्रंथालय चळवळीला चालना मिळाली आणि ग्रंथालय चालकांच्या अथक प्रयत्नांतून १८७६ साली 'अमेरिकन लायब्ररी असोसिएशन' ही ग्रंथालय संघटना स्थापन झाली. ही घटना केवळ अमेरिकेच्याच नव्हे तर जागतिक ग्रंथालय चळवळीच्या दृष्टीने फार महत्त्वाची घटना आहे. कारण या संघटनेने केवळ अमेरिकेतच नव्हे तर जगातील इतर देशातही सार्वजनिक ग्रंथालयाची वाढ व्हावी म्हणून प्रयत्न केले. याच काळात अँड्र्यू कार्नेजीसारख्या कारखानदाराने अमेरिकेतील तीन हजार ग्रंथालयांना आर्थिक मदत पुरविली. ही ग्रंथालये अँड्र्यू कार्नेजी व जॉन रायलंड्झ

यांच्यासारख्या देणगीदारांच्या मदतीने अनेक वर्गणी-ग्रंथालये स्थापन झाली होती. १८५४ मध्ये सी.सी. जावेट यांच्या संचालनत्वाखाली पहिले मोफत सार्वजनिक ग्रंथालय सुरू झाले.^{१८} अमेरिकेत हार्व्हर्ड लॉ स्कूल लायब्ररी (१८१७), पेटंट ऑफीस लायब्ररी (१८३९), केब्रिज म्यूझियम ऑफ कर्पॅटिव्ह झूलॉजी (१८५८) इ. विशेष ग्रंथालये उल्लेखनीय आहेत.

विसाव्या शतकात पाश्चात्य देशांतील ग्रंथालयांतून ग्रंथसंख्येत वाढ झाली, अनेक ग्रंथालये उभी राहिली. ती लक्षावधींच्या संख्येने दानशूर गृहस्थांनी दिलेल्या देणग्यांतून दुर्मिळ ग्रंथसंग्रह करणाऱ्या विशेष ग्रंथालयांची स्थापना झाली. ग्रंथसंग्रह वाढला. त्यामुळे ग्रंथालयांचे प्रकारही वाढले. सार्वजनिक, राष्ट्रीय, शासकीय, शैक्षणिक, संशोधन, तांत्रिक, बाल अशी अनेक प्रकारची ग्रंथालये निर्माण झाली. अमेरिकेत १९६० मध्ये १०,८३२ सार्वजनिक ग्रंथालये होती आणि त्यातून एकशे त्र्याहत्तर दशलक्ष ग्रंथसंग्रह होता. त्यावर वार्षिक ३,१०,००,००० डॉलर इतका खर्च होत होता.^{१९}

ग्रंथालय प्रशिक्षणाची सर्वप्रथम सुरुवात संयुक्त राज्य अमेरिकेत झाली. ग्रंथालय विज्ञानाच्या प्रथम प्रशिक्षणाची सोय करण्याचे श्रेय मेलविल ड्युई यांना जाते. त्यांनी १८८७ झाली. न्युयॉर्क येथील कोलंबिया महाविद्यालयात प्रशिक्षण केंद्र सुरू केले.

अमेरिकन लायब्ररीच्या मायकेन गोरमन यांनी अलिकडे ग्रंथालयाची नवी पाच सूत्रे सांगितलेली आहेत, ती म्हणजे

- ग्रंथालय हे मानवतेच्या सेवेसाठी आहे.
- ज्ञान संप्रेषणाच्या सर्व स्वरूपांचा स्वीकार केला पाहिजे.
- सेवांचा विकास करण्यासाठी बुद्धीमत्तेने तंत्रज्ञान वापरले पाहिजे.
- उत्तमाचा सन्मान करून उज्ज्वल भविष्य बनविले पाहिजे.

● अमेरिकेतील ग्रंथालय कायदा :

खऱ्या अर्थाने सार्वजनिक ग्रंथालय न्यू हॅम्पशायर संस्थानातील पीटरबर्ग येथे सुरू झाले. सन १८२३ मध्ये पीटरबर्ग नगरपालिकेने आपल्या अर्थसंकल्पामध्ये सार्वजनिक ग्रंथालय सुरू करण्यासाठी म्हणून खास तरतूद केली. १८४८ मध्ये मॅसेच्युसेट्सच्या जनरल कोर्टाने सार्वजनिक

ग्रंथालय स्थापन करण्याविषयी कायदा संमत केला व या कायद्यान्वये 'बोस्टन पब्लिक लायब्ररी' ची निर्मिती करण्यात आली.^{२०} त्याच्या पुढच्या वर्षी न्यू हॅम्पशायर परगण्यातील शहरे व छोट्या गावांमध्येही स्वतंत्र सार्वजनिक ग्रंथालये स्थापन करण्यासाठी कायदा करण्यात आला, ग्रंथालयांसाठी आर्थिक तरतूद व्हावी म्हणून नागरिकांवर कर आकारण्यात आले. आज अमेरिकेतील प्रत्येक राज्यामध्ये सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा अस्तित्वात आहे. काही कायदे व्यापक असून त्यामध्ये अनेक प्रकारच्या ग्रंथालयांचा म्हणजे शहरी, ग्रामीण, विभागीय, शालेय इत्यादीचा समावेश आहे. काही राज्यांत प्रत्येक प्रकारच्या ग्रंथालयासाठी वेगळा कायदा आहे. मात्र, सर्वच कायदांमध्ये एक गोष्ट समान आहे आणि ती म्हणजे या ग्रंथालयांचा उपयोग करण्याचे स्वातंत्र्य सर्वांना समानपणे दिलेले आहे.

अमेरिकेत संघराज्यीय ग्रंथालय कायदा फार उशिरा अस्तित्वात आला. सन १९५६ साली पहिला 'सर्वसाधारण ग्रंथालय कायदा' (जनरल लायब्ररी लॉ) देशपातळीवर अमलात आणला गेला. त्यात शैक्षणिक कार्यक्रमांमध्ये ग्रंथालयांना साहाय्य व सहकार्य देण्यासंबंधी शासकीय बांधिलकीचे धोरण व्यक्त करण्यात आले. हा कायदा प्रथम ग्रामीण भागापुरताच मर्यादित होता; परंतु सन १९६४ मध्ये त्यात दुरुस्ती करण्यात आली व शहरी विभागही त्यात अंतर्भूत करण्यात आला. या कायद्याला 'ग्रंथालयीन सेवा व संरचना कायदा' लायब्ररी सर्व्हिसेस अॅण्ड कन्स्ट्रक्शन अॅक्ट १९६४ असे नाव देण्यात आले. या कायद्यान्वये ग्रंथालयीन सेवा तसेच आंतरग्रंथालयीन सहकार्यासाठी आर्थिक तरतूद करण्यात आली.

- **मानवतावादी चळवळ आणि ग्रंथालये :**

एकोणिसाव्या शतकाच्या उत्तरार्धात काही दानशूर लोकांच्या मानवतावादी दृष्टिकोनामुळे ग्रंथालयांना चांगली मदत झाली. न्यूयॉर्क पब्लिक लायब्ररी ही जनकल्याणाच्या मानवतावादी धोरणातूनच निर्माण झाली. जॉन जेकब अॅस्टर यांनी आपल्या संपत्तीमधून ४० लक्ष डॉलर्सचा निधी न्यूयॉर्क शहरात उत्कृष्ट असे संदर्भ ग्रंथालय उभारण्यासाठी सन १८४८ मध्ये दिला. कॉग्जवेल यांनी सन १८५४ साली, अॅस्टर लायब्ररीची स्थापना केली. त्यात ९०,००० ग्रंथ होते. सन १८७० साली न्यूयॉर्क शहरात जेम्स लेनॉक्स यांनी २०,००० ग्रंथासह आणखी एक संदर्भ ग्रंथालय प्रस्थापित झाले.

न्यूयॉर्क राज्याचे माजी गव्हर्नर सॅम्युअल जे. टिल्डन यांनी सन १८८० मध्ये आपली ५० लक्ष डॉलर्सची मालमत्ता मोफत सार्वजनिक ग्रंथालय स्थापनेकरीता दान केली. सन १८९५

मध्ये वरील तीनही विश्वस्त मंडळांचे (ट्रस्ट्स्) एकत्रीकरण करून न्यूयॉर्क पब्लिक लायब्ररीची स्थापना करण्यात आली. ही खाजगी लायब्ररी आहे. परंतु तिच्या सेवा सर्वांना विनामूल्य उपलब्ध होतात. एकोणिसाव्या शतकाअखेरीस व विसाव्या शतकाच्या आरंभी ग्रंथालयांसाठी अनेक देणग्या मिळाल्या. तथापि, एका व्यक्तीने केलेली सर्वात मोठी मदत म्हणून कार्नेजी ट्रस्टचेच नाव प्रामुख्याने घ्यावे लागले. अँड्र्यू कार्नेजी (१८३५-१९१९) यांनी ग्रंथालयांच्या इमारतींसाठी मोठे अर्थसाहाय्य केले. त्यांनी इमारती बांधून दिल्या त्यात पुस्तके व इतर गोष्टी त्या त्या विभागातील लोकांनी स्वखर्चाने कराव्यात अशी कार्नेजी यांची इच्छा होती. अमेरिका देशात सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या १८३१ इमारती कार्नेजी यांच्या निधीतून बांधण्यात आल्या होत्या. सन १८९० मध्ये अमेरिकेतील १६ मोठ्या शहरातून नगरपालिकांच्या आधाराने चाललेली १६ ग्रंथालये होती. कार्नेजींच्या आर्थिक मदतीमुळे एकोणिसाव्या शतकाच्या अखेरीस सर्वत्र सार्वजनिक ग्रंथालयाचे प्रचंड जाळे विणले गेले.

● अमेरिकी ग्रंथालय संघ (ए.एल.ए)

अमेरिकेतील ग्रंथालय चळवळीत महत्त्वपूर्ण कामगिरी करणारी ही संस्था सन १८७६ मध्ये स्थापन करण्यात आली. या संस्थेच्या घटनेमध्येच संस्थेची ध्येये व उद्दिष्टे अत्यंत स्पष्ट शब्दात नमूद केलेली आहेत, ती पुढीलप्रमाणे-

१. नवनवीन माहितीचा समावेश
२. कायदा/अर्थसाहाय्य
३. बौद्धिक स्वातंत्र्य
४. लोक जागृती

‘अमेरिकन लायब्ररी असोसिएशन’ या संस्थेची कामगिरी, अमेरिकेतील सार्वजनिक ग्रंथालय चळवळीचा पाया मजबूत करणारी आहे.

३.३.२. रशियातील सार्वजनिक ग्रंथालये :

सोव्हियत युनियन : रशिया

सोव्हियत युनियनमधील सार्वजनिक ग्रंथालयांचा इतिहास व त्यांचे कार्य स्फूर्तिदायक आहे. या ग्रंथालयांनी देशात चांगल्या ग्रंथालयसेवा उपलब्ध करून देऊन देशातील लोकांमध्ये वैचारिक राजकीय जागृती केली, त्यांचा शैक्षणिक दर्जा उंचावला आणि त्यांची व्यावसायिक

क्षमता वाढविली. जगातील एक प्रचंड, प्रबळ राष्ट्र म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या सोव्हियत युनियनने देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची जबाबदारी सांस्कृतिक मंत्रालयांवर सोपविली होती. या ग्रंथालयांनी देशात ग्रंथालयांचे जाळे निर्माण केले होते. देशात प्रत्येक नागरिकाला त्याच्या घरापासून दोन किलोमीटर अंतरावर विनाशुल्क ग्रंथालय सेवा उपलब्ध करून द्यायला हव्यात, असे राष्ट्रप्रमुख लेनीन यांचे मत होते. शासनाच्या प्रोत्साहनामुळेच देशातील सार्वजनिक ग्रंथालये लोकांमध्ये ग्रंथवाचनाची आवड निर्माण करण्याचे प्रयत्न करित. ग्रंथालय संगोपन आणि जोपासना एकाधिकारशाही पद्धतीने केल्यामुळे या ग्रंथालयामधून दिल्या जाणाऱ्या माहिती व सेवांवर बंधने आली. त्या काळातील सार्वजनिक ग्रंथालयांवर मार्क्स आणि लेनीन यांच्या विचारांचा आणि शिकवणीचा पगडा होता. ही शिकवण ग्रंथालये लोकांपर्यंत पोहोचवीत.

राजकीय विघटन आणि स्थित्यंतरानंतर जी अनेक राष्ट्रे निर्माण झाली. त्यापैकी रशिया हा एक प्रमुख देश आहे. तेथील शासनाने उदार धोरण स्वीकारल्यामुळे ग्रंथालयात मुक्तपणे साहित्य संग्रह करता येतो आणि लोकांना ग्रंथालय सेवा देता येतात. रशियातील ग्रंथालये मानवी मूल्यांची जोपासना करण्याच्या आणि आंतरराष्ट्रीय सामंजस्य वाढविण्याच्या कार्यात गुंतली आहेत. तेथील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या कार्यामुळे त्यांना सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त झाली आहे.

“रशियामध्ये जगातील कोणत्याही देशापेक्षा अधिक म्हणजे सुमारे चार लक्ष ग्रंथालये असून, त्यापैकी एक लक्ष, पस्तीस हजार सार्वजनिक ग्रंथालये बाकीची विशेष आणि विद्यापीठ ग्रंथालये आहेत. मॉस्कोमधील लेनीन स्टेट लायब्ररीत सव्वादोन कोटी ग्रंथ व इतर वाचनीय साहित्य आहे. तर लेनीनग्राडमधील अकादमी ऑफ सायन्सेसच्या ग्रंथालयात साठ लक्ष व सार्वजनिक ग्रंथालयात एक कोटी चाळीस लक्ष ग्रंथ आहेत.”

रशियाचे राष्ट्रीय ग्रंथालय सेंट पिटर्सबर्ग या ठिकाणी आहे. १७९५ मध्ये या ग्रंथालयाची स्थापना करण्यात आली. रशियन भाषेतील सर्वात जास्त परिपूर्ण संग्रह या ग्रंथालयात आहेत. सोव्हियत युनियनचे विघटन झाले असले तरी आधीच्या सोव्हियत युनियनमधील देशांना परस्परागत ग्रंथालय सहकार्य करता यावे म्हणून १९९२ साली ‘युरेशिया लायब्ररी असॅंब्ली’ या संघटनेची स्थापना केली आहे. तिच्या माध्यमातून सोव्हियत युनियनमधून फुटून निघालेल्या देशांत ग्रंथालय सहकार्य निर्माण करण्याचे प्रयत्न केले जात आहे. या सहकार्यामुळे रशियामधील ग्रंथालयांचा फायदा होत आहे. त्यांच्या कार्याला बळकटी आणायला ही संघटना कारणीभूत होत आहे. रशियातील राजकीय बदल, सामाजिक सुधारणा, औद्योगिक आणि आर्थिक प्रगती

यामुळे देशांमध्ये पूर्वीपेक्षा अधिक प्रकर्षाने माहिती सेवेची गरज निर्माण झाली आहे. ती भागविण्याचे कार्य सार्वजनिक ग्रंथालये करीत आहेत.

समाजाशी असलेले ऋणानुबंध ध्यानात ठेवून ही ग्रंथालये, चर्चासत्रे, व्याख्याने, प्रदर्शने यांसारखे उद्बोधक आणि नृत्य, नाट्य, गायनासारखे सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करतात. त्यामुळे त्यांना महत्त्व आणि लोकप्रियता प्राप्त झाली आहे. उद्योग आणि आर्थिक प्रगतीसाठी रशियन सरकार माहिती वितरणाच्या कार्यक्रमाला महत्त्व देत आहे. माहिती ही एक राष्ट्रीय गरज आहे, अशी शासनाची धारणा आहे. त्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांना माहिती उपलब्ध करून देतांना ज्या अडचणी येतात त्या दूर करण्यासाठी राज्य सरकारांनी शासकीय यंत्रणा निर्माण केल्या आहेत. रशियातील सार्वजनिक ग्रंथालये समाजातील सर्व लोकांना आत्मियतेने माहिती उपलब्ध करून देत आहेत. रशियन जनता ग्रंथालयांच्या या नव्या अवताराकडे आस्थेने पाहत, त्यांच्या कार्याचे कौतुक करत आहेत.

रशियाबाबत प्रकाशित झालेले साहित्य आणि रशियन फेडरेशनच्या भाषांमधून विविध देशांत प्रकाशित झालेले साहित्य प्राप्त करून घेण्याकडे ग्रंथालय विशेष लक्ष देते. विज्ञान-तंत्रज्ञानाच्या प्रमुख शाखांसंबंधी बहुभाषांमधील साहित्याचा शक्य तितका सर्वसमावेशक संग्रह करण्याचा प्रयत्न ग्रंथालयामार्फत केला जातो. ग्रंथालयात सुमारे ३४.५ दशलक्ष ग्रंथ असून त्यापैकी ६.२ दशलक्ष ग्रंथ परदेशी भाषेतील आहेत.

रशियातील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या अलीकडे ज्या पाहण्या आल्या त्यानुसार, तेथील बहुसंख्य ग्रंथालयांची आर्थिक स्थिती चांगली नाही. तेथील औद्योगिक मंदीमुळे शासनाला इच्छा असुनही अर्थसहाय्य उपलब्ध करून देता येत नाही. ग्रंथालयांमध्ये ग्रंथटंचाईच्या कारणामुळे वाचकांमध्ये ग्रंथालय सेवेबाबत असमाधान निर्माण होते. रशियामधील ग्रंथालय चळवळ जोपासून तिची वाढ करण्यासाठी, सार्वजनिक ग्रंथालयांचे सामाजिक हक्क जोपासण्यासाठी १९९४ साली 'रशियन लायब्ररी असोसिएशन' या राष्ट्रीय संघटनेची स्थापना झाली.

१९२० ते १९७० पर्यंत सोव्हियत युनियनच्या काळातील राजवटीने ग्रंथालय चळवळींना फारशी चालना दिली नाही. किंबहुना ती दडपून टाकण्याचा प्रयत्न केला. १९८० च्या दशकाच्या शेवटी देशात १९९४ साली ही संघटना अस्तित्वात आली. या संघटनेचे ग्रंथालय चळवळींना दर्जा प्राप्त करून देण्यासाठी व्यासपीठ निर्माण करून दिले. त्या देशातील जे ग्रंथालय

कायदे झाले आहेत ते करण्याच्या प्रक्रियेत या संघटनेने मोलाची कामगिरी पार पाडली. संघटनेने शासनाला योग्य सल्ले दिले. १९९५ पासून ही संघटना आपल्या नियतकालिकांत 'इफ्ला' या जागतिक संघटनेच्या कार्याचा आढावा घेणारी पुरवणी प्रसिद्ध करते. त्याशिवाय ही संघटना आंतरराष्ट्रीय ग्रंथालय परिषदेचे आयोजनही करते. त्यामुळे आंतरराष्ट्रीय ग्रंथालय सहकार्य निर्माण व्हायला मदत होते.

३.३.३. ऑस्ट्रेलियातील सार्वजनिक ग्रंथालये :

ऑस्ट्रेलिया हा तसा जगापासून दूर, एका बाजूला असलेला खंडप्राय देश आहे. या देशात अगदी सुरुवातीच्या काळात ग्रंथालयांची वाढ अगदी संथगतीने झाली. देशाच्या सहाही राज्यांनी काही प्रमुख शहरांत ग्रंथालये स्थापन केली. ती वर्गणी ग्रंथालये होती आणि अगदी मर्यादित स्वरूपाच्या ग्रंथालय सेवा लोकांना उपलब्ध करून देत. शासकीय अनास्थेमुळे आणि लोकांच्या उदासीनतेमुळे या ग्रंथालयांच्या संख्येत वाढ झाली नाही आणि जी होती ती बहरली नाहीत.

अमेरिका, इंग्लंड, न्यूझीलंड या देशांशी तुलना करता ऑस्ट्रेलियात सार्वजनिक ग्रंथालयांना फार उशिरा उभारी आली. विसाव्या शतकाच्या सुरुवातीला या देशात ज्या वेळी मोठ्या संख्येने सार्वजनिक ग्रंथालये अस्तित्वात आली होती. त्यावेळी ऑस्ट्रेलियात मात्र फारच थोडी ग्रंथालये अस्तित्वात होती.

१९३४ साली 'ऑस्ट्रेलियन कौन्सिल फॉर एज्युकेशनल रिसर्च' या संस्थेने देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची पाहणी करण्यासाठी एक आयोग स्थापन केला आणि या आयोगाचे काम पिट्सबर्ग येथील कार्नेजी ग्रंथालयाचे संचालक राल्फ मन आणि ऑस्ट्रेलियातील व्हिक्टोरिया राज्याचे राज्य ग्रंथपाल अर्नेस्ट पिट्ट यांच्याकडे सोपविले. 'देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची स्थिती सुधारावी म्हणून या आयोगाने काही महत्त्वाच्या शिफारशी केल्या.' या शिफारशीमुळे आणि ऑस्ट्रेलियन ग्रंथालय संघाच्या प्रयत्नामुळे राज्य शासनांनी लोकांना विनामूल्य ग्रंथालय सेवा उपलब्ध करून देण्यास सुरुवात केली.

मन, पिट्ट आणि मेकॉल्विन आयोगांनी देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची चिकित्सकपणे पाहणी करून जे निष्कर्ष काढले, ज्या शिफारशी केल्या, त्यामुळे देशात सार्वजनिक

ग्रंथालयांसाठी अनुकूल वातावरण निर्माण झाले. राज्य शासनांनी आणि स्थानिक स्वराज्य संस्थांनी सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या वाढीकडे, त्यांचा दर्जा सुधारण्याकडे लक्ष द्यायला सुरुवात केली. ऑस्ट्रेलियातील सर्व राज्यांनी १९५० पर्यंत ग्रंथालय कायदे केल्यामुळे देशातील ग्रंथालयांच्या स्थितीत बरीच सुधारणा झाली. गेल्या ५० वर्षात ऑस्ट्रेलियात सार्वजनिक ग्रंथालयांची मोठ्या प्रमाणात वाढ झाली. ऑस्ट्रेलियातील लोकांना अभिमान वाटावा अशी त्या देशातील ग्रंथालयांची स्थिती आहे.

अ. सार्वजनिक व शालेय ग्रंथालयांचे एकीकरण : एक अभिनव उपक्रम

शासनाने नेमलेल्या आयोगांच्या शिफारशीमुळे देशातील सर्व भागांत राहणाऱ्या लोकांना चांगली ग्रंथालय सेवा उपलब्ध करून देण्यासाठी काही ठोस प्रयत्न करावयास हवेत असे शासनाला आणि ग्रंथालय कार्यकर्त्यांना वाटत होते. पण आर्थिक निधी उपलब्ध करून देणे शासनाला शक्य होत नव्हते. या समस्येतून मार्ग काढण्यासाठी शासनाने सार्वजनिक शालेय ग्रंथालयांच्या एकीकरणाची योजना विचारपूर्वक राबविण्याचे ठरवले आणि १९७० पासून प्रत्यक्षात आणली. लोकांना चांगली ग्रंथालय सेवा देण्यासाठी राबविली जात असलेली अभिनव ग्रंथालय पद्धती ही ऑस्ट्रेलियातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचे एक प्रमुख वैशिष्ट्य आहे. सार्वजनिक आणि शालेय ग्रंथालयांचे एकीकरण केल्यास समाजातील लोकांना आणि शाळांतील विद्यार्थ्यांना चांगली ग्रंथालय सेवा उपलब्ध करून देता येते. या उद्देशाने शासनाने एकत्र वापर ग्रंथालय देशात मोठ्या प्रमाणात सुरू केली आहेत. या ग्रंथालयांना तेथे 'समाज ग्रंथालये' (Community Libraries) असे संबोधण्यात येते. आज ऑस्ट्रेलियात ही ग्रंथालये चांगली सेवा देत आहेत, त्यांच्या संख्येमध्ये वाढ होत आहे. कॅनडामध्येही अशी एकत्रित ग्रंथालये अस्तित्वात आलेली आहेत आणि ती फार चांगले कार्य करित आहेत.

आ. माहिती सेवा

माहिती तंत्रज्ञानाला ऑस्ट्रेलियात फार महत्त्व आहे. जगात या क्षेत्रात जे देश प्रगतिपथावर आहेत त्यामध्ये ऑस्ट्रेलिया हा एक प्रमुख देश आहे. शासनाच्या माहिती तंत्रज्ञानाच्या या धोरणाला अनुसरून देशातील सार्वजनिक ग्रंथालये लोकांच्या माहितीच्या गरजा भागविण्याच्या आव्हानाला तोंड देत आहेत.

देशातील लोकांच्या माहितीच्या गरजा भागविता येण्यासाठी आज ऑस्ट्रेलियात सार्वजनिक ग्रंथालयांतून माहिती तंत्रज्ञानाचा अधिकाधिक वापर होऊ लागला आहे. सार्वजनिक ग्रंथालये शासनाच्या वेगवेगळ्या विभागांशी जोडली आहेत. देशातील शहरी भागांतील बहुसंख्य सार्वजनिक ग्रंथालयांतून संगणक, सी. डी. रोमसारख्या माध्यमांचा वापर केला जात आहे. ही ग्रंथालये इंटरनेटने जोडली जात आहेत.

ऑस्ट्रेलियातील तंत्रविज्ञान महाविद्यालये सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या सहकार्याने लोकांना सर्वत्र फिरत्या वाहनांतून अद्ययावत माहिती सेवा उपलब्ध करून देतात. या फिरत्या ग्रंथालयात ग्रंथ, नियतकालिकांबरोबरच संगणक, व्हिडिओ, सी. डी. रोम, टेपरेकॉर्डसारखी माहिती तंत्रज्ञानाची अत्याधुनिक साधने असतात. ही वाहन ग्रंथालये दूरवर वसलेल्या एकाकी भागांना भेटी देऊन तेथील लोकांना ग्रंथालय सेवा देतात.

ऑस्ट्रेलिया देशातील ८०% लोक सार्वजनिक ग्रंथालयांचा वापर करतात. देशाच्या सर्वांगीण प्रगतीमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालये फार महत्त्वाची भूमिका पार पाडीत आहेत. ती देशातील औपचारिक, अनौपचारिक शिक्षणाला आणि देशातील सांस्कृतिक विविधता जोपासायला हातभार लावीत आहेत.

ऑस्ट्रेलियाचे केंद्र शासन देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांना अर्थसाहाय्य देत नाही. त्यांचा आर्थिक भार राज्य शासने आणि स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे सांभाळतात. देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांनी जी प्रगती केली आहे त्याचे बरेचसे श्रेय त्यांच्याकडे जाते.

३.३.४. चीनमधील सार्वजनिक ग्रंथालये

लेखनकला, कागद व छपाई या संशोधनाच्या बाबतीत जगात चीन अग्रेसर असला तरी सातव्या शतकापूर्वीच्या चिनी ग्रंथालयांची माहिती उपलब्ध होत नाही. चीनमध्ये प्राचीन काळी ग्रंथालये अस्तित्वात होती. चीनमधील प्राचीन ग्रंथसंग्रहांचे वैशिष्ट्य म्हणजे त्या संग्रहाच्या केलेल्या सूची होय. काळाच्या ओघात ग्रंथसंग्रह नष्ट झाले. सध्या पीकींगमधील राष्ट्रीय ग्रंथालयात चाळीस लक्षाहून अधिक व नानकींग ग्रंथालयात तेवीस लक्ष ग्रंथ आहे असे सांगण्यात येते. प्रत्येक प्रांतात किमान एक मध्यवर्ती ग्रंथालय आहे. शांघाय नगरपालिका ग्रंथालयाच्या बारा शाखा असून त्यांचा एकूण ग्रंथसंग्रह नऊ लक्षाहून अधिक आहे. चीनमध्ये

कम्युनिस्ट राजवट आल्यापासून अनेक विद्यापीठे, महाविद्यालये आणि तंत्रशिक्षण संस्था स्थापन झाल्या असून प्रत्येकाला समृद्ध ग्रंथालयाची जोड आहे. त्याशिवाय शाळा व कारखाने यातून व सार्वजनिक ग्रंथालयाद्वारे जनतेला ग्रंथाची व वाचनाची सोय उपलब्ध करून देण्यात आली आहे.

१९८० साली चीनमध्ये राजकीय स्थित्यंतर झाल्यापासून तेथील शासनाचा देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांकडे पाहण्याच्या मनोवृत्तीत बराच बदल घडून आला आणि त्यामुळे देशाच्या सर्वांगीण प्रगतीसाठी शासन जे प्रयत्न करित आहे, ते प्रयत्न सफल होण्यासाठी सार्वजनिक ग्रंथालयांची गरज आहे, याची जाणीव राज्य शासनाला झाली. चीनमधील राजकीय बदलाच्या या काळात देशांत स्थैर्य, शांतता, ऐक्य टिकविण्याचे प्रयत्न राज्यकर्त्यांना करावे लागले, हे प्रयत्न करित असताना लोकांच्या मनावर मार्क्स, लेनिन आणि माओ-त्से-तुंग यांच्या विचारांचा जो पगडा होता त्यांची दखल घेवून देशाच्या अशा या मानसिक स्थितीमध्ये लोकजागृती करून लोकांना देशात घडणाऱ्या घटनांची माहिती करून देण्यासाठी शासनाला सार्वजनिक ग्रंथालयांची गरज भासली आणि म्हणून देशातील सर्व लोकांना ग्रंथालय सेवांचा लाभ मिळावा म्हणून देशभर सर्वत्र मोठ्या प्रमाणावर सार्वजनिक ग्रंथालयांची स्थापना केली.

माहिती सेवा :

चीनमधील आजची सार्वजनिक ग्रंथालये केवळ वाचकांना ग्रंथ, नियतकालिके, वृत्तपत्रे यांसारखे साहित्य उपलब्ध करून देत नाहीत. तर ती आता विविध क्षेत्रांतील तज्ज्ञांना, संशोधकांना त्यांच्या विषयांवर अत्याधुनिक, निवडक माहितीसेवा देतात. ग्रंथालय साहित्याचा वापर करून माहितीपुस्तिका, सूची, निर्देश यांच्याद्वारे लोकांना अत्याधुनिक माहिती उपलब्ध करून देतात. त्यामुळे वाचकांचा वेळ वाचतो, त्यांना तत्परतेने माहिती उपलब्ध होते. सार्वजनिक ग्रंथालये देत असलेली ही माहितीसेवा फार मोलाची आहे.

ग्रंथालयांना सहकार्य लाभावे म्हणून चीनमध्ये 'वाचकांच्या संघटना' निर्माण झाल्या आहेत. या संघटना आपापल्या भागांतील सार्वजनिक ग्रंथालये आणि वाचक यांच्यामधील दुवा म्हणून काम करतात. चीन तसा अजूनही शेतीप्रधान देश आहे. म्हणून शेतकऱ्यांना उपयोगी असलेले साहित्य, माहिती ही शेतीशी संबंधित असलेल्या विषयांवर माहितीपुस्तिका तयार करतात आणि त्या शेतकऱ्यांपर्यंत पोहचण्याची व्यवस्था करतात. सार्वजनिक ग्रंथालयांनी

दिलेल्या सेवांमुळे चीनमधील शेतकऱ्यांची आर्थिक स्थिती सुधारली आहे. ज्या भागात ग्रामीण ग्रंथालये सुरु करता येत नाहीत, अशा दुरवरच्या ठिकाणी फिरत्या वाहनांतून पुस्तके ग्रामीण भागात पोहोचविण्याची व्यवस्था केली जाते. 'वाचकांच्या घरी पुस्तक पोहचवा' हे या वाहन-ग्रंथालयाचे बोधवाक्य आहे.

ग्रंथालय सहकार्य :

नागरिकांना विविध विषयांवरील साहित्य उपलब्ध करून देण्यासाठी चीनमध्ये प्रादेशिक माहिती सेवांचे जाळे निर्माण केले आहे. या जाळ्यामुळे एकाच विभागातील सार्वजनिक ग्रंथालयांना परास्परांत समन्वय साधून एकमेकांच्या ग्रंथालय सेवांचा लाभ घेता येतो. शिवाय काही भागात सार्वजनिक विद्यालयीन, महाविद्यालयीन आणि शासकीय ग्रंथालयांनी एकत्र येवून विभागीय सहकारी संघटना निर्माण केल्या आहेत. या संघटनेत सामील झालेल्या ग्रंथालयांना एकमेकांच्या ग्रंथालय साहित्याचा, ग्रंथालय सेवांचा लाभ घेता येत असल्यामुळे त्यांना आपल्या वाचकांना अधिक चांगल्या ग्रंथालय सेवा देता येतात. चीनमधील ग्रंथालय चळवळीचे हे कार्य अनुकरणीय आहे.

ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांना व्यावसायिक शिक्षण :

चीनसारख्या अवाढव्य देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या संख्येत बरीच वाढ होत आहे. या ग्रंथालयांसाठी सेवकांची मागणी वाढत आहे. विद्यापीठातील ग्रंथालयशास्त्राचे अभ्यासक्रम विविध प्रकारच्या ग्रंथालयांच्या गरजा लक्षात ठेवून तयार केलेले आहेत. अभ्यासक्रम पूर्ण केलेल्या विद्यार्थ्यांना ग्रंथालयात काही काळ काम करावे लागते.

सार्वजनिक ग्रंथालयातील कर्मचाऱ्यांना बदलत्या काळाबरोबर राहता यावे, त्यांना ग्रंथालयातून अत्याधुनिक माहिती सेवा देता याव्यात म्हणून त्यांना संगणकाचा वापर करण्याचे शिक्षण देण्यास सुरुवात केली आहे. शासनाने प्रत्येक विभागात शिक्षण केंद्र निर्माण केले आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयातील कर्मचाऱ्यांना हे शिक्षण सक्तीचे केले आहे, यावरून चीनमधील सार्वजनिक ग्रंथालयातून दिल्या जाणाऱ्या सेवांचा दर्जा कसा असेल याची कल्पना येते.

ग्रंथालये जेवढया कार्यक्षमतेने सेवा देतील, ग्रंथालय सेवांमध्ये नैपुण्य दाखवतील तेवढी त्यांची लोकप्रियता, प्रतिष्ठा वाढेल याची जाणीव चीनमधील सार्वजनिक ग्रंथालयांना झालेली असल्यामुळे त्यांचा भविष्यकाळ उज्वल आहे, असेच म्हणावे लागेल.

३.३.५. इंग्लंडमधील सार्वजनिक ग्रंथालये :

इंग्लंडमधील सार्वजनिक ग्रंथालयांची मुहूर्तमेढ धार्मिक स्थळांतील ग्रंथालयांनी रोवली. या धर्मस्थळांतील प्रार्थना मंदिरातील धर्मगुरू, मंदिरात येणाऱ्या लोकांच्या उपयोगासाठी मंदिरात धर्मग्रंथ, हस्तलिखिते ठेवीत. त्यांची जोपासना करीत. या ग्रंथाचा वापर मर्यादित स्वरूपाचा होत होता तरी त्यांनी लोकांमध्ये वाचन प्रवृत्ती निर्माण केली. शिवाय हस्तलिखिते जतन करून ठेवण्याची महत्त्वाची कामगिरी पार पाडली. ज्ञानाच्या प्रसाराबरोबर लोकांमधील ज्ञान लालसा वाढली. त्यामुळे या देवस्थानांतील ग्रंथालयांचा वापर अधिक होऊ लागला. असे असले तरी समाजातील सर्वसाधारण लोकांना त्यांचा वापर करता येत नसल्यामुळे त्यांना वाचनालयांचे स्वरूप प्राप्त झाले नाही.

औद्योगिक क्रांतीमुळे इंग्लंडमधील सामाजिक जीवनात वैचारिक परिवर्तन घडून आले. त्यामुळे लोकांमध्ये वाचनाची आवड मोठ्या प्रमाणात वाढली आणि इंग्लंड हा वाचनाऱ्यांचा देश बनला. लोकांची वाचनाची हौस भागविण्यासाठी सार्वजनिक कार्यकर्त्यांनी आणि संस्थानी मोठ्या प्रमाणावर खाजगी, वर्गणी ग्रंथालये स्थापन केली. पण वाचकांची वाचनाची वाढती भूक ही वाचनालये भागवू शकत नसत. त्यामुळे वाचक एकत्र येत आणि वर्गणीच्या रूपाने पैसे जमवून त्या पैशातून 'वाचनालये' सुरू करीत. १८ व्या शतकाच्या उत्तरार्धात इंग्लंडमध्ये ही अशी 'वाचक मंडळींची ग्रंथालये' किंवा 'बुक क्लबज' अस्तित्वात आले. समाजातील सुशिक्षित लोक कॉफी हाऊसमध्ये एकत्र जमत. विविध विषयांवर चर्चा करीत. अशा लोकांना हवे असलेले वाचन साहित्य त्यांना उपलब्ध करून देण्याच्या हेतूने काही संस्थांनी 'कॉफी हाऊस' ग्रंथालये सुरू केली. औद्योगिक क्रांतीनुसार इंग्लंडमध्ये उद्योगधंद्यात बरीच वाढ झाली. त्यामुळे कारखान्यांत काम करणाऱ्या कामगारांची संख्या बरीच वाढली. या कामगारांना शिक्षण देण्याच्या हेतूने कारखानदारांनी त्यावेळी 'मेकॅनिकस इन्स्टिट्यूटस' स्थापन केल्या आणि कामगारांना उपयोगी पडतील अशी पुस्तके उपलब्ध करून देण्यासाठी या संस्थांनी ग्रंथालये स्थापन केली. त्यांना 'मेकॅनिकस इन्स्टिट्यूटची ग्रंथालये' असे संबोधिले जाई.

- इंग्लंडमध्ये पुढे जो सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास झाला. त्याची पायाभरणी या ग्रंथालयांनी केली. असे म्हटल्यास वावगे ठरणार नाही. या ग्रंथालयांनी इंग्लंडमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालय चळवळ रूजविण्यास हातभार लावल्यामुळे इंग्लंड 'वाचनाच्यांचे राष्ट्र' बनले.^{२१}
- इंग्लंडमध्ये १७३१ साली जेम्स कर्कवुडच्या प्रेरणेने समारे पंधरा हजार ग्रंथसंग्रह असलेले पहिले सार्वजनिक ग्रंथालय स्थापन होऊन त्या कामी डॉ. टॉमस ब्रे व नार्सिसस मार्श यांचे प्रयत्न कारणीभूत झाले. पुढे त्यांचे रूपांतर डब्लिन सार्वजनिक ग्रंथालयात झाले. १८५० मध्ये ग्रंथालय कायदा झाल्यामुळे सर्व खेडी, शहरे व औद्योगिक केंद्रे यांमधून सार्वजनिक मोफत ग्रंथालयांची स्थापना झाली. १९१४ मध्ये सहाशे ग्रंथालये होती. टॉमस ग्रीनवुड, जॉन पाससमोर एडवर्ड व अँड्रू कार्नेगी या दानशूर गृहस्थांनी दिलेल्या देणग्यांमधून देशभर अनेक ग्रंथालयाचे एक जाळेच निर्माण झाले.^{२२}

● ग्रंथालय कायदे आणि आयोग

१. ग्रंथालय कायदे :

इंग्लंडमधील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या प्रगतीचा आढावा घेताना जाणवते की तेथे निर्माण झालेली सार्वजनिक ग्रंथालय पद्धती त्या देशाने वेळोवेळी केलेल्या ग्रंथालय कायद्यांमुळे आणि शासनाने वेळोवेळी नेमलेल्या आयोगांच्या शिफारशीमुळे अस्तित्वात आली आहे. आज इंग्लंडमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालयांचा जो विकास झाला आहे, जी प्रगती झाली आहे, त्याचे श्रेय त्या देशाने तज्ज्ञांच्या सल्ल्याने संमत केलेल्या प्रागतिक स्वरूपाच्या कायद्याकडे जाते.

- १४ ऑगस्ट १८५० हा दिवस केवळ इंग्लंडमधीलच नव्हे तर जगातील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या इतिहासात फार महत्त्वाचा दिवस आहे, कारण त्या दिवशी ब्रिटिश पार्लमेंटने जगातील पहिला ग्रंथालय कायदा संमत केला.^{२३}
- एडवर्ड एडवर्डस् या ग्रंथालय श्रेत्रातील नामवंत कार्यकर्त्यांनी आणि लेखकाने इंग्लंडमधील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या स्थिती संबंधीचा आपला अहवाल १८४९ साली प्रसिद्ध केला.

ब्रिटीश संसदेतील एक ज्येष्ठ सदस्य विल्यम एवॉर्ट यांनी लोकसभेत ग्रंथालय विधेयक मांडले. या विधेयकाला बराच विरोध झाला. पण या विरोधातही हे विधेयक संमत झाले आणि

१४ ऑगस्ट १८५० रोजी ग्रंथालय कायदा अस्तित्वात आला. देशात ग्रंथालय चळवळ उभी राहण्यासाठी कायद्याचे पाठबळ आवश्यक आहे. हा विचार या कायद्यामुळे मान्य झाला. कायद्यात काही महत्त्वाच्या त्रुटी होत्या. त्यामुळे कायद्यातील त्रुटी काढून टाकून सुधारित ग्रंथालय कायदा १८५५ साली संमत करण्यात आला. १८६६ च्या ग्रंथालय कायद्याने ग्रंथालय स्थापन करण्यावर लोकसभेचे जे बंधन होते ते बंधनच काढून टाकले. या ग्रंथालय कायद्यामुळे देशात ग्रंथालयाच्या वाढीला चालना मिळाली. लोकांना सार्वजनिक ग्रंथालयाचे महत्त्व कळाले पण देशात ग्रंथालय चळवळ फार वाढली नाही. म्हणून ग्रंथालय कायद्यात ज्या त्रुटी होत्या त्या काढून सुधारित ग्रंथालय कायदा ब्रिटीश पार्लमेंटने १८९२ साली संमत केला.^{२४}

२. आयोग :

शासनाने ग्रंथालय कायदे केले तरी देशातील ग्रंथालय चळवळ अपेक्षेप्रमाणे वाढली नाही. सार्वजनिक ग्रंथालयासाठी अर्थसाहाय्य पुरेशा प्रमाणात उपलब्ध होऊ शकत नसल्यामुळे त्यांची वाढ झाली नाही. खऱ्या अर्थाने सार्वजनिक ग्रंथालये अस्तित्वात आली नाहीत, ती वर्गणी ग्रंथालयेच राहिली. म्हणून 'कार्नेजी युनायटेड किंगडम् ट्रस्ट' ने १९१५ साली देशातील ग्रंथालय चळवळीतील उणिवा शोधून काढण्यासाठी आणि ग्रंथालयाच्या समस्यांचा विचार करण्यासाठी डब्लू. जी. एस. अँडम्स यांच्या अध्यक्षतेखाली एक आयोग नेमला. या आयोगाने महत्त्वाच्या शिफारशी केल्या आणि त्या शिफारशी शासनाने स्वीकारल्या आणि त्यांची कार्यवाही करता येण्यासाठी आणि देशातील ग्रंथालयांची स्थिती सुधारण्यासाठी १९१९ साली ग्रंथालय कायदा केला. या कायद्याने ग्रंथालय कराची मर्यादा काढून टाकल्यामुळे देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांना अधिक अर्थसाहाय्य होऊ लागले आणि त्यामुळे त्यांची स्थिती बरीच सुधारली आणि देशात कार्यक्षम ग्रंथालय चळवळ उभी राहिली. ब्रिटिश शासनाने १९२७ साली सर फेडरिक जे. केन्यन यांच्यावर देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची पाहणी करून त्यांच्या सेवांमध्ये कोणत्या सुधारणा करता येतील त्यासंबंधी शिफारशी करण्याची जबाबदारी सोपविली. १९४१ साली ब्रिटिश लायब्ररी असोसिएशनने एल. आर. मॅकॉल्विन यांच्यावर देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची पाहणी करण्याची जबाबदारी सोपविली. त्यांनी आपल्या अहवालात देशात ग्रंथालय सेवा योग्य प्रकारे देता यावी म्हणून मध्यवर्ती शासनाने स्वतःच ग्रंथालय खाते निर्माण करून

त्याच्याकडे देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची जबाबदारी सोपवावी अशी महत्त्वपूर्ण सूचना केली.

१९५९ साली ब्रिटिश शिक्षण मंत्रालयाने देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयाची पाहणी करण्यासाठी सर सिडनी रॉबर्टस् यांच्या अध्यक्षतेखाली एक समिती नेमली. या समितीने देशातील ग्रंथालयाची पाहणी करून ग्रंथालय चळवळीच्या वाढीला पोषक होतील अशा अनेक महत्त्वाच्या शिफारशी केल्या. या शिफारशींच्या आधारे तयार केलेले विधेयक शिक्षणमंत्र्यांनी पार्लमेंटमध्ये सादर केले आणि १९६४ साली 'पब्लिक लायब्ररीज अँड म्युझियम अॅक्ट' हा कायदा संमत झाला. या कायद्याने देशभर लोकांना ग्रंथालय सेवा उपलब्ध करून देण्याची जबाबदारी प्रथमच केंद्र शासनावर टाकली.

ब्रिटनने वेळोवेळी केलेल्या या ग्रंथालय कायद्यांमुळे आणि नेमलेल्या आयोगांमुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या सेवांमध्ये देशभरात सुधारणा झाल्या आहेत. ग्रंथालयांना पुरेसे आर्थिक साहाय्य उपलब्ध होत आहे, ग्रंथालयांच्या स्वतः च्या इमारती उभ्या राहत आहेत. ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांना चांगल्या वेतनश्रेणी दिल्या जात आहेत. मानके, प्रमाणे ठरवून दिली आहेत. सार्वजनिक ग्रंथालयांना आवश्यक असणाऱ्या सर्व सोयी, सुविधा उपलब्ध झाल्यामुळे देशभरातील ग्रंथालय सेवांची गुणवत्ता वाढली आहे.

● आर्थिक तरतूद :

देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची आर्थिक जबाबदारी स्थानिक प्राधिकरणे (Local Authorities) सांभाळतात. ग्रंथालयांवर होणारा खर्च ग्रंथालय करद्वारे जमा झालेल्या रकमेतून आणि मध्यवर्ती शासनाकडून मिळणाऱ्या अनुदानाच्या रकमेतून होतो. सार्वजनिक ग्रंथालये वाचकांना घरी वाचायला दिल्या जाणाऱ्या ग्रंथासाठी आणि दिल्या जाणाऱ्या संदर्भ सेवेसाठी शुल्क आकारत नाहीत. मात्र सी. डी. रोम आणि इतर दृक-श्राव्य साधने घरी नेण्यासाठी आणि इंटरनेट सेवा देण्यासाठी शुल्क आकारतात. विलंब-शुल्क आणि साहित्य राखून ठेवण्यासाठी शुल्क आकारले जाते. इंग्लंडमध्ये प्रत्येक नागरिकामागे सार्वजनिक ग्रंथालयांवर १३११ पौंड खर्च केला जातो.

देणग्या :

इंग्लंडमधील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या आर्थिक समस्या सोडविण्यासाठी बऱ्याच दानशूर लोकांनी हातभार लावला आहे. प्रसिद्ध अमेरिकन उद्योगपती अँड्र्यू कार्नेजी यांनी सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या इमारतीसाठी मोठ्या देणग्या दिल्या. कार्नेजी हा जगातील असा एका दाता आहे की ज्याने आपल्या संपत्तीचा मोठा वाटा इंग्लंड, अमेरिकेतील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासासाठी दिला. कार्नेजीचे उदाहरण डोळ्यासमोर ठेवून इतर अनेक दानशूर व्यक्तींनी इंग्लंडमध्ये ग्रंथालय चळवळीला दृढमूल करण्यास हातभार लावला आहे.

३.४. भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास :

प्राचीन काळ : (सुरुवातीपासून ते १२००)

प्राचीन काळी ज्ञान मौखिक स्वरूपात जतन केले जाई. गुरुमुखातून श्रवण केलेले ज्ञान रटणघोषा पद्धतीने पठण केले जाई. लेखनकलेचा शोध लागल्यानंतर भूर्जपत्रे, ताडपत्रे, मातीच्या विटा, शिलालेख, चामडे इ.वर हे ज्ञान ग्रथित होऊ लागले. “भारताला प्राचीन काळापासून ग्रंथालयीन परंपरा आहे. ही परंपरा सिंधू संस्कृतीइतकी प्राचीन आहे. सध्या पाकिस्तानात असलेल्या रावळपिंडीजवळ झालेल्या उत्खननात अनेक संग्रहालयाचे पुरावे सापडले आहेत.”^{२५}

पुरातन काळी धार्मिक स्थळी, तसेच राजे राजवड्यांमध्ये धार्मिक व अन्य प्रकारच्या हस्तलिखितांचा संग्रह करित. “इ. स. पूर्व ३०० मध्ये सम्राट अशोकाच्या काळात तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, गुणशिला, कांची, काशी अशी अनेक विद्यापीठे अस्तित्वात आली. तेथील ग्रंथालयांमध्ये हिंदू, बौद्ध, जैन धर्मविषयक अनेक हस्तलिखितांचे संग्रह होते. विशेष म्हणजे या ग्रंथालयांचा वापर देशातील व देशाबाहेरील विद्वान करत होते. एका अर्थाने ही सार्वजनिक ग्रंथालये होती.”^{२६} प्राचीन भारतातील ग्रंथालयप्रसाराचा प्रारंभ असा उज्वल आणि अभिमानास्पद आहे.

मध्ययुगीन काळ (१२०० ते १८०४)

“मध्ययुगीन कालखंडामध्ये सम्राट अकबर, सम्राट जहांगीर, सम्राट शहाजहान यांनी ग्रंथसंग्रह केला. त्यांच्या राजगृहातील किताबखान्यात विद्वानांना प्रवेश दिला जाई आणि या ग्रंथालयांची व्यवस्था पाहण्यासाठी स्वतंत्र खाते निर्माण करून विद्वान ग्रंथपालाची नियुक्ती केली जाई. अकबर बादशहाने तर स्त्रीशिक्षणाला चालना देण्यासाठी फत्तेपूरशिक्री येथे स्वतंत्र ग्रंथालय

स्थापन केले होते. “अकबराच्या कारकिर्दीत या स्वतंत्र खात्याच्या प्रमुखाला नज़ीम म्हटले जाई. त्याच्या हाताखाली दुय्यम अधिकारी म्हणून दरोगा काम करी. हा दरोगा म्हणजे ग्रंथपालच. जहांगीर बादशहाच्या दरबारी मुकुमखान हा ग्रंथालयप्रमुख होता. विजापूरच्या आदिलशहाच्या दरबारात महाराष्ट्रातील नांदेड येथील शेष घराण्यातील वामन अनंत ग्रंथपाल म्हणून १५६५ मध्ये नेमणूक झाली होती. विजापूरच्या आदिलशहाने आपल्या राजप्रासादातील ग्रंथालयांची जबाबदारी त्याच्यावर टाकली होती. या कामासाठी त्यांना वार्षिक १००० होन इतका मोबदला मिळत होता.”^{२७} पुढील काळामध्ये हा वारसा तंजावरचे महाराज सरफोजी भोसले यांचे सरस्वती ग्रंथालय, बिकानेरचे अनुप संस्कृत ग्रंथालय आणि पाटणा (बिहार)चे खुदाबक्ष ग्रंथालय यांनी चालवलेला दिसतो.”^{२८}

“राजेरजवाड्यांकडील हस्तलिखितांचा एक संग्रह जळगाव जिल्ह्यातील दक्षिणेस पाटण येथे सापडला. ही माहिती पाटण येथील देवगिरीच्या सिंहण यादवाच्या (इ. स.१२०० ते १२४७) कालखंडातील शिलालेखामध्ये सापडली आहे. त्यामध्ये प्रसिद्ध गणिती भास्कराचार्यांचा ग्रंथालयाचा उल्लेख आहे. ही सर्व संस्कृत हस्तलिखिते होती. या ग्रंथालयाची देखभाल भास्कराचार्यांचा मुलगा लक्ष्मीधर व नातू चांगदेव करीत. यादव राजांच्या कालखंडात महाराष्ट्रामध्ये संस्कृत भाषेला मिळालेल्या राजाश्रयामुळे तत्काळात विपुल ग्रंथरचना झाली होती. या काळातील राजेरजवाडे, शास्त्री, पंडित, पुराणिक यांच्याजवळील अनेक हस्तलिखिते १९व्या शतकात पाश्चात्य आणि पौर्वात्य संशोधकांनी परिश्रमपूर्वक एकत्र केली आहेत. त्यातील असंख्य लिखिते पाश्चात्य देशांत नेली गेली, तर काही भांडारकर प्राच्य विद्या संशोधन मंदिर, पुणे, आनंदाश्रम संस्था, प्राज्ञ पाठशाळा, वाई, भारत इतिहास संशोधन मंडळ, पुणे, डेक्कन कॉलेज, पुणे इ. संस्थांच्या माध्यमातून संग्रहित करण्यात आली.”^{२९}

राजेमहाराजांसोबत संत, महंत मंडळींनी पंथीय दृष्टीने ग्रंथसंग्रह करून ग्रंथालय चळवळ रुजवलेली दिसते. समर्थ रामदासांनी ११०० हून अधिक मठ स्थापन केले. या मठांमध्ये हस्तलिखितांच्या प्रती केल्या. त्यामुळे या मठांमध्ये हस्तलिखितांचा संग्रह वाढला. या हस्तलिखितांचा संग्रह शंकर देव यांनी धुळे येथील समर्थ वाग्देवता मंदिरात केला आहे. पेशवाई कालखंडात ग्रंथांचा संग्रह, वाचन, प्रती करणे, ग्रंथलेखन व ग्रंथांची देव-घेव, ग्रंथवाचन होत होते. छत्रपती शाहूंच्या (इ. स. १६८२ ते १७४९) अनेक खात्यांपैकी पुस्तकशाळा हे एक खाते होते. गोविंदपंत आपटे या पुस्तकशाळेचे प्रमुख होते. रघुनाथराव पेशव्यांनी आनंदवल्ली येथे

इ.स.१७६५-६६ मध्ये ग्रंथांच्या प्रती करण्याचा उद्योग आरंभला होता. शास्त्री-पुराणिकांकडून धर्मग्रंथांचे वाचन पेशवे आणि सरदार यांच्या कुटुंबातील मंडळींसाठी केले जाई.

ब्रिटीश काळ (१८०४ ते १९२१) :

छापील पुस्तकांचे ग्रंथालय स्थापण्याचा प्रथम प्रयत्न मुंबई येथे लिटररी सोसायटी ऑफ बॉम्बे या संस्थेने १८०५ साली केला. या संस्थेच १८३० मध्ये बॉम्बे ब्रँच ऑफ दि रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ ग्रेट ब्रिटन अँड आयलँड हे नाव ठेवले. १८३० मध्ये या ग्रंथालयाची प्रतिष्ठापना झाली. आजही याच ठिकाणी हे ग्रंथालय असून तेथे महाराष्ट्र राज्याचे केंद्रीय ग्रंथालय आहे. याची गणना भारतातील समृद्ध संशोधन ग्रंथालयात होते.

डॉ.शि.रा. रंगनाथन यांच्या ग्रंथपालनातील नवीन संकल्पना माहित होण्याच्या काळापासून भारतात आधुनिक ग्रंथपालनाचा पहिला कालखंड सुरू झाला. “पूर्वीचे ग्रंथपालन हे वाचनसाहित्यकेंद्री होते. त्यामुळे ग्रंथालय सेवा वाचनसाहित्याच्या सुरक्षिततेशी संबंधीत राहिल्या. पूर्वी ग्रंथ हे साखळी, दोरखंड यांनी बांधलेले असून ते कडी-कुलुपामध्ये बंदिस्त असत. ते ग्रंथ सामान्य वाचकांना मिळत नसत. आधुनिक काळात ग्रंथालयीन सेवा देताना उपभोक्त्याला प्रथम महत्त्व दिले जाते. प्राचीन काळात वाचनसाहित्याला असलेले केंद्रस्थान आधुनिक काळात वाचकांना मिळाले. अशाप्रकारे आधुनिक ग्रंथपालनाचा पाया घातला गेला.”^{३०}

अर्वाचीन काळ (१९२१ ते १९६०) :

महाराष्ट्रामध्ये ग्रंथालय संघटनांची सुरुवात १९२१ साली झाली. याच वर्षी दत्तो वामन पोतदार यांच्या परिश्रमाने महाराष्ट्रातील मोफत वाचनालयांची परिषद भरली. या परिषदेत ग्रंथालय संघाची स्थापना झाली. या संघाच्या प्रेरणेने पुढील काळात अनेक ग्रंथालय संघ स्थापन झाले. तसेच १९४० साली फैजी समितीच्या अहवालामुळेही या ग्रंथालयांना पोषक वातावरण निर्माण झाले. त्यामुळे ग्रंथालय चळवळींनी जोर धरला.

साठोत्तरी काळ (१९६० ते आजतागत) :

१९६१ साली महाराष्ट्र राज्याची स्थापना झाली. तसेच १९६७ साली महाराष्ट्र सरकारने ग्रंथालय कायदा संमत केला. २ मे १९६८ पासून याची अंमलबजावणी सुरू झाली. कायद्याच्या कार्यवाहीसाठी स्वतंत्र ग्रंथालय संचालनालय स्थापन झाले. यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या

चळवळीला आणि वाढीला नवी संजीवनी मिळाली. या साऱ्यांची सविस्तर मांडणी पुढे केलेली आहे.

३.५. भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालयाची चळवळ :

ग्रंथालयांचे अस्तित्त्व प्राचीन काळापासून असले, तरी ग्रंथालय चळवळ मात्र आधुनिक काळातील आहे. ग्रंथालय हे सामाजिक जीवनाचा अविभाज्य घटक होय. या दृष्टीने व्यक्तीच्या जीवनात ग्रंथालयाला महत्त्वाचे स्थान असून ग्रंथालय सेवा मोफत मिळणे हा व्यक्तीचा हक्क व राष्ट्राची जबाबदारी होय असा ग्रंथालयविषयक दृष्टिकोन जगात पहिल्यांदा इंग्लंड, अमेरिका यांसारख्या प्रगत राष्ट्रांत मान्य झाला व ग्रंथालय चळवळीचे मूळ तेथे रुजले गेले. सार्वजनिक ग्रंथालयांची स्थापना करणे, ग्रंथ, सेवक व वाचक या घटकांमध्ये सुसंवाद राखून ग्रंथालये समृद्ध करणे, त्यांना चीरस्थायी स्वरूप प्राप्त करून देणे इ. ग्रंथालय चळवळीची उद्दिष्टे होत. या दृष्टीने व्यक्ती, ग्रंथालय संघासारख्या खाजगी संस्था व शासकीय संस्था यांनी केलेल्या कार्याचा इतिहास म्हणजेच ग्रंथालय चळवळीची इतिहास होय.

“इंग्लंडमध्ये एफ. ए. एबर्ट व एडवर्ड एडवर्डस् यांच्या प्रयत्नांमुळे १८५० मध्ये सार्वजनिक ग्रंथालयविषयक पहिला कायदा मंजूर झाला. या कायद्यान्वये जनतेकडून कर वसूल करून स्थानिक स्वराज्य संस्थांमार्फत ग्रंथालये स्थापन करण्यात आली व सर्वांना मोफत ग्रंथालयसेवा मिळू लागली. १९१९च्या कायद्याने काऊन्टी कॉन्सिले स्थापन झाली. १९६४ मध्ये पब्लिक लायब्ररीज अॅण्ड म्युझियम्स अॅक्ट मंजूर झाला. या कायद्यान्वये सार्वजनिक ग्रंथालयांची व्यवस्था ही राष्ट्राची जबाबदारी होय, ते तत्त्व मान्य करण्यात आले आणि त्यासाठी आवश्यक तो कर घेण्याची तरतूद करण्यात आली. या कायद्याप्रमाणे ४२,४६८ ग्रंथालये सुरू करण्यात आली. १८७७ मध्ये स्थापन झालेल्या ब्रिटीश ग्रंथालय संघाने ब्रिटीश ग्रंथालयाची स्थापना, ग्रंथालयशास्त्राचे शिक्षण, आंतरग्रंथालयीन देव-घेव आणि ग्रंथालय परिषदा या मार्गांनी ग्रंथालय चळवळीस मोठा हातभार लावला. अमेरिकेत १८४८ मध्ये मॅसॅच्यूसेट्स् येथे पहिला ग्रंथालय कायदा मंजूर झाला. त्यानुसार बोस्टन येथे सार्वजनिक ग्रंथालयाची स्थापना करण्यात आली. अमेरिकेतील ग्रंथालय कायद्याचे स्वरूप द्विविध आहे. फेडरल कायद्यान्वये वॉशिंग्टनची लायब्ररी ऑफ काँग्रेस, कोलंबियामधील ग्रंथालये व मध्यवर्ती सरकारच्या कक्षेतील ग्रंथालये यांची व्यवस्था पाहिली जाते. इतर राज्यांतून स्वतंत्र कायदे आहेत. १८७६ मध्ये अमेरिकन

लायब्ररी असोसिएशन या ग्रंथालय संघाची स्थापना झाली व त्या संघाद्वारा कटर, पूल, देम मेलव्हिल ड्युई यांनी ग्रंथालय चळवळीस मोठी चालना दिली.”^{३१}

ब्रिटिशांच्या राजवटीमुळे ग्रंथालयांच्या संबंधात भारतीय विचारसरणीत बदल होत गेले. ब्रिटिश राजवटीच्या काळामध्ये त्यांनी राज्यकारभाराच्या सोयीसाठी शिक्षणव्यवस्थेमध्ये परिवर्तन घडविले आणि ग्रंथनिर्मितीस प्रोत्साहन दिले आणि ग्रंथालये स्थापन केली. त्याचे रूपांतर नेटिव लायब्ररीमध्ये झाले. याच काळात सेवाभावी संस्था आणि कार्यकर्त्यांच्या प्रयत्नातून देशात चांगली ग्रंथालये उभी राहिली. काही ब्रिटिश व्यक्ती आणि ख्रिस्ती मिशनऱ्यांनीही ग्रंथालय स्थापनेच्या कामात सहकार्य केले. भारतीय ग्रंथालय चळवळीचा विचार करताना या ग्रंथालयांना विसरून चालणार नाही. कारण भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची पायाभरणी या ग्रंथालयांनी केली. भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचा उदय खऱ्या अर्थाने इंग्रजी अंमलाच्या काळात झाला. या काळात बेंगाल रॉयल एशियाटिक सोसायटीचे ग्रंथालय, कलकत्ता (इ. स. १७८४), कलकत्ता पब्लिक लायब्ररी (इ. स. १८३६), बॉम्बे नेटिव्ह जनरल लायब्ररी (इ. स. १८४५), पेटिट लायब्ररी (इ. स. १८५६), इ. स. १८७४ मध्ये बेंगाल रॉयल एशियाटिक सोसायटीचे ग्रंथालय, कलकत्ता, कोनमारा पब्लिक लायब्ररी (इ. स. १८९०), खुदाबक्ष ओरिएंटल पब्लिक लायब्ररी (इ. स. १८९१), ओरिएंटल लायब्ररी, म्हैसूर (इ. स. १८९१) इ. ग्रंथालये या दृष्टीने पाहता येतील.

इंग्रज अधिकाऱ्यांच्या प्रेरणेने ऐकोणिसाव्या शतकाच्या मध्यापर्यंत मुंबई, कलकत्ता, मद्रास या शहरातून नेटीव जनरल लायब्ररीची स्थापना झाली. परंतु पाश्चात्य राष्ट्रांच्या धर्तीवर स्थापन झालेल्या या ग्रंथालयात वर्गणीदारांशिवाय कोणालाही प्रवेश नव्हता.

ग्रंथालय चळवळीच्या विकासाला १९व्या शतकाच्या उत्तरार्धामध्ये सुरुवात झाली. या उत्तरार्ध कालखंडामध्ये भारतातील सर्व प्रांतांच्या राजधान्यांतून आणि जिल्ह्यांतून वाचनालये उघडली गेली. विशेषतः मद्रास, मुंबई आणि बंगाल या तीन प्रांतांनी या क्षेत्रात आघाडी मारली. शिवाय इंदोर, बडोदा, त्रावणकोर, कोचीन इत्यादी संस्थानांतून ग्रंथालय चळवळ मूळ धरू लागली. या कालखंडामध्ये भारत सरकारने आणखी एक महत्त्वाचे पाऊल टाकले. भारतीय वाङ्मय पाश्चात्य संशोधकांना उपलब्ध व्हावे म्हणून १८६७ मध्ये ‘प्रेस अँड रेजिस्ट्रेशन ऑफ बुक अँक्ट’ अस्तित्वात आला. या कायद्याने प्रत्येक पुस्तकाच्या मुद्रकावर कायदेशीर बंधन

घालण्यात आले. पुस्तकांची एक प्रत स्वखर्चाने राज्यसरकारकडे पाठविण्याची संपूर्ण जबाबदारी मुद्रकावर पडली. १९०० ते १९३० पर्यंतच्या काळामध्ये लॉर्ड कर्झनने स्थापन केलेली 'कलकत्ता लायब्ररी' ही इंपिरियल लायब्ररी झाली. इतकेच नव्हे, तर ग्रंथालय जनतेसाठी खुले करण्यात आले.

ग्रंथालय कायद्यामुळे इंग्लंडच्या जनतेला ग्रंथालये ही सामाजिक विकासाचे महत्त्वपूर्ण साधन आहे, याचा साक्षात्कार घडून आला. बडोदा नरेश सयाजीराव गायकवाड आणि शि. रा. रंगनाथन यांना परदेशात वाचक आणि वाचनसवय यांचा प्रकाश दिसला. पण भारतात मात्र या बाबतीत चहूकडे अंधारच होता. भारतातील आधुनिक ग्रंथालयाचा इतिहास इ. स. १८०८ साली सुरू झाला.

ग्रंथालये ही सामाजिक क्रांतीची प्रेरक केंद्रे आहेत. परंतु तरीही प्राचीन काळातील भारतातील ग्रंथालये ही राजेरजवाडे व धर्मपीठे यांच्यापुरतीच मर्यादित होती. त्यामुळे त्या काळात चळवळ घडून आली नाही. मात्र आधुनिक काळात बडोद्याचे संस्थानिक श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड यांनी आपल्या संस्थानात सार्वजनिक ग्रंथालय स्थापन करून जिल्हा, तालुका व गाव या क्रमाने ग्रंथालये स्थापन करण्याची योजना केली. परंतु ह्या चळवळी त्यांच्या संस्थानापुरतीच मर्यादित असल्याचे लक्षात येते.

“भारतातील ग्रंथालय चळवळीचा प्रारंभ बडोदा संस्थानाचे महाराज श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड यांनी केला. १९०६ च्या अमेरिकाभेटीमध्ये त्यांनी त्या देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयाचे कार्य पाहिले आणि आपल्या संस्थानातील लोकांना सार्वजनिक ग्रंथालयाची सेवा उपलब्ध करून द्यायला हवी, असे त्यांनी ठरविले. महाराजांनी अमेरिकेतील ग्रंथपाल एम.ए. बोर्डेन यांना १९१० मध्ये बडोद्यात आमंत्रित करून त्यांच्या मार्गदर्शनानुसार त्यांनी शास्त्रीय पायावर आधारित विनामूल्य, तसेच मुक्तद्वार ग्रंथालयाची स्थापना केली आणि पुढील काळात आपल्या संस्थानात सर्वत्र योजनाबद्ध पद्धतीने सार्वजनिक ग्रंथालयांचे जाळे पसरविले. म्हणूनच ते भारतीय ग्रंथालय चळवळीचे जनक म्हणून ओळखले जातात. त्यांनी बडोद्यामध्ये प्रमुख मध्यवर्ती ग्रंथालय निर्माण करून संपूर्ण बडोदे संस्थानात सरकारी मदतीने चालणारी, विनामूल्य सेवा देणारी ग्रंथालये, वाचनालये, फिरती ग्रंथालये सुरू केली. या चळवळीचे पडसाद इतर

ठिकाणी उमटले.”^{३२}“महाराजांनी बडोदे संस्थानात जिल्हा, तालुका व ग्रामग्रंथालये सुरू केली, तसेच ‘लायब्ररी मिसलेनी’ हे मासिक सुरू केले. पुढील काळात शैक्षणिक गरजांमुळे ग्रंथालय चळवळीचा प्रवाह वाहता राहिला. मुंबई, बंगाल, मद्रास आणि आंध्र विभागामध्ये ग्रंथालय क्षेत्रांची प्रगती झाली.”^{३३} या कालखंडामध्ये बडोद्याचे महाराज श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड यांचे कार्य महत्वपूर्ण ठरते. सयाजीराव महाराजांनी योजनाबद्ध ग्रंथालयपद्धतीचा पाया घातला. ग्रंथालये यांचे जाळे राज्यभर विणले. बडोदा येथे ग्रंथालयशास्त्राच्या प्रशिक्षणाचा अभ्यासक्रम १९२४ मध्ये भारतात प्रथम त्यांनीच सुरू केला. यावरून हे लक्षात येते की, बडोद्याचे हे ग्रंथालय भारतीय ग्रंथालयांना प्रेरक स्थान ठरले. बडोदा संस्थानात सुरू झालेल्या ग्रंथालय चळवळीचे पडसाद अनेक ठिकाणी उमटले. बडोदे संस्थानात सरकारच्या उत्तेजनाने इ. स. १९०६ मध्ये श्री. आमीन यांनी ‘मित्रमंडळ’ या नावाची संस्था स्थापन करून त्याद्वारे सु. २४८ ग्रंथालयांची स्थापना केली. पुढे त्या त्या प्रदेशाच्या शैक्षणिक गरजा आणि प्रगती यांनुसार ग्रंथालय चळवळीचे कार्य पुढे सुरू राहिले.

महाराष्ट्रात राजर्षी शाहू महाराजांनी बडोदानरेश सयाजीराव गायकवाड यांची प्रेरणा घेऊन स्वतःच्या संस्थानात ग्रंथालये स्थापण्याचा प्रयत्न केला. याच ग्रंथालयाची प्रेरणा घेऊन मद्रास, बंगाल, पंजाब, मुंबई या प्रांतांनीही सार्वजनिक ग्रंथालय चळवळ सुरू झाली. सर्वप्रथम मुंबई राज्याने ग्रंथालयाची नोंद घेण्याचे काम हाती घेतले. वाड्मयाच्या उत्तेजनार्थ दिलेल्या अनुदानातून जे ग्रंथ प्रकाशित होतील, ते ग्रंथ अशा ग्रंथालयांना वाटता यावेत एवढाच ग्रंथालयनोंदणीचा मूळ हेतू होता.

“आंध्रमधील सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या क्षेत्रातील जनता चळवळ, आंध्रप्रदेश लायब्ररी असोशिएशन १९१४ ची स्थापना, ग्रंथालय सर्वस्तमु व ग्रंथालय पिलग्रिमेज ही नियतकालिके, चेन्नई ऑफ इंडिया कॉन्फरन्सची योजना आणि पुढे ऑल इंडिया पब्लिक लायब्ररीमध्ये त्याचे झालेले रूपांतर, बेंगॉल लायब्ररी असोशिएशन (१९२५), पंजाब लायब्ररी असोशिएशन (१९२९) व मद्रास लायब्ररी असोशिएशन (१९२८) यांनी चळवळीला उत्तेजन दिले.

चेन्नई लायब्ररी असोशिएशन (१९२८) ने सचिव डॉ. एस. आर. रंगनाथन यांच्या नेतृत्वाखाली महत्त्वाच्या ग्रंथालयीन सेवा दिल्या. मन्नरगुडी (१९३१) येथे फिरत्या ग्रंथालयाची सेवा उपलब्ध करून तुरुंगात व दवाखान्यात ग्रंथालयसेवेची ओळख करून दिली. चर्चासत्रे,

सूचीकार्य इत्यादी मार्गांनी ग्रंथालय चळवळ वाढविण्याचे प्रयत्न करण्यात आले, तसेच ग्रंथालय प्रशिक्षणाचे वर्गही सुरू झाले. इंडियन लायब्ररी असोशिएशनच्या स्थापनेनंतर (१९३३) दिल्लीला या संघाचे स्थलांतर (१९४७) या संघाची प्रकाशने युनोस्कोच्या मदतीने साउथ इस्ट एशियातील युनियन कॅटलॉग ऑफ सायंटिफिक पिरिऑडिकल्स संकलित करण्याची योजना, दिल्ली पब्लिक लायब्ररी व इन्सडॉक यांनी कार्यान्वित करणे या सर्व गोष्टींमुळे डॉ. एस. आर. रंगनाथन यांच्या अध्यक्षतेखाली चळवळीचे स्वरूप व्यापक झाले.”^{३४}

१९३३ साली भारतीय ग्रंथालय संघ नावारूपास आल्यानंतर या संघाच्या वतीने आदर्श ग्रंथालय विधेयक तयार करण्याचे निश्चित झाले. मुंबई येथे भरलेल्या अखिल भारतीय ग्रंथालय संघाच्या वार्षिक अधिवेशनात हे ग्रंथालय विधेयक चर्चेला आले. या विधेयकास ग्रंथालय कार्यकर्त्यांकडून एकमुखी मान्यता मिळाली. याच काळात जागतिक पातळीवर दुसऱ्या महायुद्धाची बीजे रोवली जात होती. प्रत्यक्षपणे इंग्लंड या युद्धात गुंतले होते आणि भारतातील बहुसंख्य भागांवर इंग्रजांचे राज्य असल्याने त्याचा ताण येथील प्रशासनावर पडत होता. त्यामुळे या जनमान्य विधेयकावर विचार करण्यास सरकारला वेळ नव्हता. भारताच्या कानाकोपऱ्यांत १९४२ ची ‘चले जाव’ ही चळवळ जोराने सुरू झाली. या राजकीय धुमश्चक्रीत ग्रंथालय विधेयक गुप्त झाल्याचे लक्षात येते.

स्वातंत्र्योत्तर काळात भारत सरकारने डॉ. के. पी. सिन्हा यांच्या अध्यक्षतेखाली १९५६ साली एक समिती स्थापन केली. या समितीने ग्रंथालयाची विविध कार्ये, ग्रंथालय सहकार्य, सेवकांचे शिक्षण, सामाजिक शिक्षणाच्या दृष्टीने ग्रंथालयाचे कार्य, ग्रंथालयाचे प्रशासन व अर्थव्यवस्था इत्यादी विषयांवर मार्गदर्शन केले. ग्रंथालय चळवळीच्या दृष्टीने ही महत्त्वाची भूमिका होती.

३.५.१. महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयाची चळवळ :

पहिला टप्पा :

१९७८ साली मद्रास येथे ग्रंथालयाची स्थापना झाली. ग्रंथालय संघही याचवेळी स्थापन झाला. या ग्रंथालय संघाचे परिणाम इतरत्रही उमटू लागले. महाराष्ट्रात मोफत वाचनालये निर्माण करण्याची गरज लोकांमध्ये निर्माण झाली. ज्ञान सर्वसामान्यांपर्यंत पोहोचविण्याचे धाडस

ब्रिटिशांनी केले. जगामध्ये निर्माण झालेले आधुनिक ज्ञान लोकांना द्यायला हवे, हे ब्रिटीश राज्यकर्ते व अधिकाऱ्यांना वाटत होते. ग्रंथ, ग्रंथालये आणि वाचक यांच्या प्रगतीसाठी महाराष्ट्रात १८०४ साली ग्रंथालयाला सुरुवात झाली. लिटररी सोसायटी ऑफ बॉम्बे (१८०५) छापिल पुस्तकांचे पहिले ग्रंथालय स्थापले. ईस्ट इंडिया कंपनीचे सरन्यायाधीश जेम्स मॉकियंश यांच्या प्रयत्नाने एका खाजगी डॉक्टराकडून ग्रंथ खरेदी करून मुंबईत 'लिटररी सोसायटीची' स्थापना झाली. हेच ग्रंथालय १८२२ मध्ये 'रॉयल एशियाटिक सोसायटी' मुंबई शाखा नावाने ओळखले जाऊ लागले. 'गव्हर्नर सर जॉर्ज क्लार्क' यांचे सेक्रेटरी कॅप्टन फ्रेंच आणि पुण्याचे न्यायाधीश हेन्टी ब्रीज यांनी आधुनिक मराठी ग्रंथालयाची सुरुवात केली. त्यामुळे मराठीतील पहिले सार्वजनिक ग्रंथालय १८३२ साली अहमदनगर येथे सुरू झाले. म्हणून आधुनिक सार्वजनिक मराठी ग्रंथालयाचे जनकत्व सर जॉर्ज क्लार्क यांना द्यावे लागते.

दुसरा टप्पा (नेटीव जनरल लायब्ररींची स्थापना) :

महाराष्ट्रात रत्नागिरी (१८२८), अहमदनगर (१८३८), नाशिक (१८४०), पुणे (१८४८), कोल्हापूर (१८५०), ठाणे (१८५१), सातारा (१८५२), सावंतवाडी (१८५२), सोलापूर (१८५३), धुळे (१८५४), कराड (१८५७), अकोले (१८६०), बॉम्बे मॅकॅनिकस इन्स्टिट्यूट आणि जे. एन. पेटिट इन्स्टिट्यूट ग्रंथालय (आत्ताचे डेव्हिड ससून रिडिंग रूम) (१८७४) स्थापन करण्यात आले. या ग्रंथालयांत मराठी, गुजराती, इंग्रजी ग्रंथांचे संग्रह असून स्थानिक मंडळी ग्रंथालयांचा कारभार चालवीत. वर्गणी भरून सभासदत्व मिळे. वर्गणीदारांमध्ये प्रथम, दुसरा, तिसरा वर्ग तसेच आश्रयदाते आणि आजीव सभासद अशी श्रेणी असे.

तिसरा टप्पा (मराठी ग्रंथसंग्रहालये) :

ब्रिटिशांच्या काळात शिक्षणाचा प्रसार झाल्यानंतर मातृभाषेतील ग्रंथांची उणीव भासू लागली. लोकमान्य टिळकांनी स्वातंत्र्य चळवळीला प्रारंभ करताना स्वभाषेचा पुरस्कार केला. शासनानेही स्वभाषेत ग्रंथ लिहीण्यास प्रोत्साहन दिले. "लोकमान्य टिळक, लोकहितवादी, म. गो. रानडे व वि. ल. भावे यांच्या प्रयत्नांतून केवळ मराठी ग्रंथांचेच संग्रहालय स्थापन करण्याची कल्पना पुढे आली. ठाणे येथे १८९३ साली पहिले मराठी ग्रंथसंग्रहालय स्थापन झाले. महाराष्ट्रीय ग्रंथालयांचा महत्त्वाचा टप्पा म्हणून मराठी ग्रंथालयांच्या स्थापनेकडे बघितले जाते. नंतरच्या काळात स्थापन झालेले मुंबई मराठी ग्रंथसंग्रहालय (१८९८) व पुणे मराठी

ग्रंथसंग्रहालय (१९११) ही ग्रंथालये या दृष्टीने महत्त्वाची आहेत. मराठी ग्रंथ, मासिके, पुस्तिका यांचा एकत्रित संग्रह करून वाचकाला ग्रंथालयात बसून वाचण्यासाठी उपलब्ध करून दिला जात असे.

यावरून हे लक्षात येते की, संशोधक, रसिक व वाचकांना उपयुक्त मराठी ग्रंथालयाची स्थापना आणि विकास या ग्रंथालयामुळे झाला. मराठी ग्रंथालयाच्या माध्यमातून सर्वसामान्यांच्या लोकभाषेला सामाजिक, सांस्कृतिक आदान-प्रदानाला चालना मिळाली. जनसामान्यांना ग्रंथालयांविषयी आपलेपणा निर्माण झाला. यामुळे ग्रंथालयांची उपयुक्तता आणि लोकप्रियता आणखी वाढली.

चौथा टप्पा (मोफत सार्वजनिक वाचनालये) :

सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासामध्ये निःशुल्कसेवा देणारी ग्रंथालये हा महत्त्वाचा टप्पा मानला जातो. मुंबई येथे पिपल्स फ्री रिडिंग रूम अँड लायब्ररीची स्थापना (१८९१)मध्ये दामोदर गोवर्धनदास सुखडवाला यांच्या देणगीमुळे झाली. पुणे येथे १९१२ साली वि. ग. केतकर यांनी मोफत वाचनालय स्थापन केले. दत्तो वामन पोतदार यांनी या प्रकारच्या अनेक वाचनालयांची मोफत वाचनालय मंडळ या नावाने संघटना काढली.

पाचवा टप्पा (महाराष्ट्र वाचनालय संघ) :

१९२१मध्ये पुणे येथे महाराष्ट्रीय मोफत वाचनालयाची परिषद भरून त्यामध्ये महाराष्ट्रीय वाचनालय संघाची स्थापना करण्यात आली. या संघटनेमार्फत ग्रंथालयांच्या प्रश्नांना वाचा फोडणे, सहकारी तत्त्वावर ग्रंथखरेदी करणे आणि स्थानिक स्वराज्य संस्थांकडून वाचनालयांना मदत देणे इ. ठराव मंजूर करण्यात आले.

सहावा टप्पा (फैजी समिती) :

मुंबई प्रांताचे तत्कालीन मुख्यमंत्री बाळासाहेब खेर यांनी १९३७ साली सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासाकरिता श्री फैजी यांच्या अध्यक्षतेखाली समिती नेमली. १९४० साली त्याचा अहवाल शासनाला सादर झाला. या शिफारशीनुसार केंद्रीय, प्रादेशिक, जिल्हा, तालुका व खेड्यातील लोकवस्तीच्या ठिकाणी टप्प्याटप्प्याने सार्वजनिक ग्रंथालय स्थापन करणे, ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांना प्रशिक्षण देणे, ग्रंथालय संघाची स्थापना करणे, सरकारने करमाफ जागा ग्रंथालयाच्या इमारतीसाठी देणे, ग्रंथालयांच्या ग्रंथव्यवहारातील टपाल आणि वाहतुकीच्या दरात

सवलत देणे, पुस्तके परत मिळविण्यासाठी कायद्याचा आधार देणे, ग्रंथालयांना अनुदान देणे, तसेच त्यात काळानुसार वाढ करणे, ग्रंथालयांचे व्यवस्थापन सामाजिक संस्थांकडे सोपविणे इ. शिफारशी करण्यात आल्या. परंतु या शिफारशी प्रत्यक्षात आणण्याचे प्रयत्न झाले नाहीत. या शिफारशी जर अमलात आल्या असत्या, तर सार्वजनिक ग्रंथालयांचे जाळे निर्माण होऊ शकले असते. असे असले, तरी या अहवालाने ग्रंथालय चळवळीला एक नवी दृष्टी दिली.

सातवा टप्पा (स्वतंत्र ग्रंथालय खाते) :

१९४७ साली भारताला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर सार्वजनिक ग्रंथालयाचा विकास व्हावा म्हणून ग्रंथालयांचे वेगळे खाते स्थापन करण्यात आले. त्याचे प्रमुख म्हणून क्युरेटर ऑफ लायब्ररीज नेमण्यात आले. या पदी श्री. र. पु. कर्वे, त्र्यं. दि. वाकनीस, कृ. द. पुराणिक यांनी काम पाहिले. या खात्याने फैजी समितीच्या शिफारशीप्रमाणे सार्वजनिक ग्रंथालयांना मान्यता आणि अनुदान देण्याचे नियम तयार केले, ग्रंथालय संघांना मान्यता देऊन अनुदान दिले, तसेच ग्रंथालयांच्या परिषदांना उपस्थित राहून मार्गदर्शन केले. १९४९ साली पुणे येथे महाराष्ट्र ग्रंथालय संघ स्थापन झाला, तसेच मुंबई ग्रंथालय संघ स्थापन झाला. या ग्रंथालय संघातर्फे साहित्य सहकार हे मासिक मुखपत्र प्रसिद्ध करण्यात आले. ग्रंथपाल परिषदांमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या प्रश्नांना वाचा फोडण्याचे, अधिक अनुदान मिळवण्याचे, शासनाची मदत मिळविण्याचे संघटित प्रयत्न झाले. जिल्हा ग्रंथालय संघाची स्थापना होऊन अधिवेशनेही आयोजित करण्यात आली. मान्यताप्राप्त ग्रंथालयांची संख्या वाढून त्यांची शासनाकडून तपासणी होऊ लागली. ग्रंथालय संघातर्फे ग्रंथपालनासाठी पाठ्यपुस्तकेही तयार करण्यात आली.

आठवा टप्पा (महाराष्ट्र राज्य ग्रंथालय संघाची स्थापना) :

१९६० साली महाराष्ट्र हे स्वतंत्र राज्य स्थापन झाले आणि त्यामध्ये विदर्भ आणि मराठवाडा हे विभाग सामील करण्यात आले. या सर्व विभागांतील ग्रंथालयांची व्यवस्था, अनुदान, नियम इ. मध्ये समानता आणण्यासाठी प्रयत्न सुरू झाले आणि संपूर्ण महाराष्ट्रासाठी १९६२ साली महाराष्ट्र राज्य ग्रंथालय संघ स्थापन करण्यात आला. या ग्रंथालय संघामध्ये मुंबई ग्रंथालय संघ (१९४२), महाराष्ट्र ग्रंथालय संघ (१९४९), विदर्भ ग्रंथालय संघ (१९५८), मराठवाडा ग्रंथालय संघ (१९५९) असे चार संघ समाविष्ट आहेत. महाराष्ट्र राज्य ग्रंथालय संघात २५ सदस्य असून प्रत्येक ग्रंथालय संघाने ५ प्रतिनिधी नेमून द्यायचे असतात. याशिवाय २० सभासदांनी विभागीय संघातून प्रत्येकी एक याप्रमाणे ५ असे एकूण पाच सभासद स्वीकृत करून

घ्यावयाचे असतात. या संघाचा दैनंदिन व्यवहार पाहण्यासाठी व धोरणाच्या कार्यवाहीसाठी एक व्यवस्थापक मंडळ असते. एकूण १२ सभासदांच्या व्यवस्थापक मंडळात एक कार्याध्यक्ष, एक उप कार्याध्यक्ष, एक कार्यवाहक व एक सहकार्यवाहक हे पदाधिकारी निवडले जातात. या ग्रंथालय संघातर्फे ग्रंथालये, ग्रंथपाल, ग्रंथपालसेवक यांचे अधिवेशन भरविण्यात येते. या परिषदांमधून महाराष्ट्र राज्य ग्रंथालय कायद्याच्या कार्यवाहीमधील अडचणी, जिल्हा ग्रंथालय समित्या, साखळी योजना, सार्वजनिक ग्रंथालयांना अनुदान देण्याचे नियम व कार्यपद्धती, राजा राममोहन रॉय लायब्ररी फाऊंडेशनतर्फे मिळालेल्या अनुदानाचा उपयोग ग्रंथालयांना इमारत व अन्य साधनसामुग्रीचे अनुदान, ग्रंथपालांची वेतनश्रेणी, ग्रामीण ग्रंथालयांची परिस्थिती, शालेय व महाविद्यालयीन ग्रंथालयांच्या समस्या इ. विषयांवर विचारविनिमय करून ठराव संमत करण्यात येतो आणि त्यांच्यासाठी पाठपुरावा केला जातो. सार्वजनिक ग्रंथालयातील विविध प्रश्नांवर मत व्यक्त करण्याचे व्यासपीठ म्हणजे या परिषदा आहेत. याशिवाय या परिषदांमधून ग्रंथप्रदर्शने, चर्चा, परिसंवाद, निबंधस्पर्धा, ग्रंथालयांना भेटी, ग्रंथालय संचालकांशी चर्चा, ग्रंथालय सप्ताह साजरा करणे, जिल्हा ग्रंथालय संघाची अधिवेशने व परिषदा भरविणे, ग्रंथपालनवर्ग आयोजित करणे, ग्रंथपालनवर्गासाठी उपयुक्त पाठ्यपुस्तके लिहून प्रकाशित करणे, संघाचे मुखपत्र चालविणे, त्याद्वारे माहिती देणे व मार्गदर्शन करणे इ. कार्यक्रम उत्साहाने पार पाडले जातात. महाराष्ट्र ग्रंथालय कायद्यानुसार ग्रंथालय संघाचे चार प्रतिनिधी राज्य ग्रंथालय परिषदेचे सभासद असतात.

नववा टप्पा (ग्रंथालय कायदा) :

१९६७ साली महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा मंजूर करण्यात आला. या कायद्यामुळे ग्रंथालयांची स्थापना, मान्यता व त्यांना आर्थिक अनुदान यांसाठी नियम करण्यात आले.

या कायद्यामुळे शासनमान्यताप्राप्त ग्रंथालयांच्या संख्येत प्रचंड वाढ झाली. या कायद्यामुळे महाराष्ट्र राज्याचे केंद्रीय ग्रंथालय स्थापन करण्यात आले. तसेच पुणे, नागपूर, औरंगाबाद, नाशिक व रत्नागिरी येथे उपकेंद्रे स्थापन करण्यात आली. या कायद्यामुळे ग्रंथालयीन कर्मचाऱ्यांच्या वेतनासाठी व ग्रंथालयाच्या अन्य विकासकामांसाठी आर्थिक अनुदान मिळाले. पुढील काळात त्यामध्ये वाढ करण्यात आली. यामुळे ग्रंथालयांच्या स्वतंत्र इमारती उभ्या

राहिल्या. राजा राममोहन रॉय लायब्ररी फाऊंडेशन, कलकत्ताकडून सार्वजनिक ग्रंथालयांना विकासकामांसाठी अनुदान मिळते. त्यातून ग्रंथसाहित्य व अन्य साधनसामुग्री खरेदी केली जाते.

सार्वजनिक ग्रंथालयांना विविध प्रकारचे अनुदान मिळते आणि त्याची तपासणीही करण्यात येते, तसेच व्यवस्थापनासंदर्भात मार्गदर्शनही केले जाते. मार्च ते जून दरम्यान अल्पमुदतीचा ग्रंथपालनवर्ग राज्य ग्रंथालय संघाच्या मान्यतेने २५ ठिकाणी जिल्हा ग्रंथालय संघ आयोजित करतो. उत्कृष्ट काम करणाऱ्या ग्रंथालयांना डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर पुरस्कार देण्यात येतो.

दहावा टप्पा :

सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या गुणात्मक व संख्यात्मक विकासाच्या उद्देशाने १९६७ साली ग्रंथालय कायदा अस्तित्वात आला आणि १९७० साली सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्यात महत्त्वपूर्ण सुधारणा करण्यात आली. त्यानुसार सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या शासनमान्यतेच्या अटींमध्ये बदल करण्यात आले आणि सार्वजनिक ग्रंथालये आणि त्यासाठी कार्यकरणाऱ्या कार्यकर्त्यांच्या कार्यास उत्तेजना देणारे पुरस्कार इ. बाबी त्यात समाविष्ट करण्यात आल्या. त्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालये अधिकाधिक समृद्ध, समाजाभिमुख आणि गुणवत्तापूर्ण होण्यास मदत झाली. “१९७० साली या ग्रंथालयांच्या विकासासाठी २५ लाखांच्या निधीची व्यवस्था करण्यात आली. १९७० ते २००९ पर्यंत किमान सहा वेळा अनुदानात वाढ करण्यात आली. २००८-०९ पर्यंत १० कोटी इतक्या निधीची तरतूद करण्यात आली.”^{३५}

३.५.२. सिन्हा समिती :

केंद्र सरकारने आपल्या शिक्षण मंत्रालयामार्फत ग्रंथालय सल्लागार समितीची श्री.के.पी. सिन्हा यांच्या अध्यक्षतेखाली सन १९५७ साली स्थापना केली. या समितीला जनतेच्या वाचन गरजांची माहिती घेणे, वाचनसाहित्याची उपलब्धी तपासणे व ग्रंथालयीन व्यवस्थेची तत्कालीन स्थिती पाहून भावी ग्रंथालयीन रचनेबाबत, तिच्या प्रशासकिय व आर्थिक बाबींसंबंधी शिफारशी करण्याचे काम देण्यात आले होते. सार्वजनिक ग्रंथालयांविषयी राष्ट्रीय स्तरावर महत्त्वाच्या शिफारशी डॉ. के. पी. सिन्हा समितीने १९५९ साली प्रसिद्ध झालेल्या अहवालात केल्या. त्यातील निवडक शिफारशी पुढीलप्रमाणे :

- प्रत्येक भारतीय नागरिकाला मोफत ग्रंथालय सेवा देण्यात यावी.
- देशातील ग्रंथालय पद्धतीची श्रेणीरचना १. राष्ट्रीय ग्रंथालय २. राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालये ३. जिल्हा ग्रंथालये ४. तालुका ग्रंथालये ५. पंचायत/ग्राम ग्रंथालये अशी असावी.
- प्रत्येक राज्यात एक मध्यवर्ती ग्रंथालय दोन प्रभागात असावे. क.)राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालय, ख.)राज्य देवघेव ग्रंथालय
- सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या सेवांची आखणी तसेच त्यांच्या सर्वकष प्रशासनासाठी राज्यांमध्ये ग्रंथालय संचालनालयाची स्थापना करावी.
- राज्यस्तरावर केलेल्या कामाच्या पाहणीसाठी व मूल्यमापनासाठी अखिल भारतीय ग्रंथालय सल्लागार समिती स्थापन करावी.
- ग्रंथालय चळवळीच्या विकासासाठी ग्रंथालय संघटना आवश्यक असल्याने केंद्र सरकार व राज्य सरकारांनी सक्षम ग्रंथालय संघटनांच्या विकासाला उत्तेजन द्यावे.
- ग्रंथालय संघांनी देशातील ग्रंथालयांच्या विकासासाठी सहकार्य करावे.
- ग्रंथालयांनी शक्य होईल तेथे ग्रंथ मित्रमंडळाच्या स्थापनेसाठी उत्तेजन द्यावे.
- विद्यापीठ ग्रंथालयांनी सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या वाचकांना वाचनसाहित्य पुरवून सहकार्य करावे.
- राज्य सरकारांनी आपल्या राज्यातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची जबाबदारी स्वीकारणे आवश्यक आहे.
- स्थानिक संस्थांच्या आवश्यक परवानगीने मालमत्ता करावरील प्रत्येक रुपयामागे सहा पैसे ग्रंथालय कर म्हणून आकारला जावा.
- राज्य सरकारांनी जमविलेल्या निधीचा समान हिस्सा केंद्र सरकारने राज्य सरकारांना पुरवावा. तसेच राज्य सरकारांनी स्थानिक संस्थांना त्यानुसार सार्वजनिक ग्रंथालयांसाठी अनुदान द्यावे.
- राज्य तसेच केंद्र सरकारांनी सर्व समावेशक ग्रंथालय कायद्याची तरतूद करावी. या कायद्यात मोफत प्रवेश, आर्थिक व्यवस्था व ग्रंथप्रदान, संग्रहप्रत आणि ग्रंथ नोंदणी

कायद्यानुसार जमा झालेल्या संग्रहातून दिली जाणारी ग्रंथालय सेवा यांचा अंतर्भाव असावा. यासाठी आवश्यक निधी केंद्र सरकारने पुरवावा.

- भारत सरकार व राज्य सरकारांनी जनतेच्या सांस्कृतिक व शैक्षणिक गरजांना न्याय देईल असा आगामी २५ वर्षांचा ग्रंथालय आराखडा तयार करावा.
- प्रत्येक राज्यात किंवा विभागात भांडार ग्रंथालय (Dormitory Library) असावे. तेथे सार्वजनिक ग्रंथालयांमधील वापरात नसलेले ग्रंथ संग्रहित केले जावेत.
- ग्रंथालय सेवकांना प्रशिक्षण देण्यात यावे.

३.५.३. फैजी समिती :

सार्वजनिक ग्रंथालय विकासाची दिशा बडोदा संस्थानातील ग्रंथालय चळवळीने ठरवून दिली असेच म्हणावे लागेल. सामाजिक स्वाथ्य हे सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या समृद्धीवर अवलंबून आहे याची जाण सयाजीराव गायकवाड महाराजांना होती.

म्हणूनच त्यांनी आपल्या संस्थानात सार्वजनिक ग्रंथालयांची साखळी निर्माण केली. त्यांचे अनुकरण करून राज्यातील ग्रंथालय विस्तार योजनेचा पाठपुरावा तत्कालीन मुख्यमंत्री बाळासाहेब खेर यांनी शासकीय पातळीवरून केला. त्यासाठी त्यांनी १९३९ साली ए.ए.ए. फैजी यांच्या अध्यक्षतेखाली राज्यातील सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये सुधारणा घडवून आणण्याच्या हेतूने 'लायब्ररी डेव्हलपमेंट कमिटी' नियुक्त केली. या समितीच्या १९४२ मध्ये प्रसिद्ध झालेल्या अहवालामुळे ग्रंथालयांचे जाळे तयार करण्याच्या कल्पनेचा उदय झाला. राज्यातील ग्रंथालय चळवळीच्या दृष्टीने ही फार महत्त्वाची घटना आहे. या समितीने राज्यातील ग्रंथालय चळवळ वाढायला पोषक होतील आणि तिला नवीन दिशा देऊ शकतील अशा अनेक महत्त्वपूर्ण शिफारसी केल्या. पण त्या शिफारशी प्रत्यक्षात आणण्यात प्रयत्न केले गेले नाहीत. या शिफारशी जर राज्य शासनाने प्रत्यक्षात आणल्या असत्या तर राज्यात सार्वजनिक ग्रंथालयांचे जाळे निर्माण होऊ शकले असते. असे असले तरी या अहवालाने राज्यातील ग्रंथालय चळवळीला एक नवी दृष्टी दिली.

या समितीने केलेल्या महत्त्वाच्या शिफारसी अशा

- मुंबईमध्ये ग्रंथालये स्थापून त्यांचे जाळे गावोगावी पसरवे.
- तालुका स्तरावर आणि पाच हजार वस्तीच्या शहरांमध्ये ग्रंथालयांची स्थापना करावी.
- ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांना प्रशिक्षण द्यावे.
- ग्रंथालय संघांची स्थापना करावी.
- मध्यवर्ती तसेच विभागीय समित्यांची स्थापना करावी.
- पुस्तके परत मिळविण्यासाठी कायद्याचा आधार आसावा.
- सरकारने करमाफ जागा ग्रंथालयांच्या इमारतीसाठी द्याव्या.
- ग्रंथालयांना ग्रंथव्यवहारातील टपाल आणि वाहतुकीच्या दरात सवलत द्यावी.

फैजी कमिटीने आपल्या अहवालात राज्यातील सर्व भागांतील वाचकांची वाचनाची तहान भागविण्यासाठी साखळी वाचनालय पद्धत आवश्यक आहे हे सांगताना म्हटले की, “आजकाल खेडुतांना शाळा सोडून शेतात गेल्यावर एखादे पुस्तक वाचण्याची संधीदेखील मिळत नाही. खेड्यातील लोकांना अशा संधी मिळू शकल्या नाहीत. तर त्यांच्या शालेय शिक्षणावर झालेला खर्च वाया गेला असेच म्हणावे लागेल. त्यांना अशी संधी मिळवून देण्याचे एकमेव साधन म्हणजे सुसंघटित असे सार्वजनिक ग्रंथालयांचे जाळे होय.” फैजी कमिटीचा अहवाल आजही शासनाला मार्गदर्शक ठरेल असाच आहे.

स्वातंत्र्योत्तर काळात ग्रंथालय कार्यकर्त्यांनी राज्यात ग्रंथालय चळवळ बांधणीचे जे प्रयत्न केले त्या प्रयत्नांतून सार्वजनिक ग्रंथालये निर्माण झाली. पण एकंदरीत अनुदार वृत्ती आणि सामाजिक उदासीनतेमुळे या ग्रंथालयांच्या जोपासनेकडे पुरेसे लक्ष दिले न गेल्यामुळे राज्यात सार्वजनिक ग्रंथालयांची वाढ झाली नाही. राज्यात सार्वजनिक ग्रंथालयांची वाढ आणि प्रगती व्हावी म्हणून ग्रंथालय कायद्याची गरज आहे, असे ग्रंथालय कार्यकर्त्यांना आणि विचारवंतांना प्रकर्षाने जाणवले आणि त्यांनी राज्यात ग्रंथालय कायदा व्हावा म्हणून प्रयत्न केला. त्यांच्या प्रयत्नांना यश येऊन १९६७ साली राज्य शासनाने ग्रंथालय कायदा संमत केला. संबंध राज्यामध्ये एक सुसूत्र ग्रंथालय पद्धत निर्माण करून राज्यातील सर्व लोकांना ग्रंथालय सेवा उपलब्ध करून देण्याच्या उदात्त हेतूने राज्य शासनाने हा कायदा केला आहे. राज्यात शिखर स्तरावर राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालय, विभागीय ग्रंथालये, जिल्हा-तालुका ग्रंथालये, ग्रामीण ग्रंथालये

आणि जिल्हा-तालुका ग्रंथालयांना जोडलेली फिरती ग्रंथालये अशी व्यवस्था या पद्धतीत अभिप्रेत आहे. राज्यात कुठेही राहणाऱ्या नागरिकांना त्यांच्या राहत्या ठिकाणी त्यांना हवे असलेले ग्रंथ, ग्रंथालय साहित्य उपलब्ध करून देण्याच्या हेतूने साखळी ग्रंथालय योजनेची तरतूद या ग्रंथालय कायद्यात केली आहे.

३.५.४. राष्ट्रीय ज्ञान आयोग :

ज्ञानधिष्ठित समाजाची उभारणी करण्याच्या हेतूने भारताचे पंतप्रधान मनमोहन सिंग यांनी २००५ मध्ये 'राष्ट्रीय ज्ञान आयोग' या उच्चस्तरीय मार्गदर्शक समितीची स्थापना केली. सॅम पित्रोदा यांच्या नेतृत्वाखलीच या समितीने २००८ मध्ये आपल्या तीनशे शिफारशी शासनाला सादर केल्या. या शिफारशी केंद्र तसेच राज्यशासनांनी कार्यान्वित कराव्या अशी अपेक्षा होती. ग्रंथालयविषयक सूचना व शिफारशी करण्यासाठी एक समिती नेमली होती. या समितीने विशेषतः सार्वजनिक ग्रंथालयासंबंधी महत्त्वाच्या शिफारशी केल्या त्या अशा-

१. केंद्र शासनाने राष्ट्रीय ग्रंथालय आयोग नेमावा.
२. राष्ट्रीय स्तरावर ग्रंथालयांची गणना करण्यात यावी. या बरोबरच वाचकांच्या गरजांचा तसेच वाचनसवयींचा आढावा घेण्यात यावा.
३. ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र प्रशिक्षणाच्या सुविधांमध्ये सुधारणा करावी.
४. ग्रंथालयांसाठी आवश्यक मनुष्यबळाचा आढावा घेतला जावा.
५. केंद्र तसेच राज्य शासनाच्या अंदाजपत्रकात विशिष्ट टक्के रक्कम ग्रंथालयांसाठी नेमलेली असावी. १००० कोटींचा केंद्रीय ग्रंथालय विकासनिधी निर्माण करावा. हा निधी शासनाने ३ ते ५ वर्षांसाठी ग्रंथालयांना उभारणीसाठी देऊ करावा व तेवढीच रक्कम खाजगी क्षेत्रांकडून देणगी स्वरूपात उभारली जावी. याचे नियमन व व्यवस्थापन राष्ट्रीय ग्रंथालय आयोगाने करावे.
६. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या आधुनिकीकरणासाठी १०० टक्के अनुदान केंद्र शासनाकडून उपलब्ध व्हावे. त्यानंतरचा आवर्ती खर्च राज्य शासनाने उचलावा.
७. सार्वजनिक ग्रंथालयांनी आपल्या निर्णयप्रक्रियेत वाचकांना तसेच लोकप्रतिनिधींना समाविष्ट करावे. त्यांनी आपल्या परिसरातील ज्ञान जमवून तसेच माहितीपूर्ण कार्यक्रमांशी संलग्नता साधून जनतेसाठी माहितीकेंद्राचे काम करावे. गावग्रंथालयांची

जबाबदारी त्या त्या गावच्या पंचायतीची असावी. या माहितीकेंद्राची स्थापना शाळांच्या जवळ व्हावी.

१. ग्रंथालयांमध्ये माहिती तंत्रज्ञानाच्या उपयोजनासाठी चालना देण्यात यावी.
२. खाजगी वाचनसाहित्याची निगराणी केली जावी.
३. ग्रंथालय आणि माहिती सेवांच्या विकासासाठी सार्वजनिक आणि खाजगी क्षेत्रांच्या भागीदारीस प्रोत्साहन द्यावे.
४. सर्व ग्रंथालयांच्या तालिका संकेतस्थळांवर उपलब्ध व्हाव्या.
५. सार्वजनिक ग्रंथालयांनी सांस्कृतिक केंद्रे म्हणून कार्यरत रहावे. जनतेला व विशेषत्वाने तरूण वाचकांना सांस्कृतिक कार्यक्रमांमध्ये समाविष्ट करून घ्यावे.
६. सर्व ग्रंथालयांमधून इंटरनेटची सुविधा दिली जावी.
७. राष्ट्रीय ग्रंथालय, राष्ट्रीय स्तरावरील इतर ग्रंथालये तसेच राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालय यांमध्ये सहकार्य व समन्वय करण्यासाठी प्रोत्साहन द्यावे.
८. सर्व ग्रंथालयांचे जाळे तीन स्तरांवर रचले जावे.

अ. प्रलेख विषयक तपशील

ब. जनतेसाठी माहिती सेवांचे नेटवर्किंग व अंकीकरण

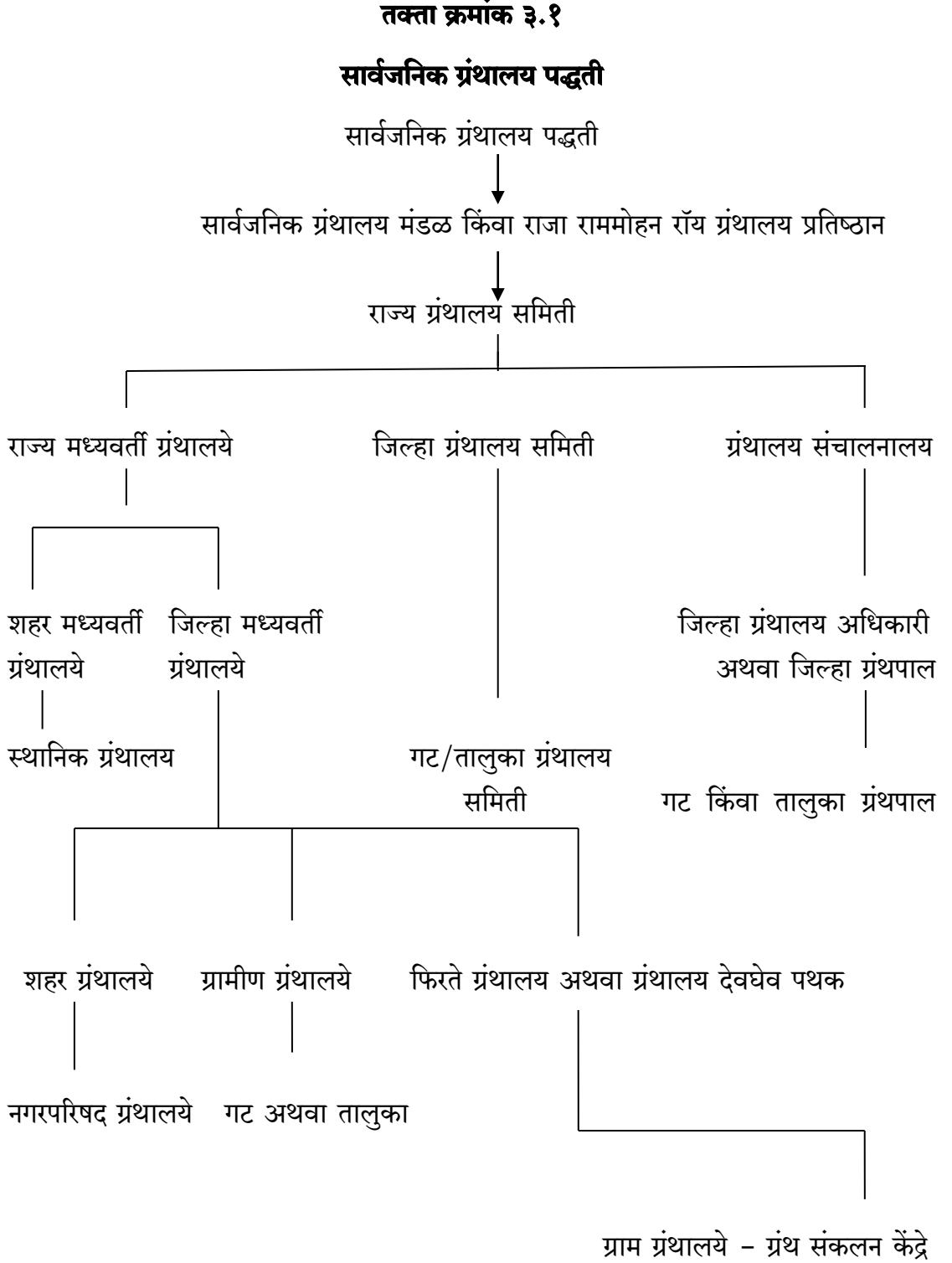
क. अंकीय साहित्य

१. गावग्रंथालये त्या त्या गावाचा ज्ञानकेंद्रे व्हावीत. या दृष्टीने त्यांच्यावर लक्ष दिले जावे.
२. समाजातील दुर्लक्षित तसेच तळागाळातील जनतेपर्यंत पोहोचविण्याचा सार्वजनिक वाचनालयांकडून प्रयत्न व्हावा. होतकरू तसेच गरीब विद्यार्थ्यांचे वाचनशुल्क माफ करून त्यांना सभासदत्व देण्यात यावे.
३. स्थानिक ग्रंथालय समितींची स्थापना सार्वजनिक ग्रंथालय कायदानुसार करण्यात यावी. त्यात स्थानिक स्वराज्य संस्थांचा सहभाग असावा. पंचायतींना ग्रंथालये चालविण्याचे प्रशिक्षण देण्यात यावे.
४. सुशिक्षित बेरोजगार तरूणांना सार्वजनिक ग्रंथालये चालविण्यास व वाढविण्यास प्रोत्साहन देण्यात यावे.

५. सांस्कृतिक मंत्रालयातर्फे ग्रंथालय कायदे पास केले जावे. तसेच त्यांची अंमलबजावणी व्हावी. राज्य पातळीवर जागृती करण्यासाठी मंत्र्यांच्या उपस्थितीत ग्रंथालय कायद्यावर चर्चासत्रे आयोजित करावी. अशीच चर्चासत्रे कर्मचाऱ्यांसाठीही आयोजित करावी.
६. ग्रंथालय संघांचे गठन अधिक जोरकसपणे व ग्रंथालयविषयक जनजागृती करण्याच्या हेतूने व्हावे.
७. चांगल्या सेवा देणाऱ्या ग्रंथालयांना प्रोत्साहन देण्यात यावे. त्यासाठी स्वयंशासित सामाजिक संस्थांची एन.जी.ओ मदत घेण्यात यावी.
८. साहित्य रद्दबातल करण्याच्या दृष्टीने सूविहित योजना ग्रंथालयांनी आखाव्या.
९. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या वित्तविषयक नियमांत सुधारणा करावी म्हणजे स्थानिक ग्रंथालयांना देणगी घेणे सुकर होईल.
१०. सार्वजनिक ग्रंथालयांचे राष्ट्रीय स्तरावरचे जाळे अत्यावश्यक आहे. त्यायोगे देशात ग्रंथालयांचे आधुनिकीकरण तसेच प्रमाणीकरण साध्य होईल.
११. भारतीय संविधानानुसार सार्वजनिक ग्रंथालये राज्य शासनाच्या अखत्यारित अंतर्भूत होतात. ती केंद्र शासनाच्याही यादीत यावी. शिफारशीच्या अंमलबजावणीला ११ व्या योजनेमधून केंद्र शासनाने राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठानमार्फत सुरुवात केली आहे.

३.५.५. महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालय पद्धतीची रचना :

सार्वजनिक ग्रंथालयाची कार्यपद्धती :



अ. राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालयाची कार्ये :

१. राज्यामध्ये प्रकाशित व मुद्रित झालेल्या सर्व ग्रंथ, नियतकालिके यांचा संग्रह करणे त्यांची जोपासना करणे व विकास करणे.
२. भारतातील व राज्यातील कला व संस्कृती यांच्याशी संबंधित सर्व वैचारिक साहित्याचा संग्रह करून त्याचे जतन व संरक्षण करणे.
३. राज्य व केंद्र शासनाच्या प्रकाशनांनी आणि राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय प्रमाणित संदर्भग्रंथ साधनांनी स्वयंपूर्ण असा संदर्भ विभाग स्थापन करणे.
४. दुर्मिळ ग्रंथ, हस्तलिखिते, नियतकालिके यांचा संग्रह करणे. मराठी भाषेतील अशाप्रकारचे जास्तीत जास्त साहित्य गोळा करणे व त्यांचे जतन करणे.
५. संशोधक व अभ्यासक यांच्यासाठी संदर्भ साधनांचे मुख्य स्रोत म्हणून कार्य करणे.
६. ग्रंथ, नियतकालिके, वृत्तपत्रे व इतर वाचनीय साहित्य यांचा समावेश असलेली राज्याची ग्रंथसूची तयार करणे. याशिवाय संशोधक व अभ्यासक यांच्यासाठी त्यांच्या मागणीनुसार विशेष ग्रंथसूची किंवा लेखसूची किंवा सूच्या तयार करणे. अंध व बाल साहित्याची सूची तयार करणे.
७. आंतर ग्रंथालय सहकार्यासाठी (ज्यात आंतरग्रंथालय देवघेव समाविष्ट आहे.) “मध्यवर्ती केंद्र” म्हणून कार्य करणे.
८. आंतर राज्य ग्रंथाची अदलाबदल, आदान प्रदान यासाठी राज्यातील “विनिमय केंद्र” म्हणून भूमिका पार पाडणे.
९. राज्याची संयुक्त तालिका संकलित करणे व तिचे परिक्षण करणे.
१०. विधिमंडळ व राज्यशासनाच्या वेगवेगळ्या विभागांना मागणीप्रमाणे ग्रंथसूची सेवा, सारसेवा व प्रलेखन सेवा पुरविण्याच्या दृष्टीने कार्याचे नियोजन करणे.
११. ग्रंथप्रदर्शने, ग्रंथालय परिषदा, परिसंवाद, व्याख्यानमाला, चर्चासत्र, ब्रेल साहित्यिक यांच्यासाठी आयोजन करणे.
१२. ब्युरो ऑफ लायब्ररी स्टडीज अँड ट्रेनिंग स्थापन करणे व त्याद्वारे केंद्रीय तालिकीकरण, वर्गीकरण करणे, तसेच राज्यातील सर्व सार्वजनिक ग्रंथालयांना तांत्रिक कामासाठी मार्गदर्शन, सहाय्य व प्रशिक्षण देणे.

१३. अपंग, अंध, रुग्ण यांना ग्रंथालय सेवा उपलब्ध करून देण्याच्या दृष्टीने सार्वजनिक ग्रंथालयांना मार्गदर्शन करणे व सहाय्य देणे.

१४. सार्वजनिक ग्रंथालय प्रणालीतील सर्व घटकांवर देखरेख करणे ही ग्रंथालये सहकार्यांने व समन्वयाने त्याची कार्ये पार पाडतात किंवा नाही ते पाहणे.

ब. विभागीय ग्रंथालये :

प्रादेशिक ग्रंथालयांची कल्पना मुळातच अलीकडच्या काळातील आहे. इ.स.१९२९ मध्ये इंग्लंडमध्ये कार्नेजी युनायटेड किंगडम ट्रस्टने सार्वजनिक ग्रंथालयामधील प्रादेशिक सहकार्यांच्या कल्पनेला प्रोत्साहन देण्यास सुरुवात केली. तेथील ग्रंथालयांनी आंतरग्रंथालय सहकार्यांसाठी स्वयंप्रेरणेने पुढाकार घेतला. इ.स. १९६४ मध्ये ब्रिटनच्या सार्वजनिक ग्रंथालय विधेयकात योग्य ती तरतुद करून प्रादेशिक सहकार्यांच्या या कार्याला वैधानिक पाठिंबा देण्यात आला. परिणाम स्वरूप प्रादेशिक ग्रंथालय केंद्रांच्या स्थापनेस चालना मिळाली.

विभागीय ग्रंथालयांची कार्ये :

१. विभागामध्ये प्रकाशित व मुद्रित झालेल्या सर्व ग्रंथ व नियतकालिके यांचा संग्रह करणे, त्यांची जोपासना करणे व विकास करणे.
२. विभागातील दुर्मिळ ग्रंथ, हस्तलिखिते, नियतकालिके यांचा संग्रह करणे व त्यांचे जतन करणे यासाठी राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालयास मदत करणे.
३. विभागाच्या “स्थानिक इतिहास संग्रहाची” जोपासना व विकास करणे.
४. विभागातील सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये उपलब्ध असलेल्या ग्रंथांची संयुक्त तालिका किंवा सूची तयार करणे.
५. विभागातील सर्व ग्रंथालयांसाठी “सेवा केंद्र” म्हणून कार्य करणे.
६. सार्वजनिक ग्रंथालयांना त्यांच्या गरजेनुसार उसनवारीने जिल्हा ग्रंथालयामार्फत ग्रंथ पुरविणे.
७. संशोधक व अभ्यासक यांना विभागीय पातळीवर उत्कृष्ट संदर्भ ग्रंथालय व संदर्भ सेवा उपलब्ध करून देणे.
८. राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालय व जिल्हा ग्रंथालय यांच्यामधील दुवा म्हणून कार्य करणे.
९. सार्वजनिक ग्रंथालय सेवेसाठी मानके, प्रमाणके निश्चित करणे.

(क) जिल्हा ग्रंथालयांची कार्ये:

१. ग्रामीण ग्रंथालये आणि दुर्गम भागातील वस्तीला ग्रंथांचा संच पुरविणे, त्याची नियमित अदलाबदल करणे. फिरत्या ग्रंथालय सेवेचे केंद्र स्थापन करणे यासाठी तालुका ग्रंथालयास मदत करणे.
२. नवसाक्षर व साक्षर यांना योग्य वाचनीय साहित्य तालुका ग्रंथालयामार्फत पुरविणे.
३. समाजशिक्षण व लोकजागृतीच्या दृष्टीने उपयुक्त उपक्रमांचे आयोजन करणे.
४. जिल्ह्यातील जनतेला वाचनाची आवड लागावी, त्यांची ग्रंथांशी ओळख व्हावी यासाठी ग्रंथप्रदर्शने, वाचनशिबिरे यासारखे कार्यक्रम करून वाचन-संस्कृतीची जोपासना करणे.
५. जिल्ह्याच्या मुख्यालयी मोफत वाचन कक्ष, संदर्भसेवा, स्पर्धा परीक्षा साहित्य उपलब्ध करून देणे.

(ड) तालुका ग्रंथालय :

सामान्यपणे सार्वजनिक ग्रंथालय प्रणालीतील जिल्हा ग्रंथालयापर्यंतची व्यवस्था शासकीय नियंत्रणाखाली असावी अशी धारणा होती परंतु नियोजनाच्या दृष्टीने जिल्हा हा घटक मोठा असल्यामुळे शासकीय तालुका ग्रंथालय असणे आवश्यक झाले आहे. राज्यस्तरीय नियोजन करताना पंचायत शासन नियोजन करणे सुरु झाले. गुजरात सार्वत्रिक ग्रंथालय अधिनियम २००१ मध्ये याबाबत तरतुद करण्यात आली आहे. या अधिनियमात या ग्रंथालयाची कार्ये नमुद केलेली नाहीत. प्रणालीच्या विकासासाठी 'गाव तेथे ग्रंथालय' ही संकल्पना लक्षात घेता तालुका ग्रंथालयाची गरज प्रकर्षाने जाणवते.

तालुका ग्रंथालयांची कार्ये :

१. ग्रामीण ग्रंथालये आणि दुर्गम भागातील वस्तीला ग्रंथांचा संच पुरविणे, त्याची अदलाबदल करणे, फिरत्या ग्रंथालय सेवेचे केंद्र स्थापन करणे.
२. नवसाक्षर व साक्षर यांना वाचनीय साहित्य पुरविणे.
३. समाजशिक्षण व लोकजागृतीच्या दृष्टीने उपयुक्त उपक्रमांचे आयोजन करणे.
४. तालुक्यातील जनतेला वाचनाची आवड लागावी यासाठी ग्रंथप्रदर्शने, वाचनशिबिरे यासारखे कार्यक्रम आयोजित करणे.

५. तालुक्याच्या मुख्यालयी मोफत वाचन कक्ष, संदर्भसेवा, स्पर्धापरीक्षा साहित्य उपलब्ध करून देणे. ३६

३.६. महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा :

प्रस्तावना :

सार्वजनिक ग्रंथालये ही लोकांनी लोकांसाठी चालविलेली लोकप्रशासित सामाजिक संस्था आहे. त्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या विकासात जनतेने पुढाकार घेऊन त्याचा विकास करणे अपेक्षित आहे. जनतेचे नेतृत्व, कार्यकर्त्यांचे कर्तृत्व, दात्यांचे दातृत्व व शासनाचे पितृत्व या सर्वांच्या एकत्रित प्रयत्नावर राज्यातील ग्रंथालय चळवळीच्या विकासाची भिस्त आहे.

सार्वजनिक ग्रंथालय हे वंश, जाती, धर्म, भाषा व लिंग असा कोणताही भेदभाव न करता सर्वांसाठी खुले असते. सुसंस्कृत समाजनिर्मिती हा यांचा हेतू असतो. त्यामुळे या ग्रंथालयांचा प्रसार आणि विकास व्हावा ही बाब राष्ट्रीय विकासाच्या दृष्टीने महत्त्वाची ठरते. त्यामुळे या संस्थांच्या विकासासाठी स्वतंत्र अशा ग्रंथालय कायद्याची आवश्यकता वाटू लागली.

सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा : इतिहास

“महाराष्ट्र राज्यात सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७ मध्ये संमत झाला असला, तरी फार पूर्वीपासून त्यावर विचार चालू होता. १९३० मध्ये बनारस येथे भरलेल्या अखिल भारतीय शिक्षण परिषदेमध्ये डॉ. एस. आर. रंगनाथन यांनी आदर्श ग्रंथालय विधेयक मांडले.”^{३७} इ.स.१९३२ मध्ये मद्रास राज्य विधानसभेत मद्रास ग्रंथालय संघाने अशा कायद्याची मागणी केली. १९३९ मध्ये फैजी समितीने सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याची आवश्यकता स्पष्ट केली आणि १९४२ मध्ये भारतीय ग्रंथालय परिषदेमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा या विषयावर चर्चा करण्यात आली. “इ.स.१९५९ मध्ये भारत सरकारने नेमलेल्या ग्रंथालय समितीच्या अहवालात ग्रंथालय कायद्याची आवश्यकता स्पष्ट करताना असे म्हटले आहे की, ग्रंथालय कायद्याने विनामूल्य सार्वजनिक ग्रंथालय सेवा दिली पाहिजे. स्थानिक स्वराज्य संस्था व पंचायत समितीकडून प्राप्तीकराच्या उत्पन्नावर एक रूपयाला ६ पैसे याप्रमाणे कर आकारला जावा. स्थानिक स्वराज्य संस्था ग्रंथालयावर जितका खर्च करेल, तितकाच पैसा राज्य सरकार अनुदानरूपाने देईल. वीस वर्षांच्या कालावधीत हळूहळू ग्रंथालय कायदा अस्तित्वात यावा. राज्य सरकारने ग्रंथालय खाते स्थापन करावे.”^{३८}

तक्ता क्र. ३.२

भारतातील सार्वजनिक प्रशासन अधिनियमांतील तुरुतीचा तुलनात्मक तक्ता^{३९}

| तपशील | तामिळनाडू | आंध्र प्रदेश | कर्नाटक | महाराष्ट्र | पश्चिम बंगाल | मणीपूर | केरळ | हरियाणा | मिझोरम |
|---|--|---|---|---|---|---|--|--|---|
| सार्वजनिक प्रशासन अधिनियमाचे नाव | तामिळनाडू (मद्रास) सार्वजनिक प्रशासन अधिनियम, १९४८ | आंध्र प्रदेश सार्वजनिक प्रशासन अधिनियम, (१९५५) सुधारणा १९६० | कर्नाटक (केरूर) सार्वजनिक प्रशासन अधिनियम, १९६५ | महाराष्ट्र सार्वजनिक प्रशासन अधिनियम, १९६७ | पश्चिम बंगाल सार्वजनिक प्रशासन अधिनियम, १९७९ | मणीपूर सार्वजनिक प्रशासन अधिनियम, १९८८ | केरळ सार्वजनिक प्रशासन अधिनियम, १९८९ | हरियाणा सार्वजनिक प्रशासन अधिनियम, १९८९ | मिझोरम सार्वजनिक प्रशासन अधिनियम, १९९३ |
| सार्वजनिक प्रशासन अधिनियम मजुरीचे वर्ष | १९४८ | १९५५ | १९६५ | १९६७ | १९७९ | १९८८ | १९८९ | १९८९ | १९९३ |
| सार्वजनिक प्रशासन अधिनियम | १/४/१९५० | १/४/१९५६ | २२/४/१९६६ | १/५/१९६८ | १/७/१९८० | १/१०/१९९३ | १६/६/१९८९ | - | ५/३/१९९३ |
| अंमलबजावणी दिनांक | संचालक, सार्वजनिक मूचना यांचे अंतर्गत प्रशासन विभाग आहे. | स्वतंत्र सार्वजनिक प्रशासन विभाग आहे. | स्वतंत्र सार्वजनिक प्रशासन विभाग आहे. | स्वतंत्र सार्वजनिक प्रशासन विभाग आहे. | स्वतंत्र सार्वजनिक प्रशासन विभाग आहे. | स्वतंत्र सार्वजनिक प्रशासन विभाग आहे. | केरळ राज्य प्रशासन परिषद अंतर्गत विभाग आहे. | स्वतंत्र राज्य सार्वजनिक प्रशासन विभाग आहे. | स्वतंत्र प्रशासन विभाग आहे. |
| सार्वजनिक प्रशासन विभागाचे स्वतंत्र अस्तित्व | स्थानिक किंवा शहर प्रशासन प्राधिकरण स्थानिक स्वराज्य संस्थानी तावलेल्या संपत्ती आणि घर कारावालील करावरील अधिभाराच्या स्वरूपात रुपयामागे ६ फैसे प्रशासन उपकर वसूल करते. | जिल्हा किंवा शहर प्रशासन स्थानिक स्वराज्य संस्थानी तावलेल्या संपत्ती आणि घर कारावालील अधिभाराच्या स्वरूपात रुपयामागे ६ फैसे प्रशासन उपकर वसूल करते. | जिल्हा किंवा शहर प्रशासन प्राधिकरण स्थानिक स्वराज्य संस्थानी तावलेल्या संपत्ती आणि घर कारावालील अधिभाराच्या स्वरूपात रुपयामागे ३ फैसे प्रशासन उपकर वसूल करते. | प्रशासन उपकर लागू करण्याबाबत तर्तूद नाही. | प्रशासन उपकर लागू करण्याबाबत तर्तूद नाही. | प्रशासन उपकर लागू करण्याबाबत तर्तूद नाही. | राज्य प्रशासन परिषद स्थानिक स्वराज्य संस्थानी तावलेल्या संपत्ती आणि घर कारावालील अधिभाराच्या स्वरूपात रुपयामागे ५ फैसे प्रशासन उपकर वसूल करते. | जिल्हा प्रशासन सौमिनी स्थानिक स्वराज्य संस्थानी तावलेल्या संपत्ती आणि घर कारावालील अधिभाराच्या स्वरूपात रुपयामागे ५ फैसे प्रशासन उपकर वसूल करते. | प्रशासन उपकर लागू करण्याबाबत तर्तूद नाही. |
| द्वितीय व्यवस्थापन - स्वतंत्र प्रशासन निधी | स्थानिक प्रशासन प्राधिकरण निधी | जिल्हा किंवा शहर प्रशासन संस्था निधी | राज्य प्रशासन निधी व जिल्हा किंवा शहर प्रशासन प्राधिकरण निधी | प्रतिवर्षी पंचवीस लाख रुपयांसाठी कमी नाही इतका राज्य प्रशासन निधी | जिल्हा प्रशासन प्राधिकरण निधी | राज्य प्रशासन निधी | राज्य प्रशासन निधी प्रतिवर्षी राज्याच्या अंदाज पत्रकात शिक्षणसाठी केलेल्या १ टक्क्यांसाठी जास्त नाही इतकी रक्कम राज्य प्रशासन निधीस देईल. | राज्य, जिल्हा, तालुका, शहर, नगर, पंचायत (ब्लॉक), ग्राम प्रशासन निधी वेगवेगळ्या स्तरावर ठेवण्याची तर्तूद केली आहे. | - |
| द्वितीय व्यवस्थापन - महत्त्वाचे आर्थिक स्त्रोत | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तर्तूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तर्तूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तर्तूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तर्तूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तर्तूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तर्तूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तर्तूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तर्तूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तर्तूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे |
| मुद्रक व ग्रंथ नोंदणी अधिनियम, १८६७ च्या अनुषंगाने तुरुती | एक प्रत देण्याऐवजी पाच प्रती मुद्रकाने मोफत देणे | एक प्रत देण्याऐवजी पाच प्रती मुद्रकाने मोफत देणे | एक प्रत देण्याऐवजी तीन प्रती मुद्रकाने मोफत देणे | - | एक प्रत देण्याऐवजी तीन प्रती मुद्रकाने मोफत देणे | - | - | - | - |

| तपशील | गोवा | गुजरात | ओरिसा | उत्तरांचल | राजस्थान | उत्तर प्रदेश | बिहार | छत्तीसगढ | अरुणाचल प्रदेश |
|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|
| सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियमाचे नाव | गोवा सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम, १९९३ | गुजरात सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम, २००१ | ओरिसा सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम, २००२ | उत्तरांचल सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम, २००५ | राजस्थान सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम, २००६ | उत्तर प्रदेश सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम, २००६ | बिहार सार्वजनिक ग्रंथालय व माहिती केंद्र अधिनियम, २००८ | छत्तीसगढ हरियाणा सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम, २००८ | अरुणाचल प्रदेश सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम, २००९ |
| सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम मंजुरीचे वर्ष | १९९३ | २००१ | २००२ | २००५ | २००६ | २००६ | २००८ | २००८ | २००९ |
| सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम उपलब्धताची दिनांक | २९/७/१९९५ | १/९/२००१ | १/७/२००२ | २००५ | २०/४/२००६ | ११/८/२००६ | २३/४/२००८ | १०/९/२००८ | ४/९/२००९ |
| सार्वजनिक ग्रंथालय विभागाचे स्वतंत्र अस्तित्त्व | स्वतंत्र सार्वजनिक ग्रंथालय सेल आहे. | स्वतंत्र राज्य ग्रंथालय संचालनालय आहे. | स्वतंत्र राज्य ग्रंथालय संचालनालय आहे. | स्वतंत्र सार्वजनिक ग्रंथालय सेल आहे. | स्वतंत्र राज्य ग्रंथालय संचालनालय आहे. | स्वतंत्र राज्य ग्रंथालय संचालनालय आहे. | स्वतंत्र राज्य ग्रंथालय संचालनालय आहे. | स्वतंत्र राज्य ग्रंथालय संचालनालय आहे. | स्वतंत्र सार्वजनिक ग्रंथालय विभाग आहे. |
| वित्तीय व्यवस्थापन - ग्रंथालय उपकर | राज्य उत्पदन शुल्कावरील भारतीय बनावटीच्या विदेशी मद्यावरील विभ्रम करील उत्पादन शुल्कावर प्रत्येक लिटरमागे ५.० पैसे कराने ग्रंथालय उपकर तावता येईल. | ग्रंथालय उपकर लागू करण्याबाबत तरतूद नाही. | ग्रंथालय उपकर लागू करण्याबाबत तरतूद नाही. | ग्रंथालय उपकर लागू करण्याबाबत तरतूद नाही. | ग्रंथालय उपकर लागू करण्याबाबत तरतूद नाही. | ग्रंथालय उपकर लागू करण्याबाबत तरतूद नाही. | ग्रंथालय उपकर लागू करण्याबाबत तरतूद नाही. | ग्रंथालय उपकर लागू करण्याबाबत तरतूद नाही. | ग्रंथालय उपकर लागू करण्याबाबत तरतूद नाही. |
| वित्तीय व्यवस्थापन - स्वतंत्र ग्रंथालय निधी | राज्य ग्रंथालय निधी प्रति वर्षे राज्यच्या अंदाज पत्रकात शिक्षणसाठी केलेल्या १ टक्क्यापेक्षा जास्त नाही इतकी रक्कम राज्य ग्रंथालय निधीस देईल. | राज्य ग्रंथालय विकास निधी | - | राज्य ग्रंथालय निधी व लिखित ग्रंथालय प्राधिकरण निधी | - | - | - | - | राज्य ग्रंथालय विकास निधी |
| वित्तीय व्यवस्थापन - महत्त्वाचे आर्थिक स्त्रोत | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तरतूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तरतूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तरतूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तरतूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तरतूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तरतूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तरतूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तरतूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे | राज्य शासन अंदाज पत्रकाय तरतूदीद्वारे निधी देते तसेच विशेष बाब म्हणून राज्य व केंद्र शासन अनुदान देते. शिवाय देणगी वगैरे |
| युद्धक व ग्रंथ नोंदणी अधिनियम, १८६७ च्या अनुषंगाने दुसरी | - | - | - | - | - | - | - | - | - |

पाँड्यची मधील ग्रंथालय कायद्याच्या तरतूदीविषयी विस्तृत माहिती उपलब्ध होऊ शकली नाही.

भारतातील तामिळनाडू राज्यामध्ये (मद्रास) १९४८ साली पहिला ग्रंथालय कायदा संमत झाला. त्यानंतर १९६० आंध्रप्रदेश, १९६५ कर्नाटक, १९६७ महाराष्ट्र, १९७९ पश्चिम बंगाल, १९८८ मणिपूर, १९८९ हरियाणा, १९८९ केरळ, १९९३ गोवा, १९९३ मिझोराम, २००१ गुजरात, २००१ ओरिसा, २००५ उत्तर प्रदेश, २००५ उत्तरांचल, २००६ राजस्थान, २००७ बिहार, २००७ छत्तीसगढ, २००७ पाँडेचरी, २००९ अरुणाचल प्रदेश या १९ राज्यांमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालय विषयक कायदे अस्तित्वात आले.

महाराष्ट्रातील रत्नागिरी येथे झालेल्या भारतीय ग्रंथालय परिषदेच्या अधिवेशनामध्ये सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याची जोरदार मागणी करण्यात आली. त्याचे फलित म्हणून महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम १९६७ साली अस्तित्वात आला. सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा संमत करणारे महाराष्ट्र हे देशातील चौथे राज्य आहे. तत्कालीन मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण यांच्या काळात हा कायदा विधानसभेत संमत झाला. महाराष्ट्र राज्याच्या निर्मितीपूर्वी मराठवाड्याच्या पाच जिल्ह्यांकरिता हैद्राबाद ग्रंथालय कायदा लागू होता. त्यावेळचे शिक्षणमंत्री श्री.मधुकरराव चौधरी यांनी हे विधेयक विधानसभेत मांडले. हा कायदा संमत करण्याकामी श्री.वि. प्र. पात्रे व श्री.बाळासाहेब भारदे यांनी महत्त्वाचा वाटा उचलला.

सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास होण्याकामी ग्रंथालय कायद्याचे महत्त्वपूर्ण योगदान आहे. या कायद्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांना आर्थिक पाठबळ मिळाले आणि ग्रंथ अन्य साधनसामुग्री यांच्या विकासाचा मार्ग खुला झाला. २० डिसेंबर १९६७ रोजी राज्यपाल यांची संमती मिळाल्यानंतर महाराष्ट्र शासन राज्यपत्रात हा कायदा इंग्रजीमध्ये प्रसिद्ध करण्यात आला. त्याचा यथार्थ अनुवाद वा.ना. पंडित, भाषासंचालक, महाराष्ट्र राज्य यांनी केला. सन १९६७चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक ३४ नुसार महाराष्ट्र राज्यात सार्वजनिक ग्रंथालयाची स्थापना, परिरक्षण, संघटन व विकास यांसाठी तरतूद करण्याबाबत अधिनियम करण्यात आला. तो संबंध महाराष्ट्रास लागू करण्यात आला. तो नेमित तारखेनुसार अंमलात आणला गेला. या कायद्यानुसार राज्य ग्रंथालय परिषदेची स्थापना करण्यात आली आणि या परिषदेचे पदसिद्ध अध्यक्ष म्हणून राज्याच्या शिक्षणमंत्र्यांची नेमणूक करण्यात आली. राज्याच्या शिक्षणउपमंत्र्यांना परिषदेचे उपाध्यक्षपद देण्यात आले. महाराष्ट्र शिक्षण आणि समाजकल्याण विभागाचे सचिव, महाराष्ट्र शिक्षण संचालक, महाराष्ट्र विधानसभेचे दोन सदस्य, विधानपरिषदेचा एक सदस्य, महानगरपालिका-जिल्हा परिषदांचे प्रतिनिधी म्हणजे राज्य सरकारने नामनिर्देशित केलेला त्या

त्या विभागातील एक सदस्य, महाराष्ट्र राज्य ग्रंथालय संघाचे अध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य ग्रंथालय संघाच्या विभागीय पातळीवरचे प्रतिनिधी, साहित्य महामंडळाचे अध्यक्ष, ग्रंथालय क्षेत्रात विशेष ज्ञान किंवा रुची असलेल्या व्यक्तींमधून सरकारने नामनिर्देशित केलेले चार सदस्य आणि महाराष्ट्राचे ग्रंथालय संचालक यांचा यात समावेश करण्यात आला.

सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या शासनमान्यतेनुसार एखाद्या ठिकाणीची ग्रंथालयसेवेची गरज लक्षात घेण्यासाठी लोकसंख्येचे प्रमाण पुढीलप्रमाणे ठरविण्यात आले आहे :

| | | | | | | |
|--------|---|----------|---|---------------|---|-------------|
| ५०० | - | १०,००० | - | लोकसंख्येसाठी | - | १ ग्रंथालये |
| १०,००० | - | २५,००० | - | लोकसंख्येसाठी | - | २ ग्रंथालये |
| २५,००१ | - | ५०,००० | - | लोकसंख्येसाठी | - | ३ ग्रंथालये |
| ५०,००१ | - | १,००,००० | - | लोकसंख्येसाठी | - | ४ ग्रंथालये |

अ) सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याची आवश्यकता :

सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याची आवश्यकता भासण्याची निरनिराळी कारणे आहेत.

१. ग्रंथालय सेवा खर्चीक आहे :

सार्वजनिक ग्रंथालयसेवा ही समाजाभिमुख होण्यासाठी अमाप पैशाचे पाठबळ हवे. ग्रंथालय ही वर्धिष्णू संस्था असल्याने सार्वजनिक ग्रंथालयस्थापनेसाठी फक्त खर्च करून भागणार नाही, ग्रंथालयाच्या इमारतीची देखभाल, ग्रंथांची देखभाल, वाचकांसाठीच्या बैठकीच्या सोयीसुविधा, वीज बिल, फर्निचर व उपकरणे इ.वर सातत्याने खर्च करावा लागतो. तो खर्च व्यक्ती किंवा एखाद्या संस्थेला करणे कठीण जाते. यासाठी शासनाकडून नियमित अनुदानाची गरज भासते. कायमस्वरूपी अनुदानाचे आर्थिक पाठबळ मिळण्यासाठी कायदेशीर तरतूद गरजेची ठरते.

२. ग्रंथालयसेवा मोफत असावी :

लोकशाहीपद्धतीत अनेक हक्कांबरोबरच ज्ञान मिळविण्याचा हक्कही प्रत्येक नागरिकाला आहे. ज्ञानाची कवाडे ही सर्वांसाठी उघडी असायला हवीत. ज्ञानसाधनेद्वारेच व्यक्ती आणि समाजाचा विकास शक्य आहे. व्यक्ती व समाजाच्या विकासाची नैतिक जबाबदारी

लोककल्याणकारी शासनाची असते. त्यासाठी सार्वजनिक ग्रंथालयांचा लाभ हा सर्वांना विनामूल्य मिळायला हवा. परंतु सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या सोयीसुविधा निर्माण करण्यासाठी आणि त्या नियमितपणे सुरू ठेवण्यासाठी मोठ्या आर्थिक सहकार्याची आवश्यकता भासते. आर्थिक अडचणींची भिंत वाचक व वाचनसाहित्य यामध्ये येऊ नये म्हणून शासनाकडून ग्रंथालयांना अर्थसाहाय्य मिळणे गरजेचे आहे. गरजू वाचकांना ग्रंथालयीन सेवा मिळण्यासाठी ग्रंथालय कायद्याचा बळकट आधार आवश्यक आहे.

३. साखळी योजना राबविण्यासाठी :

सार्वजनिक ग्रंथालय साखळी योजनेद्वारा प्रमाणभूत ग्रंथालयसेवा देणे शक्य होईल. विविध पातळीवर ग्रंथालयसेवा उपलब्ध करावयाची असेल, तर सार्वजनिक ग्रंथालयाचे जाळे राज्य व देशभर पसरावे लागेल. ही पद्धत ग्रंथालय विकासासाठी व वाचकांच्या सोयीसाठी फायदेशीर ठरेल. सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या चळवळीच्या प्रसारासाठी कार्यकर्त्यांना मार्गदर्शन मिळावे लागते. त्याचबरोबर त्यांना प्रोत्साहन मिळावे म्हणून विविध पुरस्कार देणे गरजेचे आहे. या सर्वांच्या व्यवस्थापनासाठी ग्रंथालय कायद्याची आवश्यकता असते.

४. कुशल व्यवस्थापनासाठी :

सार्वजनिक ग्रंथालय ही एक महत्त्वाची सामाजिक संस्था आहे. तिचा विकास योग्य पद्धतीने होण्यासाठी, तसेच सार्वजनिक ग्रंथालयाचे सुरळीत व नियमितपणे चालण्यासाठी कुशल व्यवस्थापनाची आवश्यकता आहे. ग्रंथालय कायद्यातील तरतुदींमुळे त्याची योग्य तपासणी व लेखापरीक्षण करता येते. यांमुळे वाचकांना दर्जेदार सेवा मिळण्यास सहकार्य होते. यासाठी कायदेशीर नियमांची आवश्यकता भासते.

५. ग्रंथालयासंबंधी आस्था निर्माण होण्यासाठी :

शासकीय कायद्यामुळे सर्व वंश, जात, धर्म, लिंग निरपेक्ष दृष्टीने सार्वजनिक ग्रंथालये लोकांना ग्रंथालयीन सेवा देतात. त्यामुळे समाजातील लोकांना व्यक्तिविकासाची संधी प्राप्त होते. त्याचबरोबर सामाजिक समानतेची जाणीव जनमानसात निर्माण करणाऱ्या या ग्रंथालयांच्या कार्यामुळे ग्रंथालयासंबंधी समाजात आस्था व आपुलकीही निर्माण होते. लोकशाहीपद्धतीने ग्रंथालयाचा कारभार चालावा यासाठी सार्वजनिक ग्रंथालयांना कायद्याची आवश्यकता आहे.

ब) महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा (१९६७) वैशिष्ट्ये :

१. हा ग्रंथालय कायदा शासनाधिष्ठित नसून तो जनतेच्या चळवळीचे मूर्त स्वरूप आहे. त्यासाठी ग्रंथालय क्षेत्रातील अनेक लोकांनी कष्ट घेतले आहेत.
२. तामिळनाडू, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश या राज्यांप्रमाणे सामान्य जनतेवर कोणताही कर न बसविता महाराष्ट्र राज्य अशा सार्वजनिक ग्रंथालयांना नियमित दर्जानुसार अनुदान देते.
३. या कायद्यामुळे पश्चिम महाराष्ट्र, विदर्भ, मराठवाडा, कोकण इत्यादी विभागांतील सार्वजनिक ग्रंथालयांचे एकसूत्रीकरण झाले आहे.
४. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या सर्वांगीण विकासाठी राज्य ग्रंथालय परिषदेची स्थापना झाली आहे. या परिषदेमध्ये विधानसभा, विधानपरिषद, तसेच महानगरपालिका, जिल्हा परिषदेचे सदस्य आणि महाराष्ट्र ग्रंथालय संघाच्या प्रतिनिधींना समाविष्ट केले गेले आहे. तसेच राज्याचे शिक्षणमंत्री यांना परिषदेचे अध्यक्षपद, तसेच उपशिक्षणमंत्र्यांना परिषदेचे उपाध्यक्षपद आणि समाजकल्याण खात्याच्या सचिवांना या परिषदेचे सचिव बनविण्यात आले आहे. यामुळे ग्रंथालय चळवळीसाठी कार्य करणारे कार्यकर्ते आणि जनतेचे लोकप्रतिनिधी यांच्यात योग्य समन्वय निर्माण होऊन सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासाला मदत होते.
५. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासासाठी स्वतंत्र ग्रंथालय व संचनालय खाते निर्माण करणारे महाराष्ट्र हे पहिलेच राज्य आहे. या खात्यामुळे ग्रंथालयांच्या विकासाला, प्रसाराला आणि व्यवस्थापनाला निश्चित अशी दिशा मिळालेली आहे. देशातील इतर राज्यांना ही बाब अनुकरणीय आहे.
६. मुंबई, फोर्ट येथे मध्यवर्ती सार्वजनिक ग्रंथालय, तसेच पुणे, नागपूर, नाशिक, औरंगाबाद इत्यादी ठिकाणी विभागीय ग्रंथालये व त्यांची कार्यालये स्थापन झाली आहेत. त्यामुळे महाराष्ट्रभर पसरलेल्या सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या व्यवस्थापनात सुसूत्रता आली आहे.
७. सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्यान्वये सार्वजनिक ग्रंथालयांसाठी स्वतंत्र अनुदानसंहिता तयार केली आहे.

क) सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याची रचना :

महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा हा २० डिसेंबर १९६७ रोजी अस्तित्वात आला. त्याची कार्यवाही १९६८ सालापासून सुरू झाली. या सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याची

रचना लक्षात घेणे आवश्यक ठरते. सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा नऊ प्रकरणांमध्ये विभागला आहे. त्याची विभागवार रचना पुढीलप्रमाणे आहे :

प्रकरण पहिले :

पहिल्या प्रकरणामध्ये ग्रंथ, शैक्षणिक ग्रंथालये आणि सार्वजनिक ग्रंथालये यांच्या व्याख्या दिलेल्या आहेत. सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये शासनाकडून अनुदानपात्र असलेली ग्रंथालये, स्थानिक ग्रंथालय मंडळाच्या मदतीने चालणारी, शहरी, केंद्रीय ग्रंथालये, शाखा ग्रंथालये व ग्रंथालय केंद्र इ.चा समावेश होतो. याशिवाय कायद्याने मान्यता मिळालेली ग्रंथालयेही यात समाविष्ट आहेत. विविध तरतुदींचा समावेश या प्रकरणात केला आहे.

प्रकरण दुसरे :

दुसऱ्या प्रकरणामध्ये ग्रंथालय चळवळीस मार्गदर्शन लाभावे म्हणून एक सल्लागार समिती स्थापन केली आहे. त्यात राज्य ग्रंथालय मंडळाची घटना कार्यपद्धती, सभासद संख्या, निवडपद्धती इत्यादी बाबतीचा तपशील दिला आहे. या ग्रंथालय मंडळामध्ये २२ ते २५ सदस्य असतात. त्यांमध्ये लोकप्रतिनिधी, राज्य ग्रंथालय संचालक, शिक्षण सचिव, इतर खात्यांमधील एक सचिव व एक संचालक इ.चा समावेश आहे. या सभासदांमध्ये केवळ ५ सभासद हे सरकारी अधिकारी असून इतर सर्व सभासद हे जनतेचे प्रतिनिधी असतात. या सर्व गोष्टींचा तपशील प्रकरण दोनमध्ये देण्यात आला आहे.

प्रकरण तिसरे :

सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याच्या प्रकरण तीनमध्ये स्वतंत्र सार्वजनिक ग्रंथालयाची स्थापना, या खात्यांमध्ये कार्य, राज्य ग्रंथपाल, ग्रंथालय अनुदान सेवा इत्यादीबाबत स्पष्टीकरण देण्यात आले आहे.

प्रकरण चौथे :

सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याच्या चौथ्या प्रकरणामध्ये स्थानिक ग्रंथालय मंडळाची घटना, कार्यपद्धती, सभासद निवड, अधिकार, ग्रंथालय योजना समिती इत्यादीबाबत मार्गदर्शन केले आहे.

प्रकरण पाचवे :

सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याच्या प्रकरण पाचमध्ये ज्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांना आर्थिक स्थैर्य मिळेल, तो ग्रंथालय कर आणि राज्य सरकारमधील जमीन महसूल कराचा वाटा यांबाबत स्पष्टीकरण केलेले आहे.

प्रकरण सहावे :

प्रकरण सहामध्ये शासकीय केंद्रीय ग्रंथालय व ग्रंथालयाची कार्यपद्धती, कॉपीराईट कायदा, सर्वसाधारण सेवा, अंधविभाग, ग्रंथालय अनुदान सेवा इ.बाबत मार्गदर्शन केले आहे.

प्रकरण सातवे :

सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याच्या प्रकरण सातमध्ये राज्यातील सार्वजनिक तपासणी, वार्षिक अहवाल व मार्गदर्शन इत्यादींबाबत मार्गदर्शन केलेले आहे.

प्रकरण आठवे :

सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याच्या प्रकरण आठमध्ये १९६७ च्या सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या कायद्यानुसार जे नियम तयार होतील, त्याचा आराखडा देण्यात आला आहे.

प्रकरण नववे :

या प्रकरणामध्ये ग्रंथालय फंड व विधेयक यांमधील प्रतिनिधित्व यांबाबत स्पष्टीकरण केलेले आहे. अशा प्रकारे सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७ नुसार तरतुदी करण्यात आलेल्या आहेत.

ड) सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्यामधील प्रमुख तरतुदी :

सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा भारतात प्रथम १९४८ साली मद्रास राज्यात अस्तित्वात आला आणि महाराष्ट्र राज्यामध्ये १९६७ साली अस्तित्वात आला. त्या कायद्यातील तरतुदी पुढीलप्रमाणे :

अ) आर्थिक तरतुदी :

महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७ मध्ये राज्य सरकारकडून किमान २५ लाख इतकी आर्थिक रक्कम सार्वजनिक ग्रंथालयांसाठी देण्यात येईल. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या

दर्जानुसार हे अनुदान स्वरूपात दिले जाईल. इमारत, ग्रंथखरेदी आणि ग्रंथालयीन कर्मचाऱ्यांचे वेतन यांसाठी त्याचा विनियोग करता येईल.

ब) ग्रंथपाल व ग्रंथालयसेवक :

महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७ नुसार प्रत्येक सार्वजनिक ग्रंथालयात ग्रंथपाल व प्रशिक्षित सेवक नेमण्याची कायद्यात अट आहे.

क) सार्वजनिक ग्रंथालयांची स्थापना :

महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७ नुसार महाराष्ट्र राज्यामध्ये स्थानिक स्वराज्य संस्थांतर्फे अथवा स्वयंसेवी संघटनेतर्फे सार्वजनिक ग्रंथालयांची स्थापना करण्याचा त्यांना अधिकार आहे. राज्य सरकार स्वतः सार्वजनिक ग्रंथालयाची स्थापना करू शकते. परंतु स्थानिक प्राधिकरणास, संस्थेस किंवा यथास्थिती विश्वस्त व्यवस्थेस उक्त स्थानिक क्षेत्रात राज्य सरकारने ग्रंथालय का स्थापन करू नये, याबद्दलचे कारण दाखविण्याची संधी देण्यात आल्याशिवाय असे कोणतेही ग्रंथालय राज्य सरकार स्थापन करणार नाही.

ड) राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालय :

या सार्वजनिक ग्रंथालय कायदानुसार महाराष्ट्र शासन नवीन राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालय स्थापन करणार नाही. सध्या अस्तित्वात असलेल्या ऐशियाटीक सोसायटीच्या मुंबई येथील ग्रंथालयास मध्यवर्ती ग्रंथालय म्हणून मान्यता दिली आहे.

इ) राज्य ग्रंथालय परिषद :

सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याने राज्य ग्रंथालय परिषद निर्माण केली आहे. या राज्य ग्रंथालय परिषदेचे अध्यक्ष हे राज्याचे शिक्षणमंत्री असतात, तसेच महाराष्ट्र राज्य ग्रंथालय संघाचे पाच प्रतिनिधीही या परिषदेमध्ये असतात. महाराष्ट्र राज्य ग्रंथालय संघाचे अध्यक्ष आणि साहित्य महामंडळाचे अध्यक्ष हे परिषदेचे पदसिद्ध सभासद असतात.

ई) इतर तरतुदी :

रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक्स ॲक्ट १९६७ नुसार राज्यामध्ये मुद्रित झालेल्या प्रत्येक पुस्तकावर आणि वृत्तपत्रावर मुद्रकाचे नाव आणि मुद्रणस्थळ, प्रकाशाकाचे नाव आणि प्रकाशन स्थळ, मालकाचे नाव आणि पत्ता स्पष्टपणे छापणे कायद्याने सक्तीचे आहे.

या कायद्यानुसार कोणतेही पुस्तक छापून झाल्यानंतर त्याच्या प्रती सरकार ठरवून देईल, त्या अधिकाऱ्याकडे मुद्रकाने विनामूल्य पाठविणे आवश्यक असते. या प्रती पाठविण्यासाठी येणारा सर्व खर्च मुद्रकाने करावयाचा असतो. याशिवाय सरकारने ठरवून दिलेल्या पाच वाचनालयांना या प्रती मुद्रकाने विनामूल्य आणि स्वखर्चाने पुस्तक तयार झाल्यापासून १ महिन्याच्या आत पाठवाव्यात. वरील प्रती मुदतीत पाठविणे मुद्रकास सोयीस्कर व्हावे, म्हणून प्रकाशकाने आवश्यक तेवढ्या प्रती मुद्रकास मुदतीच्या आत उपलब्ध करून देणे आवश्यक आहे. या कायद्यानुसार

१. राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालय, सेंट्रल लायब्ररी टाऊन हॉल, मुंबई २३ (१ प्रत)
२. शासकीय विभागीय ग्रंथालय, विश्रामबागवाडा, पुणे ४११०३० (१ प्रत)
३. शासकीय विभागीय ग्रंथालय, आयुक्त कार्यालय परिसर, नागपूर ४४०००१ (१ प्रत)
४. द एक्झामिनर ऑफ बुक्स ॲण्ड पब्लिकेशन, जुने कस्टम हाऊस यार्ड, फोर्ट, मुंबई, ४००००१ (१ प्रत)
५. ग्रंथाच्या प्रती पुणे व नागपूर येथील शासकीय विभागीय ग्रंथालयांमध्ये संग्रहित करावयास हव्यात, अशी तरतूद करण्यात आली आहे. (दोन प्रती) देणे आवश्यक आहे.

प्रकाशकाने पाठवावयाच्या प्रती : (प्रतींची संख्या ४)

१. सेंट्रल लायब्रियन, टाउन हॉल, मुंबई, ४०००२३ (१ प्रत)
२. लायब्रियन, कॅन्मोरा पब्लिक लायब्ररी, चेन्नई (१ प्रत)
३. लायब्रियन, नॅशनल लायब्ररी, बेल्व्हेडिअर, कलकत्ता, प. बंगाल, ७०००२७ (१ प्रत)
४. लायब्रियन, दिल्ली पब्लिक लायब्ररी, एस.पी. मुखर्जी मार्ग, नवी दिल्ली, ११०००६ (१ प्रत)

अशा चार प्रती पाठविणे बंधनकारक आहे.

सार्वजनिक ग्रंथालयांचे शासकीय सार्वजनिक ग्रंथालय व शासन अनुदानित सार्वजनिक ग्रंथालये असे दोन प्रकार पडतात. अनुदानित सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये जिल्हा व तालुका आणि इतर ग्रंथालये असे प्रकार असून जिल्हा ग्रंथालयाचे जिल्हा 'अ' व जिल्हा 'ब' असे दोन प्रकार आहेत. तर तालुका ग्रंथालयांचे तालुका 'अ' वर्ग व तालुका 'ब' वर्ग आणि तालुका 'क' वर्ग असे तीन प्रकार पडतात. इतर ग्रंथालयांमध्ये पुन्हा 'अ', 'ब', 'क', 'ड' असे उपप्रकार पडतात.

सार्वजनिक ग्रंथालयांमधील ग्रंथसंख्या, सभासदसंख्या, त्यासाठी नेमून दिलेली कर्मचारी संख्या आणि त्यांना मिळणारे वेतन व वेतनेतर अनुदानाचे निकष भिन्न-भिन्न आहेत.

तक्ता क्रमांक ३.३

सार्वजनिक ग्रंथालय शासनमान्यतेच्या वर्गनिहाय अटी :

| अटी तपशील | वर्ग (वाचनालयाचा दर्जा) | | | |
|-----------------------|-------------------------|---------------|----------|----------|
| | अ | ब | क | ड |
| ग्रंथसंख्या | १५,००१ | ५,००१ | १,००१ | ३०१ |
| ग्रंथांची किमान किंमत | २,४०,००० | १,६०,००० | ८०,००० | २५,००० |
| दैनिके | १६ | ६ | ४ | ४ |
| नियतकालिके | ५१ | १६ | ६ | ६ |
| सदस्य संख्या | ३०१ | १०१ | ५१ | २६ |
| कामाचे तास | ६ | ६ | ३ | ३ |
| स्वतंत्र बालविभाग | आवश्यक | आवश्यक | ऐच्छिक | ऐच्छिक |
| स्वतंत्र महिलाविभाग | आवश्यक | आवश्यक | ऐच्छिक | ऐच्छिक |
| सांस्कृतिक कार्यक्रम | १० | ४ | ऐच्छिक | ऐच्छिक |
| ग्रंथालय इमारत | स्वतःची | स्व./भाड्याची | स्व./भा. | स्व./भा. |
| कर्मचारी आकृतीबंध | ४ | ३ | २ | १ |

सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७ नुसार ५०० पेक्षा जास्त लोकसंख्या असलेल्या ठिकाणी सार्वजनिक ग्रंथालय निर्माण करता येते. ५०० पेक्षा कमी लोकसंख्या असलेल्या ठिकाणी फिरते ग्रंथालय असावे, अशी तरतूद आहे. लोकसंख्या हा वर्गवारीकरिता पहिला निकष

आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयाचे जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालय असा एक वर्ग असून तालुका व इतर 'अ', 'ब', 'क', 'ड' असे आणखी वर्ग आहेत. वर्ग-दर्जानिहाय सार्वजनिक वाचनालयांच्या अनुदानांमध्ये फरक असतो. ग्रंथालय स्थापनेच्या वेळी शासनमान्यतेसाठी ग्रंथालय कायदानुसार इमारत, जागा, ग्रंथसंपदा, नियतकालिके इत्यादी किमान गरजांची पूर्तता करणे आवश्यक आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयास वरचा वर्ग देणे अथवा असलेला दर्जा कमी करणे हे ग्रंथालय संचालक ग्रंथालयांच्या तपासणीतून ठरवितात.

शासन निर्णय क्रमांक मराग्रं-२०००९/प्र.क.२३६/साशि-५, दि.२९ फेब्रुवारी २०१२ च्या सहपत्रान्वये पुढीलप्रमाणे बदल करण्यात आले आहेत.

तक्ता क्रमांक ३.४

सार्वजनिक ग्रंथालयांचे अनुदान :

| ग्रंथालयांचा वर्ग | २००१-२००५ पासून विहित केलेले अनुदान (रुपये) | विद्यमान अनुदानात ५०% वाढ केल्याने होणारे अनुदान दर (रुपये) |
|---------------------------|---|---|
| वर्ग - अ जिल्हा ग्रंथालये | ४,८०,०००/- | ७,२०,०००/- |
| वर्ग - अ तालुका ग्रंथालये | २,५६,०००/- | ३,८४,०००/- |
| वर्ग - अ इतर ग्रंथालये | १,९२,०००/- | २,८८,०००/- |
| वर्ग - ब जिल्हा ग्रंथालये | २,५६,०००/- | ३,८४,०००/- |
| वर्ग - ब तालुका ग्रंथालये | १,९२,०००/- | २,८८,०००/- |
| वर्ग - ब इतर ग्रंथालये | १,२८,०००/- | १,९२,०००/- |
| वर्ग - क तालुका ग्रंथालये | ९६,०००/- | १,४४,०००/- |
| वर्ग - क इतर ग्रंथालये | ६४,०००/- | ९६,०००/- |
| वर्ग - ड ग्रंथालये | २०,०००/- | ३०,०००/- |

सार्वजनिक ग्रंथालयांना मिळणारे अनुदान सहाय्यक ग्रंथालय संचालक महाराष्ट्र राज्यांच्याकडून दोन टप्प्यांत मिळते. त्या अनुदानाची रक्कम ५० टक्के वेतन आणि ५० टक्के

वेतनेतर खर्च यांसाठी खर्च करावी लागते. त्याचा ताळेबंद अहवाल सहाय्यक ग्रंथालय संचालक महाराष्ट्र राज्य यांना पाठवावा लागतो.

राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान, कलकत्ता :

सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या चळवळीस प्रोत्साहन देण्याच्या उद्देशाने राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान १९७२ साली केंद्र सरकारने कलकत्ता या ठिकाणी स्थापन केले. तत्कालीन पंतप्रधान श्रीमती इंदिरा गांधी यांच्या अध्यक्षतेखाली राजा राममोहन रॉय यांच्या द्वितीय जन्मशताब्दीचा महोत्सव साजरा करण्यासाठी एक राष्ट्रीय समिती स्थापन करण्यात आली. या राष्ट्रीय समितीच्या २८ मार्च १९८२ रोजी स्थापन झालेल्या बैठकीत देशभर सार्वजनिक ग्रंथालयांचे जाळे पसरविण्याचे व अशा सार्वजनिक ग्रंथालयांना मदत व उत्तेजन देऊन देशातील अतिदुर्गम भागांपर्यंत वाचनासाठी ग्रंथ पुरवून वाचनाची अभिरुची निर्माण करण्यासाठी एक प्रतिष्ठान स्थापन करावे, असे ठरले. त्यानुसार भारत सरकारच्या शिक्षण व समाजकल्याण मंत्रालय कक्षेत येणाऱ्या सांस्कृतिक कार्य विभागाद्वारे राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान या संस्थेची स्थापना करण्याची कार्यवाही सुरू झाली आणि २० मे १९७२ रोजी कलकत्ता या ठिकाणी या प्रतिष्ठानाची स्थापना करण्यात आली.

राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठान कलकत्ता – उद्दिष्टे :

१. देशात सर्वत्र सार्वजनिक ग्रंथालय चळवळीस उत्तेजन देणे.
२. देशात प्रत्येक राज्यात सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा स्वीकारण्यास प्रचार व प्रसार करणे.
३. देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयास आर्थिक व तांत्रिक सहकार्य करणे.
४. या प्रतिष्ठानाला पूरक असे साहित्य प्रकाशित करून त्याचे वितरण करणे.
५. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासाच्या दृष्टीने कार्य करणाऱ्यांचे आर्थिक साहाय्य वाढविणे.
६. भारत सरकारला देशातील ग्रंथालय विकासास आवश्यक ते मार्गदर्शन करणे.
७. अहर्ताप्राप्त ग्रंथपालांची आणि त्यांच्या विशेष कार्याची राष्ट्रीय नोंदवहीत नोंद घेणे.
८. ग्रंथालयांच्या विविध समस्यांवर संशोधन करण्यास प्रोत्साहन देणे.

९. ग्रंथालयाच्या विकासाच्या उत्तेजनार्थ व देशाची उपयुक्तता लक्षात घेऊन वेळोवेळी आवश्यकता भासल्यास ग्रंथालयसेवेचे मूल्यमापन करणे.

१०. हस्तलिखित व मुद्रित स्वरूपातील वाचनसाहित्याचे जतन व पुनरुज्जीवन करणे

राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान, कार्यकारी मंडळ :

या प्रतिष्ठानच्या कार्यकारी मंडळाचा कालावधी तीन वर्षांचा असून हे कार्यकारी मंडळ प्रतिष्ठानचे धोरण ठरवते. प्रतिष्ठानच्या कार्यकारी मंडळावर एकूण २२ सदस्य असून भारताच्या सांस्कृतिक कार्य खात्याचे मंत्री किंवा त्यांनी नामनिर्देशन केलेली व्यक्ती अध्यक्षपदी असते. इतर सदस्यांमध्ये सांस्कृतिक खात्याचे सचिव किंवा त्यांनी नामनिर्देशन केलेली व्यक्ती, ४ तज्ज्ञ ग्रंथपाल व ९ शिक्षणतज्ज्ञ असतात. तसेच भारतातील ग्रंथालय संघ, साहित्य अकादमी, नॅशनल बुक ट्रस्ट या संस्थांचे सदस्य, शिक्षण विभाग, समाजकल्याण विभाग व अर्थ विभागाचे प्रतिनिधी व राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठानचे संचालक यांचाही समावेश कार्यकारी मंडळात होता.

प्रशासकीय समिती :

कार्यकाळी मंडळाच्या निर्णयांची कार्यवाही, तसेच प्रशासकीय व आर्थिक कामकाज प्रशासकीय समिती पाहते. या समितीची मुदत एक वर्षाची असते आणि त्यात प्रतिष्ठानचे अध्यक्ष किंवा त्यांनी नामनिर्देशन केलेली व्यक्ती, आर्थिक सल्लागार, सांस्कृतिक कार्यखात्याचे प्रतिनिधी आणि प्रतिष्ठानचे सदस्य सचिव यांचा अंतर्भाव होतो. प्रशासकीय समितीव्यतिरिक्त प्रतिष्ठानचे काम परिणामकारक रीतीने पार पाडण्यासाठी इतर समितींची योजना केली गेली आहे. त्यामध्ये सांस्कृतिक कार्यक्रम सल्लागार समिती, ग्रंथनिवड समिती, राष्ट्रीय ग्रंथालय धोरण समिती, अनुदान समिती, संशोधन समिती, मूल्यांकन समिती, नियतकालिक समिती इ.चा अंतर्भाव होतो.

राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान, कलकत्ता-अनुदानपद्धती :

समाजातल्या सर्वसामान्य वाचकांना निःशुल्क ग्रंथालय सेवा देण्याचे कार्य सार्वजनिक ग्रंथालये करित असतात. याच उद्देशाने या ग्रंथालयांची निर्मिती झाली आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयांची चळवळ सुदृढ करण्याची जबाबदारी देशातील बहुतेक राज्यांनी स्वीकारली व या ग्रंथालयांना अनुदानाच्या माध्यमातून आर्थिक पाठबळ दिले. वाचकांच्या वाढत्या गरजा, ग्रंथांच्या वाढत्या किंमती, फर्निचर, वीजबिल, इमारतीचे भाडे इ.च्या वाढत्या खर्चामुळे या ग्रंथालयांना आर्थिक सहकार्याची नितांत आवश्यकता असते. देशभरातील सार्वजनिक

ग्रंथालयाच्या विकासाला गतिमानता मिळावी, ग्रंथालयीन सेवेत गुणवत्ता यावी या उद्देशांनी राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान कलकत्ता या संस्थेने अर्थसाहाय्याच्या विविध योजना कार्यान्वित केल्या आहेत.

१. समतुल्य साहाय्य योजना
२. असमतुल्य साहाय्य योजना

समतुल्य साहाय्य योजना :

या योजनेनुसार सार्वजनिक ग्रंथालयास राज्य शासनाकडून जेवढा निधी मिळतो, तेवढाच निधी या प्रतिष्ठानाकडून दिला जातो. समतुल्य साहाय्य योजनेअंतर्गत खालील गोष्टींसाठी अर्थसाहाय्य केले जाते :

१. ग्रंथ व इतर वाचनीय साहित्य वाढविण्यासाठी.
२. ग्रामीण ग्रंथसंचय केंद्र आणि फिरत्या ग्रंथालय विकासांच्या सेवांसाठी.
३. चर्चासत्रे, कार्यशाळा, प्रशिक्षणवर्ग आणि ग्रंथप्रदर्शने आयोजित करण्यासाठी.
४. ग्रंथ व तत्सम साहित्य ठेवण्यासाठी कपाटे, मांडणी इ. साठी.
५. सार्वजनिक ग्रंथालयांना शैक्षणिक उपक्रमांसाठी टी. व्ही. किंवा तत्सम तांत्रिक संच घेण्यासाठी.

असमतुल्य साहाय्य योजना :

या योजनेमध्ये या प्रतिष्ठानाकडून ७५ टक्के अर्थसाहाय्य दिले जाते. उर्वरित टक्के खर्च अर्ज करणाऱ्या संस्थेला करावा लागतो. या योजनेअन्वये खालील गोष्टींसाठी अर्थसाहाय्य केले जाते :

१. केंद्रीय ग्रंथनिवड पद्धतीने ग्रंथसंग्रह वाढविण्यासाठी
२. केंद्र शासन पुरस्कृत ग्रंथालयांना साहाय्य
३. राष्ट्रीय पातळीवर चर्चासत्रे, परिसंवाद, ग्रंथालय परिषदा आयोजित करण्यासाठी
४. सार्वजनिक ग्रंथालय सेवा देणाऱ्या स्वयंसेवी संस्थांना साहाय्य
५. सार्वजनिक ग्रंथालये किंवा बालग्रंथालयातील बालविभागास साहाय्य
६. सार्वजनिक ग्रंथालयांना रौप्य महोत्सव, सुवर्ण महोत्सव, अमृत महोत्सव, शतक महोत्सव, तसेच शतकोत्तर महोत्सवांच्या निमित्ताने अर्थसाहाय्य केले जाते.

प्रतिष्ठानने गेल्या ४१ वर्षांत आपली उद्दिष्ट साध्य करण्याच्या दृष्टीने पुढील विविध कार्यक्रम आणि योजना कार्यान्वित केल्या. त्यातील महत्त्वाची कामगिरी अशी^{४०}

राज्यात, तसेच केंद्रशासित प्रदेशांमध्ये ग्रंथालय कायद्यांना चालना दिली.

१. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या स्थितीचा आढावा घेतला.
२. देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या स्थापनेसाठी मदत केली.
३. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासासाठी त्यांना आर्थिक पाठबळ दिले.
४. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या इमारत, फर्निचर व इतर खरेदीसाठीही आर्थिक पाठबळ दिले.
५. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या संगणकीकरणासाठी साहाय्य केले.
६. ग्रंथालय संघांना वार्षिक व्याख्यानांसाठी अर्थसाहाय्य दिले.
७. ग्रंथालय संघांना सभा, परिषदा, चर्चासत्रे यांसाठीदेखील अर्थसाहाय्य दिले.
८. सर्वोत्तम सार्वजनिक ग्रंथालय पुरस्काराची स्थापना केली.
९. राजा राममोहन रॉय वार्तापत्राचे प्रकाशन केले.
१०. भारताच्या चार विभागांमध्ये विभागीय कार्यालयांची स्थापना केली. त्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या व्यवस्थापनात सुसूत्रता आली आणि विकासकामांना गती मिळाली.

महाराष्ट्रापुरते या योजनेचे स्वरूप असे आहे की, सोसायटी नोंदणी १८६० व पब्लिक ट्रस्ट कायद्यान्वये नोंदविलेल्या सार्वजनिक ग्रंथालय संस्था अंतर्गत अर्थसाहाय्य घेण्यास पात्र आहेत. मात्र केंद्र व राज्य सरकारची ग्रंथालये, ज्यांच्याकडून मोठ्या प्रमाणात निधी मिळतो अशा संस्था व ग्रंथालये यांना या योजनेचा लाभ मिळू शकणार नाही. या योजनेचा लाभ मिळण्यासाठी सदरचे ग्रंथालय किमान ३ वर्षांपासून सार्वजनिक ग्रंथालय क्षेत्रात कार्यरत असले पाहिजे. त्यामध्ये किमान ५००० इतकी ग्रंथसंख्या असावी. अशा तऱ्हेने सर्व अटींचे पालन करणाऱ्या ग्रंथालयांची राज्य सरकारने निवड करून शिफारस केल्यास या प्रतिष्ठानकडून त्यांना साहाय्य मिळते. इमारतबांधकामासारख्या कामांकरिता विशिष्ट रक्कम देण्यात येते. प्रस्ताविक खर्चाच्या ७५ टक्के रक्कम प्रतिष्ठानकडून मिळते. त्याचा पहिला हप्ता ५० टक्के, दुसरा हप्ता ४० टक्के, तिसरा हप्ता १० टक्के असतो. यासाठी विहित नमुन्यातील अर्जात उल्लेखित साधनसामुग्रीची मागणी करावी लागते आणि त्यासाठी दर्जेदार विक्रेत्यांची दरपत्रके घ्यावी लागतात.

भारतीय राज्यघटनेप्रमाणे सार्वजनिक ग्रंथालये ही राज्य सरकारच्या अखत्यारीत येतात. त्यामुळे प्रत्येक घटकराज्याचा ग्रंथालय कायद्यातील तरतुदीप्रमाणे या प्रतिष्ठानला आपले कार्य

पार पाडावे लागते. यामुळे कामकाजात समस्या निर्माण होतात. “भारत सरकारच्या सातव्या पंचवार्षिक योजनेत (१९८५ ते १९९०) केंद्र सरकारकडून ६१४ लक्ष रूपये योजना अनुदान म्हणून आणि राज्य व केंद्रशासित प्रदेशांकडून २७९.७५ लक्ष त्यांचा हिस्सा म्हणून मिळाले होते. या कालावधीत प्रतिष्ठानने ४९५ लक्ष अर्थसाहाय्य देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांना दिले... प्रतिष्ठानचे वाढते उपक्रम व सार्वजनिक ग्रंथालयसेवेची गरज लक्षात घेऊन केंद्र सरकारने प्रतिष्ठानच्या अनुदान रकमेत वाढ केली. आठव्या पंचवार्षिक योजनेत केंद्र सरकारने या प्रतिष्ठानला ११७५ लक्ष रूपये दिले होते. त्यामध्ये राज्यांनी ६४५.९७ लक्ष रूपये दिले. परिणामी प्रतिष्ठानने ग्रंथालयाच्या अनुदानात तिप्पटीने वाढ केली. आठव्या पंचवार्षिक योजनेत देशातील सार्वजनिक ग्रंथालयांना ११८८.५२ लक्ष रूपयांचे अनुदान दिले गेले.”^{४९} प्रशासनाच्या चौकटीत राहून या प्रतिष्ठानने भारतीय सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासाला पर्यायाने सामाजिक विकासाला चालना दिली आहे.

३.६.१. महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्यातील नियमांत झालेले बदल :

प्रास्ताविक :

महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्याला सार्वजनिक ग्रंथालय चळवळीतील कार्यकर्त्यांचे परिश्रम व त्यास शासनाच्या सकारात्मक विकासाच्या भूमिकेमुळे राज्यातील ग्रंथालय चळवळीला गती मिळाली आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयांचा गुणात्मक व संख्यात्मक विकास व्हावा या विचाराने १९७० च्या नियमांत जे बदल झाले ते भविष्यकालीन ग्रंथापालांना ज्ञात असणे आवश्यक आहे. यात सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या शासनमान्यतेच्या अटींतील बदल, वार्षिक परिक्षण अनुदानाच्या दरात झालेले बदल, सार्वजनिक ग्रंथालय निर्मितीत झालेली वाढ, नवीन शासकीय जिल्हा ग्रंथालयांची स्थापना, सार्वजनिक ग्रंथालये व कार्यकर्ते यांच्या कार्यास उत्तेजन देणारे पुरस्कार, इत्यादी बाबी समाविष्ट आहेत.

१. शासनमान्यतेच्या अटीतील बदल :

१९७० चे नियम अमलात आल्यानंतर नोंदणी अधिनियम, १८६० अन्वये नोंदवलेली किंवा मुंबई सार्वजनिक विश्वस्त संस्था अधिनियम, १९५० अन्वये नोंदलेल्या मंडळास किंवा सार्वजनिक ग्रंथालयास ग्रंथालय संचालनालयाच्या विहित नमुना अर्जात शासनमान्यतेचा प्रस्ताव

निःशुल्क सादर करून अनुदान मिळत असे. सद्यः स्थितीत या प्रस्ताव सादरीकरण कामात प्रथम संबंधित विभागाच्या सहायक ग्रंथालय संचालकांकडे (६ विभाग : १. अमरावती (५ जिल्हे- अकोला, अमरावती, बुलढाणा, यवतमाळ, वाशिम), २. औरंगाबाद (८ जिल्हे- उस्मानाबाद, औरंगाबाद, जालना, नांदेड, परभणी, बीड, लातूर, हिंगोली), ३. नागपूर (६ जिल्हे- गडचिरोली, गोंदिया, चंद्रपूर, नागपूर, भंडारा, वर्धा), ४. नाशिक (५ जिल्हे- अहमदनगर, जळगाव, धुळे, नंदुरबार, नाशिक), ५. पुणे (५ जिल्हे- कोल्हापूर, पुणे, सांगली, सातारा सोलापूर), ६. कोकण (६ जिल्हे- ठाणे, मुंबई उपनगर, मुंबई शहर, रत्नागिरी, रायगड, सिंधुदुर्ग) एकूण ३५ जिल्हे) उपलब्ध असलेला शासनमान्येचा रू. १५०/- किंमतीचा अर्ज घेऊन रू. ५००/- चे प्रस्ताव प्रक्रिया शुल्क भरून शासनमान्यतेची पुढील कार्यवाही केली जाते.

२. ग्रंथालय संघांना अनुदान :

सार्वजनिक ग्रंथालय चळवळीतील कार्यकर्ते तसेच नवीन ग्रंथालयांना मार्गदर्शन करण्यासाठी ज्या संघटना कार्य करतात. त्या जिल्हा, विभाग व राज्य ग्रंथालय संघांना प्रवास, अधिवेशने, बैठका यांसाठी अनुदान मिळते. अशा संघांना मिळणारे अनुदान पुढील तक्त्यात दर्शविले आहे.

तक्ता क्रमांक ३.५

ग्रंथालय संघांना मिळणारे अनुदान

| स्तर | वार्षिक परिक्षण अनुदान | अधिवेशन अनुदान |
|---------------------|------------------------|----------------|
| राज्य ग्रंथालय संघ | रू. २४,००० | रू. २,००० |
| विभाग ग्रंथालय संघ | रू. ३,००० | रू. ७५० |
| जिल्हा ग्रंथालय संघ | रू. २,००० | रू. ३०० |

या संघातील निवडक कार्यकर्त्यांना राज्य ग्रंथालय परिषद व जिल्हा ग्रंथालय समित्यांवर प्रतिनिधित्व देण्यात येते.

३. संशोधन व साहित्य संस्थांना अनुदान :

ग्रंथालय संचालनालयातर्फे मान्यप्राप्त संशोधन व साहित्य संस्थांच्या ग्रंथालयांना शासनमान्यता, वार्षिक परिक्षण अनुदान मागील वर्षी त्यांच्या ग्रंथालयावर केलेल्या खर्चाच्या ७५ टक्के किंवा जास्तीत जास्त रु. २,५०० या मर्यादेच्या अधीन राहून दिले जाते.

महाराष्ट्रात अशा प्रकारे ग्रंथालय संचालनालयातर्फे शासनमान्यता व अनुदान मिळणाऱ्या संस्थांची संख्या ३५ असून त्यांची विभागवार संख्या पुढीलप्रमाणे आहे. :

| | | |
|-----------------------|---|-----------|
| १. औरंगाबाद विभाग | : | ९ संख्या |
| २. नागपूर विभाग | : | ३ संख्या |
| ३. नाशिक विभाग | : | ५ संस्था |
| ४. पुणे विभाग | : | ११ संख्या |
| ५. कोकण (मुंबई) विभाग | : | ७ संस्था |

४. नवीन शासकीय जिल्हा ग्रंथालयांची स्थापना :

स्वतंत्र महाराष्ट्र राज्याची १९६० साली स्थापना होताना मध्य प्रदेशचे जे ८ जिल्हे विदर्भ विभाग म्हणून महाराष्ट्रात सामील करण्यात आले त्या ८ जिल्ह्यांत असलेली शासकीय जिल्हा ग्रंथालये ग्रंथालय संचालनालयाच्या कार्यक्षेत्र आणण्यात आली होती. या जिल्हा ग्रंथालयांच्या कार्याने प्रभावित होऊन उर्वरित महाराष्ट्रात अशी ग्रंथालये स्थापन करण्याच्या दृष्टीने शासन प्रयत्नशील होते. प्रशासकीय बाबींची पूर्तता करून १९९७ साली अशी ९ जिल्हा ग्रंथालये (कोल्हापूर, जालना, ठाणे, धुळे, नाशिक, पुणे, मुंबई उपनगर, रत्नागिरी व रायगड) स्थापन केली. त्यानंतर दुसऱ्या टप्प्यात २००५ साली आणखी ४ ग्रंथालयांची त्यात भर पडली. ते जिल्हा म्हणजे नांदेड, बीड, मुंबई शहर व सातारा हे होत. अशा प्रकारे २००८-०९ वर्षात १३ नवीन शासकीय जिल्हा ग्रंथालये व विदर्भातील ७ जिल्हा ग्रंथालये (अकोला, चंद्रपूर,

नागपूर, बुलढाणा, भंडारा, यवतमाळ व वर्धा) अशी २० शासकीय जिल्हा ग्रंथालये अस्तित्वात आहेत. (अमरावती या शासकीय जिल्हा ग्रंथालयाचे उन्नतीकरण करून त्यालाच आता विभागीय ग्रंथालय म्हणून वर्गीकृत करण्यात आले आहे.)

५. ग्रंथालय प्रमाणपत्र अभ्यासक्रम :

महाराष्ट्र राज्य ग्रंथालय संघ आणि विभाग ग्रंथालय यांच्या शिफारशीनुसार जिल्हा ग्रंथालय संघातर्फे ग्रंथालय प्रमाणपत्र अभ्यासक्रम प्रत्येक जिल्ह्यासाठी चालवले जातात. २ महिने कालावधीच्या या अभ्यासक्रमात ग्रंथालयशास्त्राचे प्राथमिक (तात्त्विक व प्रत्यक्षिक) ज्ञान विद्यार्थ्यांना मिळते. महाराष्ट्रातील ३६ जिल्ह्यांपैकी ३० जिल्ह्यांत हे वर्ग चालवले जात असून दरवर्षी सुमारे ३,००० विद्यार्थी हे प्रशिक्षण घेतात.

या अभ्यासक्रमाचा व्यवस्थापकीय भाग जिल्हा संघांकडे असला तरी शिक्षणक्रमाची रचना, तपासणी व परीक्षा ग्रंथालय संचालनालयाकडे आहे. या अभ्यासक्रमास प्रवेश घेणाऱ्या विद्यार्थ्यांना रु. ७६०/- इतके प्रवेश शुल्क आकारले जाते.

६. पुरस्कार :

महाराष्ट्रभर चालवल्या जाणाऱ्या सार्वजनिक ग्रंथालयांचा गुणात्मक विकास व्हावा, अधिक प्रभावी सेवा देण्यासाठी प्रोत्साहन मिळावे व त्याद्वारे ग्रंथालये व वाचनसंस्कृती वृद्धिंगत व्हावी, तसेच ग्रंथालय चळवळीस योगदान देणाऱ्या सार्वजनिक ग्रंथालय कार्यकर्त्यांना व सेवकांना (महाराष्ट्र राज्य ग्रंथालय कायदा, १९६७ व त्याच्या अंमलबजावणीसाठी स्थापन झालेल्या ग्रंथालय संचालनालयाला २५ वर्षे पूर्ण झाल्यामुळे राज्यातील सार्वजनिक ग्रंथालये, कार्यकर्ते व सेवकांना) राज्यस्तरावर पुरस्कार देऊन गौरवण्यात येते. या पुरस्कारांचे स्वरूप पुढीलप्रमाणे आहे.

६.१. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर उत्कृष्ट सार्वजनिक ग्रंथालय पुरस्कार :

राज्यातील मान्यताप्राप्त अ, ब, क आणि ड वर्गातील सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या सेवांचा गौरव करण्यासाठी सन १९८४-८५ पासून शासनाने घटनाकार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या नावाने उत्कृष्ट सार्वजनिक ग्रंथालयांना पुरस्कार देण्याची योजना सुरू केली. सुरुवातीला अ, ब,

क आणि ड गटातील प्रत्येकी एक याप्रमाणे चार ग्रंथालयांची या पुरस्कारासाठी निवड केली जात असे. तथापि, १९८६-८७ साली या पुरस्कार संख्येत वाढ करून या चारही गटांतील शहरी व ग्रामीण अशा दोन भागांतील आठ ग्रंथालयांना पुरस्कार दिले जातात. ग्रंथालयांना दिल्या जाणाऱ्या पुरस्काराच्या रकमेत व संख्येत झालेला बदल पुढील तक्त्यात दर्शविला आहे.

ज्या ग्रंथालयांना अशा पुरस्कारांनी सन्मानित करण्यात आले, त्या ग्रंथालयांनी पुरस्काराच्या रकमेपैकी ५० टक्के रक्कम पटावरील सेवकांना त्यांना मिळणाऱ्या वेतनावर प्रमाणबद्ध टक्केवारीनुसार द्यावे असे निर्देश शासनातर्फे देण्यात आले असून उर्वरित रक्कम ग्रंथालय विकासासाठी वापरण्यात यावी असे अपेक्षित आहे.

तक्ता क्रमांक ३.६

डॉ.आंबेडकर पुरस्कार स्वरूप

| ग्रंथालयांचा वर्ग | पुरस्कार रक्कम १९८४-८५ | पुरस्कार रक्कम १९८६-८७ | पुरस्कार रक्कम २००२-०३ | पुरस्कार स्वरूप | ग्रंथालय संख्या |
|-------------------|------------------------|------------------------|------------------------|-----------------|-----------------|
| अ | रु. १५,००० | - | - | रोख | १ |
| ब | रु. १०,००० | - | - | पुरस्कार | १ |
| क | रु. ५०,००० | - | - | स्मृतिचिन्ह | १ |
| ड | रु. ३,००० | - | - | | १ |
| अ (शहरी) | - | रु. ५०,००० | रु. ५०,००० | | १ |
| अ (ग्रामीण) | - | रु. १५,००० | रु. ५०,००० | प्रमाणपत्र | १ |
| ब (शहरी) | - | रु. १०,००० | रु. ३०,००० | प्रमाणपत्र | १ |
| ब (ग्रामीण) | - | रु. १०,००० | रु. ३०,००० | प्रमाणपत्र | १ |
| क (शहरी) | - | रु. ५,००० | रु. २०,००० | प्रमाणपत्र | १ |
| क (ग्रामीण) | - | रु. ५,००० | रु. २०,००० | प्रमाणपत्र | १ |
| ड (शहरी) | - | रु. ३,००० | रु. १०,००० | प्रमाणपत्र | १ |
| ड (ग्रामीण) | - | रु. ३,००० | रु. १०,००० | प्रमाणपत्र | १ |

६.२. डॉ. एस. आर. रंगनाथ उत्कृष्ट कार्यकर्ता व उत्कृष्ट सेवक-ग्रंथमित्र पुरस्कार :

ग्रंथालय चळवळीला सामाजिक बांधिलकी समजून प्रसंगी पदरमोड करून गावोगावी सार्वजनिक ग्रंथालये स्थापन करण्यासाठी फिरणाऱ्या कार्यकर्त्यांच्या कष्टाची पावती द्यावी. या हेतूने या क्षेत्रात सातत्याने काम करणाऱ्या कार्यकर्त्यांना भारतीय ग्रंथालय शास्त्राचे जनक डॉ. एस. आर. रंगनाथ यांच्या नावाने १९९४ पासून सन्मानित करण्यास सुरुवात झाली. सुरुवातीस संपूर्ण राज्यातून एक ग्रंथालय कार्यकर्ता व एक ग्रंथालय सेवक असे दोनच पुरस्कार दिले जात. दोघांनाही प्रत्येकी रु. ५,०००/- सन्मानचिन्ह व प्रमाणपत्र प्रदान करणे असे या पुरस्काराचे स्वरूप होते.

सन. २००२-०३ पासून या पुरस्कारांच्या संख्येत व रकमेत शासनाने भरीव वाढ केली असून त्यात आता राज्यस्तरावरील एक कार्यकर्ता व एक सेवक यांना प्रत्येकी रु. २५,०००/- रोख, सन्मानचिन्ह व प्रमाणपत्र आणि राज्याच्या ६ महसूल विभागांतून ६ ग्रंथालय कार्यकर्ते व ६ ग्रंथालय सेवकांची निवड करून त्यांना प्रत्येकी रु. १५,०००/- रोख, सन्मानचिन्ह व प्रमाणपत्र देऊन सन्मानित केले जाते.

६.३. पुरस्कारार्थीची निवड :

या पुरस्कारासाठी राज्यभरातून सार्वजनिक ग्रंथालये, तसेच ग्रंथालय कार्यकर्ते व सेवक यांच्याकडून अर्ज मागवून संबंधित सहायक, ग्रंथालय संचालकांमार्फत त्यांची प्राथमिक छाननी झाल्यावर ते ग्रंथालय संचालकांकडे सादर केले जातात.

प्रत्येक पुरस्कारासाठी ठरलेल्या निकषांनुसार अशा पुरस्कारार्थी अर्जावर गुणदान केले जाते. त्यानंतर महाराष्ट्र राज्य ग्रंथालय संघाचा एक प्रतिनिधी, राज्याचे प्रधान शिक्षण सचिव व ग्रंथालय संचालक यांच्या समितीकडून पुरस्कारार्थीची अंतिम निवड होऊन समारंभपूर्वक हे पुरस्कार प्रदान केले जातात.

३.७. सार्वजनिक ग्रंथालयातील सेवक :

कोणतीही संस्था सुरू केल्यावर तिच्या उद्दिष्टांची पूर्तता करण्यासाठी मनुष्यबळाची आवश्यकता असते. तेथील कार्यप्रणालीनुसार तांत्रिक/अतांत्रिक, लिपिकवर्गीय वरिष्ठ पातळीवरील अधिकारी यांची रचना असणे आवश्यक असते.

सार्वजनिक ग्रंथालयातही त्यांच्या कार्यानुसार सेवकांची रचना असणे आवश्यक आहे. यातील काही सेवक मास्टर ऑफ लायब्ररी अँड इन्फॉर्मेशन सायन्स ही पदवी धारण केलेले असतात तर काही सेवक बी.लिब. आहेत तर अनेक ग्रंथपाल ग्रंथलयशास्त्राचा अल्पकालीन कोर्सपूर्ण केलेले असतात. याशिवाय राजा राममोहन रॉय लायब्ररी फाउंडेशनतर्फे जे अनुदान मिळते त्यातून ग्रंथ निवड, खरेदी करणे व त्या ग्रंथांचे जे वितरण करण्यासाठी विशेष सेवकवर्ग नेमलेला आहे.^{४२}

ग्रंथालयातील सेवकांना मार्गदर्शन व आवश्यक प्रशिक्षण दिले, तर ग्रंथालयाची प्रगती सतत वाढती राहते. कोणत्याही अडचणी आल्यास त्यावर उत्स्फूर्तपणे ते मात करू शकतात. म्हणूनच सेवकांची निवड करताना संस्थेच्या गरजा लक्षात घेऊन करणे आवश्यक आहे. योग्य त्या कामासाठी योग्य व्यक्तीची निवड हे सूत्र वापरण्यात सार्वजनिक ग्रंथालय सेवा सहज विकसित होतील.

ग्रंथपाल, सहायक ग्रंथपाल, ग्रंथालय सहायक, लिपिक इ. तांत्रिक पण प्रशिक्षित सेवक तसेच प्रशासन, आर्थिक बाबी, संगणक विभाग अशा सर्व विभागांत असणारी कामे डोळ्यासमोर ठेवून ग्रंथालयातील सेवक रचना निश्चित केली जाते.

१९६७ ते २००० या ३३ वर्षांच्या कालावधीत सरकारने ग्रंथालयांच्या विहित अनुदानाचे दर १६ ते २० पट वाढविले आहे ग्रंथालय संचनालयातील सर्व सेवकवर्ग आणि विभागीय ग्रंथालयातील सर्व सेवकवर्गांचे वेतन महाराष्ट्र शासनाच्या निधीमधून देण्यात येते. १९९५-९६ पासून सर्व शासनमान्य सार्वजनिक ग्रंथालयांनी अनुज्ञेय खर्चाच्या ५० टक्के रक्कम ग्रंथालयातील कर्मचाऱ्यांच्या वेतनावर खर्च करणे आवश्यक केले आहे.

अल्प वेतन मिळून देखील ग्रंथालयाचा सेवकवर्ग सेवाभावी वृत्तीने दररोज जादा वेळ काम करून आपले योगदान देत असतो. परंतु त्यांच्या अडचणी आणि समस्यांकडे शासनाने पुरेसे लक्ष दिलेले नाही. महाराष्ट्र शासन ग्रंथालय अधिनियम १९६७ नुसार सार्वजनिक ग्रंथालय कर्मचारीवर्गाला निश्चित अशी वेतनश्रेणी, सेवाशर्ती व सेवानियम लागू करण्यात आलेले नाहीत. राज्य शासनाने १९७३ मध्ये तत्कालीन शिक्षणमंत्री प्रभा राव यांच्या अध्यक्षतेखाली समिती नेमून या प्रश्नांवर विचार करण्याची तयारी दर्शविली होती. या समितीचा अहवाल दीर्घकाळ गोपनीयतेच्या नावाखाली प्रलंबित ठेवून पुढे आर्थिक टंचाईचे कारण देऊन नाकारण्यात आला.

माजी आमदार श्री.जयानंद मढकर यांच्या अध्यक्षतेखाली महाराष्ट्र विधान मंडळाने नेमलेल्या समितीने केलेल्या विविध शिफारशी सोबतच त्यावेळी सार्वजनिक ग्रंथालय कर्मचारीवर्गाच्या प्रश्नांची दखल घेऊन त्यांच्यासाठी वेतनश्रेणी, सेवाशर्ती व सेवानियम लागू करण्यात याव्यात अशी शिफारस केली होती. यासोबत शासनमान्य सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या अनुदानात दर पाच वर्षांनी वाढ करण्यात यावी अशीही शिफारस केली होती. या शिफारशींची दखल घेऊन राज्यशासनाने सार्वजनिक ग्रंथालयांना देण्यात येणाऱ्या परिरक्षण अनुदानात (१९७९-८०, १९८९-९०, १९९५-९६, १९९८-९९, २००४-०५) या कालावधीत पाचवेळा आणि १ एप्रिल २०१२ मध्ये आणखी एकदा वाढ केली आहे.

वास्तविक पाहता दरवर्षी महागाईच्या वाढत्या दरानुसार दरवर्षी अनुदान वाढ अपेक्षित असते. परंतु शिफारस असून देखील शासनाकडून दरपाच वर्षांनी नियमित अनुदान वाढ करण्यात आलेली नाही.

शासनाने २००५ मध्ये या प्रश्नावर विचार करण्यासाठी माजी आमदार श्री.व्यंकप्पा पतकी यांच्या अध्यक्षतेखाली ग्रंथालय अधिनियम, नियम आणि कर्मचारी वेतनश्रेणी, सेवाशर्ती व सेवानियम यासाठी समिती नेमली होती. या समितीच्या शिफारशी शासन लवकरात लवकर अमलात आणिल अशी आशा होती. ती आशा फलद्रुप झालेली नाही. या समितीने कर्मचारीवर्गासाठी केलेल्या प्रमुख शिफारसींमध्ये कर्मचारी वर्गाबाबत प्रामुख्याने पुढील बाबतीत स्पष्ट व आवश्यक शिफारशी आहेत असे या समितीने अहवाल सादर करतांना दिलेल्या निवेदनात नमूद केले आहे.

१. सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियमात शासनमान्य ग्रंथालय कर्मचारी वर्गासाठी वेतनश्रेणी, सेवाशर्ती व सेवानियम करण्यासाठीही तरतुद
२. नियम १९७० मध्ये ग्रंथालयांच्या शासनमान्यतेच्या अटीमध्ये कर्मचारी आकृती बंधाबाबतची तरतुद
३. कर्मचारी वर्गासाठी पात्रता, वेतनश्रेणी, सेवाशर्ती व सेवा नियम याबाबत तरतुद

२००९-१० मध्ये ग्रंथालय संचालकांनी सेवा शर्ती व एकत्रित वेतनासंबंधीच्या परिपत्रकाचा नमुना राज्य ग्रंथालय संघाकडे पाठविला होता. त्यानंतर जिल्हा व तालुका ग्रंथालयांचा दर्जा वगळून व कामाचे तास वाढवून परिरक्षण अनुदानात दुप्पट वाढ करण्याबाबतचा प्रस्ताव २०१०-११ मध्ये शासनाला पाठविला होता. या दोन्ही प्रस्तावात दुप्पट वाढ अपेक्षित करण्यात आली होती. प्रत्यक्षात ती ५० टक्केच मिळाली आहे.

सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या कर्मचाऱ्यांना अत्यंत अल्प पगार मिळतो. त्या पगारात त्याचा व त्याच्या कुटुंबियांचा खर्च भागणे अशक्य आहे. शासकीय कर्मचाऱ्यांना निश्चित वेतन-श्रेणी असते. त्यांच्या वेतनामध्ये दरवर्षी इन्क्रीमेंट स्वरूपात वाढ होते. त्याचप्रमाणे वर्षातून दोनवेळा महागाई भत्ता निर्देशकांप्रमाणे वाढ होत असते. आरोग्य सुविधा, पेन्शन योजना व विमा योजना लागू असते. अशी कोणतीही उपयुक्त तरतुद सार्वजनिक ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांना लागू नाही. त्यामुळे वर्तमानकाळ व भविष्यकाळाविषयी त्यांच्या मनात चिंताग्रस्तता निर्माण होवून त्याचा प्रतिकूल परिणाम त्यांच्या दैनंदिन कामकाजावर होतो.

परंतु अपुऱ्या वेतनावर कामकरणारा सार्वजनिक ग्रंथालय कर्मचारी हा असंघटित असल्यामुळे व आंदोलनाच्या अभावामुळे सरस्वतीचे पुजारी वेतनश्रेणी, सेवाशर्ती, सेवानियम, पेन्शन योजना, महागाई भत्ता वाढीच्या लाभापासून वंचित राहिले आहेत. परंतु या तरतुदीमुळे या ग्रंथालयांसाठी योग्य शिक्षण पात्रता व प्रशिक्षण असलेले कर्मचारी मिळू शकले नाहीत. परिणामी सार्वजनिक ग्रंथालयांचा गुणात्मक विकास घडू शकला नाही. याचा दोष ग्रंथालय चालविणाऱ्या स्वयंसेवी संस्थांना देता येणार नाही. ग्रंथालयाप्रती शासनाचा उदासिन दृष्टिकोन हे या मागचे महत्वाचे कारण आहे. राज्यात १२,८६१ ग्रंथालये आहेत. या सर्व ग्रंथालयांत २२,६७८ ग्रंथालय कर्मचारी काम करतात.

तक्ता क्रमांक ३.७

शासनमान्य सार्वजनिक ग्रंथालयांना देण्यात येणारे परिरक्षण अनुदान

| परिशिष्ट 'अ' | | | | | | | | | | |
|--|--|------------------------|-----------------|--------------|-----------------|-----------------|--------------|-----------------|---------------|--------------------------|
| शासनमान्य सार्वजनिक ग्रंथालयांना देण्यात येणाऱ्या परिरक्षण अनुदानांतर्गत किमान वेतन व वेतनेतर अनुदानाच्या वितरणाचा तपशील (दि.३१.०३.२०१३ रोजीच्या अनुदान मर्यादेनुसार पुढे ज्या प्रमाणात अनुदान वाढेल त्या प्रमाणात बदल होईल.) | | | | | | | | | | |
| अ.क्र. (१) | तपशील (२) | ग्रंथालयाचा दर्जा/वर्ग | | | | | | | | (रक्कम रु.) ड (११) |
| | | जिल्हा-अ (३) | तालुका-अ (४) | इतर-अ (५) | जिल्हा-ब (६) | तालुका-ब (७) | इतर-ब (८) | तालुका-क (९) | इतर-क (१०) | |
| १. | कमाल अनुदान | ७,२०,००० | ३,८४,००० | २,८८,००० | ३,८४,००० | २,८८,००० | १,९२,००० | १,४४,००० | ९६,००० | ३०,००० |
| २. | संस्थेचा हिस्सा (१०%) | ८०,००० | ४२,६६७ | ३२,००० | ४२,६६७ | ३२,००० | २१,३३३ | १६,००० | १०,६६७ | ३,३३३ |
| ३. | ग्रंथालयाने पूर्ण (१००%) अनुदान मिळण्यासाठी करावयाचा खर्च | ८,००,००० | ४,२६,६६७ | ३,२०,००० | ४,२६,६६७ | ३,२०,००० | २,१३,३३३ | १,६०,००० | १,०६,६६७ | ३३,३३३ |
| ४. | वेतन (५०%) | ३,६०,००० | १,९२,००० | १,४४,००० | १,९२,००० | १,४४,००० | ९६,००० | ७२,००० | ४८,००० | १५,००० |
| ५. | वेतनेतर (५०%) | ३,६०,००० | १,९२,००० | १,४४,००० | १,९२,००० | १,४४,००० | ९६,००० | ७२,००० | ४८,००० | १५,००० |
| ६. | वेतनासाठी संस्थेने करावयाचा खर्च(१०%) | ४०,००० | २१,३३४ | १६,००० | २१,३३४ | १६,००० | १०,६६७ | ८,००० | ५,३३४ | १,६६७ |
| ७. | आकृतिबंधानुसार ग्रंथालयाने एक (०१) महिन्यासाठी सर्व किमान मंजूर कर्मचाऱ्यांचे वेतन | ३३,३३३ | १७,७७८ | १३,३३३ | १७,७७८ | १३,३३३ | ८,८८९ | ६,६६७ | ४,४४५ | १,३८९ |
| ८. | निर्वाह निधी/फंड (P.F.) | ३,३३३ | १,७७८ | १,३३३ | १,७७८ | १,३३३ | ८८९ | ६६७ | ४४५ | १३९ |
| ९. | पदानिहाय किमान कर्मचाऱ्यांचे मासिक वेतन | | | | | | | | | |
| १. | ग्रंथपाल | १०,५०० | ७,५०० | ५,००० | ७,५०० | ७,३०० | ४,३०० | ४,५०० | ३,००० | १,३८९ |
| २. | सहाय्यक ग्रंथपाल | ७,५०० | ४,२०० | ३,५०० | ४,२०० | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही |
| ३. | निर्गम सहाय्यक | ५,००० | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही |
| ४. | लिपिक | ४,५०० | ३,८०० | ३,००० | ३,८०० | ३,८०० | ३,००० | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही |
| ५. | शिपाई | ३,००० | २,२७८ | १,८३४ | २,२७८ | २,२३४ | १,५८९ | २,१६७ | १,४४५ | लागू नाही |
| ६. | शिपाई | २,८३४ | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही | लागू नाही |
| | एकूण | ३३,३३३ | १७,७७८ | १३,३३३ | १७,७७८ | १३,३३३ | ८,८८९ | ६,६६७ | ४,४४५ | १,३८९ |
| १०. | आकृतिबंधानुसार मंजूर पदे | ०६ | ०४ | ०४ | ०४ | ०३ | ०३ | ०२ | ०२ | ०१ |

(डॉ.बा.ए.सनासे)
प्र.ग्रंथालय संचालक,
ग्रंथालय संचालनालय,
महाराष्ट्र राज्य.

या आकृतिबंधात सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या कामाची व्याप्ती लक्षात घेऊन प्रत्येक ग्रंथालयातील किमान सेवकांची संख्या निश्चित करण्यात आलेली असल्याने तेवढी सेवकसंख्या त्यांच्या गरजा पूर्ण करण्यास आवश्यक ठरेल व ग्रंथालयांचे दैनंदिन काम अपेक्षित गती कायम घेवून करणे शक्य होईल. तसेच सार्वजनिक ग्रंथालयांतील कर्मचारी पदासाठी शैक्षणिक अर्हता ठरवून दिली आहे. त्या पदनामानुसार निश्चित केलेल्या शैक्षणिक अर्हता संबंधित कर्मचाऱ्याने पूर्ण करणे अनिवार्य आहे. तथापि आकृतिबंधापेक्षा जास्त सेवकांची ग्रंथालयास गरज असल्यास ते नेमण्यास व्यवस्थापनास मुभा आहे.

३.८. महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची सद्यस्थिती :

महाराष्ट्रामध्ये सार्वजनिक ग्रंथालयांची प्रदिर्घ परंपरा आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयांचे महत्त्व ओळखून १९६७ साली महाराष्ट्र शासनाने सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा निर्माण केला आणि त्याद्वारे सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या निर्मिती आणि विकासास गतीमानता देण्याचा महत्त्वपूर्ण प्रयत्न केला. 'गाव तेथे ग्रंथालय' असे ग्रंथालय चळवळीचे घोषवाक्य स्वीकारण्यात आले. ग्रंथालयाचे जिल्हा व तालुका तसेच अ, ब, क, ड अशा श्रेणीमध्ये वर्गीकरण करून त्यांना आर्थिक अनुदान देण्यात आले.

महाराष्ट्रामध्ये सार्वजनिक ग्रंथालय चळवळीमुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांचा काही प्रमाणामध्ये संख्यात्मक विकास झाला. सार्वजनिक ग्रंथालयांबाबत 'गाव तेथे ग्रंथालय' हे ग्रंथालय चळवळीचे घोषवाक्य होते. महाराष्ट्रामध्ये सुमारे ४३,७२२ गावे आहेत. पैकी सुमारे १२,१४४ गावांमध्येच सार्वजनिक ग्रंथालये आहेत. उर्वरित ३१,५७८ गावे ग्रंथालय सेवेपासून वंचित राहिली आहेत. त्यातही आदिवासी बहूल आणि दुर्गम प्रदेशामध्ये सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास झालेला दिसत नाही.

मार्च २०१२ मध्ये महाराष्ट्रात १२,८५५ ग्रंथालये होती. १ एप्रिल २०१२ पासून शासनाने नवीन सार्वजनिक ग्रंथालयांना मान्यता व अनुदान देण्याचे बंद केले आहे. त्यामुळे नवीन सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या निर्मिती आणि विकासास खिळ बसली आहे. शासकीय नियम आणि अटींमध्ये न बसणाऱ्या ग्रंथालयांच्या मान्यता काढल्या जात असल्यामुळे पुढील काळात त्यांची संख्या कमी झालेली दिसते. मार्च २०१६ च्या आकडेवारीनुसार महाराष्ट्रात १२१४४ सार्वजनिक ग्रंथालये कार्यरत होती. म्हणजेच चार वर्षांच्या कालावधीत ७११ सार्वजनिक ग्रंथालये बंद झालेली आहेत. जनतेची अनास्था आणि शासनाचे दुर्लक्ष हे यामागचे कारण आहे.

'अ' आणि 'ब' दर्जाच्या ग्रंथालयांची परिस्थिती चांगली असून त्यांनी ग्रंथालयीन सुविधेसोबत व्याख्यानमाला, साहित्यसंमेलन, स्पर्धापरीक्षा मार्गदर्शन, सांस्कृतिक स्पर्धा इत्यादी उपक्रमांचे आयोजन केलेले दिसून येते. धोरणी व ग्रंथप्रेमी कार्यकर्त्यांच्या बळावर वाचनसंस्कृती जोपासण्याची व ग्रंथालय चळवळ टिकवून ठेवण्याची मोठीच जबाबदारी या ग्रंथालयांनी आजतागायत पार पाडली आहे. यातील काही ग्रंथालयांनी त्यांच्या मोक्याच्या जागांचा व्यापारी

तत्त्वावर वापर करून शॉपींग कॉम्प्लेक्स तसेच सभागृहाच्या माध्यमातून स्थायी स्वरूपाचे आर्थिक पाठबळही मिळवले आहे. शासकीय अनुदानासोबतच संस्थेना मिळणाऱ्या आर्थिक उत्पन्नातून या ग्रंथालयांना चांगले दिवस आले आहेत. त्यामुळे या ग्रंथालयांनी आपल्या ग्रंथालयात नव्या तंत्राचा वापर करून ग्रंथालयांचे संगणकीकरण केले. बार कोड पद्धत सुरू झाली. काही ग्रंथालयांनी जुने ग्रंथ, हस्तलिखिते स्कॅन करून त्याचे ई-बुक देखील केले. (कल्याण, कोल्हापूर येथील सार्वजनिक ग्रंथालये) स्पर्धा परिक्षांची निकड ओळखून जवळपास बऱ्याच ग्रंथालयात स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शक केंद्रे सुरू केली आहेत. जिल्हा आणि तालुका पातळीवरील ग्रंथालयांनी आधुनिकीकरणास सुरुवात केली आहे. अनेक ग्रंथालयांच्या वेबसाईट असून त्यावर ते वाचन साहित्य व ग्रंथालयाची माहिती सतत टाकून अपडेट करत आहे. अनेक ग्रंथालयांमध्ये १२ तास अभ्यासिका कार्यरत आहेत. परंतु ग्रामीण भागातल्या ग्रंथालयांची त्यातही क व ड वर्गातील कित्येक ग्रंथालयांची परिस्थिती बिकटच आहे आणि त्यांची संख्यात्मक आकडेवारी मोठी आहे. आपल्याकडील कित्येक सार्वजनिक ग्रंथालय आजही साठ-सत्तरच्या दशकातील वातावरणातच रमत आहेत.

आजच्या बहुसंख्य सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या इमारतींची अवस्था पाहिली की, जाणवते आपल्याला चांगल्या इमारतींसाठी बराच काळ थांबावे लागणार आहे. बहुसंख्य सार्वजनिक ग्रंथालयांना स्वतःच्या इमारती नाहीत आणि आर्थिक अडचणींमुळे ग्रंथालयासाठी स्वतंत्र इमारती बांधता येणे शक्य होत नाही, ही वस्तुस्थिती आहे.

गाव सुधारायचं असेल, तर गावात ग्रंथालय सुरू झालं पाहिजे. तरूणांना वाचनांकडे वळवलं पाहिजे. या प्रामाणिक भावनेने गावातील काही होतकरू लोकांकडून ग्रंथालयासाठी संस्था रजिस्टर करून ग्रंथालय सुरू करण्याबाबत पुढाकार घेऊन ग्रंथालय सुरू केले जाते. वर्ष दोन-चार वर्ष ते उत्साहात सुरू राहते. पुढील काळात ग्रंथालय खोली भाडं, पुस्तक, वर्तमानपत्र, मासिके खरेदी, वीज बील, साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम या सर्वांची आर्थिक जुळणी न करता आल्यामुळे प्रामाणिक हेतूने सुरू केलेले ग्रंथालय बंद करावयाची पाळी येते. ज्या संस्थेचे संचालक ग्रंथालयास आर्थिक हातभार लावण्यास सक्षम असतात, त्यांचीच ग्रंथालय टिकून राहतात. महाराष्ट्रातील 'ड' वर्गातल्या अनेक ग्रंथालयाची आज अशीच अवस्था आहे. 'ड' वर्गाच्या ग्रंथालयाला मिळणाऱ्या वीस हजार रूपये वार्षिक अनुदानातून दहा हजार

रूपये इतर खर्चासाठी वापरणं अपेक्षित असते. एवढ्या कमी अनुदानात ग्रंथालय चालवणं शक्य नसल्यामुळे ग्रंथालय बंद करण्याची वेळ ग्रंथालय चालकांवर येते.

राज्यातील ग्रामीण भागात सार्वजनिक ग्रंथालये स्थापन न होण्यामागच्या कारणांचा शोध घेतल्यास असे लक्षात येते की, लोकांनी दाखविलेली सार्वजनिक ग्रंथालयासंबंधीची पराकोटीची अनास्था, उदासीनता हे प्रमुख कारण आहे. स्थानिक प्रशासनाने गाव तेथे शाळा, ग्रामपंचायत, सहकारी संस्था स्थापन करायला जसे प्राधान्य दिले जाते, तसे ते सार्वजनिक ग्रंथालय स्थापन करायला दिले नाही. त्यामुळे स्वातंत्र्य मिळून ७० वर्षे होत आली, तरी आज राज्यातील ग्रामीण भाग सार्वजनिक ग्रंथालयांपासून वंचितच राहिला आहे. गाव तेथे ग्रंथालय ही घोषणा करून सुद्धा ग्रामीण जनतेला अजूनही ग्रंथालयसेवांचा लाभ मिळू शकत नाही. सार्वजनिक ग्रंथालय शिक्षणव्यवस्थेचा अविभाज्य घटक असूनही राजकीय व प्रशासकीय इच्छाशक्तींच्या अभावी ग्रंथालयांना अद्यापही शिक्षणसंस्थांचा दर्जा मिळू शकलेला नाही. महाराष्ट्र शासनाला ग्रंथालय ही प्राधान्याची जबाबदारी वाटत नाही. परिणामी ग्रंथालय विभागासाठी स्वतंत्र मंत्रालय अस्तित्वात नाही. उच्च व तंत्रशिक्षण मंत्रालयाच्या अंतर्गत हे ग्रंथालय संचालनालय सध्या काम करत आहे. त्यामुळे या विभागातील यंत्रणेचं काम धीम्या गतीने सुरू आहे.

शासनाकडून सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासासाठी आवश्यक असलेला निधी वेळोवेळी उपलब्ध करून दिला जात नाही. त्यामुळे नवे उपक्रम राबविण्यास ग्रंथालयांना अडथळे येतात. राज्यातील १०० शासनमान्य सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या देखरेख व नियंत्रणासाठी एक ग्रंथालय निरीक्षण व एक लिपिक अशी प्रमाणबद्ध पथक स्थापन करण्याची तरतूद असतानाही शासनातर्फे वेळेवर पदं भरली जात नाहीत. त्याशिवाय बऱ्याच सार्वजनिक ग्रंथालयात कर्मचारी पदे शासन मान्य आराखड्यानुसार भरली जात नसल्याने ग्रंथालयांची संख्यात्मक व गुणात्मक वाढ खुंटली आहे.

ग्रंथालय चळवळीत दुर्लक्षित राहिलेला अजून एक घटक म्हणजे ग्रंथालयाचे कर्मचारी. ग्रंथालय टिकवून ठेवण्यासाठी धडपडणाऱ्या ग्रंथालय सेवकांना गेली चार तपं शासनाचे दुर्लक्ष झाले आहे. त्यांना आजतागत कुठल्याही प्रकारच्या सेवाशर्ती आणि वेतनश्रेणी लागू करण्यात आलेली नाही. अतिशय कमी मानधनात हे सेवक वर्षानुवर्षे राबत आहेत. महागाईच्या या जमान्यात खर्च प्रचंड वाढल्याने कुटुंबाच्या उदरनिर्वाहची आर्थिक जबाबदारी पेलताना त्यांना

त्रास होत आहे. साहित्य-संस्कृती जोपासण्याच्या नावाखाली आपलं सरकार कोट्यावधी रूपये खर्च करत असताना ग्रंथालय चळवळीचा रथ प्रामाणिकपणे, निष्ठेने ओढणाऱ्या या सेवकांना योग्य आर्थिक मोबदला मिळवून देण्याबाबत शासन उदासीनच आहे. महाराष्ट्रात आज सर्व सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये सुमारे पंचवीस हजार सेवक कार्यरत आहेत. वर्षानुवर्षे काम करूनही नोकरीची हमी नाही. तुटपुंजे मानधन, आरोग्याच्या व इतर सुविधा नाहीत. यासाठी या कर्मचाऱ्यांवर अनेक वेळा शांततामय मार्गांनी आंदोलने व उपोषणे करण्याची वेळ येते. पण शासकीय धोरणांमध्ये फारसा बदल होताना दिसत नाही. त्यामुळे ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांची परवड सुरूच आहे. आज ना उद्या कधी तरी शासन सेवाशर्ती व वेतनश्रेणी लागू करेल, या आशेवर कर्मचारीवर्ग ग्रंथालय चळवळ पुढे नेत आहेत. शासनाची उदासीनता, जनतेची अनास्था यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासाला खिळ बसली आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या जुन्या व कार्यात्मक नसलेल्या इमारती, भौतिक साधनांची कमतरता, प्रशिक्षित कर्मचाऱ्यांचा अभाव परिणामी ग्रंथालये म्हणजे मनोरंजनात्मक साहित्याचे भांडार असे स्वरूप निर्माण होऊ लागले आहे. सामाजिक प्रगतीमध्ये मोलाची भर घालणाऱ्या या लोकविद्यापीठांकडे दुर्लक्ष न करता त्यांना नवसंजीवनी देऊन अधिकाधिक लोकोपयोगी करण्याची आवश्यकता आहे. त्याला समाजातील वाचनप्रेमी कार्यकर्त्यांचे कर्तृत्व, दानशूर व्यक्तींचे दातृत्व व शासनाचे पितृत्व हवे आहे.

या सगळ्या पार्श्वभूमीवर अडचणींवर मात करून चांगले काम करणारीही ग्रंथालये आहेत. शासनाच्या तुटपुंज्या अनुदानातही पदरमोड करून त्या चळवळीतील मोजक्या निष्ठावंत कार्यकर्त्यांनी शहरांपासून खेड्यापाड्यांपर्यंत वाचनसंस्कृती रूजविण्यासाठी जाणीवपूर्वक प्रयत्न केले आहेत. कोणत्याही प्रकारचे शासकीय अनुदान न घेताही आज महाराष्ट्रात वाचनसंस्कृती रूजविण्यासाठी प्रयत्न करणाऱ्या काही व्यक्ती व संस्थाही कार्यरत आहेत. ठाणे जिल्ह्यातील बदलापूर येथील ग्रंथसखा ग्रंथालय ग्रंथप्रेमी कार्यकर्त्यांनी या ग्रंथालयाची दर्जात्मक व वाचकाभिमुख वाढ केली आहे. बुलढाप्यामध्ये पुस्तक मैत्री बालवाचनालयांनी वॉर्डवॉर्डित लोकसहभागातून पन्नास बाल वाचनालये सुरू करून उत्तमरितीने चालवली आहेत. या वाचनालयाकडून प्रेरणा घेऊन महाराष्ट्रातील अन्य गावांमध्येही अशी मोफत बाल वाचनालये वाचनप्रेमी लोकांनी सुरू केली आहेत. हे चित्र आशादायी आहे.

समर्थ रामदासांच वचनात असे म्हणावेसे वाटते की, “सामर्थ्य आहे चळवळीचे, जो जे करील त्याचे।।”

३.९. सार्वजनिक ग्रंथालयापुढील समस्या :

महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास ह्या विषयावर संशोधन करित असताना जिल्हा ‘अ’ वर्ग आणि तालुका ‘अ’ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या संदर्भात जाणवलेल्या समस्या पुढील प्रमाणे आहेत.

१. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासासाठी महाराष्ट्र शासनाने १९६७ साली ग्रंथालय कायदा संमत केला होता. त्यानुसार सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास सुरु होतो. परंतु २०१२ पासून महाराष्ट्र शासनाने नवीन आदेशाद्वारे सार्वजनिक ग्रंथालयांना मान्यता व अनुदान देणे बंद केले आहे. त्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांची संख्यात्मक व गुणात्मक विकास थांबला आहे.
२. आज रोजी महाराष्ट्रात ३६ जिल्हे आहेत. परंतु ३५ जिल्हयातच जिल्हा ‘अ’ वर्ग ग्रंथालय कार्यरत होती. जालना जिल्हयातील ‘अ’ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या दर्जात बदल करून त्यास ‘ब’ वर्ग ग्रंथालय दर्जा देण्यात आला आहे. नव्याने निर्माण झालेल्या पालघर जिल्हयात ‘अ’ वर्ग ग्रंथालय अस्तित्वात नाही. तसेच महाराष्ट्रात ३६३ तालुके आहेत. त्यापैकी ११० तालुक्यांमध्ये तालुका ‘अ’ वर्ग ग्रंथालये कार्यरत आहेत. २५२ तालुक्यांमध्ये तालुका ‘अ’ वर्ग ग्रंथालये अस्तित्वात नाहीत.
३. महाराष्ट्रातील सामाजिक, सांस्कृतिक आणि ज्ञानात्मक विकासाला चालना देण्यात महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालय चळवळीचे आणि ग्रंथालयाचे महत्त्वपूर्ण योगदान आहे. परंतु या महत्त्वपूर्ण घटकाकडे शासनाचे दुर्लक्ष झालेले आहे. अपुरे वेतन ही ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांची प्रमुख समस्या आहे. त्याप्रमाणे वेतनश्रेणी, सेवा नियम, आरोग्य सुविधा, पेन्शन योजना या लाभांपासूनही ते वंचित राहिले आहेत. यामुळे त्यांच्यामध्ये मानसिक नैराश्य येते. तसेच अल्पवेतनामुळे आणि अपूर्ण सुविधांमुळे उच्च शैक्षणिक पात्रता व उत्तम कौशल्य असणाऱ्या व्यक्ती सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये नोकरी करण्यास

तयार होत नाही. नोकरीमध्ये रुजू झाल्यास टिकून राहत नाही. या साऱ्यांचा प्रतिकूल परिणाम सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या कामकाजावर होतो.

४. सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये मोठया प्रमाणात ग्रंथ आणि अन्य तत्सम साधनसामुग्री असते. वाळवी व अन्यक्रमी किटकांपासून त्यांचे संरक्षण होण्यासाठी ग्रंथालयांमध्ये विविध प्रकारची किटकनाशके व घातक रसायने फवारली जातात. दूर्मिळ व जून्या ग्रंथांना, हस्तलिखितांना उग्र दर्प येतो. तसेच ग्रंथ सामग्रीच्या धुळीमुळे दीर्घकाळ तेथे राहून काम करणाऱ्या कर्मचाऱ्यांना श्वसनविषयक, फुफ्फुसांचे आजार, त्वचाविकार निर्माण होण्याचा संभव असतो. यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांना आरोग्याची समस्या हा चिंतेचा विषय आहे.
५. सार्वजनिक ग्रंथालयातील विहित आराखडयानुसार कर्मचारी आकृतीबंधाप्रमाणे सेवक भरतीची पूर्तता झालेली दिसून येत नाही. त्याचा प्रतिकूल परिणाम वाचकांना मिळणाऱ्या ग्रंथालयीन सेवा मिळण्यावर होतो. सार्वजनिक ग्रंथालयातील कर्मचाऱ्यांना मिळणारे अल्पवेतन, सोयी-सुविधांचा अभाव यामुळे होणारी नोकरगळती, नवीन कर्मचारी भरतीला प्रक्रियेतील शासनमान्यतेस लागणारी दीरंगाई ही एक महत्वाची समस्या आहे.
६. सार्वजनिक ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांना ग्रंथालय व्यवस्थापन मंडळात सदस्य म्हणून हक्काचे स्थान नाही. त्यामुळे ग्रंथालयातील समस्या, अडचणी त्यांना प्रभावीपणे मांडता येत नाही.
७. जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालयांच्या ग्रंथपाल पदासाठी बी.लिब. तर तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथपाल पदासाठी एल.टी.सी. किंवा बी.लिब. ही शैक्षणिक पात्रता आवश्यक मानली आहे. आजच्या आधुनिक काळात ग्रंथालयात संगणकीय माहिती तंत्रज्ञानाचा वापर महत्वपूर्ण ठरत आहे. त्यामुळे उच्च शैक्षणिक पात्रता पूर्ण नसलेल्या कर्मचाऱ्यांमुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांची कार्यक्षमता कमी होते.

८. तालुका ग्रंथालयांमध्ये अभ्यासिका व स्वतंत्र संदर्भ विभाग, संशोधन विभाग, उपलब्धतेचे प्रमाण कमी आढळून येते. इमारत व जागेची कमतरता ही यामागची समस्या आहे.
९. तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयामध्ये एक संगणक संख्या कमी असल्यामुळे वाचकांना इंटरनेट ओपॅक, लॅन इत्यादी आधुनिक सुविधा देणारा असमर्थ ठरतात. तसेच ग्रंथालयांच्या आधुनिकीकरणास गतिमानता प्राप्त होत नाही.
१०. जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये राजा राममोहन राय प्रतिष्ठान तर्फे मिळालेले झेरॉक्स मशीन अनुदानरूपात मिळाले आहे. झेरॉक्स यंत्र आकाराने छोटे व कमी क्षमतेचे असल्यामुळे वाचकांना झेरॉक्स सुविधा देण्यास अडचण येते.
११. सार्वजनिक ग्रंथालय कायदानुसार कामकाजाची वेळ घडयाळी सहा तास आहे. परंतु सर्वच जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालये त्यापेक्षा अधिक काळ सेवा देतात. असे असले तरी जादा काम केल्यामुळे त्यांना जादा वेतन मिळत नाही.
१२. सार्वजनिक ग्रंथालयांनी राज्य ग्रंथ निवड समितीने शिफारस केलेल्या यादीतील पुस्तके/ ग्रंथखरेदी करणे बंधनकारक असते. ग्रंथालय संचनालयाकडे आलेल्या पुस्तकांमधूनही समिती अ.ब.क.ड. वर्गाच्या ग्रंथालयांचा विचार करून सातशे-आठशे पुस्तकांची शिफारस संचनालयाला करते. या पुस्तकांची निवड यादी दर दोन वर्षांनी प्रकाशित होणं अपेक्षित असते. ती कित्येकवेळा वेळेवर प्रकाशित होत नाही. उदा.२०१० ची यादी २०१२ मध्ये छापून येते. तोपर्यंत काही ग्रंथालयांनी त्यातली अनेक पुस्तके आधीच खरेदी केलेली असतात. कित्येक ग्रंथालयांची मागची खरेदी पुर्ण झालेली असते. उशिरा यादी प्रकाशित झाल्यामुळे त्यातली काही पुस्तके आऊट ऑफ प्रिंटही झालेली असतात. चांगले काम करणाऱ्या सार्वजनिक ग्रंथालयांना या दिसाळ कारभाराचा फटका बसतो. त्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये चांगल्या साहित्याची वानवा आढळते.

१३. सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये विविध भाषांमधील अनेक वृत्तपत्रे येतात. महिना अखेरीस त्यांचे मोठे ढिग तयार होतात. सार्वजनिक ग्रंथालयांमधील वृत्तपत्रांची रद्दी विक्री करण्यासाठी ग्रंथालय संचनालयाची दरवेळी परवानगी घ्यावी लागते. परवानगी येईपर्यंत वृत्तपत्रांची मोठ्या प्रमाणावर साठलेली रद्दी ठेवण्यासाठी जागेची टंचाई सार्वजनिक ग्रंथालयांना जाणवते.
१४. फिरते ग्रंथालय हा उपक्रम राबविण्याचा जिल्हा 'अ' वर्ग व तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयांची संख्या कमी आहे. हे उपक्रम सुरु नसल्यामुळे आसपासचा परिसर व गावातील वाचकांना ग्रंथालयीन सेवा मिळू शकत नाही. फिरत्या ग्रंथालयांसाठी वाहन-वाहनचालक-इंधन इत्यादी खर्चास आर्थिक पाठबळ उपलब्ध होत नाही ही समस्या आहे.
१५. अनेक सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या इमारती जीर्ण-शीर्ण झाल्या आहेत. काही ग्रंथालय व्यवस्थापन मंडळींनी आपल्या ताब्यातील जागेत व्यापारी तत्वावर दुकान-गाळे बांधून भाडेतत्वावर दिले आहेत. व्यवहार करतांना कायदेशिर बाबींकडे दुर्लक्ष झाल्यामुळे तसेच दुकानांच्या दीर्घकालीन वापरामुळे दुकान-गाळेधारक भाडेकरू आणि ग्रंथालय व्यवस्थापन यांच्यामध्ये ताण-तणाव निर्माण होऊन कोर्ट केसेस सुरु झाल्या आहेत. या सर्वांचा प्रतिकूल परिणाम ग्रंथालयांच्या विकासावर होतो.
१६. आमदार खासदार लोकप्रतिनिधींच्या स्थानिक विकास निर्धींचा विनियोग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासासाठी होऊ शकतो. परंतु राजकीय नेते सार्वजनिक ग्रंथालयांबाबत उदासिन असतात. राजकारणातील व्यक्तींकडून आर्थिक सहकार्य घेतल्यास सार्वजनिक ग्रंथालयांमधील त्यांचा हस्तक्षेप वाढेल अशी ग्रंथालय व्यवस्थापनास भिती वाटते. त्यामुळे तरतुद असूनही सार्वजनिक ग्रंथालये मदत मिळविण्यात यशस्वी होत नाही.
१७. सार्वजनिक ग्रंथालयांची चळवळ लोकसहभागापासून दुर राहिली आहे. त्यामुळे देणगी व अन्य सहकार्य मिळविण्यासाठी अडचण येते. परिणामी सार्वजनिक ग्रंथालयाचा विकास थांबला आहे.

सारांश

या प्रकरणामध्ये लायब्ररी या संज्ञेच्या उत्पत्ती पासून ग्रंथालयाच्या विविध व्याख्यांच्या द्वारे सार्वजनिक ग्रंथालयांचे स्वरूप, कार्ये व महत्त्व मांडले आहे. सार्वजनिक ग्रंथालय या संकल्पनेच्या विकासामध्ये महत्त्वपूर्ण योगदान देणारे, इंग्लंड, अमेरिका, रशिया, चीन, ऑस्ट्रेलिया सारख्या देशातील सार्वजनिक ग्रंथालय व त्यांची कार्ये तसेच भारतीय ग्रंथालयांची परंपरा व भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालयाची चळवळ, महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांची सद्यस्थिती आणि समस्या या प्रकरणात मांडल्या. सार्वजनिक ग्रंथालय आदर्श प्रारूप रेखाटताना आणि शिफारशीची मांडणी करताना त्याचा उपयोग झाला.

संदर्भसूची :

१. शेवाळे, मधुकर (२०११) ग्रंथपालनाचा इतिहास : प्राचीन व मध्ययुगीन कालखंड.
ज्ञानगंगोत्री. नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ. मार्च-मे, पृ. ५.
२. महाजन, शां. ग. (२०११) महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचे व्यवस्थापन. पुणे : पुणे विद्यार्थी गृह प्रकाशन, पृ. ७१.
३. जोशी, लक्ष्मणशास्त्री (१९७६) मराठी विश्वकोश, खंड ५. मुंबई : महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडळ, पृ. २९३.
४. महाजन, शां.ग. (२०११) महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचे व्यवस्थापन. उनि., पृ.१.
५. महाजन, शां.ग. (२०११) महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचे व्यवस्थापन. उनि., पृ. १४६.
६. जैन, प्रकाश व इतर (२००९) सुलभ ग्रंथालयशास्त्र. नागपूर: विश्व पब्लिशर्स अँड डिस्ट्रिब्युटर्स, पृ.१.१४.
७. उजळंबकर, कृ. मु. (१९६५) ग्रंथालय कायद्याचे स्वरूप. पुणे : महाराष्ट्र राज्य पद्मश्री शि. रा. रंगनाथन सत्कार समिती, पृ.३.
८. पवार, रामेश्वर (ऑक्टो. २०००) सार्वजनिक ग्रंथालय. ग्रंथपरिवार, औरंगाबाद जिल्हा ग्रंथालय संघ, पृ. २.
९. Ranganathan, S. R. (1961) Reference Service. Bombay, Page 63
१०. महाजन, शां. ग. (२०११) महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचे व्यवस्थापन. उनि., पृ. ७२.
११. करमरकर, प्रकाश (१९९६) आदर्श ग्रंथालय संघटन. मुंबई : मंगेश प्रकाशन, पृ. १४.
१२. महाजन, शां. ग.(२०११) महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचे व्यवस्थापन. उनि., पृ. १४६.
१३. नरगुंदे, रेवती (२०१३) ग्रंथालय आणि सामाजिक विकास. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन, पृ.१०१.
१४. तत्रैव, पृ.१०१.

१५. कांबळे, नागेश व सावे, वसंत (२०००) सार्वजनिक ग्रंथालय. नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, पृ.२.
१६. पौडवाल, सुषमा व सावे, वसंत (२०१४), सार्वजनिक ग्रंथालये : प्रगती आणि वस्तुस्थिती. पुणे : माधवी प्रकाशन. पृ.२१.
१७. तत्रैव, पृ. २७.
१८. जोशी, लक्ष्मणशास्त्री (१९७६) मराठी विश्वकोश, खंड ५. उनि., पृ. २९५.
१९. तत्रैव, पृ. २९५.
२०. देशपांडे, ए. व्ही. (२००९) ग्रंथालयाचा विकास आणि त्यांचे समाजातील कार्य. नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, पृ.४५.
२१. कांबळे, नागेश आणि सावे, वसंत (२०००) सार्वजनिक ग्रंथालये नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ प्रकाशन. पृ. ५७.
२२. जोशी, लक्ष्मणशास्त्री (१९७६) मराठी विश्वकोश, खंड ५. उनि., पृ. २९५.
२३. कांबळे, नागेश आणि सावे, वसंत (२०००) सार्वजनिक ग्रंथालय. उनि., पृ. ५८.
२४. पाटील, प्रताप दत्तात्रय (२००३-२००४) सांगली आणि मिरज शहरातील अ वर्ग ब वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयातील सेवक. नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ. पृ. २५-३३.
२५. मराठे, ना.बा. (१९८९) भारतीय ग्रंथालयांचा इतिहास. मुंबई : अभिनव प्रकाशन, पृ. ३९.
२६. पौडवाल, सुषमा व सावे, वसंत (२०११) सार्वजनिक ग्रंथालये : प्रगती आणि वस्तुस्थिती. उनि., पृ. २.
२७. कोण्णूर, एम. बी. आणि कोण्णूर, सुजाता (२००८) ग्रंथालय व माहितीशास्त्रकोश. पुणे : डायमंड पब्लिकेशन, पृ. ३४८.
२८. पौडवाल, सुषमा व सावे, वसंत (२०११) सार्वजनिक ग्रंथालये : प्रगती आणि वस्तुस्थिती. उनि., पृ. ३.
२९. पाटील, सीताराम (२००५) विश्व महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचे. देवगड : स्नेहल एजन्सी, पृ. ८७ .

३०. टिळेकर, अरवींद (२०००) ग्रंथपालनाचा विकास व नव्या दिशा. पुणे : कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पृ. २५.
३१. जोशी, लक्ष्मणशास्त्री (१९७६) मराठी विश्वकोश, खंड ५. उनि., पृ. ३०३.
३२. पौडवाल, सुषमा व सावे वसंत (२०११) सार्वजनिक ग्रंथालये : प्रगती आणि वस्तुस्थिती. उनि., पृ. ५.
३३. कोण्णूर, एम.बी. आणि कोण्णूर, सुजाता (२००८) ग्रंथालय व माहितीशास्त्रकोश. उनि., पृ. २०२.
३४. तत्रैव, पृ. २०१.
३५. कांबळे, एन.बी. (२००८ ते २००९) महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्यातील नियमांत झालेले बदल. ज्ञानगंगोत्री. नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, सप्टें. - फेब्रु., पृ. ५४.
३६. बालेकर, राजशेखर (२०१२). सार्वजनिक ग्रंथालय : एक अभ्यास. नांदेड : संगत प्रकाशन.
३७. उजळंबकर, कृ.मु. (१९६५) ग्रंथालय कायद्याची रूपरेखा. उनि., पृ. ३.
३८. चव्हाण, पुंडलिकराव (मार्च २०१०) ग्रंथपरिवार. औरंगाबाद : औरंगाबाद जिल्हा ग्रंथालय संघ, पृ. १७.
३९. दाइंगडे, श्याम जनार्दन (२०१६) भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालय कायदे. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.
४०. पौडवाल, सुषमा व सावे, वसंत (२०११) सार्वजनिक ग्रंथालये : प्रगती आणि वस्तुस्थिती. उनि., पृ. २४४.
४१. पाटील, सीताराम (फेब्रु.२००५) 'विश्व महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचे'. देवगड : स्नेहल एजन्सी, पृ. १२५.
४२. महाजन, शांताराम गजानन (१९९५) ग्रंथालय संघटन. पुणे : पुणे विद्यार्थी गृह प्रकाशन, पृ. ३७.

प्रकरण चौथे
माहितीचे संकलन आणि विश्लेषण

प्रकरण ४ थे

माहितीचे संकलन आणि विश्लेषण

| अ.क्र. | तपशील | पृष्ठ क्र. |
|--------|--|------------|
| ४.१. | प्रस्तावना | १४२ |
| ४.२. | माहिती संकलन | १४३ |
| ४.३. | ग्रंथपाल प्रश्नावलीच्या माहितीचे विश्लेषण | १४३ |
| ४.४. | जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या माहितीचे विश्लेषण | १४४ |
| ४.५. | तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या माहितीचे विश्लेषण | १८३ |
| | सारांश | २१८ |

प्रकरण ४ थे

माहितीचे संकलन आणि विश्लेषण

४.१. प्रस्तावना:

माहिती (Data) ही कोणत्याही संशोधनासाठी आधारभूत पाया असते. माहिती संकलनाशिवाय संशोधन होऊ शकत नाही. माहिती संकलन ही एक स्वतंत्र प्रक्रिया आहे. संशोधन समस्या समजून घेऊन ती सोडविण्याचे माहिती एक माध्यम असून समस्या सोडविण्यासाठी प्रथम ती समजून घेऊन त्या समस्येच्या विविध बाबी संबंधीची माहिती संकलित केली पाहिजे. संकलित केलेली माहिती परिपूर्ण आणि अचूक असली पाहिजे. संशोधनासाठी आवश्यक असलेली माहिती ही ग्रंथ, नियतकालिके, वार्षिक अहवाल, दाखल नोंदवही, पत्रव्यवहार, संस्थांच्या नियमावली घटना, डेटाबेस वितरकाबरोबरचे करारनामे इत्यादी साधनांमधून संकलित करता येते. माहिती संकलन तीन टप्प्यांत पूर्ण करण्यात येते. माहिती संग्रहण, विश्लेषण आणि सादरीकरण, प्रश्नावली, मुलाखत आणि निरीक्षण ही माहिती संकलनाची तंत्रे आहेत. प्रश्नावली मुक्त आणि रचनात्मक अशा दोन प्रकारे तयार करता येते. लक्ष्यसमुह आकाराने मोठा आणि भौगोलिक दृष्ट्या विखुरलेला असतो तेव्हा प्रश्नावली या साधनाचा उपयोग करण्यात येतो. समुह संख्येने लहान असेल तर मुलाखत हे साधन योग्य ठरते. प्रायोगिक संशोधनात वापरात येणारे तंत्र म्हणजे निरीक्षण. निरीक्षणात डोळे, मन आणि अनुभूती यांचा समन्वय साधला जातो.

कोणतेही कार्य करण्यासाठी साधनांची आवश्यकता असतेच म्हणून तंत्रामध्ये साधनांचा समावेश असतो. शिवाय विशिष्ट माहिती संकलन साधन कसे तयार करावे, ते साधन तयार करते वेळेस कोणत्या बाबींची काळजी घ्यावी, ते माहिती संकलन साधन कसे वापरावे याही बाबींचा समावेश तंत्रामध्ये होतो. माहिती संकलनाच्या अनुषंगाने तर्कशुद्ध विचार करणे, निर्णय घेणे किंवा व्यूह रचना करणे याही बाबींचा माहिती संकलन तंत्रामध्ये समावेश होतो.

प्रस्तुत संशोधनासाठी निवडलेल्या उद्दिष्टांच्या अनुषंगाने माहिती म्हणजेच महाराष्ट्रातील जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाची माहिती प्राप्त करण्यासाठी ग्रंथपाल प्रश्नावली तयार करण्यात आली होती.

४.२. माहिती संकलन :

या संशोधनासाठी महाराष्ट्रातील जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालये व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालये यांची निवड करण्यात आली. जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालयात एकूण ३५ जिल्हा ग्रंथालये होती. ३५ ग्रंथपालांना प्रश्नावली दिली त्यापैकी ३१ ग्रंथपालांची प्रश्नावली भरून परत आली. प्रतिसाद ८८.५७% मिळाला. तर तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयात एकूण ११० ग्रंथालये होती. त्या सर्वांना प्रश्नावली दिली, त्यापैकी ८२ ग्रंथपालांची प्रश्नावली भरून परत आली. प्रतिसाद ७४.५४% मिळाला. प्रश्नावलीच्या द्वारे उपलब्ध झालेल्या प्राथमिक पातळीवरील माहितीचे पृथक्करण माहितीचे योग्य विश्लेषण व त्याचे योग्य सादरीकरण या प्रकरणात केले आहे.

४.३. ग्रंथपाल प्रश्नावलीच्या माहितीचे विश्लेषण :

१. जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांची माहिती घेण्यासाठी ग्रंथपालासाठी स्वतंत्र प्रश्नावली तयार करण्यात आली होती. या प्रश्नावलीमध्ये एकूण ४० प्रश्न विचारण्यात आले होते. प्रश्नावलीनुसार मिळालेल्या माहितीचे विश्लेषण प्रश्नावार क्रमाने केलेले आहे. जिल्हा आणि तालुका ग्रंथालयाचे कर्मचारी अनुदानासंबंधी निकष वेगळे आहेत. तसेच त्यांचे प्रादेशिक व सामाजिक महत्व ही वेगळे असल्यामुळे जिल्हा ग्रंथालयाचे व तालुका ग्रंथालयाचे वेगवेगळे विश्लेषण केले आहे. नंतर प्रश्नाचे टेबल आणि आलेखांच्या साहाय्याने स्पष्टीकरण केले आहे.
२. मिळालेल्या माहितीच्या आधारे आलेले निष्कर्ष दिलेले असून शिफारशी सुचविण्यात आल्या आहेत.
३. ग्रंथालयीन प्रश्नावलीद्वारे मिळालेल्या माहितीद्वारे जाणवणाऱ्या समस्यांचा आढावा घेण्यात आला आहे.
४. सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या अभ्यासामधून आदर्श ग्रंथालय प्रारूप तयार केले आहे.

४.४. जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या माहितीचे विश्लेषण :

प्रास्ताविक :

महाराष्ट्रात स्वातंत्र्यप्राप्तीपूर्वी इंग्रजी सत्तेच्या कालखंडापासून सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या कामास सुरुवात झाली आहे. महाराष्ट्रात एकूण ३६ जिल्हे आहेत. त्यापैकी ३५ जिल्ह्यांत जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालये आहेत. एकूण ३५ ग्रंथालयांपैकी ३१ ग्रंथालयांची माहिती प्राप्त झाली. यातील ८८.८७% ग्रंथालयांनी प्रतिसाद दिला व ११.४३% ग्रंथालयांनी प्रतिसाद दिला नाही. प्रतिसाद दिलेल्या ग्रंथालयांची विभागवार माहिती पुढीलप्रमाणे आहे.

प्रश्न क्र. १ हा ग्रंथालयाचे पूर्ण नाव व इतर माहिती मिळविण्यासाठी विचारला होता. या प्रश्नानुसार उपलब्ध झालेली माहिती पुढीलप्रमाणे आहे.

महाराष्ट्रातील शासनमान्य सार्वजनिक जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालयांची यादी

१. अमरावती विभाग

१. अकोला जिल्हा - बाबुजी देशमुख वाचनालय, अकोला,
२. अमरावती जिल्हा - अमरावती नगर वाचनालय, अमरावती
३. बुलढाणा जिल्हा - गर्दे वाचनालय, बुलढाणा
४. यवतमाळ जिल्हा - नगर वाचनालय, यवतमाळ
५. वाशिम जिल्हा - राजे वाकाटक सार्वजनिक वाचनालय, वाशिम

२. औरंगाबाद विभाग

६. औरंगाबाद जिल्हा - बलवंत मोफत वाचनालय, औरंगाबाद
७. जालना जिल्हा - टिळक सार्वजनिक वाचनालय, जालना
८. नांदेड जिल्हा - कै. डॉ. राम मनोहर लोहिया वाचनालय, नांदेड
९. परभणी जिल्हा - गणेश वाचनालय, परभणी

१०. लातूर जिल्हा - बलभीम वाचनालय, लातूर
११. हिंगोली जिल्हा - नूतन साहित्य मंदिर, सार्वजनिक वाचनालय, हिंगोली

३. नागपूर विभाग

१२. गोंदिया जिल्हा - श्री. शारदा वाचनालय, गोंदिया
१३. नागपूर जिल्हा - राजाराम सीताराम दीक्षित वाचनालय, नागपूर
१४. भंडारा जिल्हा - सार्वजनिक वाचनालय, भंडारा
१५. वर्धा जिल्हा - सत्यनारायण बजाज सार्वजनिक वाचनालय (ग्रंथालय), वर्धा

४. नाशिक विभाग

१६. अहमदनगर जिल्हा - अहमदनगर जिल्हा वाचनालय, अहमदनगर
१७. जळगाव जिल्हा - वल्लभदास वालजी जिल्हा वाचनालय, जळगाव
१८. धुळे जिल्हा - धोंडो शामराव गरूड सार्वजनिक वाचनालय, धुळे
१९. नंदूरबार जिल्हा - लोकमान्य टिळक वाचनालय, नंदूरबार
२०. नाशिक जिल्हा - सार्वजनिक वाचनालय, नाशिक

५. पुणे विभाग

२१. कोल्हापूर जिल्हा - करवीरनगर वाचन मंदिर, राजाराम रोड, कोल्हापूर
२२. पुणे जिल्हा - पुणे मराठी ग्रंथालय, पुणे
२३. सांगली जिल्हा - सांगली जिल्हानगर वाचनालय, मिरज
२४. सातारा जिल्हा - नगर वाचनालय, ३६ भवानी पेठ, सातारा
२५. सोलापूर जिल्हा - श्री. हिराचंद नेमचंद वाचनालय, सोलापूर

६. मुंबई विभाग

२६. ठाणे जिल्हा - मराठी ग्रंथालय, ठाणे
२७. मुंबई उपनगर - नॅशनल लायब्ररी, मुंबई
२८. मुंबई शहर - मुंबई मराठी ग्रंथसंग्रहालय, दादर
२९. रत्नागिरी जिल्हा - रत्नागिरी जिल्हा नगरवाचनालय, रत्नागिरी
३०. रायगड जिल्हा - सार्वजनिक वाचनालय आणि जिल्हा ग्रंथालय, अलिबाग
३१. सिंधुदुर्ग जिल्हा - रा. ब. अनंत शिवाजी देसाई वाचनालय, कुडाळ

वरील माहितीवरून असे दिसून येते की, महाराष्ट्रात एकूण सहा प्रादेशिक विभाग असून एकूण जिल्हा 'अ' वर्गाची ३५ ग्रंथालये आहेत. त्यापैकी ३१ ग्रंथालयांकडून माहिती प्राप्त झाली. त्यांचे विस्तृत विश्लेषण पुढीलप्रमाणे आहे.

तक्ता क्र. ४.१

महाराष्ट्रातील विभागनिहाय जिल्हा ग्रंथालये

| अ.क्र. | विभाग | जिल्हा ग्रंथालये |
|--------|----------|------------------|
| १ | अमरावती | ५ |
| २ | औरंगाबाद | ६ |
| ३ | नागपूर | ४ |
| ४ | नाशिक | ५ |
| ५ | पुणे | ५ |
| ६ | मुंबई | ६ |
| एकूण | | ३१ |

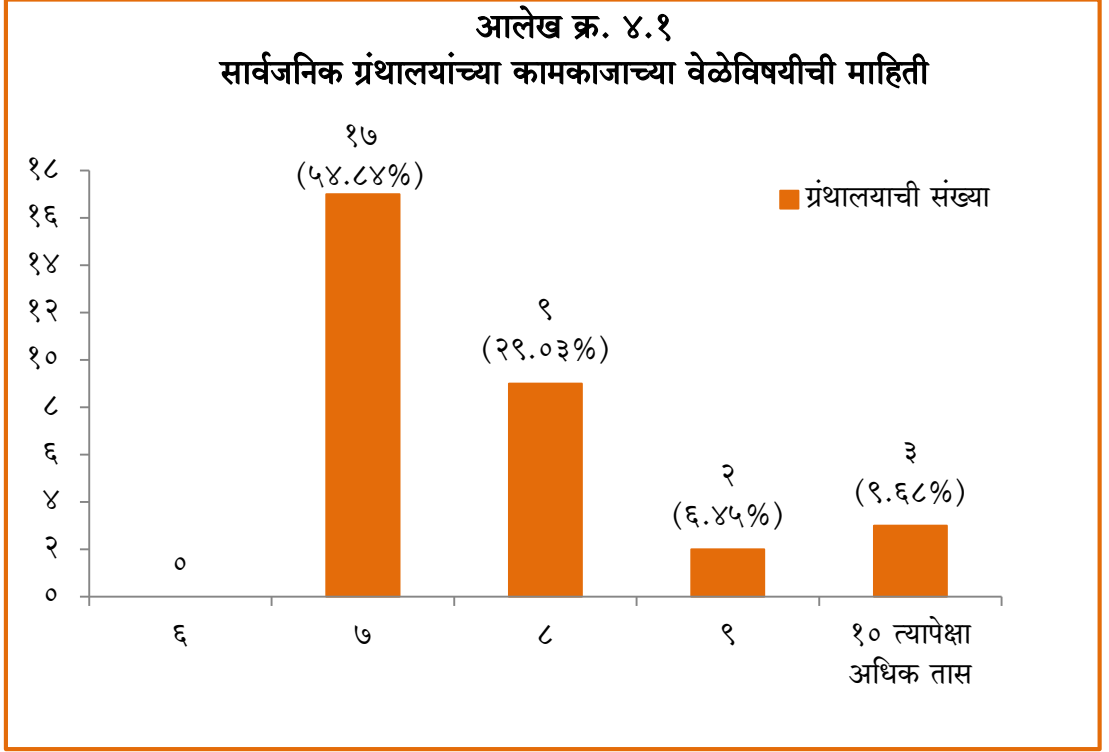
वरील तक्ता क्र. ४.१ वरून असे दिसून येते की, महाराष्ट्रातील अमरावती, औरंगाबाद, नागपूर, नाशिक, पुणे आणि मुंबई या सहा विभागांमधील एकूण ३५ जिल्ह्यांमध्ये आजमितीस 'अ' वर्गातील ३५ ग्रंथालये कार्यरत आहेत. त्यापैकी ३१ ग्रंथालयांची माहिती उपलब्ध झाली. दि. १ ऑगस्ट २०१४ रोजी मुंबई विभागात पालघर या ३६ व्या जिल्ह्याची निर्मिती महाराष्ट्र शासनाने केली, परंतु अद्यापही तेथे जिल्हा ग्रंथालय अस्तित्वात आलेले नाही असे आढळून आले.

प्रश्न क्र. २ हा ग्रंथालयाच्या कामकाजाची वेळ व कामकाजाचे तास जाणून घेण्यासाठी विचारला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती तक्ता क्र. ४.२ मध्ये दिली आहे

तक्ता क्र. ४.२

सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या कामकाजाच्या वेळेविषयी माहिती

| | | | | | | |
|---|-----------------------------|------|--------|--------|-------|--------------------|
| १ | कामकाजांच्या तासांची संख्या | ६ | ७ | ८ | ९ | १० पेक्षा अधिक तास |
| २ | ग्रंथालयांची संख्या | ०० | १७ | ९ | २ | ३ |
| ३ | शेकडा प्रमाण | ०.०% | ५४.८४% | २९.०३% | ६.४५% | ९.६८% |



वरील तक्ता क्र. ४.२ व आलेख क्र. ४.१ वरून असे दिसून येते की, ७ तास कामकाज करणारी सर्वाधिक १७ ग्रंथालये असून त्यांचे शेकडा प्रमाण ५४.६४% आहे. ८ तास कामकाज करणारी ९ ग्रंथालये असून त्यांचे शेकडा प्रमाण २९.०३% आहे. ९ तास काम करणारी सर्वात कमी २ ग्रंथालये असून त्यांचे शेकडा प्रमाण ६.४५% आहे. १० तास व त्यापेक्षा अधिक काम करणारी ३ ग्रंथालये आहेत. त्यांचे शेकडा प्रमाण ९.६८% आहे.

वरील तक्त्यानुसार असे दिसून आले की, महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या नियमानुसार ग्रंथालयीन कामकाजासाठी ६ तासांचा कालावधी निश्चित करण्यात आलेला आहे. संशोधनात असे दिसून आले की सर्वच जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालये त्यापेक्षा जास्त वेळ कामकाज करतात आणि वाचकांना सुविधा देतात.

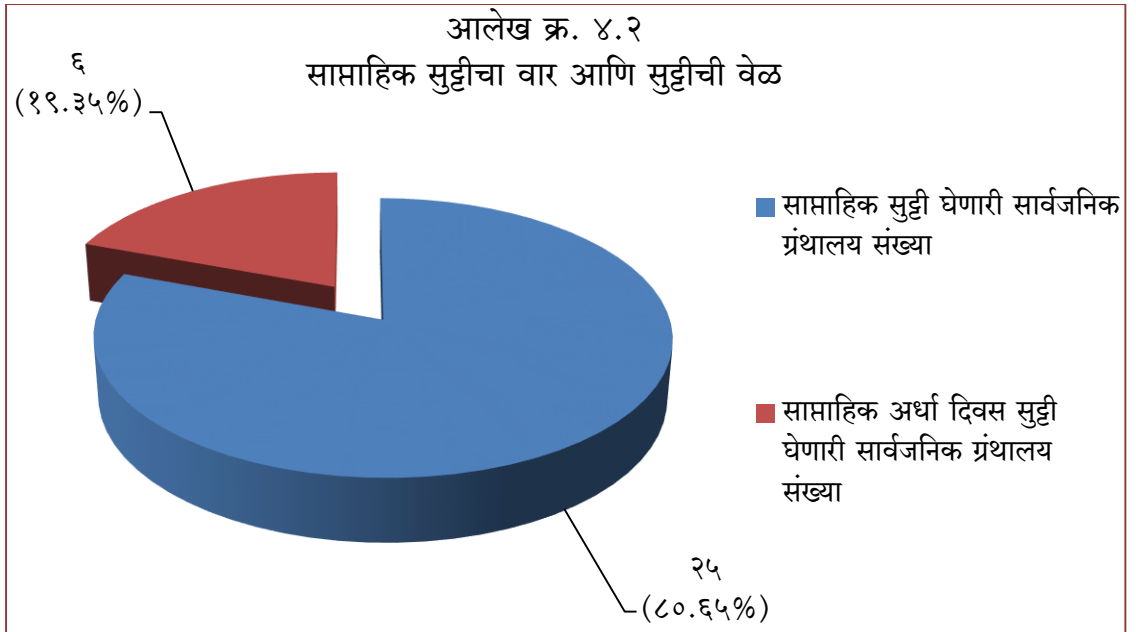
या विश्लेषणावरून असे दिसते की, ग्रंथालयांच्या नियमित ६ तासांच्या कामकाजाशिवाय १ तास अधिक काम करणारी ग्रंथालये अधिक आहेत.

प्रश्न क्र. ३ हा साप्ताहिक सुट्टीचा वार आणि सुट्टीची वेळ जाणून घेण्यासाठी विचारला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे :

तक्ता क्र. ४.३

साप्ताहिक सुट्टीचा वार आणि सुट्टीची वेळ

| अ.क्र. | तपशील | आकडेवारी | शेकडा प्रमाण |
|--------|--|----------|--------------|
| १ | साप्ताहिक सुट्टी घेणारी सार्वजनिक ग्रंथालय संख्या | २५ | ८०.६५% |
| २ | साप्ताहिक अर्धा दिवस सुट्टी घेणारी सार्वजनिक ग्रंथालय संख्या | ६ | १९.३५% |
| | एकूण | ३१ | १००% |



वरील तक्ता क्र. ४.३ व आलेख क्र. ४.२ वरून असे आढळून येते की, साप्ताहिक सुट्टी घेणारी ग्रंथालयांची सर्वाधिक संख्या २५ असून त्यांचे शेकडा प्रमाण ८०.६५% आहे. साप्ताहिक अर्धा दिवस सुट्टी घेणारी सर्वात कमी ६ सार्वजनिक ग्रंथालये असून, त्यांचे शेकडा प्रमाण १९.३५% आहे.

वरील विश्लेषणावरून असे स्पष्ट होते की, एकूण ग्रंथालयांपैकी ८०.६५% ग्रंथालये आठवड्यातून एक पूर्ण दिवस सुट्टी घेतात.

प्रश्न क्र. ४ हा ग्रंथालयातील एकूण कर्मचारी यांची संख्या जाणून घेण्यासाठी विचारण्यात आला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे आहे.

तक्ता क्र. ४.४

सार्वजनिक ग्रंथालयातील कर्मचारी संख्या

| अ.क्र. | घटक | आकडेवारी |
|--------|---------------|----------|
| १. | स्त्री | १२९ |
| २. | पुरुष | १०४ |
| | एकूण कर्मचारी | २३३ |

वरील तक्ता क्र. ४.४ वरून असे आढळून येते की, सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये एकूण २३३ कर्मचारी कार्यरत आहेत. त्यापैकी १२९ स्त्री कर्मचारी असून १०४ पुरुष कर्मचारी कार्यरत आहेत.

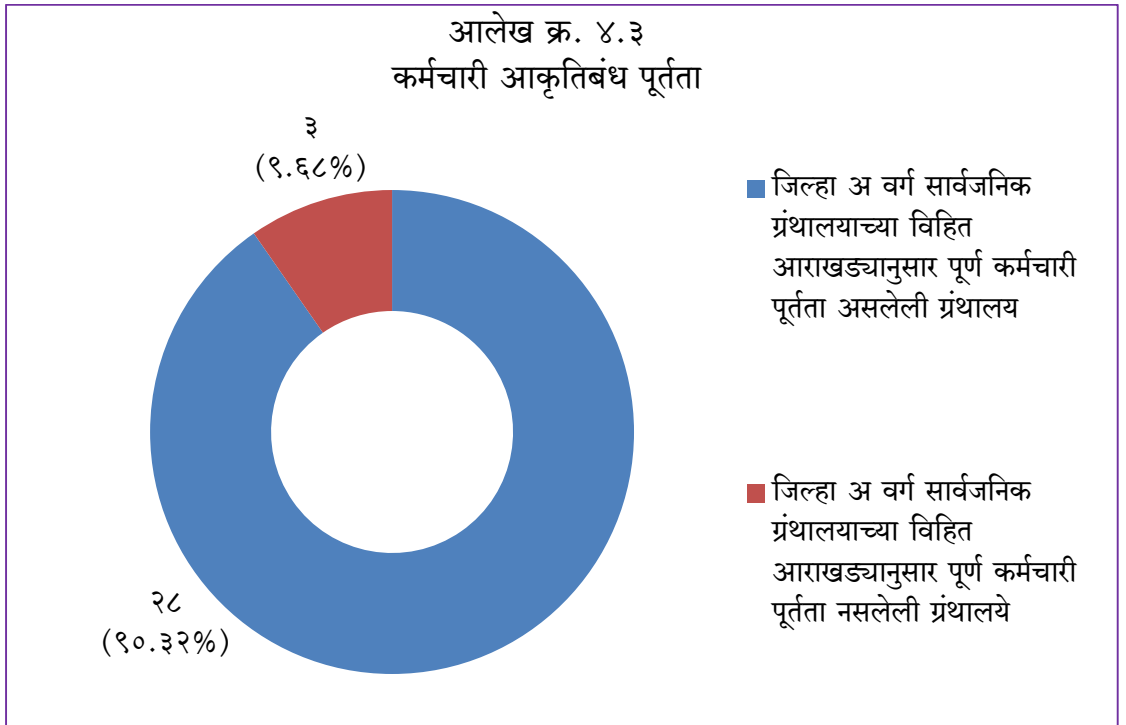
वरील विश्लेषणावरून असे स्पष्ट होते की, जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयात स्त्री कर्मचाऱ्यांचे प्रमाण जास्त आहे याचे कारण की, सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या कामकाजाचे स्वरूप हे अर्धवेळ असल्यामुळे स्त्रियांना घर सांभाळून ग्रंथालयात काम करता येते. याशिवाय सार्वजनिक ग्रंथालयात मिळणारे वेतन खूपच अल्प असल्याने पुरुषांना तेथे काम करणे शक्य होत नाही. त्यामुळे ग्रंथालयातील महिलांचे प्रमाण जास्त दिसते.

प्रश्न क्र. ५ हा शासन आराखड्यानुसार कर्मचारी आकृतिबंध पूर्तता आहे काय हे जाणून घेण्यासाठी विचारला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे-

तक्ता क्र. ४.५

कर्मचारी आकृतिबंध पूर्तता

| घटक | आकडेवारी | शेकडा प्रमाण |
|---|----------|--------------|
| जिल्हा अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या विहित आराखड्यानुसार पूर्ण कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता असलेली ग्रंथालये | २८ | ९०.३२% |
| जिल्हा अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या विहित आराखड्यानुसार पूर्ण कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता नसलेली ग्रंथालये | ०३ | ९.६८% |



वरील तक्ता क्र. ४.५ व आलेख क्र. ४.३ वरून असे आढळून येते की, जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विहित आराखड्यानुसार पूर्ण कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता असणारी २८ ग्रंथालये असून त्याचे शेकडा प्रमाण ९०.३२% इतके आहे. तर कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता नसलेली ३ ग्रंथालये असून त्यांचे शेकडा प्रमाण ९.६८% इतके आहे.

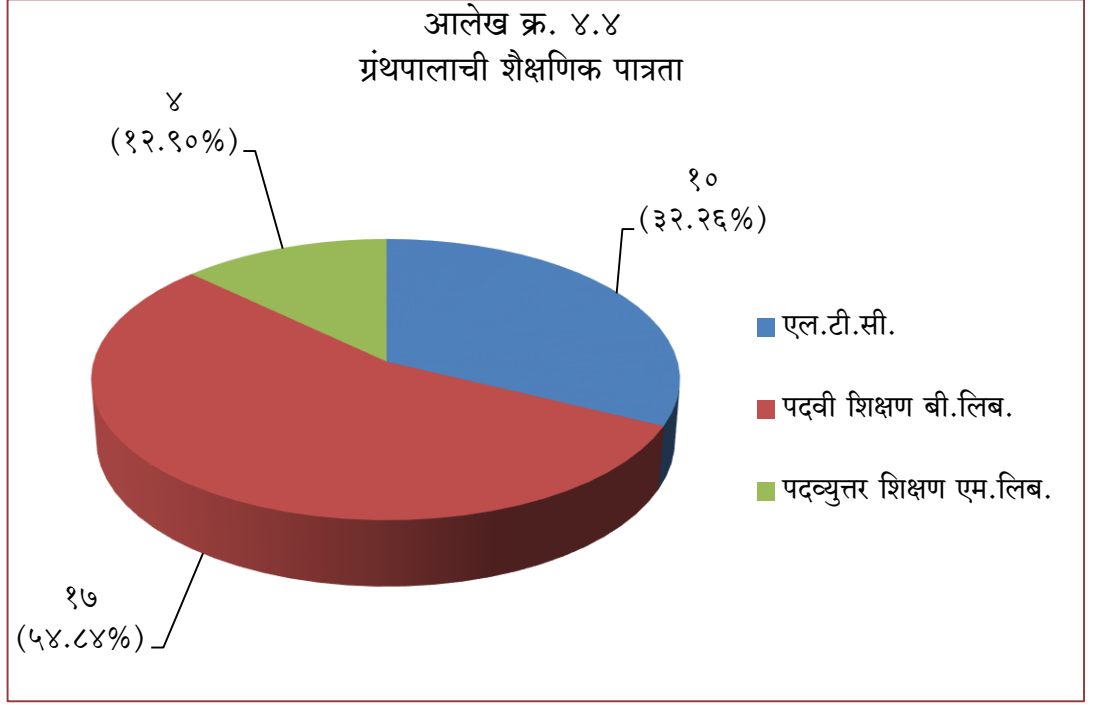
वरील विश्लेषणावरून असे आढळून आले की, ९०.३२% ग्रंथालयांमध्ये कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता झालेली आहे. तर अल्प वेतन, जादा काम व पुरेसा सोयी-सुविधांच्या अभावामुळे ग्रंथालयातील काही कर्मचारी नोकरी सोडून जातात, तसेच काही कर्मचारी निवृत्त होतात. नवीन कर्मचारी भरतीच्या शासनमान्यतेच्या अटीमुळे भरती प्रक्रियेत होणाऱ्या दिरंगाईमुळे ९.६८% ग्रंथालयांमध्ये जागा रिक्त आहेत.

प्रश्न क्र. ६ हा ग्रंथपालाची शैक्षणिक पात्रता जाणून घेण्यासाठी विचारण्यात आला होता, त्याची माहिती खालील तक्ता क्र. ४.६ मध्ये दिलेली आहे.

तक्ता क्र. ४.६

ग्रंथपालाची शैक्षणिक पात्रता

| अ.क्र. | शैक्षणिक पात्रता | आकडेवारी | शेकडा प्रमाण |
|--------|---------------------------|----------|--------------|
| १ | एल.टी.सी. | १० | ३२.२६% |
| २ | पदवी शिक्षण बी.लिब. | १७ | ५४.८४% |
| ३ | पदव्युत्तर शिक्षण एम.लिब. | ०४ | १२.९०% |
| | एकूण | ३१ | १००% |



वरील तक्ता क्र. ४.६ व आलेख क्र. ४.४ वरून असे आढळून येते की, जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या ग्रंथपालपदी कार्यरत असणाऱ्या १० (३२.२६%) ग्रंथपालांनी एल.टी.सी. (लायब्ररी ट्रेनिंग कोर्स) हा अल्पकालीन प्रशिक्षण अभ्यासक्रम पूर्ण केला आहे, तर १७ (५४.८४%) ग्रंथपालांनी ग्रंथालय शास्त्रातील बी.लिब. ही पदवी प्राप्त केली आहे आणि ०४ (१२.९०%) ग्रंथपालांनी ग्रंथालय शास्त्रातील एम.लिब. ही पदव्युत्तर पदवी प्राप्त केली आहे.

जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या ग्रंथपाल पदाकरिता एल.टी.सी. हा किमान पात्रतेचा अल्पकालीन कोर्स पूर्ण असणे आवश्यक होता. तथापि, ५४.८३% ग्रंथपालांनी बी.लिब. आणि १२.९०% ग्रंथपालांनी एम.लिब. या पदव्या प्राप्त केल्या आहेत. जिल्हा ग्रंथालयांच्या ग्रंथपालांनी उच्चतम पदवी प्राप्त केल्याने त्यांचा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सकारात्मक परिणाम ग्रंथालयाच्या कार्यालयीन कामकाजावर होतो. वाचकांना अधिक चांगल्या सोयी-सुविधा उपलब्ध होतात.

प्रश्न क्र. ७ हा ग्रंथालयाला कोणत्या शासकीय संस्थामार्फत अनुदान मिळते यासंदर्भात माहिती मिळविण्यासाठी विचारण्यात आला होता. त्याची माहिती तक्ता क्र. ४.७ मध्ये दिलेली आहे.

तक्ता क्र.४.७

ग्रंथालयास मिळणारे शासकीय अनुदान

| अ.क्र | अनुदान प्रदान करणारे घटक | आकडेवारी | शेकडा प्रमाण |
|-------|-----------------------------|----------|--------------|
| १ | महाराष्ट्र शासन | ३१ | १००% |
| २ | राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठान | २९ | ९३.५४% |
| ३ | आमदार/खासदार/मुख्यमंत्री | १२ | ३८.७०% |

वरील तक्ता क्र. ४.७ वरून असे आढळून येते की, सर्व जिल्हा ग्रंथालयांना शासनाने ठरवून दिलेल्या धोरणानुसार परीक्षण अनुदान मिळते. संशोधनासाठी निवडलेल्या सर्वच्या सर्व म्हणजे ३१ ग्रंथालयांना महाराष्ट्र शासनाकडून अनुदान प्राप्त होते. राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठानाकडून वस्तू व आर्थिक स्वरूपात अभ्यासासाठी निवडलेल्या एकूण ३१ ग्रंथालयांपैकी २९ (९३.५४%) ग्रंथालयांना सहकार्य करण्यात आले आहे तर आमदार खासदारांच्या स्थानिक विकास निधी आणि मुख्यमंत्री सहाय्यता निधीमार्फत एकूण ३१ जिल्हा ग्रंथालयांपैकी १२ (३८.७०%) ग्रंथालयांना अनुदान मिळाले आहे.

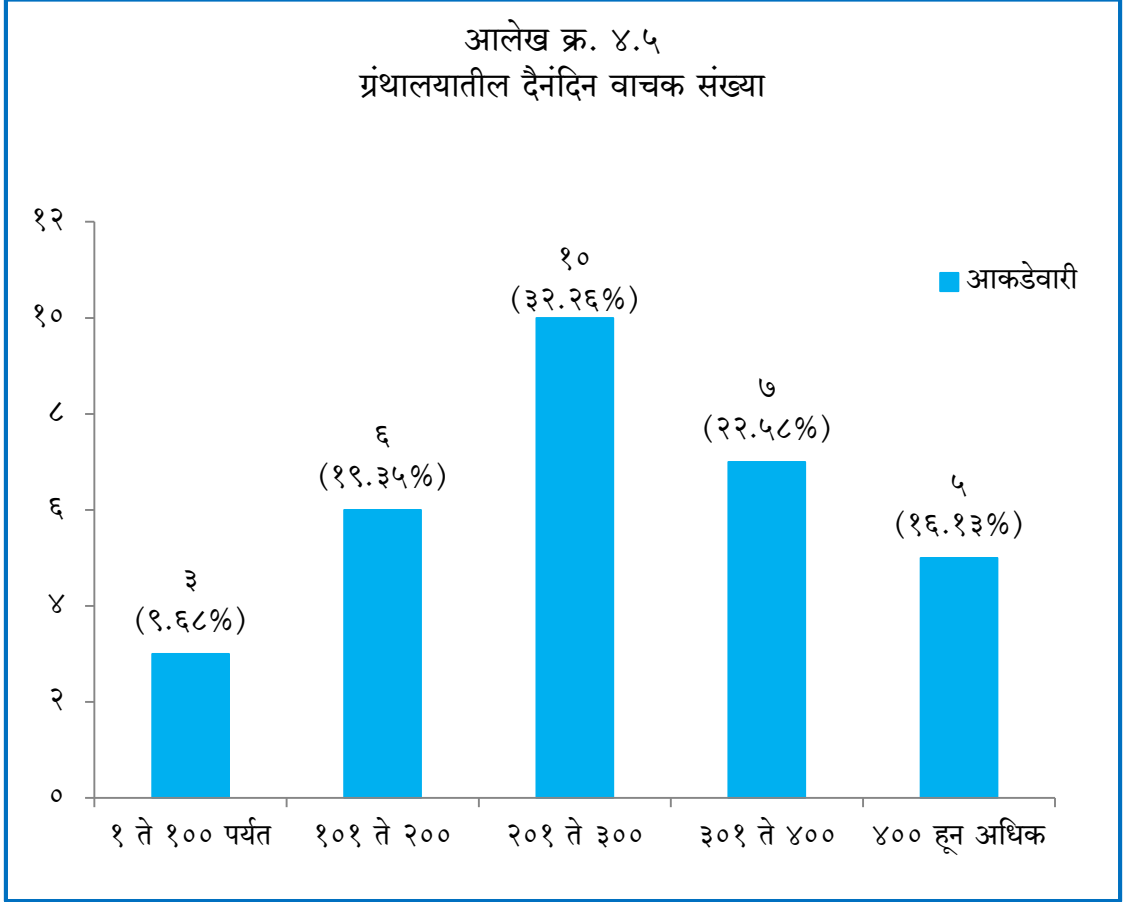
उपरोक्त विश्लेषणावरून असे स्पष्ट होते की, एकीकडे संशोधनासाठी निवडलेल्या सर्व ३१ जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालयांना शासनाकडून अनुदान प्राप्त होत असताना लोकप्रतिनिधींची मात्र ग्रंथालयांबाबतची उदासीनता दिसून येते. त्याचप्रमाणे राजकीय नेत्यांकडून अर्थसाहाय्य घेतल्यास त्यांचा ग्रंथालयात हस्तक्षेप वाढेल अशी ग्रंथालय प्रशासनाची भूमिका असल्याचे जाणवते.

प्रश्न क्र. ८ हा सार्वजनिक ग्रंथालयातील सेवांचा लाभ घेणाऱ्या वाचकांची संख्या जाणून घेण्यासाठी विचारण्यात आला होता, त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे दिली आहे.

तक्ता क्र. ४.८

ग्रंथालयातील दैनंदिन वाचकसंख्या

| वाचक संख्या | ग्रंथालय संख्या | शेकडा प्रमाण |
|-----------------|-----------------|--------------|
| १ ते १०० पर्यंत | ०३ | ९.६८% |
| १०१ ते २०० | ०६ | १९.३५% |
| २०१ ते ३०० | १० | ३२.२६% |
| ३०१ ते ४०० | ०७ | २२.५८% |
| ४०० हून अधिक | ०५ | १६.१३% |



वरील तक्ता क्र. ४.८ व आलेख क्र. ४.५ वरून असे आढळून येते की, १ ते १०० दैनंदिन वाचक संख्या असणाऱ्या ग्रंथालयाची संख्या ही सर्वात कमी ३ (९.६८%) आहे. १०१ ते २०० पर्यंत दैनंदिन वाचक संख्या असणारी ६ (१९.३५%) ग्रंथालये आहेत. तर २०१-३०० पर्यंत दैनंदिन वाचक संख्या असणारी १० (३२.२६%) ग्रंथालये आहेत. ३०१ ते ४०० पर्यंत दैनंदिन वाचक संख्या असणारी ७ (२२.५८%) ग्रंथालये असून ४०० हून अधिक दैनंदिन वाचक संख्या असणारी ५ (१६.१३%) ग्रंथालये आहेत.

वरील विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालयांतील वर्तमानपत्र संख्या, ग्रंथ संख्या जास्त प्रमाणात आहे. वाचकांना हवे असलेले वाचनसाहित्य सार्वजनिक ग्रंथालयात उपलब्ध होत असल्यामुळे वाचक मोठ्या प्रमाणावर या ग्रंथालयांचा वापर करतात. संशोधनासाठी निवडलेल्या एकूण ३१ जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालयांपैकी २२ (७०.९६%) ग्रंथालयांची दैनंदिन वाचक संख्या २०० पेक्षा अधिक असल्याचे दिसून येते. याचाच अर्थ बहुसंख्य वाचक सार्वजनिक ग्रंथालयांचा लाभ घेतात.

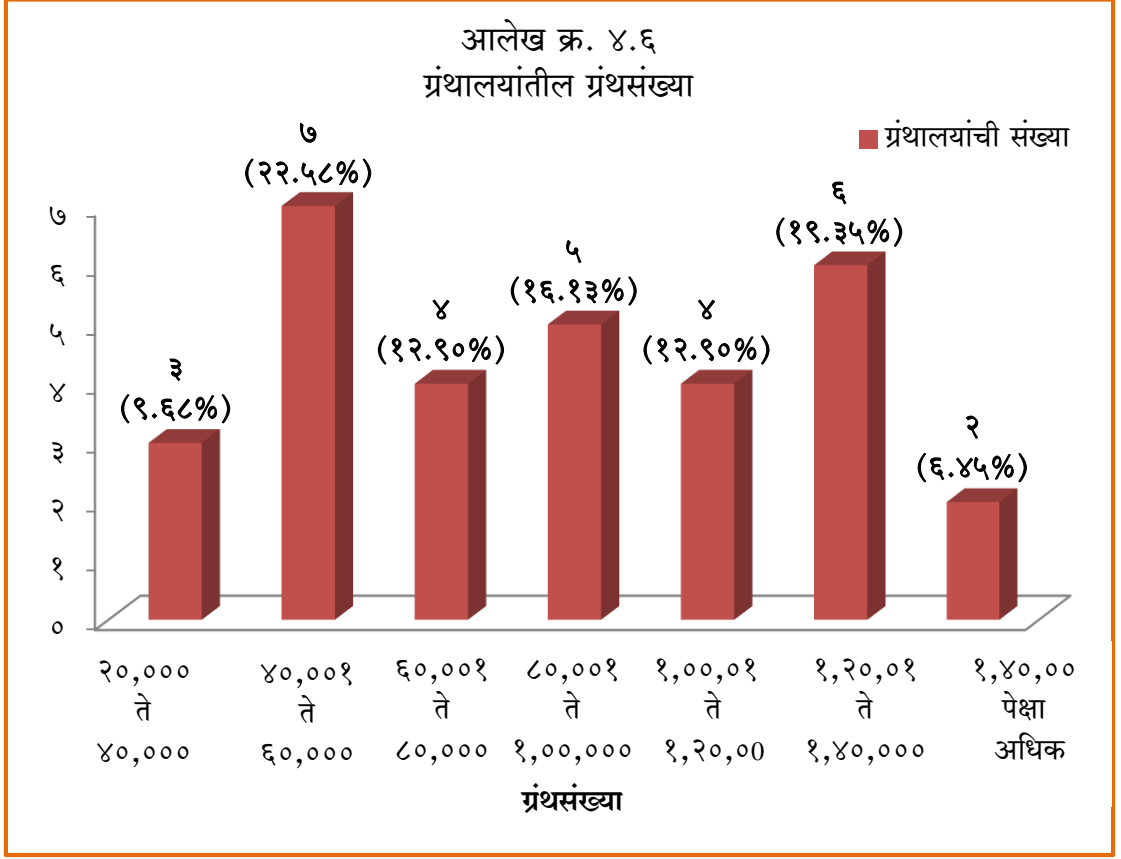
प्रश्न क्र. ९ हा ग्रंथालयातील ग्रंथ, नियतकालिके, वृत्तपत्रे, सीडी, हस्तलिखिते व इतर

वाचनसाहित्याबाबत विचारलेल्या प्रश्नास पुढीलप्रमाणे प्रतिसाद मिळाला.

तक्ता क्र. ४.९

ग्रंथालयांतील ग्रंथसंख्या

| | | | | | | | | |
|------------------------|------------------------|------------------------|------------------------|--------------------------|----------------------------|----------------------------|----------------------------|------------------------|
| ग्रंथ संख्या | २०,००० ते ४०,००० | ४०,००१ ते ६०,००० | ६०,००१ ते ८०,००० | ८०,००१ ते १,००,००० | १,००,००१ ते १,२०,००० | १,२०,००१ ते १,४०,००० | १,४०,००१ ते १,६०,००० | एकूण पेक्षा अधिक |
| ग्रंथालयांची संख्या | ०३ | ०७ | ०४ | ०५ | ०४ | ०६ | ०२ | ३१ |
| शेकडा प्रमाण | ९.६८% | २२.५८% | १२.९०% | १६.१३% | १२.९०% | १९.३५% | ६.४५% | १००% |



वरील तक्ता क्र. ४.९ व आलेख क्र. ४.६ वरून असे आढळून येते की, सर्वेक्षण केलेल्या एकूण ग्रंथालयांपैकी २०,०००-४०,००० हजार ग्रंथसंख्या असलेली ०३ (९.६८%) ग्रंथालये आहेत. ४०,००१-६०,००० हजार ग्रंथसंख्या असलेली सर्वाधिक ०७ (२२.५८%) ग्रंथालये आहेत; तर १,४०,००० पेक्षा अधिक ग्रंथसंख्या असलेली सर्वात कमी ०२ (६.४५%) ग्रंथालये आहेत. ६०,००१-८०,००० व १,००,००१-१,२०,००० ग्रंथसंख्या असलेली प्रत्येकी ०४ (१२.९०%) ग्रंथालये आहेत. तर ८०,००१-१,००,००० ग्रंथसंख्या असलेली ०५ (१६.१३%) ग्रंथालये आहेत आणि १,२०,००१-१,४०,००० ग्रंथसंख्या असलेली ६ (१९.३५%) ग्रंथालये आहेत.

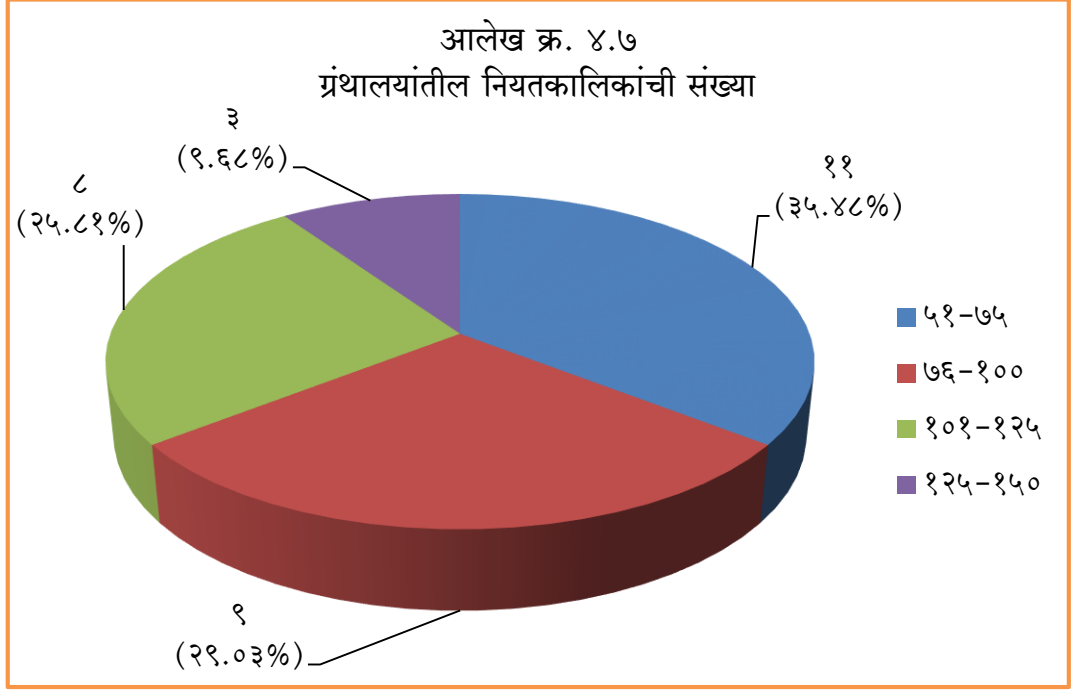
जिल्हा 'अ' वर्गाच्या ग्रंथालयाच्या निकषाप्रमाणे ग्रंथाची संख्या १५,००१ असली पाहिजे. संशोधनासाठी निवडलेली सर्व जिल्हा ग्रंथालयांनी हा निकष पूर्ण केल्याचे वरील आकडेवारीवरून दिसून येते.

सर्वेक्षणाद्वार असे आढळून आले की, सर्वात अधिक मुंबई मराठी जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालयाची ग्रंथसंख्या सर्वाधिक आहे. याचे कारण असे आहे की, मुंबई मराठी जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालयांचे व्यवस्थापन ग्रंथालयाच्या आणि ग्रंथसंख्येच्या वाढीसाठी दक्ष आहे. वाचकांना अधिकाधिक ग्रंथ उपलब्ध व्हावेत, वाचकांची ज्ञानात्मक गरज भागावी या उद्देशाने जाणीवपूर्वक प्रयत्न केल्याने ही वाढ झालेली दिसते. तसेच मुंबई परिसरात शैक्षणिक संस्थांचे प्रमाण अधिक असल्याने वाचकसंख्या व पर्यायाने ग्रंथसंख्येत वाढ झाल्याचे जाणवते.

तक्ता क्र. ४.१०

ग्रंथालयांतील नियतकालिकांची संख्या

| अ.क्र. | नियतकालिकांची संख्या | ग्रंथालयांची आकडेवारी | शेकडा प्रमाण |
|--------|----------------------|-----------------------|--------------|
| १ | ५१-७५ | ११ | ३५.४८% |
| २ | ७६-१०० | ०९ | २९.०३% |
| ३ | १०१-१२५ | ०८ | २५.८१% |
| ४ | १२५-१५० | ०३ | ९.६८% |
| | एकूण | ३१ | १००% |



जिल्हा ग्रंथालयासाठी शासन मान्यतेनुसार किमान ५१ नियतकालिकांचा निकष आहे. या प्रश्नासंबंधीच्या माहितीच्या तक्ता क्र. ४.१० व आलेख क्र. ४.७ मधील विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, सर्व जिल्हा ग्रंथालये हा निकष पूर्ण करतात. सदर संशोधनासाठी सर्वेक्षण केलेल्या एकूण ग्रंथालयांपैकी सर्वाधिक ११ (३५.४८%) ग्रंथालयांमध्ये ५१ ते ७५ नियतकालिके आहेत. त्याखालोखाल ०९ (२९.०३%) ग्रंथालयांमध्ये ७६ ते १०० नियतकालिके आहेत. १०१ ते १२५ नियतकालिके असलेली ०८ (२५.८१%) ग्रंथालये आहेत तर सर्वात कमी ०३ (९.६८%) ग्रंथालयांमध्ये १२५ ते १५० नियतकालिके आहेत.

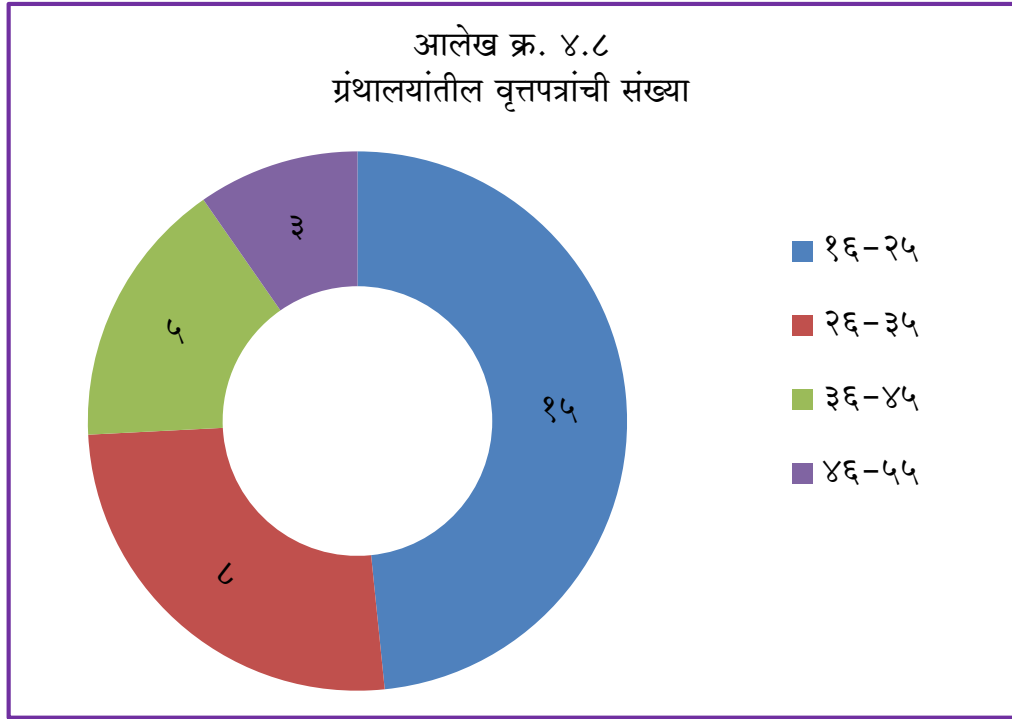
उपरोक्त स्पष्टीकरणावरून असे दिसते की, संशोधनासाठी निवडलेल्या सर्व ३१ जिल्हा ग्रंथालयांमध्ये शासनाने ठरवून दिलेल्या किमान नियतकालिक संख्येपेक्षा अधिक नियतकालिके आहेत. त्यामुळे वाचकांना विविध प्रकारची, विविध विषयांवरील नियतकालिके उपलब्ध होतात. श्री. हिराचंद नेमचंद वाचनालय, सोलापूर येथील नियतकालिकांची संख्या १४५ आहे. औरंगाबाद येथील बलवंत मोफत वाचनालयातील नियतकालिकांची संख्या १३८ आहे. या दोन्ही परिसरात संमिश्र भाषा संस्कृती पाहावयास मिळते. मराठी, हिंदी, इंग्रजी, उर्दू इ. भिन्न भाषिक वाचकवर्गाची, नियतकालिकांची मागणी पूर्ण होण्याच्या दृष्टीने ग्रंथालय व्यवस्थापनाने

प्रयत्न केल्याने त्या ग्रंथालयांतील नियतकालिकांच्या संख्येत वाढ झालेली दिसते.

तक्ता क्र. ४.११

ग्रंथालयांतील वृत्तपत्र संख्या

| वृत्तपत्रे संख्या | १६-२५ | २६-३५ | ३६-४५ | ४६-५५ | एकूण |
|-------------------|--------|--------|--------|-------|------|
| ग्रंथालय संख्या | १५ | ०८ | ०५ | ०३ | ३१ |
| शेकडा प्रमाण | ४८.३९% | २५.८०% | १६.१३% | ९.६८% | १००% |



उपरोक्त तक्ता क्र. ४.११ व आलेख क्र. ४.८ वरून असे दिसते की, संशोधनासाठी निवडलेल्या एकूण जिल्हा ग्रंथालयांपैकी सर्वाधिक १५ (४८.३९%) ग्रंथालयांमध्ये १६-२५ वृत्तपत्रे उपलब्ध आहेत. त्याखालोखाल ०८ (२५.८०%) ग्रंथालयांमध्ये २६-३५ वृत्तपत्रे आहेत, तर ३६-४५ वृत्तपत्रे असलेली ०५ (१६.१३%) ग्रंथालये आहेत. सर्वात कमी म्हणजे ०३ (९.६८%) ग्रंथालयांमध्ये ४६-५५ वृत्तपत्रे आहेत.

जिल्हा ग्रंथालयासाठी शासन मान्यतेनुसार १६ वृत्तपत्रांचा निकष आहे. वरील

तक्त्यातील माहितीच्या विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, सर्व ग्रंथालये हा निकष पूर्ण करतात.

तक्ता क्र. ४.१२

जिल्हा ग्रंथालयांतील सीडी, हस्तलिखिते व इतर दुर्मिळ साहित्य

| घटक | होय | शे.प्रमाण | नाही | शे.प्रमाण |
|---------------------|-----|-----------|------|-----------|
| सी.डी., डी.व्ही.डी. | ३१ | १०० | ०० | ०० |
| हस्तलिखिते | २८ | ९०.३२ | ०३ | ९.६८ |
| इतर दुर्मिळ साहित्य | ३१ | १०० | ०० | ०० |

वरील तक्ता क्र. ४.१२ वरून असे दिसून येते की, सर्वच जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये सी.डी. व डी.व्ही.डी.चे वाचन साहित्य उपलब्ध आहेत. तसेच २८ (९०.३२%) ग्रंथालयांमध्ये हस्तलिखिते जतन केलेली आहेत. तर ३ (९.६८%) ग्रंथालयांमध्ये हस्तलिखितांचे जतन केलेले नाही. सर्व जिल्हा ग्रंथालयांमध्ये इतर दुर्मिळ वाचन साहित्य उपलब्ध आहे.

मुंबई मराठी जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालयांमध्ये १,५०,००० हस्तलिखिते व ८८९ दोलामुद्रिके उपलब्ध आहेत. स्वातंत्र्यपूर्व ब्रिटिश काळापासून मुंबई हे शिक्षण व आर्थिक व्यापाराचे महत्त्वपूर्ण केंद्र राहिले आहे. शिक्षणाचा प्रसार व लेखनसामग्रीची उपलब्धता यामुळे मुंबई परिसरात हस्तलिखिते अधिक प्रमाणात निर्माण झाली. तसेच महाराष्ट्र व भारताच्या विविध प्रांतातील लोक नोकरी व व्यवसाय-धंद्यानिमित्त मुंबईत स्थायिक झाले आहेत. मुंबई मराठी ग्रंथसंग्रहालयाच्या व्यवस्थापन मंडळाने हस्तलिखित संकलनासाठी आवाहन केल्याने लोकांनी स्थानिक प्रदेशातून हस्तलिखितांचे संकलन करून ग्रंथालयांकडे सुपूर्त केले. त्याचे ग्रंथालयाने योग्य जतन केल्याने ग्रंथालयातील हस्तलिखित संख्या सर्वाधिक आहे.

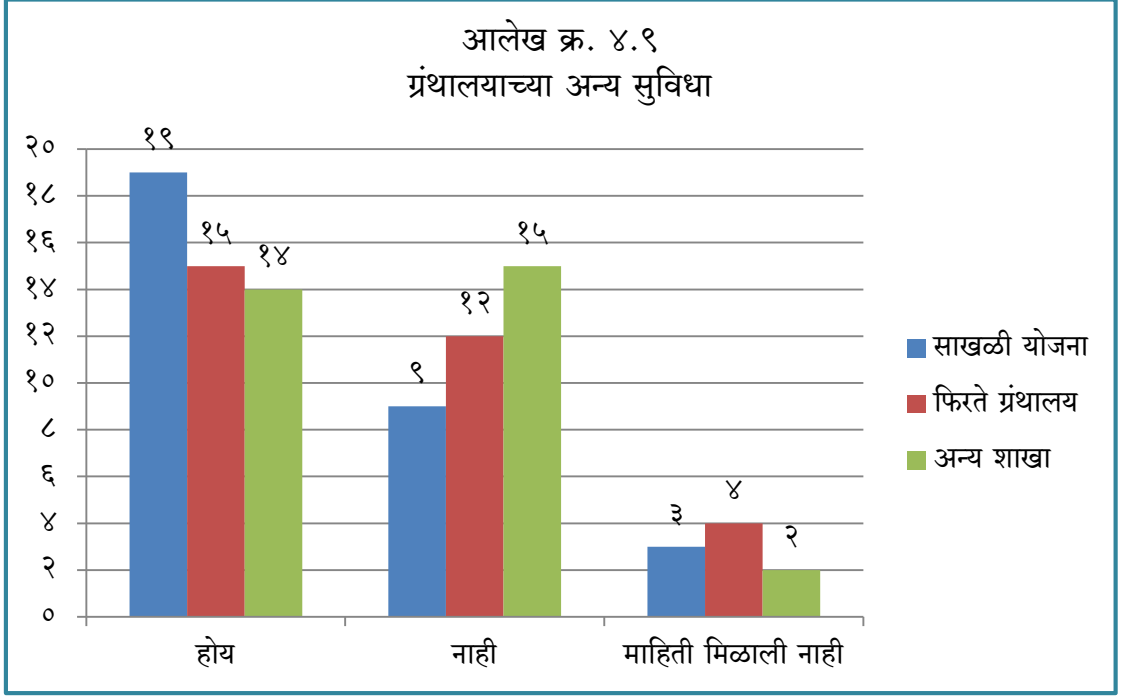
दुर्मिळ ग्रंथसंख्येच्या दृष्टीने पुणे मराठी जिल्हा ग्रंथालयात सर्वाधिक २२,००० इतके दुर्मिळ ग्रंथ जतन करून ठेवलेले आढळतात. महाराष्ट्राची सांस्कृतिक राजधानी आणि विद्येचे माहेरघर म्हणून पुणे शहराची ओळख आहे. ग्रंथालय व्यवस्थापनाच्या दक्षतेमुळे दुर्मिळ साहित्य संपदा जतन केलेली आढळते.

प्रश्न क्र. १० ते १२ हे ग्रंथालयांचा वाढता विस्तार लक्षात घेता ग्रंथालये ग्रंथालयीन सेवेशिवाय आणखी कोणत्या प्रकारच्या सेवा वाचकांना देतात हे जाणून घेण्यासाठी विचारण्यात आले होते. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे :

तक्ता क्र. ४.१३

ग्रंथालयाच्या अन्य सुविधा

| क्र. | स्वरूप | होय | शेकडा प्रमाण | नाही | शेकडा प्रमाण | माहिती मिळाली नाही | शेकडा प्रमाण |
|------|----------------|-----|--------------|------|--------------|--------------------|--------------|
| १ | साखळी योजना | १९ | (६७.८६%) | ०९ | (३२.१४%) | ०३ | (९.६८%) |
| २ | फिरते ग्रंथालय | १५ | (५५.५६%) | १२ | (४४.४४%) | ०४ | (१२.९०%) |
| ३ | अन्य शाखा | १४ | (४८.२८%) | १५ | (५१.७२%) | ०२ | (६.४५%) |



वरील तक्ता क्र. ४.१३ व आलेख क्र. ४.९ वरून असे दिसून येते की, संशोधनासाठी निवडलेल्या एकूण ग्रंथालयांपैकी १९ (६७.८६%) ग्रंथालयांमध्ये साखळी योजना सुरू आहे, ९ (३२.१४%) ग्रंथालयांमध्ये साखळी योजना सुरू नाही तर उर्वरित ३ (९.६८%) ग्रंथालयांची माहिती उपलब्ध झाली नाही. फिरते ग्रंथालय हा उपक्रम १५ (५५.५६%) ग्रंथालयांमध्ये राबविला जातो आणि १२ (४४.४४%) ग्रंथालयांमध्ये हा उपक्रम राबविला जात नाही तर या संदर्भात ४ ग्रंथालयांची माहिती उपलब्ध झाली नाही. त्याचप्रमाणे संशोधनासाठी निवडलेल्या एकूण ग्रंथालयांपैकी १४ (४८.२८%) ग्रंथालयांच्या एकापेक्षा अधिक शाखा आहेत. १५ (५१.७२%) ग्रंथालयांच्या कोणत्याही शाखा नाहीत तर २ (६.४५%) ग्रंथालयांची या संदर्भातील माहिती उपलब्ध झाली नाही.

फिरते वाचनालय या उपक्रमासाठी वाहन व वाहनचालक उपलब्ध होणे आवश्यक आहे. वाहनातील इंधन, वाहनाचा देखभाल खर्च व वाहनचालकाचे वेतन यामुळे हा उपक्रम चालविणे खर्चिक स्वरूपाचे ठरते. असे असूनही १५ ग्रंथालयांमार्फत हा उपक्रम राबविला जातो. यवतमाळ येथील नगर वाचनालयाच्या फिरत्या ग्रंथालय उपक्रमाचे ८३० सभासद आहेत. वाचकांची ज्ञानात्मक भूक भागविण्यासाठी या जिल्हा ग्रंथालयांच्या व्यवस्थापन मंडळाची समाजाप्रतीची तळमळीची भावना हे त्यामागचे प्रमुख कारण आहे. तर अहमनगरमधील जिल्हा वाचनालयामध्ये फिरते वाचनालय उपक्रमांतर्गत नगर येथील तुरुंगातील कैद्यांनाही वाचन साहित्य

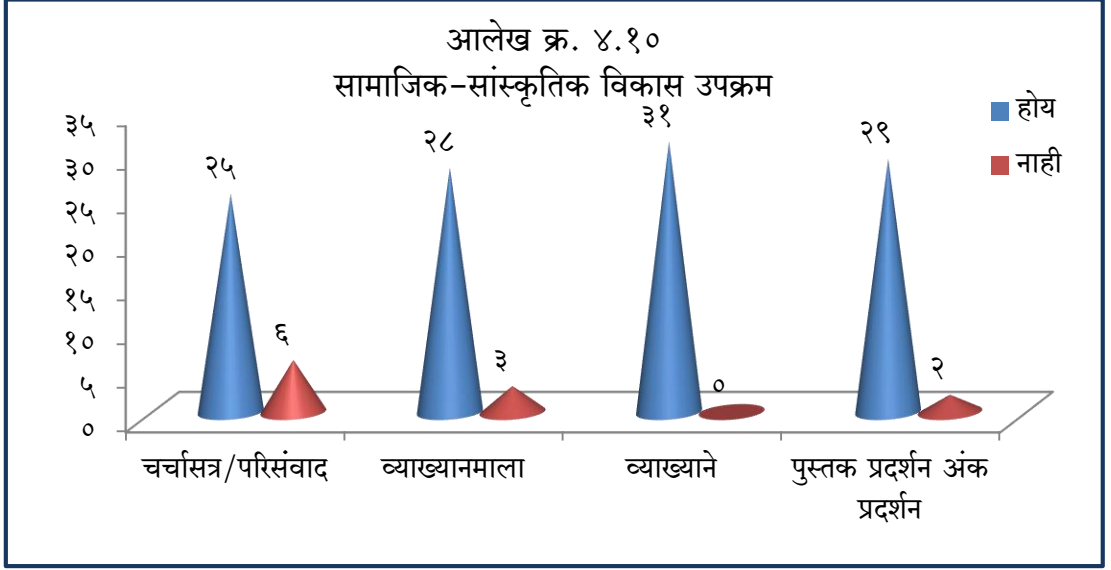
उपलब्ध करून दिले जाते हे विशेष आहे. ग्रंथालय व्यवस्थापन व ग्रंथालयीन कर्मचारी यांच्या सामाजिक जाणिवेच्या भावनेला त्याचे श्रेय जाते. मुंबई मराठी ग्रंथालयाच्या ३१ शाखा आहेत.

प्रश्न क्र. १३ ते १६ हे सामाजिक व सांस्कृतिक विकास उपक्रम राबविले जातात का, हे जाणून घेण्यासाठी विचारण्यात आले होते. त्याची माहिती तक्ता क्र. ४.१४ मध्ये दिलेली आहे.

तक्ता क्र. ४.१४

सामाजिक-सांस्कृतिक विकास उपक्रम

| उपक्रम | होय | शेकडा प्रमाण | नाही | शेकडा प्रमाण |
|------------------------------|-----|--------------|------|--------------|
| चर्चासत्र/परिसंवाद | २५ | ८०.६५% | ०६ | १९.३५% |
| व्याख्यानमाला | २८ | ९०.३२% | ०३ | ९.६८% |
| व्याख्याने | ३१ | १००% | ०० | ००% |
| पुस्तक प्रदर्शन अंक प्रदर्शन | २९ | ९३.५५% | ०२ | ६.४५% |



वरील तक्ता क्र. ४.१४ व आलेख क्र. ४.१० वरून असे आढळून येते की, सामाजिक, सांस्कृतिक माहितीचे विश्लेषण केले असता असे दिसून येते की, सदर संशोधनासाठी निवडलेल्या एकूण ग्रंथालयांपैकी २५ (८०.६५%) ग्रंथालयात विविध सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक विषयांवर चर्चासत्रे/परिसंवाद यांचे आयोजन केले जाते तर उर्वरित ६ (१९.३५%) ग्रंथालयांमध्ये चर्चासत्रे/परिसंवादांचे आयोजन केले जात नाही. व्याख्यानमालांचे आयोजन २६ (९०.३२%) ग्रंथालयात केले जाते. तर ०३ (९.६८%) ग्रंथालयांमध्ये व्याख्यानमालांचे आयोजन केले जात नाही. ग्रंथसमाह, जयंती, पुण्यतिथी, वर्धापनदिन व अन्य नैमित्तिक कारणांनी एकूण ३१ ग्रंथालयांपैकी सर्व ३१ ग्रंथालयांमध्ये व्याख्यानांचे आयोजन केले जाते. पुस्तक प्रदर्शनाचा उपक्रम २९ (९३.५५%) ग्रंथालयात राबविला जातो तर २ (६.४५%) ग्रंथालयात पुस्तक प्रदर्शन उपक्रम राबविला जात नाही. या विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, सदर संशोधनासाठी निवडलेल्या ग्रंथालयांमध्ये विविध शैक्षणिक, सामाजिक व सांस्कृतिक उपक्रमांचे आयोजन केले जाते.

दादर येथील मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालयाद्वारे दरवर्षी ८ व्याख्यानमालांचे आयोजन केले जाते. तसेच विशेष उल्लेखनीय म्हणजे या ग्रंथसंग्रहालयामार्फत अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन (इ.स. १९९९) चे आयोजन करण्यात आले. तर ठाणे जिल्हा मराठी ग्रंथालयामार्फत १९६० व २०१० मध्ये दोनवेळा अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलनाचे यशस्वी आयोजन करण्यात आले. शैक्षणिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विषयांवर विचारमंथन व्हावे तसेच समाजात

वाचनसंस्कृती निर्माण व्हावी ही या ग्रंथालय व्यवस्थापनाची भूमिका यामागे कार्यरत असल्याचे जाणवते. तसेच सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या या उपक्रमास स्थानिक सभासदांकडून उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळत असल्याने हे शक्य होते.

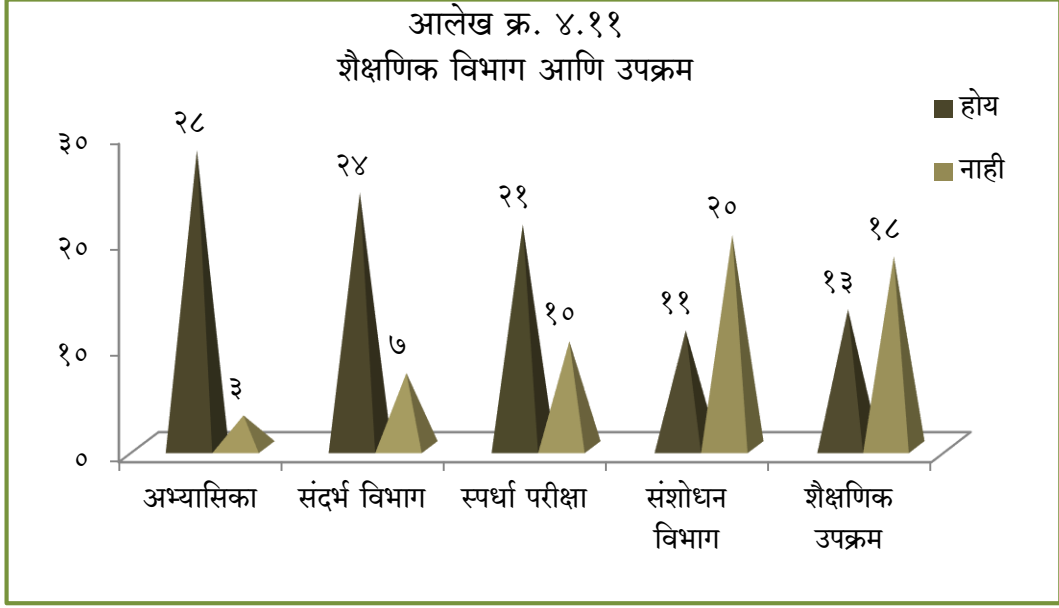
नाशिक येथील ग्रंथसंग्रहालयाद्वारे सर्वाधिक वेळा ग्रंथप्रदर्शन कार्यक्रमाचे आयोजन केल्याचे आढळून आले. नाशिक येथील सार्वजनिक ग्रंथालयाकडे स्वतःच्या मालकीचा प्रदर्शन हॉल उपलब्ध असल्यामुळे या उपक्रमाचे सर्वाधिक वेळा आयोजन शक्य झालेले दिसते.

प्रश्न क्र. १७ ते २१ हे शैक्षणिक विभाग आणि उपक्रमासंदर्भात विचारण्यात आले होते, त्या संदर्भातील माहिती तक्ता क्र. ४.१५ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. ४.१५

शैक्षणिक विभाग आणि उपक्रम

| | होय | प्रमाण | नाही | प्रमाण |
|-----------------|-----|---------|------|--------|
| अभ्यासिका | ३१ | १००.००% | ०० | ०.०% |
| संदर्भ विभाग | २४ | ७७.४२% | ०७ | २२.५८% |
| स्पर्धा परीक्षा | २१ | ६७.७४% | १० | ३२.२६% |
| संशोधन विभाग | ११ | ३५.४८% | २० | ६४.५२% |
| शैक्षणिक उपक्रम | १३ | ४१.९४% | १८ | ५८.०६% |



वरील तक्ता क्र. ४.१५ व आलेख क्र. ४.११ वरून असे आढळून येते की, सार्वजनिक ग्रंथालये देत असलेल्या शैक्षणिक सुविधांच्या माहितीचे विश्लेषण केले असता असे आढळून आले की, संशोधनासाठी निवडलेल्या सर्व ग्रंथालयांत अभ्यासिकाची सुविधा उपलब्ध आहे. तर २४ (७७.४२%) ग्रंथालयांत संदर्भ विभाग कार्यरत आहे तर ७ (२२.५८%) ग्रंथालयात संदर्भ विभाग कार्यरत नाही. २१ (६७.७४%) ग्रंथालयांमध्ये स्पर्धा परीक्षा विभाग कार्यरत आहे तर १० (३२.२६%) ग्रंथालयांत स्पर्धा परीक्षा विभाग कार्यरत नाही. एकूण ग्रंथालयांपैकी ११ (३५.४८%) ग्रंथालयांत संशोधन विभाग कार्यरत असून उर्वरित २० (६४.५२%) ग्रंथालयांमध्ये संशोधन विभाग अस्तित्वात नाही. तसेच एकूण ग्रंथालयांपैकी १३ (४१.९४%) ग्रंथालयांत शैक्षणिक उपक्रम राबविले जातात तर १८ (५८.०६%) ग्रंथालयांमध्ये शैक्षणिक उपक्रम राबविले जात नाहीत.

या विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, संशोधनसाठी निवडलेल्या एकूण ३१ ग्रंथालयांपैकी निम्म्याहून अधिक ग्रंथालयांमध्ये अभ्यासिका, संदर्भ विभाग व स्पर्धा परीक्षा विभाग या सुविधा उपलब्ध आहेत, तर निम्म्याहून कमी ग्रंथालयांमध्ये संशोधन विभाग व शैक्षणिक उपक्रम या सुविधा उपलब्ध आहेत. एल.टी.सी., बी.लिब, एम्.लिब., मराठी लघुलेखन वर्ग इ. अभ्यासक्रमविषयक वर्ग घेतले जातात. मुंबई मराठी ग्रंथसंग्रहालयातील संशोधन विभागाद्वारे ३० संशोधन ग्रंथ प्रकाशन करण्यात आले आहे. या ग्रंथालयाने सूची निर्मिती संदर्भातही महत्त्वपूर्ण योगदान दिले आहे.

उच्च शिक्षणाची केंद्रे आणि स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन केंद्रे विविध जिल्ह्यांच्या ठिकाणी कार्यरत आहेत. आजूबाजूच्या गावांतील आणि तालुक्यांतील अभ्यासू विद्यार्थी आणि संशोधक जिल्हाच्या पातळीवर एकत्र येऊन अभ्यास करित असल्यामुळे आणि त्यांना जिल्हा ग्रंथालयाच्या माध्यमातून शांततापूर्ण वातावरण, आवश्यक वाचनसाहित्य, वीज, पंखा, फर्निचर इ. आधुनिक सुविधा अल्पदरात उपलब्ध होत असल्यामुळे जिल्हा ग्रंथालयातील अभ्यासिकांमधील सर्वसामान्य अभ्यासकांची संख्या वाढत आहे. बदलत जाणाऱ्या वाचकमागणीनुसार सर्व जिल्हा ग्रंथालयांमध्ये अभ्यासिकेची सुविधा व्यवस्थापनाने उपलब्ध करून दिलेली आहे ही बाब प्रशंसनीय आहे.

विविध संशोधक आणि जिज्ञासूसाठी अभ्यासपूर्ण माहिती उपलब्ध होण्यासाठी २४ जिल्हा ग्रंथालयांमध्ये संदर्भ विभाग कार्यरत आहेत. मुंबई मराठी ग्रंथसंग्रहालयाला मराठी साहित्य संशोधनाची ज्ञानपंढरी संबोधले जाते. तसेच सोलापूर येथील श्री. हिराचंद नेमचंद वाचनालयामध्ये कायदेविषयक व संगीतविषयक विशेष संदर्भ विभाग कार्यरत आहे. ग्रंथालय व्यवस्थापनाला याचे श्रेय दिले पाहिजे.

केंद्रीय लोकसेवा आयोग, महाराष्ट्र लोकसेवा आयोग, स्थानिक स्वराज्य संस्था, बँका, इ. विविध शैक्षणिक संस्थांमधील नोकरभरतीसाठी स्पर्धा परीक्षांचे आयोजन केले जाते. त्यामुळे मोठ्या प्रमाणावर विद्यार्थी या परीक्षांमार्फत नोकरी मिळवून भविष्य घडविण्याच्या ध्येयाने प्रेरित झालेले दिसून येतात. त्यामुळे जिल्हा ग्रंथालयामध्ये स्पर्धा परीक्षा विभाग कार्यरत आहे. त्यांना वाढता प्रतिसाद मिळत आहे. स्पर्धा परीक्षेसाठी विविध पुस्तकांची, मार्गदर्शक ग्रंथांची आवश्यकता भासते. राज्य, राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय पातळीवरील चालू घडामोडी व दैनंदिन घटना यासाठी विविध विषयनिहाय नियतकालिके व वृत्तपत्रे अभ्यासणे आवश्यक ठरते. सर्वसामान्य गरीब विद्यार्थ्यांना हा खर्च परवडत नाही. त्यामुळे जिल्हा ग्रंथालयातील स्पर्धा परीक्षा विभागामुळे अभ्यासू विद्यार्थ्यांना जिल्हा ग्रंथालय उपयुक्त ठरू लागलेली आहेत. जिल्हा ग्रंथालयाचे व्यवस्थापनही या दृष्टीने दक्ष आहेत. अकोला जिल्हा ग्रंथालयाकडून स्पर्धा परीक्षा विद्यार्थ्यांना निःशुल्क सेवा दिली जाते. तेथील पन्नासहून अधिक विद्यार्थी स्पर्धा परीक्षा उत्तीर्ण झाल्याचे आढळून येते तर धुळे येथील धोंडो शामराव गरूड सार्वजनिक वाचनालयामधील २४० विद्यार्थ्यांनी स्पर्धा परीक्षांमध्ये यश मिळविलेले असल्याचे आढळून येते. पुणे येथील सार्वजनिक

ग्रंथालयाचा स्पर्धा परीक्षा विभागही प्रभावशाली रीतीने कार्यरत आहे. पुणे शहर विविध स्पर्धा परीक्षांचे महाराष्ट्रातील मुख्य केंद्र बनलेले आहे. विविध प्रदेशांमधून येथे गोरगरीब मुले स्पर्धा परीक्षांचा अभ्यास करण्यासाठी येतात. पुण्याच्या मध्यवर्ती स्थानी पुणे जिल्हा ग्रंथालय स्पर्धा परीक्षा विभाग व त्यासाठी विशेष अभ्यासिकेची स्वतंत्र सोय असल्याने हा विभाग उत्तमपणे काम करीत आहे.

संशोधनाच्या प्रक्रियेला गती देण्यासाठी ११ जिल्हा ग्रंथालयांमार्फत संशोधन विभाग कार्यरत आहे. मुंबई मराठी ग्रंथसंग्रहालयामध्ये दाते सूची मंडळ व संशोधन मंडळ कार्यरत असून त्याद्वारे ३० अभ्यासपूर्ण ग्रंथांचे प्रकाशन या ग्रंथालयाच्या प्रकाशन विभागातर्फे करण्यात आले. अभ्यासकांची चिकाटी आणि ग्रंथालय व्यवस्थापनाचे प्रोत्साहन यामागचे कारण आहे.

शैक्षणिक उपक्रमांतर्गत १३ ग्रंथालयांचा सहभाग आढळून आला. ठाणे येथील सार्वजनिक मराठी ग्रंथालयाद्वारे ४० वर्षे ग्रंथपाल या अल्पकालीन प्रशिक्षण वर्गाचे आयोजन केले जाते. तर नाशिक येथील सार्वजनिक वाचनालयाद्वारे य.च.म.मुक्त विद्यापीठाशी संलग्न बी.लिब. व एम.लिब.या अभ्यासक्रम प्रशिक्षण वर्गाचे आयोजन केले जाते. अमरावती येथील नगर वाचनालयाने अमरावती विद्यापीठाशी संलग्न बी.लिब. अभ्यासक्रमाचे आयोजन केल्याचे आढळते.

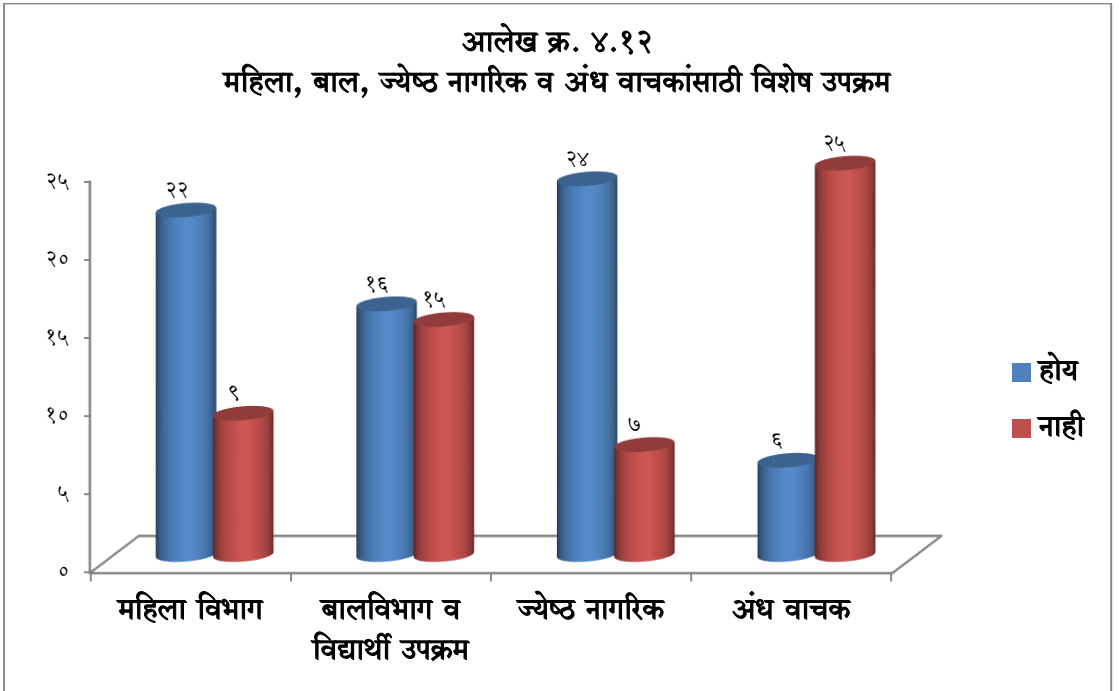
विद्यापीठांची प्रादेशिक समीपता, वर्ग खोल्या आणि तज्ज्ञ मार्गदर्शकांची उपलब्धता, इच्छुकांची मागणी आणि ग्रंथालय व्यवस्थापनाची शैक्षणिक सामाजिक तळमळ यामुळे हे विभाग कार्यरत असल्याचे जाणवते.

प्रश्न क्र.२२ ते २५ हे महिला, बाल, ज्येष्ठ नागरिक तसेच अंध वाचकांसाठी विशेष उपक्रमासंदर्भात विचारले होते, त्यासंदर्भातील माहिती तक्ता क्र.४.१६ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. ४.१६

महिला, बाल, ज्येष्ठ नागरिक व अंध वाचकांसाठी विशेष उपक्रम

| | होय | शेकडा प्रमाण | नाही | शेकडा प्रमाण |
|------------------------------|-----|--------------|------|--------------|
| महिला विभाग | २२ | ७०.९७% | ०९ | २९.०३% |
| बालविभाग व विद्यार्थी उपक्रम | १६ | ५१.६१% | १५ | ४८.३९% |
| ज्येष्ठ नागरिक | २४ | ७७.४२% | ०७ | २२.५८% |
| अंध बांधव | ०६ | १९.३५% | २५ | ८०.६५% |



उपरोक्त तक्ता क्र. ४.१६ व आलेख क्र. ४.१२ वरून असे लक्षात येते की, संशोधनासाठी निवडलेल्या एकूण ३१ ग्रंथालयांपैकी २२ (७०.९७%) सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये महिलांसाठी खास उपक्रम व स्पर्धा आयोजित केल्या जातात. त्यामध्ये पाककला, रांगोळी स्पर्धा, गायन स्पर्धा, हळदी कुंकू कार्यक्रम याप्रकारच्या कार्यक्रमांचा समावेश असतो; तर ९ (२९.०३%) ग्रंथालयांमध्ये अशा प्रकारे कार्यक्रम आयोजित करणारा महिला विभाग कार्यरत

नाही. विद्यार्थी वर्ग व बालकांसाठी १६ (७७.४२%) ग्रंथालयांत उपक्रम व स्पर्धांचे आयोजन केले जाते. या स्पर्धांमध्ये पठण, हस्ताक्षर लेखन, वक्तृत्व, लेखन, चित्रकला, प्रश्नमंजुषा आदींचे आयोजन केले जाते तर १५ (४८.३९%) ग्रंथालयांमध्ये बालक व विद्यार्थी वर्गासाठी असे उपक्रम आयोजित केले जात नाहीत. तसेच ज्येष्ठ नागरिकांच्या गरजा लक्षात घेऊन २४ (१९.३५%) ग्रंथालये मनोरंजन, गीतगायन, आरोग्यविषयक व्याख्यानांचे आयोजन करते तर ७ (२२.५८%) ग्रंथालयांमध्ये ज्येष्ठ नागरिकांसाठी विविध उपक्रम आयोजित केले जात नाहीत. अंधांसाठी ६ (१९.३५%) ग्रंथालयांत खास ब्रेल लिपीतील वाचन साहित्याची उपलब्धता आहे. कोल्हापूर ग्रंथालयाने अंधांसाठी अब्रार संगणकप्रणाली उपयोजिली आहे तर २५ (८०.६५%) ग्रंथालयामध्ये अशा प्रकारची सुविधा अंध बांधवांसाठी उपलब्ध नाही.

अंध वाचकांसाठी १९.३५% जिल्हा ग्रंथालयांमध्ये ब्रेल लिपीतील वाचन साहित्य आढळून आले. ८०.६४% जिल्हा ग्रंथालयांमध्ये अंध वाचकांसाठी वाचन साहित्याची उपलब्धता नाही. सामाजिक जाणिवेच्या भावनेने अंध वाचकांना त्याची गरज लक्षात घेऊन ब्रेल लिपीतील वाचन साहित्य उपलब्ध होणे आवश्यक वाटते. अहमदनगर जिल्हा वाचनालयामध्ये अंध वाचकांसाठी ब्रेल लिपीतील पुस्तके विनामूल्य उपलब्ध करून दिली जातात. करवीर नगर वाचन मंदिर, कोल्हापूर जिल्हा ग्रंथालयामध्ये अंध वाचकांसाठी ब्रेल लिपीतील वाचन साहित्यासोबत श्रवणपद्धतीवर आधारित विशेष अब्रार संगणकप्रणाली उपयोजिली आहे, ही बाब उल्लेखनीय आहे.

वरील विश्लेषणावरून असे आढळते की, सदर संशोधनासाठी निवड केलेली जिल्हा ग्रंथालये समाजातील विविध वयोगटांतील व्यक्तींसाठी वेगवेगळे शैक्षणिक, सांस्कृतिक इ. उपक्रम व कार्यक्रमांचे आयोजन करतात.

प्रश्न क्र. २६ हा ग्रंथालयातील सभागृहाच्या उपलब्धतेसंदर्भात विचारला होता, त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे -

तक्ता क्र. ४.१७

ग्रंथालयातील सभागृहाची उपलब्धता

| | होय | शेकडा प्रमाण | नाही | शेकडा प्रमाण |
|--------|-----|--------------|------|--------------|
| सभागृह | २१ | ६७.७४% | १० | ३२.२६% |

वरील तक्ता क्र. ४.१७ वरून असे आढळून येते की, सार्वजनिक ग्रंथालयातील इमारतीच्या सोयी सुविधांचा विचार केला असता असे ध्यानात येते की, २१ (६७.७४%) ग्रंथालयांत सभागृहाची व्यवस्था आहे तर १० (३२.२६%) ग्रंथालयांमध्ये सभागृह उपलब्ध नाही. नाशिक येथील सार्वजनिक वाचनालयाचे नाट्यगृह व वस्तूसंग्रहालय उत्तम स्थितीत कार्यरत आहे. तर सोलापूर येथील श्री. हिराचंद नेमचंद ग्रंथालयाची एम्पी थिएटर कार्यरत आहे.

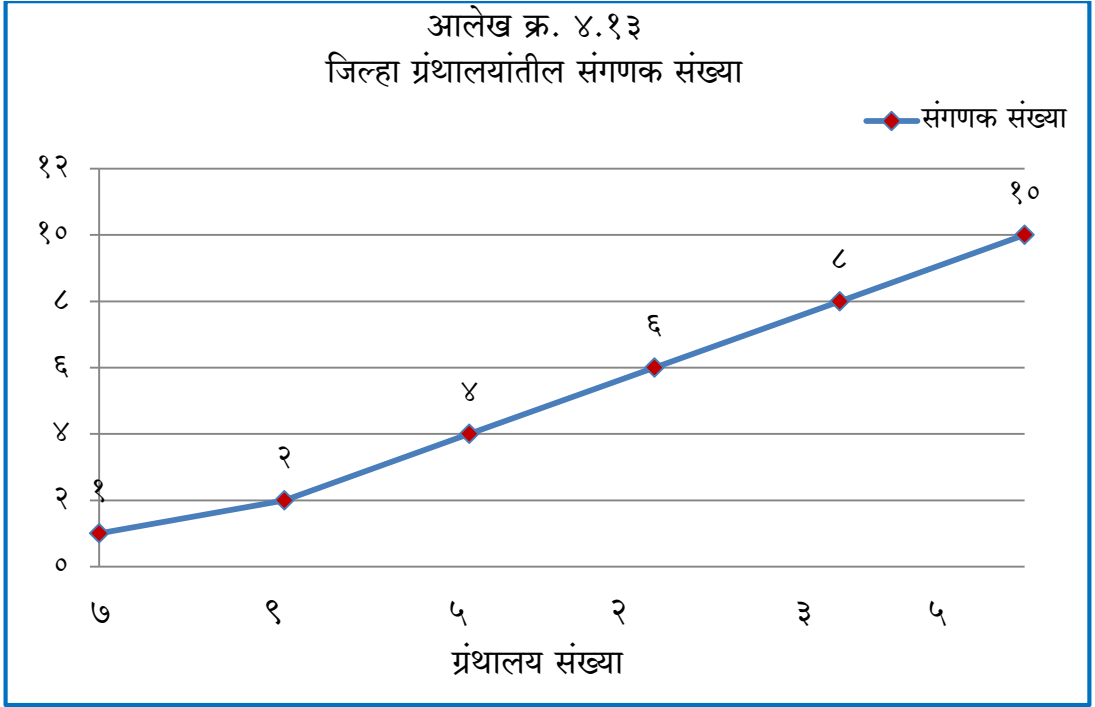
सभागृहामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांना विविध समाजोपयोगी सांस्कृतिक कार्यक्रमांचे आयोजन करता येते. परंतु सभागृहासाठी जागेची उपलब्धता आणि बांधकाम व देखभाल खर्च, उभारणीची समस्या ग्रंथालयांना जाणवते.

प्रश्न क्र. २७ ग्रंथालयात किती प्रमाणात संगणक आहेत हे जाणून घेण्यासाठी हा प्रश्न विचारला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे -

तक्ता क्र. ४.१८

जिल्हा ग्रंथालयांतील संगणक संख्या

| संगणक संख्या | १ | २ | ४ | ६ | ८ | १० |
|-----------------|--------|--------|--------|-------|-------|--------|
| ग्रंथालय संख्या | ७ | ९ | ५ | २ | ३ | ५ |
| शेकडा प्रमाण | २२.५८% | २९.०३% | १६.१३% | ६.४५% | ९.६८% | १६.१३% |



जिल्हा ग्रंथालयात उपलब्ध असणाऱ्या संगणकाची संख्या जाणून घेण्यासाठी प्रश्न क्र. २७ ची योजना केली होती. उपलब्ध झालेल्या माहितीवरून असे दिसून येते की जिल्हा ग्रंथालयाच्या सर्वच ग्रंथालयात म्हणजेच १००% संगणक आहेत.

ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञानासंबंधी उपयोजनांच्या माहितीचे विश्लेषण केले असता वरील तक्ता क्र. ४.१८ व आलेख क्र. ४.१३ वरून असे लक्षात येते की, ७ (२२.५८%) ग्रंथालयांमध्ये सर्वात कमी म्हणजे केवळ १ संगणक आहे तर ५ (१६.१३%) ग्रंथालयांमध्ये सर्वाधिक म्हणजे १० संगणक आहेत. २ संगणक असलेली ग्रंथालये ९ (२९.०३%) आहेत. ४ संगणक असलेली ग्रंथालये ५ (१६.१३%) आहेत तर २ (६.४५%) ग्रंथालयांमध्ये ६ संगणक आहेत आणि ३ (९.६८%) ग्रंथालयांमध्ये ८ संगणक आहेत.

पुणे मराठी ग्रंथालय, पुणे, सार्वजनिक वाचनालय, नाशिक, मराठी ग्रंथालय, ठाणे, नॅशनल लायब्ररी, बांद्रा आणि श्री. हिराचंद्र नेमचंद्र वाचनालय, सोलापूर या ग्रंथालयांनी आपला स्वतःचा संगणक विभाग स्थापन केला आहे.

मुंबई, मुंबई उपनगर, ठाणे, पुणे या जिल्हांचे अधिक शहरीकरण झालेले आहे.

परिणामी तेथील ग्रंथालयांमध्ये आधुनिक तंत्रज्ञानाचे उपयोजन जास्त प्रमाणात झालेले दिसते.

प्रश्न क्र. २८ हा ग्रंथालयातील संगणक कौशल्य प्राप्त कर्मचारी संख्या जाणून घेण्यासाठी विचारला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे.

तक्ता क्र. ४.१९

संगणक कौशल्य प्राप्त कर्मचारी

| अ.क्र. | स्वरूप | कर्मचारी संख्या | शेकडा प्रमाण |
|--------|-------------------------------|-----------------|--------------|
| १ | संगणक कौशल्य प्राप्त कर्मचारी | ९१ | ३९.०६% |
| २ | संगणक कौशल्य नसलेले कर्मचारी | १४२ | ६०.९४% |
| | एकूण कर्मचारी | २३३ | १००% |

वरील तक्त्यावरून असे आढळून येते की, जिल्हा ग्रंथालयांतील एकूण २३३ कर्मचाऱ्यांपैकी ९१ कर्मचारी म्हणजेच ३९.०६% कर्मचारी हे संगणक कौशल्य प्राप्त आहेत तर उर्वरित १४२ (६०.९४%) कर्मचाऱ्यांना संगणक प्रशिक्षण मिळालेले नाही.

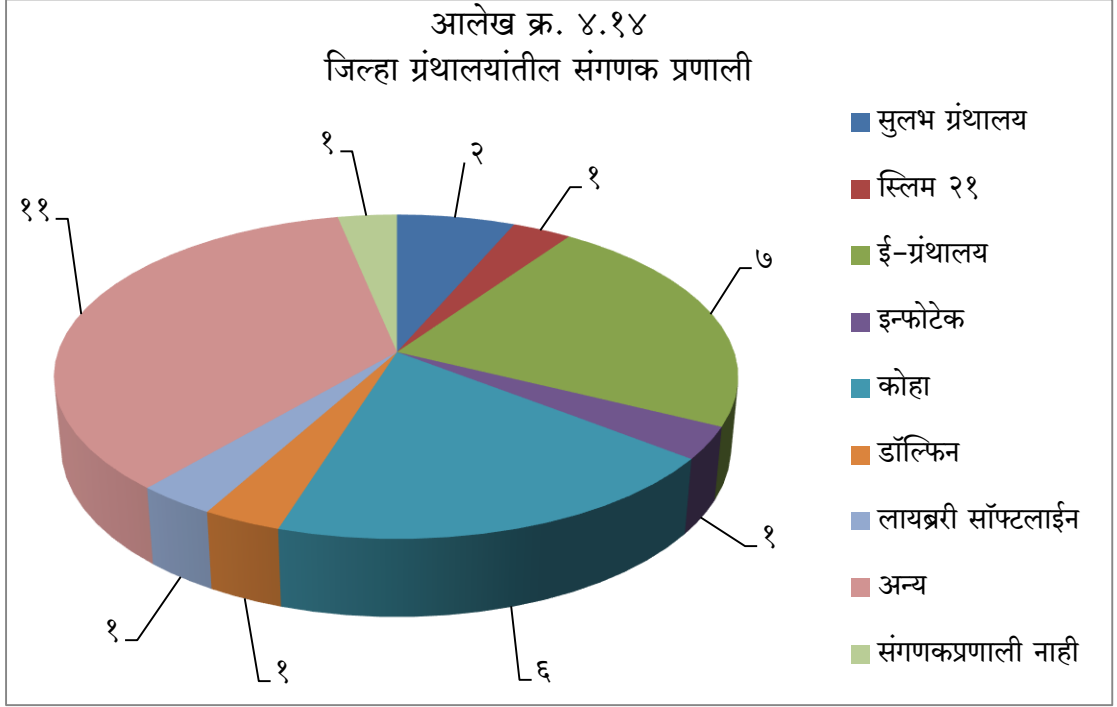
सार्वजनिक ग्रंथालयांमधील अर्धवेळ नोकरीचे स्वरूप, अल्प वेतन मोबदला त्यामुळे अल्पशिक्षित कर्मचारी उपलब्ध होतात. त्यामुळे आधुनिक संगणकीय तंत्रज्ञान आत्मसात करण्यासाठी ते फारसे उत्सुक नसतात. त्यामुळे ग्रंथालयांतील संगणक प्रशिक्षित कर्मचाऱ्यांचे प्रमाण कमी आहे.

प्रश्न क्र. २९ हा ग्रंथालयाच्या आधुनिकीकरण संदर्भात माहिती मिळविण्यासाठी ग्रंथालयाचे संगणकीकरण झाले आहे काय व कोणती संगणक प्रणाली ग्रंथालयात उपयोजली जाते या संदर्भात विचारला होता, त्याची माहिती पुढील तक्त्यात दिली आहे.

तक्ता क्र. ४.२०

जिल्हा ग्रंथालयांतील संगणक प्रणाली

| अ.क्र. | ग्रंथालय सॉफ्टवेअर | ग्रंथालय संख्या | शेकडा प्रमाण |
|--------|--------------------|-----------------|--------------|
| १ | सुलभ ग्रंथालय | २ | ६.४५% |
| २ | स्लिम २१ | १ | ३.९३% |
| ३ | ई-ग्रंथालय | ७ | २२.५८% |
| ४ | इन्फोटेक | १ | ३.२३% |
| ५ | कोहा | ६ | १९.३५% |
| ६ | डॉल्फिन | १ | ३.२३% |
| ७ | लायब्ररी सॉफ्टलाईन | १ | ३.२३% |
| ८ | अन्य | ११ | ३५.४८% |
| ९ | संगणकप्रणाली नाही | १ | ३.२३% |



वरील तक्ता क्र. ४.२० व आलेख क्र. ४.१४ वरून असे आढळून येते की, प्रस्तुत संशोधनासाठी निवडलेल्या ग्रंथालयांपैकी सर्वाधिक ११ (३५.४८%) ग्रंथालयांमध्ये अन्य संगणक प्रणाली वापरली जाते तर त्याखालोखाल ७ (२२.५८%) ग्रंथालयांमध्ये ई-ग्रंथालय ही प्रणाली वापरली जाते. प्रत्येकी १ (३.२३%) ग्रंथालयामध्ये अनुक्रमे स्लिम-२१, इन्फोटेक प्रणाली, डॉल्फिन व लायब्ररी सॉफ्ट लाईन प्रणाली या संगणक प्रणाली वापरल्या जातात. कोहा ही संगणक प्रणाली ६ (१९.३५%) ग्रंथालयांत वापरली जाते आणि सुलभ ग्रंथालय ही प्रणाली २ (६.४५%) ग्रंथालयांमध्ये उपयोगात आणली जाते तर उर्वरित १ (३.२३%) ग्रंथालय कोणतीच संगणक प्रणाली वापरत नाही.

ग्रंथालयीन संगणकप्रणालीच्या उपयोजनासाठी व खरेदीसाठी अनेक जिल्हा ग्रंथालयांनी मोठी आर्थिक तरतूद केलेली आहे. परंतु कोहा व ई-ग्रंथालय या ग्रंथालयीन उपयोगाच्या संगणक प्रणाली इंटरनेटवर मोफत उपलब्ध आहेत. नगर वाचन मंदिर, सांगली ग्रंथालयाने स्वतःसाठी संगणक प्रणाली विकसित करून घेतली आहे.

प्रश्न क्र. ३० व ३१ ची ग्रंथालयातील ग्रंथ साहित्य नोंद व दुर्मिळ ग्रंथसंग्रहाचे संगणकीकरण संदर्भातील नोंदी झाल्या आहेत का हे जाणून घेण्यासाठी निवड केली होती. याबाबत मिळालेली माहिती पुढील तक्त्यात मांडली आहे.

तक्ता क्र. ४.२१

जिल्हा ग्रंथालयांतील संगणक नोंदीविषयक माहिती

| घटक | पूर्ण | शे.प्रमाण | अंशतः पूर्ण | शे.प्रमाण | नाही | शे.प्रमाण |
|---------------|-------|-----------|-------------|-----------|------|-----------|
| ग्रंथ | १९ | ६१.२९% | ०८ | २५.८१% | ४ | १२.९०% |
| दुर्मिळ ग्रंथ | २३ | ७४.१९% | ०३ | ९.६८% | ५ | १६.१३% |

वरील तक्ता क्र. ४.२१ वरून असे निदर्शनास येते की, सदर संशोधनासाठी निवडलेल्या ३१ सार्वजनिक ग्रंथालयांपैकी १९ (६१.२९%) ग्रंथालयांत ग्रंथांचे संगणकीकरण पूर्ण झाले आहे तर ८ (२५.८१%) ग्रंथालयांमध्ये ग्रंथांच्या संगणकीकरणाचे काम अंशतः पूर्ण झाले आहे. तसेच ४ (१२.९०%) ग्रंथालयांत ग्रंथांचे संगणकीकरण झालेले नाही. त्याचप्रमाणे दुर्मिळ ग्रंथांच्या संगणकीकरणाबाबतच्या विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, २३ (७४.१९%) ग्रंथालयांनी दुर्मिळ ग्रंथांच्या संगणकीय नोंदी पूर्ण केल्या आहेत. ३ (९.६८%) ग्रंथालयांनी सदर काम अंशतः पूर्ण केले आहे तर ५ (१६.१३%) ग्रंथालयांनी दुर्मिळ ग्रंथांचे संगणकीकरण केले नाही.

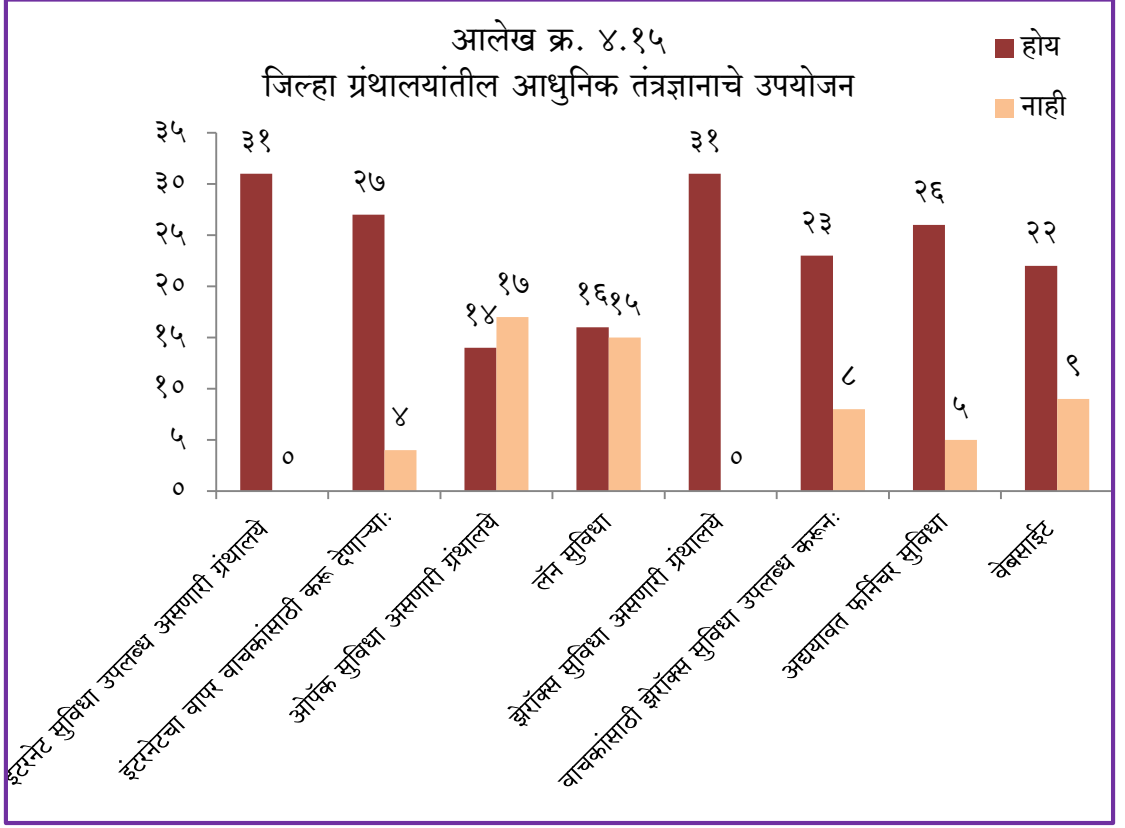
ग्रंथालय ही वर्धिष्णू संस्था आहे. दरवर्षी ग्रंथालयात नवीन वाचन साहित्याची भर पडत असते. संगणकीकरणासाठी संगणकांची संख्या वाढल्यास व तंत्रकुशल मनुष्यबळाची उपलब्धता झाल्यास संगणकीकरणाचे कार्य पूर्णत्वास जाईल. नाशिक येथील जिल्हा ग्रंथालयाने त्यांच्या ग्रंथालयातील दुर्मिळ ग्रंथांचे संगणकीकरण तसेच अंकीकरण (Digitization) पूर्ण केले आहे.

प्रश्न क्र. ३२ ते ३८ आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या उपयोजनासंदर्भात महिती मिळविण्यासाठी विचारण्यात आले होते. या संदर्भात मिळालेली पुढील तक्त्यामध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. ४.२२

जिल्हा ग्रंथालयांतील आधुनिक तंत्रज्ञानाचे उपयोजन

| क्र. | सुविधा | होय | शे.प्रमाण | नाही | शे.प्रमाण |
|------|---|-----|-----------|------|-----------|
| १ | इंटरनेट सुविधा उपलब्ध असणारी ग्रंथालये | ३१ | १००% | ० | ० |
| २ | इंटरनेटचा वापर वाचकांसाठी करू देणाऱ्या ग्रंथालयाची संख्या | २७ | ८७.१०% | ४ | १२.९०% |
| ३ | ओपॅक सुविधा असणारी ग्रंथालये | १४ | ४५.१६% | १७ | ५४.८८% |
| ४ | लॅन सुविधा | १६ | ५१.६१% | १५ | ४८.३९% |
| ५ | झेरॉक्स सुविधा असणारी ग्रंथालये | ३१ | १००% | ० | ० |
| ६ | वाचकांसाठी जेरोक्स सुविधा उपलब्ध करून देणारी ग्रंथालये | २३ | ७४.१९% | ८ | २५.८१% |
| ७ | अद्ययावत फर्निचर सुविधा | २६ | ८३.८७% | ५ | १६.१३% |
| ८ | वेबसाईट | २२ | ७०.९७% | ९ | २९.०३% |



उपरोक्त तक्ता क्र. ४.२२ व आलेख क्र. ४.१५ वरून असे दिसते की, आधुनिक काळाची गरज, वाचकांची मागणी पूर्ण करण्याच्या उद्देशाने ३१(१००%) ग्रंथालये इंटरनेटची सुविधा उपलब्ध करून देताना दिसतात. २७(८७.१०%) ग्रंथालये ग्रंथालयात येणाऱ्या वाचकांसाठी इंटरनेटची सुविधा उपलब्ध करून देतात तर ४ (१२.९०%) ग्रंथालये वाचकांसाठी इंटरनेटची सुविधा उपलब्ध करून देत नाहीत. तसेच २३(७४.१९%) ग्रंथालये ग्रंथालयात येणाऱ्या वाचकांसाठी झेरॉक्सची सुविधा उपलब्ध करून देतात तर ८ (२५.८१%) ग्रंथालये ग्रंथालयात येणाऱ्या वाचकांसाठी झेरॉक्सची सुविधा उपलब्ध करून देत नाहीत. २२(७०.९७%) ग्रंथालयांमध्ये वेबसाईट सुविधा उपलब्ध आहे तर उर्वरित ९(२९.०३%) ग्रंथालयांमध्ये वेबसाईटची सुविधा उपलब्ध नसलेली दिसून येते. ग्रंथालयीन वेबसाईट निर्माण करणे आणि अद्ययावत ठेवण्यासाठी कुशल मनुष्यबळ व आर्थिक निधीची उपलब्धता न होणे या कारणामुळे संशोधनासाठी निवडलेल्या सर्व सार्वजनिक जिल्हा ग्रंथालयांमध्ये वेबसाईटचे (संकेतस्थळ) काम पूर्णत्वास गेलेले दिसत नाही. संशोधनासाठी निवडलेल्या ग्रंथालयांपैकी १४ (४५.१६%) ग्रंथालयांमध्ये ओपॅक सुविधा उपलब्ध आहे तर १७ (५४.८८%) ग्रंथालये ही सुविधा देत नाहीत. १६ (५१.६१%) ग्रंथालये लॅन सुविधा पुरवितात तर १५ (४८.३९%) ग्रंथालयांमध्ये

लॅन सुविधा उपलब्ध नाही. तसेच २६ (८३.८७%) ग्रंथालये अद्ययावत फर्निचरने सुसज्ज आहेत तर ५ (१६.१३%) ग्रंथालयांमध्ये ही सुसज्जता नसल्याचे दिसून आले.

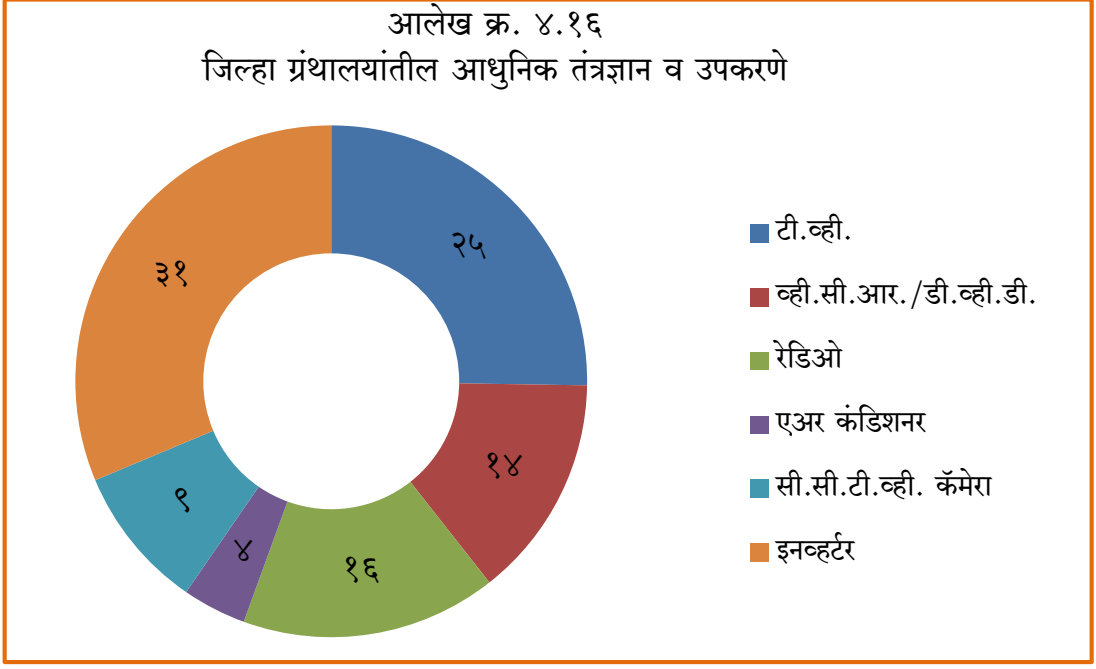
इंटरनेट कॅफे आणि मोबाईलद्वारे इंटरनेट सुविधा सर्वसामान्य लोकांना सहजपणे उपलब्ध होत आहे. ओपॅक आणि लॅन सुविधा वाचकांना न मिळण्यामागे सार्वजनिक ग्रंथालयातील संगणकांची मर्यादित संख्या तसेच कुशल मनुष्यबळाची अनुपलब्धता हे कारण दिसून येते. ठाणे येथील मराठी ग्रंथालयाने वाचकांसाठी डिजिटल ग्रंथालयाची सुविधा उपलब्ध करून दिली आहे.

प्रश्न क्र. ३९ हा ग्रंथालयातील उपलब्ध साधन सुविधा व उपकरणांची माहिती संदर्भात विचारण्यात आला होता. या संदर्भात मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे आहे.

तक्ता क्र. ४.२३

जिल्हा ग्रंथालयांतील आधुनिक तंत्रज्ञान व उपकरणे

| अ.क्र. | उपकरणाचे नाव | ग्रंथालय संख्या | शेकडा प्रमाण |
|--------|-------------------------|-----------------|--------------|
| १ | टी.व्ही. | २५ | ८०.६५% |
| २ | व्ही.सी.आर./डी.व्ही.डी. | १४ | ४५.१६% |
| ३ | रेडिओ | १६ | ५१.६१% |
| ४ | एअर कंडिशनर | ०४ | १२.९०% |
| ५ | सी.सी.टी.व्ही. कॅमेरा | ०९ | २९.०३% |
| ६ | इनव्हर्टर | ३१ | १००% |



वरील तक्ता क्र. ४.२३ व आलेख क्र. ४.१६ वरून असे दिसून येते की, एकूण ग्रंथालयांपैकी २५ (८०.६५%) ग्रंथालयांत टी.व्ही. उपलब्ध आहे. व्ही.सी.आर./डी.व्ही.डी.ची सुविधा १४ (४५.१६%) ग्रंथालयांत उपलब्ध करून दिली आहे. १५ (५१.६१%) ग्रंथालयांमध्ये वाचकांसाठी रेडिओची सुविधा आहे. एअरकंडिशनर ४ (१२.९०%) ग्रंथालयांत बसविलेला आहे. सी.सी.टी.व्ही. कॅमेरा एकूण ग्रंथालयांपैकी ९ (२९.०३%) ग्रंथालयांत आहे तर संशोधनासाठी निवडलेल्या सर्वच म्हणजे ३१ (१००%) ग्रंथालयांमध्ये इनव्हर्टरची सुविधा उपलब्ध करून देण्यात आली आहे.

आजच्या काळात टी.व्ही. घराघरात पोहोचलेला आहे. मोबाईल व इंटरनेटच्या सुविधेमुळे टी.व्ही., व्ही.सी.आर., डी.व्ही.डी. इ.ची आवश्यकता कमी झालेली आहे. त्यामुळे त्यांची कमतरता जाणवत नाही. एअर कंडिशनर व सीसीटीव्ही कॅमेरा ही उपकरणे खरेदी व देखभालीच्या दृष्टीने खर्चिक आहेत. त्यामुळे केवळ १२.९०% ग्रंथालयांमध्ये एअर कंडिशनर आणि २९.०३% ग्रंथालयांमध्ये सीसीटीव्ही कॅमेरा कार्यरत आहे.

विद्युत भारनियमनाच्या सततच्या अडचणीमुळे आणि राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठानाकडून इनव्हर्टर खरेदीसाठी आर्थिक साहाय्य मिळत असल्यामुळे इनव्हर्टरची उपलब्धता १००% ग्रंथालयांमध्ये असलेली दिसून येते.

४.५. तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या माहितीचे विश्लेषण :

महाराष्ट्रामध्ये २००९ मध्ये एकूण ११० तालुका अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालये अस्तित्वात होती. त्यांना संशोधनविषयक ग्रंथपाल प्रश्नावली देण्यात आली. त्यापैकी ८२ (७४.५४ %) ग्रंथालयांनी प्रतिसाद दिला. त्याची विभागवार जिल्हानिहाय यादी पुढीलप्रमाणे

तक्ता क्र. ४.२४

महाराष्ट्रातील विभागनिहाय तालुका ग्रंथालये

| अ.क्र. | जिल्हा | तालुका ग्रंथालये |
|----------------|-------------------|------------------|
| अमरावती जिल्हा | | ८ |
| १ | अकोला जिल्हा | १ |
| २ | अमरावती जिल्हा | २ |
| ३ | बुलढाणा जिल्हा | २ |
| ४ | यवतमाळ जिल्हा | २ |
| ५ | वाशिम जिल्हा | १ |
| औरंगाबाद विभाग | | १४ |
| ६ | उस्मानाबाद जिल्हा | २ |
| ७ | औरंगाबाद जिल्हा | २ |
| ८ | जालना जिल्हा | १ |
| ९ | नांदेड जिल्हा | ३ |

| | | |
|---------------------|----------------|----|
| १० | परभणी जिल्हा | २ |
| ११ | बीड जिल्हा | २ |
| १२ | लातूर जिल्हा | १ |
| १३ | हिंगोली जिल्हा | १ |
| नागपूर विभाग | | ३ |
| १४ | नागपूर जिल्हा | १ |
| १५ | वर्धा जिल्हा | २ |
| नाशिक विभाग | | १४ |
| १६ | अहमदनगर जिल्हा | ३ |
| १७ | जळगाव जिल्हा | ५ |
| १८ | धुळे जिल्हा | २ |
| १९ | नाशिक जिल्हा | ४ |
| पुणे विभाग | | २७ |
| २० | पुणे जिल्हा | ९ |
| २१ | सातारा जिल्हा | ४ |
| २२ | सांगली जिल्हा | ३ |

| | | |
|--------------------|-------------------|----|
| २३ | कोल्हापूर जिल्हा | ६ |
| २४ | सोलापूर जिल्हा | ५ |
| मुंबई विभाग | | १६ |
| २५ | ठाणे जिल्हा | ३ |
| २६ | रत्नागिरी जिल्हा | ३ |
| २७ | रायगड जिल्हा | ७ |
| २८ | सिंधुदूर्ग जिल्हा | ३ |

तक्ता क्र. ४.२५

महाराष्ट्रातील विभाग व जिल्हानिहाय अ वर्ग तालुका ग्रंथालयांची माहिती

| अ.क्र. | विभाग | जिल्हे | तालुका ग्रंथालये |
|--------|----------------|--------|------------------|
| १ | अमरावती विभाग | ५ | १० |
| २ | औरंगाबाद विभाग | ८ | २२ |
| ३ | नागपूर विभाग | २ | ६ |
| ४ | नाशिक विभाग | ४ | १९ |
| ५ | पुणे विभाग | ५ | ३१ |
| ६ | मुंबई विभाग | ४ | २२ |
| | | २८ | ११० |

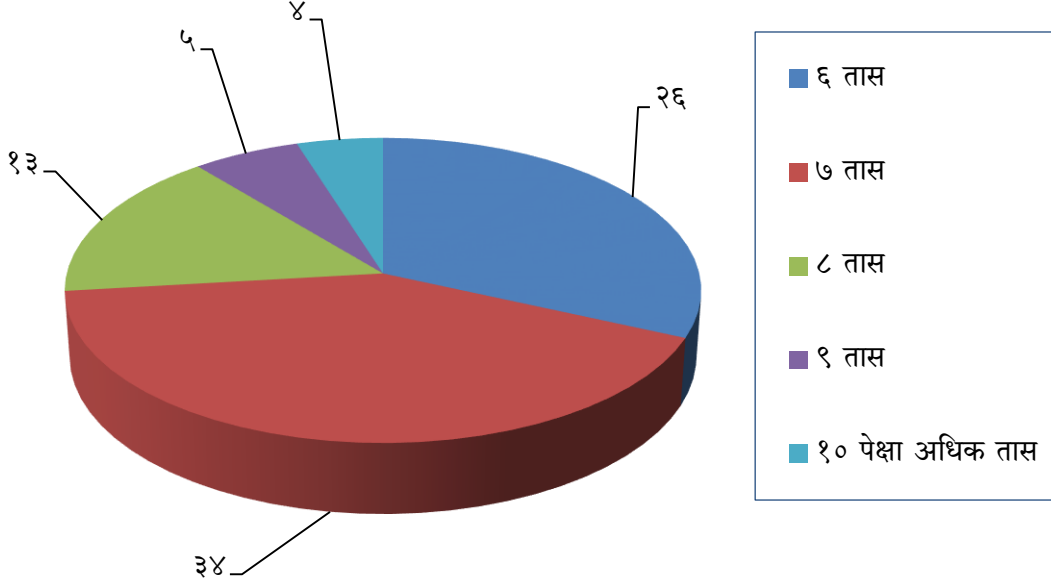
वरील तक्ता क्र. ४.२४ व ४.२५ वरून असे दिसून येते की, महाराष्ट्रातील अमरावती, औरंगाबाद, नागपूर, नाशिक, पुणे आणि मुंबई या सहा विभागांतील एकूण २८ जिल्ह्यांमध्ये आजमितीस तालुका 'अ' वर्गातील ११० ग्रंथालये कार्यरत होती. गडचिरोली जिल्हा, गोंदिया जिल्हा, चंद्रपूर जिल्हा, भंडारा जिल्हा, नंदूरबार जिल्हा, मुंबई उपनगर, मुंबई शहर या सात जिल्ह्यांमध्ये एकही तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालय नाही. दि. १ ऑगस्ट २०१४ रोजी मुंबई विभागात पालघर या ३६ व्या जिल्ह्याची निर्मिती महाराष्ट्र शासनाने केली. परंतु अद्याप तेथेही तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालय अस्तित्वात नाही. आज रोजी महाराष्ट्रात ३६३ तालुके आहेत. त्यांपैकी ११० तालुक्यांमध्ये तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालये आहेत तर २५३ तालुक्यांमध्ये तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालये नाहीत.

तक्ता क्र. ४.२६

सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या कामकाजाविषयी माहिती

| अ.क्र. | कामकाजाच्या तासांची संख्या | ग्रंथालयांची संख्या | शेकडा प्रमाण |
|--------|----------------------------|---------------------|--------------|
| १. | ६ तास | २६ | ३१.७१ |
| २. | ७ तास | ३४ | ४१.४६ |
| ३. | ८ तास | १३ | १५.८५ |
| ४. | ९ तास | ५ | ६.१० |
| ५. | १० पेक्षा अधिक तास | ४ | ४.८८ |

आलेख क्र. ४.१७
सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या कामकाजाविषयी माहिती



वरील तक्ता क्र. ४.२६ व आलेख क्र. ४.१७ वरून असे दिसून येते की, ६ तास कामकाज करणारी २६ ग्रंथालये असून त्यांचे शेकडा प्रमाण ३१.७१% आहे. ७ तास कामकाज करणारी ३८ ग्रंथालये असून त्यांचे शेकडा प्रमाण ४१.६६% आहे. ८ तास काम करणारी १३ (१५.८५%) ग्रंथालये असून ९ तास कामकाज करणारी ५ ग्रंथालये असून त्यांचे शेकडा प्रमाण ६.१०% आहे. १० तास व त्यापेक्षा अधिक कामकाज करणारी ४ ग्रंथालये आहेत. त्यांचे शेकडा प्रमाण ४.८८% आहे.

वरील तक्त्यानुसार असे दिसून आले की, महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या नियमानुसार ग्रंथालयीन कामकाजासाठी ६ तासांचा कालावधी निश्चित करण्यात आलेला आहे. संशोधनात असे दिसून आले की मोठ्या प्रमाणात तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालये त्यापेक्षा जास्त वेळ कामकाज करतात.

या विश्लेषणावरून असे दिसते की, ग्रंथालयांच्या नियमित ६ तासांच्या कामकाजाशिवाय १ तास अधिक काम करणारी ग्रंथालये अधिक आहेत. सर्वेक्षणात असे

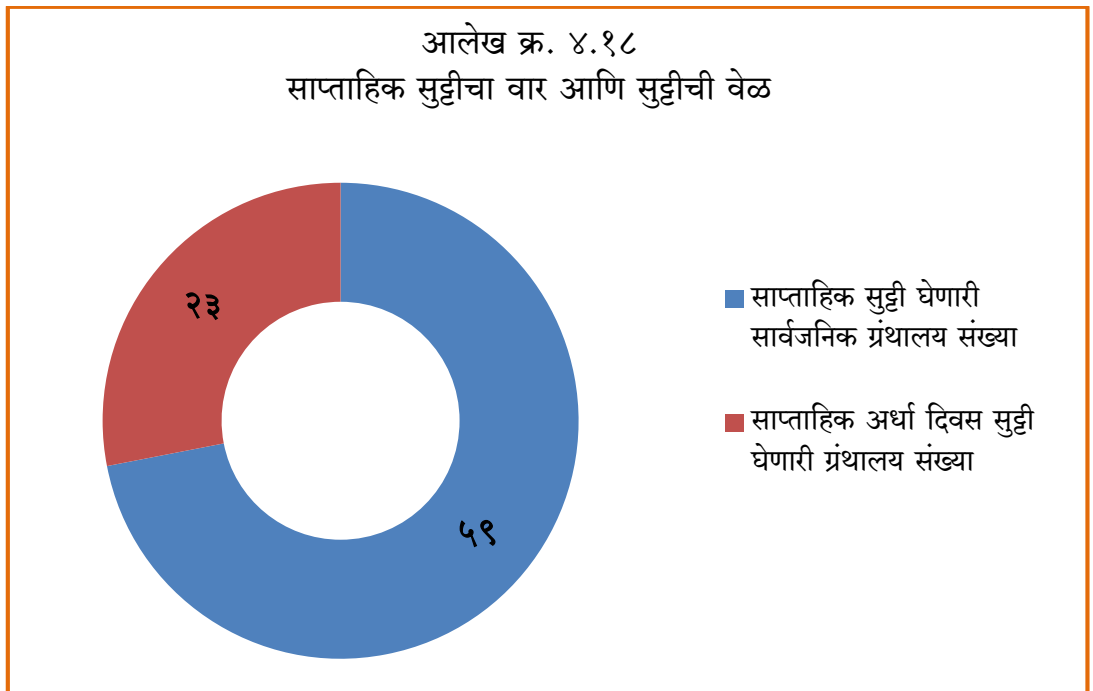
आढळून आले की, ठाणे जिल्ह्यातील कल्याण येथील सार्वजनिक वाचनालय व नाशिक जिल्ह्यातील कळवण येथील कै. पुंडूबाबा सार्वजनिक वाचनालय दररोज १२ तास सेवा देत आहे.

प्रश्न क्र. ३ हा साप्ताहिक सुट्टीचा वार आणि सुट्टीची वेळ जाणून घेण्यासाठी विचारला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे आहे.

तक्ता क्र. ४.२७

साप्ताहिक सुट्टीचा वार आणि सुट्टीची वेळ

| अ.क्र. | तपशील | आकडेवारी | शेकडा प्रमाण |
|--------|--|----------|--------------|
| १ | साप्ताहिक सुट्टी घेणारी सार्वजनिक ग्रंथालय संख्या | ५९ | ७१.९५% |
| २ | साप्ताहिक अर्धा दिवस सुट्टी घेणारी ग्रंथालय संख्या | २३ | २८.०४% |
| | | ८२ | १००% |



वरील तक्ता क्र. ४.२७ व आलेख क्र. ४.१८ वरून असे निदर्शनास येते की, साप्ताहिक सुट्टी घेणारी ग्रंथालयांची सर्वाधिक संख्या ५९ असून त्याचे शेकडा प्रमाण ७१.९५% आहे. साप्ताहिक अर्धा दिवस सुट्टी घेणारी सर्वात कमी २३ सार्वजनिक ग्रंथालये असून त्याचे शेकडा प्रमाण २८.०८% आहे.

वरील विश्लेषणावरून असे स्पष्ट होते की, एकूण ग्रंथालयांपैकी ५९ (७१.९५%) ग्रंथालये आठवड्यातून एक पूर्ण दिवस सुट्टी घेतात.

प्रश्न क्र. ४ हा ग्रंथालयातील एकूण कर्मचाऱ्यांची संख्या जाणून घेण्यासाठी विचारण्यात आला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे आहे.

तक्ता क्र. ४.२८

सार्वजनिक ग्रंथालयातील कर्मचारी संख्या

| अ.क्र. | घटक | आकडेवारी |
|--------|---------------|----------|
| १ | स्त्री | ९८ |
| २ | पुरुष | २१४ |
| | एकूण कर्मचारी | ३१२ |

तक्ता क्र.४.२८ वरून असे आढळून येते की, सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये एकूण ३१२ कर्मचारी कार्यरत आहेत. त्यांपैकी ९८ स्त्री कर्मचारी असून २१४ पुरुष कर्मचारी कार्यरत आहेत.

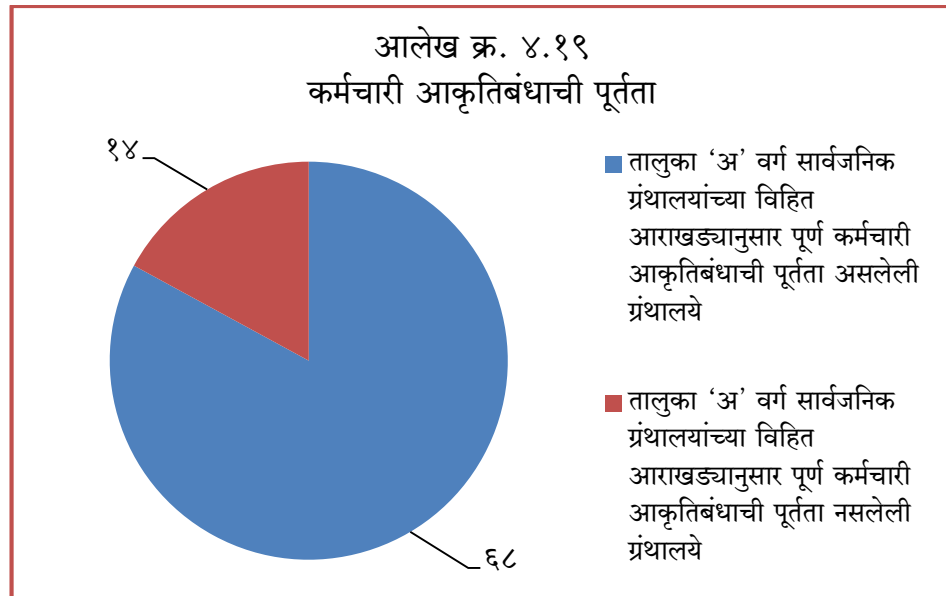
वरील विश्लेषणावरून असे स्पष्ट होते की, तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयात पुरुष कर्मचाऱ्यांची संख्या जास्त प्रमाणात आहेत. याचे कारण की, अधिकतम तालुका ग्रंथालयांना ग्रामीण पार्श्वभूमी आहे. ग्रामीण भागात रोजगाराच्या संधी अल्प असल्यामुळे वाचनालयाच्या माध्यमातून निर्माण होणाऱ्या रोजगारावर पुरुषी वर्चस्व निर्माण झाले आहे.

प्रश्न क्र. ५ हा शासन आराखड्यानुसार कर्मचारी आकृतिबंध पूर्तता आहे का, हे जाणून घेण्यासाठी विचारण्यात आला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे.

तक्ता क्र. ४.२९

कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता

| घटक | आकडेवारी | शे. प्रमाण |
|--|----------|------------|
| तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विहित आराखड्यानुसार पूर्ण कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता असलेली ग्रंथालये | ६८ | ८२.९३ |
| तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विहित आराखड्यानुसार पूर्ण कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता नसलेली ग्रंथालये | १४ | १७.०७ |
| एकूण | ८२ | १०० |



वरील तक्ता क्र. ४.२९ व आलेख क्र. ४.१९ नुसार असे दिसून येते की, तालुका सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विहित आराखड्यानुसार पूर्ण कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता असणारी ६८ ग्रंथालये असून त्यांचे शेकडा प्रमाण ८२.९३% इतके आहे, तर कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता नसलेली १४ ग्रंथालये असून त्यांचे शेकडा प्रमाण १७.०७% इतके आहे.

वरील विश्लेषणावरून असे आढळून आले की, ६८ (८२.९३%) ग्रंथालयांमध्ये कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता झालेली आहे, तर अल्प वेतन, जादा काम व पुरेशा सोयी-सुविधांच्या अभावामुळे ग्रंथालयातील काही कर्मचारी नोकरी सोडून जातात, तसेच काही कर्मचारी निवृत्त होतात. नवीन कर्मचारी भरतीच्या शासनमान्यतेच्या अटीमुळे भरती प्रक्रियेत होणाऱ्या दिरंगाईमुळे १७.०७% ग्रंथालयांमध्ये जागा रिक्त आहेत.

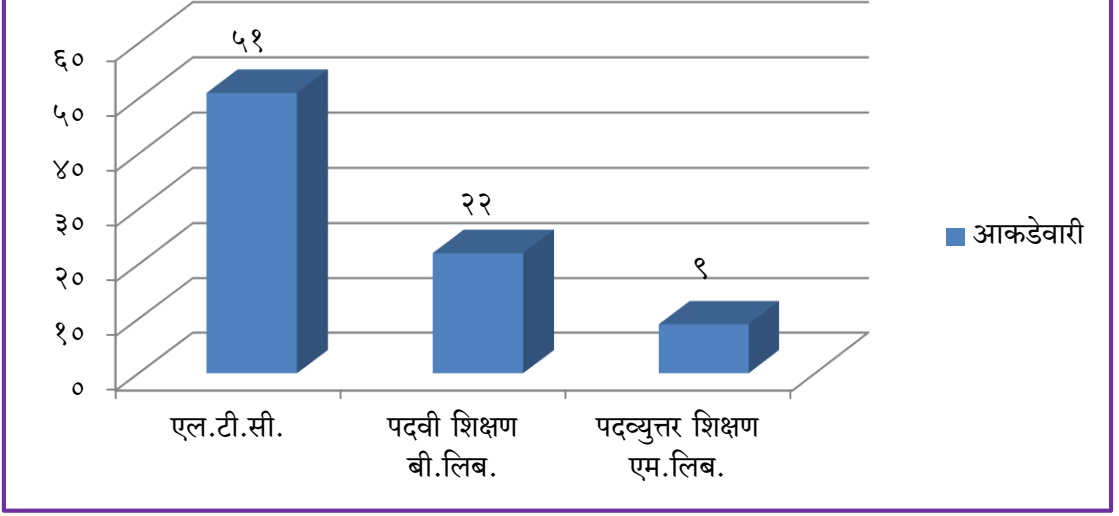
प्रश्न क्र. ६ हा ग्रंथपालाची शैक्षणिक पात्रता जाणून घेण्यासाठी विचारण्यात आला होता, त्याची माहिती खालील तक्ता क्र. ४.३० मध्ये दिलेली आहे.

तक्ता क्र. ४.३०

ग्रंथपालाची शैक्षणिक पात्रता

| अ.क्र. | शैक्षणिक पात्रता | आकडेवारी | शेकडा प्रमाण |
|--------|---------------------------|----------|--------------|
| १ | एल.टी.सी. | ५१ | ६२.१९% |
| २ | पदवी शिक्षण बी.लिब. | २२ | २६.८३% |
| ३ | पदव्युत्तर शिक्षण एम.लिब. | ९ | १०.९८% |
| | एकूण | ८२ | १००% |

आलेख क्र. ४.२०
ग्रंथपालाची शैक्षणिक पात्रता



वरील तक्ता क्र. ४.३० व आलेख क्र. ४.२० वरून असे आढळून येते की, तालुका 'अ' सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या ग्रंथपालपदी कार्यरत असणाऱ्या ५१ (६२.१९%) ग्रंथपालांनी एल.टी.सी. (लायब्ररी ट्रेनिंग कोर्स) हा अल्पकालीन प्रशिक्षण अभ्यासक्रम पूर्ण केला आहे, तर २२ (२६.८३%) ग्रंथपालांनी ग्रंथालय शास्त्रातील बी.लिब. ही पदवी प्राप्त केली आहे आणि ९ (१०.९८%) ग्रंथपालांनी ग्रंथालय शास्त्रातील एम.लिब. ही पदव्युत्तर पदवी प्राप्त केली आहे.

तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयाच्या ग्रंथपालपदी नियुक्ती होण्यासाठी एल.टी.सी. हा अल्पकालीन ग्रंथालय प्रशिक्षण कोर्स अथवा बी.लिब. पदवी उत्तीर्ण होणे आवश्यक आहे. तरी ३७.८०% ग्रंथालयांच्या ग्रंथपालांनी ग्रंथालय शास्त्रातील अधिकतम शैक्षणिक पात्रता प्राप्त केली आहे. ग्रंथालयाचा दर्जा व वाचकांना मिळणाऱ्या सेवांची गुणवत्ता वाढण्याच्या दृष्टीने ही बाब महत्त्वाची आहे.

प्रश्न क्र. ७ हा ग्रंथालयाला कोणत्या शासकीय संस्थांमार्फत अनुदान मिळते या संदर्भातील माहिती मिळविण्यासाठी विचारण्यात आला होता. त्याची माहिती तक्ता क्र. ४.३१ मध्ये दिलेली आहे.

तक्ता क्र. ४.३१

ग्रंथालयास मिळणारे शासकीय अनुदान

| अ.क्र. | अनुदान प्रदान करणारे घटक | आकडेवारी | शेकडा प्रमाण |
|--------|------------------------------|----------|--------------|
| १ | महाराष्ट्र शासन | ८२ | १००% |
| २ | राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठान | ७२ | ८७.८०% |
| ३ | आमदार / खासदार / मुख्यमंत्री | ३४ | ४१.४६% |

वरील तक्ता क्र. ४.३१ वरून असे आढळून येते की, सर्व तालुका ग्रंथालयांना शासनाने ठरवून दिलेल्या धोरणानुसार परीक्षण अनुदान मिळते. संशोधनासाठी निवडलेल्या सर्वच्या सर्व म्हणजेच ८२ ग्रंथालयांना महाराष्ट्र शासनाकडून अनुदान प्राप्त होते. राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठानकडून वस्तू व आर्थिक स्वरूपात अभ्यासासाठी निवडलेल्या ८२ ग्रंथालयांपैकी ७२ (८७.८०%) ग्रंथालयांना सहकार्य करण्यात आले आहे. तर ३४ (४१.४६%) ग्रंथालयांना आमदार/खासदार व मुख्यमंत्री निधीतून सहकार्य मिळाले आहे.

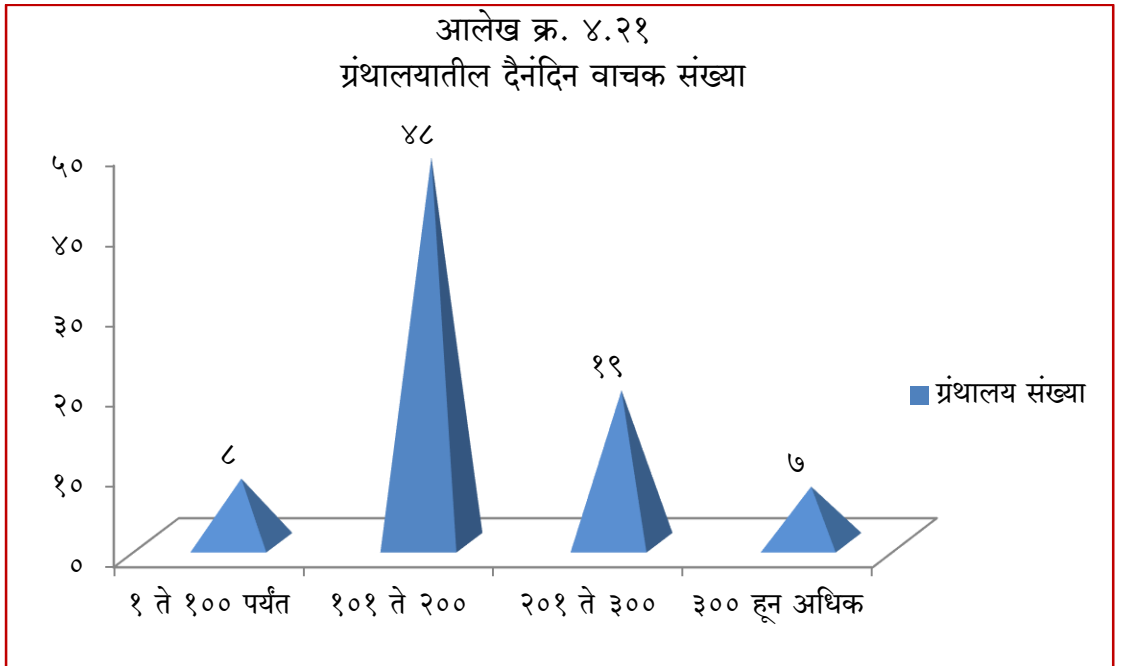
उपरोक्त विश्लेषणावरून असे स्पष्ट होते की, एकीकडे संशोधनासाठी निवडलेल्या सर्व ८२ तालुका सार्वजनिक ग्रंथालयांना शासनाकडून अनुदान प्राप्त होत असताना लोकप्रतिनिधींची मात्र ग्रंथालयांबाबतची उदासीनता दिसून येते. त्याचप्रमाणे राजकीय नेत्यांकडून अर्थसाहाय्य घेतल्यास त्यांचा ग्रंथालयात हस्तक्षेप वाढेल अशी ग्रंथालय प्रशासनाची भूमिका असल्याचे जाणवते.

प्रश्न क्र. ८ हा सार्वजनिक ग्रंथालयातील सेवांचा लाभ घेणाऱ्या वाचकांची संख्या जाणून घेण्यासाठी विचारण्यात आला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे दिली आहे.

तक्ता क्र. ४.३२

ग्रंथालयातील दैनंदिन वाचक संख्या

| अ.क्र. | वाचक संख्या | ग्रंथालय संख्या | शेकडा प्रमाण |
|--------|-----------------|-----------------|--------------|
| १ | १ ते १०० पर्यंत | ८ | ९.७६% |
| २ | १०१ ते २०० | ४८ | ५८.५३% |
| ३ | २०१ ते ३०० | १९ | २३.१७% |
| ४ | ३०१ हून अधिक | ७ | ८.५४% |
| | एकूण | ८२ | १००% |



वरील तक्ता क्र. ४.३२ व आलेख क्र. ४.२१ वरून असे आढळून येते की, १ ते १०० दैनंदिन वाचक संख्या असणाऱ्या ग्रंथालयांची संख्या ही ८ (९.७६%) आहे, तर १०१ ते २०० पर्यंत वाचक संख्या असणारी सर्वात जास्त म्हणजे ४८ (५८.५३%) ग्रंथालये आहेत. २०१ ते ३०० पर्यंत वाचक संख्या असणारी १९ (२३.१७%) ग्रंथालये आहेत तर ३०१ हून अधिक दैनंदिन वाचक संख्या असणारी ७ (८.५४%) ग्रंथालये आहेत.

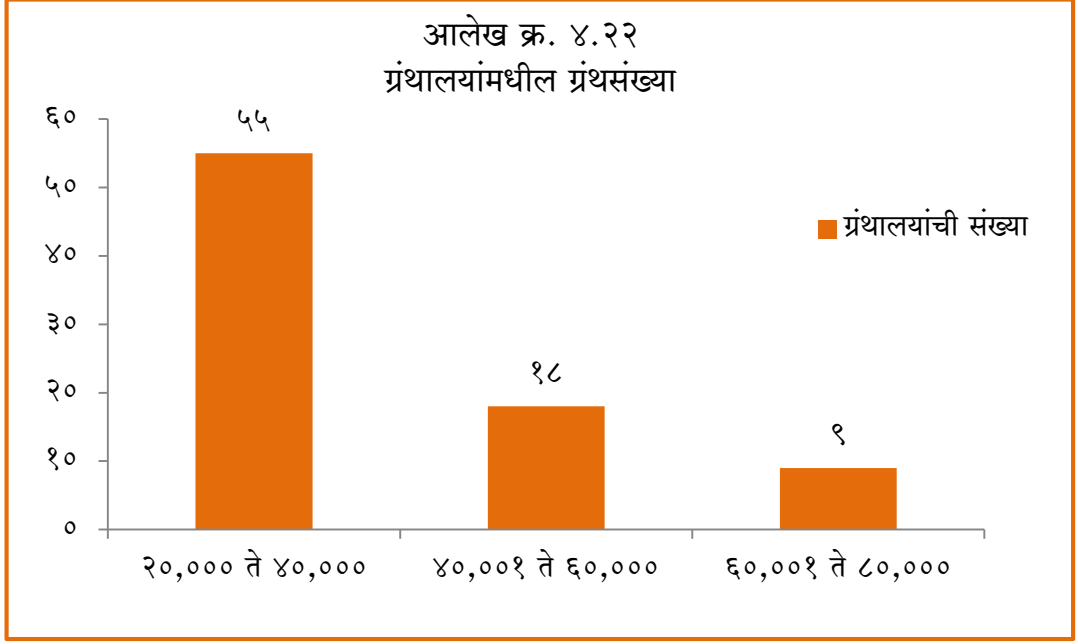
वाचकांना हवे असलेले वाचनसाहित्य सार्वजनिक ग्रंथालयात उपलब्ध होत असल्यामुळे वाचक मोठ्या प्रमाणात ग्रंथालयाचा वापर करतात. १०० पेक्षा अधिक दैनंदिन वाचक संख्या असणाऱ्या ग्रंथालयांची संख्या ७४ (९०.२४%) आहे. याचाच अर्थ मोठ्या प्रमाणामध्ये वाचक तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयांच्या सेवेचा लाभ घेतात.

प्रश्न क्र. ९ हा ग्रंथालयातील ग्रंथ, नियतकालिके, वृत्तपत्रे, सीडी, हस्तलिखिते व इतर वाचनसाहित्याबाबत विचारलेल्या प्रश्नास पुढीलप्रमाणे प्रतिसाद मिळाला.

तक्ता क्र. ४.३३

ग्रंथालयांमधील ग्रंथसंख्या

| अ.क्र. | ग्रंथसंख्या | ग्रंथालयांची संख्या | शेकडा प्रमाण |
|--------|------------------|---------------------|--------------|
| १ | २०,००० ते ४०,००० | ५५ | ६७.०७ |
| २ | ४०,००१ ते ६०,००० | १८ | २१.९५ |
| ३ | ६०,००१ ते ८०,००० | ९ | १०.९८ |
| | एकूण | ८२ | १०० |



वरील तक्ता क्र. ४.३३ व आलेख क्र. ४.२२ वरून असे निदर्शनास येते की, सर्वेक्षण केलेल्या एकूण ८२ ग्रंथालयांपैकी २०,००० ते ४०,००० इतकी ग्रंथसंख्या असलेली सर्वाधिक ५५ (६७.०७%) ग्रंथालये आहेत तर ४०,००१ ते ६०,००० ग्रंथसंख्या असलेली १८ (२१.९५%) ग्रंथालये आहेत. ६०,००१ ते ८०,००० ग्रंथसंख्या असलेली ९ (१०.९८%) ग्रंथालये आहेत.

तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयांच्या निकषाप्रमाणे ग्रंथांची संख्या १५,००१ असली पाहिजे. संशोधनासाठी निवडलेली सर्व तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालये हा निकष पूर्ण करित असल्याचे उपरोक्त आकडेवारीवरून दिसून येते.

सर्वेक्षणात असे आढळून आले की, कल्याण येथील सार्वजनिक वाचनालयात सुमारे ६६,००० इतकी सर्वाधिक ग्रंथसंपदा आहे. तसेच त्याखालोखाल मालेगाव येथील प. बा. काकाणी नगर वाचनालयात ६३,८५९ इतकी ग्रंथसंख्या आहे. वाचकांना अधिकाधिक ग्रंथ उपलब्ध व्हावेत, वाचकांची ज्ञानात्मक गरज भागावी या उद्देशाने जाणीवपूर्वक प्रयत्न केल्याने ग्रंथसंख्येत वाढ झाल्याचे दिसून येते.

तक्ता क्र. ४.३४

ग्रंथालयांतील नियतकालिकांची संख्या

| अ.क्र. | नियतकालिकांची संख्या | ग्रंथालयांची संख्या | शेकडा प्रमाण |
|--------|----------------------|---------------------|--------------|
| १ | ५१-७५ | ३१ | ३७.८०% |
| २ | ७६-१०० | २१ | २५.६१% |
| ३ | १०१-१२५ | १६ | १९.५१% |
| ४ | १२५ हून अधिक | १४ | १७.०७% |
| | एकूण | ८२ | १००% |

जिल्हा ग्रंथालयासाठी शासन मान्यतेनुसार किमान ५१ नियतकालिकांचा निकष आहे. या प्रश्नासंबंधीच्या माहिती तक्ता क्र. ४.३४ मधील विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, सर्व तालुका ग्रंथालये हा निकष पूर्ण करतात. सदर संशोधनासाठी सर्वेक्षण केलेल्या एकूण ८२ ग्रंथालयांपैकी सर्वाधिक ३१ (३७.८०%) ग्रंथालयांमध्ये ५१-७५ नियतकालिके आहेत. त्याखालोखाल २१ (२५.६१%) ग्रंथालयांमध्ये ७६ ते १०० नियतकालिके आहेत. १०१ ते १२५ नियतकालिके असलेली १६ (१९.५१%) ग्रंथालये आहेत तर सर्वात कमी १४ (१७.०७%) ग्रंथालयांमध्ये १२५ ते १५० नियतकालिके आहेत.

सर्वेक्षणावरून असे दिसून येते की, कराड येथील नगरपालिका नगर वाचनालयामध्ये सर्वाधिक २५२ नियतकालिके येतात. तर पनवेल येथील के. गो. लिमये सार्वजनिक वाचनालयात २५० नियतकालिके मागविली जातात.

तक्ता ४.३५

ग्रंथालयांतील वृत्तपत्र संख्या

| अ.क्र. | वृत्तपत्रे संख्या | ग्रंथालय संख्या | शे. प्रमाण |
|--------|-------------------|-----------------|------------|
| १ | १६-२५ | ५१ | ६२.१९ |
| २ | २६-३५ | २१ | २५.६१ |
| ३ | ३६-४५ | ९ | १०.९८ |
| ४ | ४६-५५ | १ | १.२२ |
| | एकूण | ८२ | १०० |

उपरोक्त तक्ता क्र. ४.३५ वरून असे दिसते की, संशोधनासाठी निवडलेल्या एकूण तालुका ग्रंथालयांपैकी सर्वाधिक म्हणजेच ५१ (६२.१९%) ग्रंथालयांमध्ये १६-२५ वृत्तपत्रे उपलब्ध आहेत. त्याखालोखाल २१ (२५.६१%) ग्रंथालयांमध्ये २६-३५ वृत्तपत्रे आहेत तर ३६-४५ वृत्तपत्रे असलेली ९ (१०.९८%) ग्रंथालये आहेत. १ (१.२२%) ग्रंथालयांमध्ये ४६-५५ वृत्तपत्रे आहेत.

तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयांसाठी १६ वृत्तपत्रांचा निकष लागू आहे. वरील माहिती तक्त्यावरून असे आढळून आले की सर्वच तालुका ग्रंथालये हा निकष पूर्ण करतात. बारामती येथील कविवर्य मोरोपंत वाचनालयामध्ये सर्वाधिक ६१ वृत्तपत्रे येतात. तर पनवेल येथील के. गो. लिमये सार्वजनिक वाचनालय आणि ग्रंथालय येथे ४२ वृत्तपत्रे घेतली जातात. तेथील कार्यक्षम ग्रंथालय व्यवस्थापन व जिज्ञासू वाचक वर्गाला त्याचे श्रेय द्यावे लागेल.

तक्ता क्र. ४.३६

ग्रंथालयांतील सीडी, हस्तलिखिते व इतर दुर्मिळ साहित्य

| क्र. | घटक | होय | शे.प्रमाण | नाही | शे.प्रमाण | माहिती मिळाली नाही | शे.प्रमाण |
|------|---------------------|-----|-----------|------|-----------|--------------------|-----------|
| १ | सीडी | ८२ | १००% | - | - | - | - |
| २ | हस्तलिखिते | २७ | ३४.६२% | ५१ | ६५.३८% | ४ | ४.८८% |
| ३ | इतर दुर्मिळ साहित्य | ७५ | ९४.९४% | ०४ | ५.०६% | ३ | ३.६६% |

वरील तक्ता क्र. ४.३६ वरून असे दिसून येते की, सर्वच सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये सीडी व डीव्हीडीचे वाचन साहित्य उपलब्ध आहेत. तसेच २७ (३४.६२%) ग्रंथालयांमध्ये हस्तलिखिते जतन केलेली आहेत तर ५१ (५२.४३%) ग्रंथालयांमध्ये हस्तलिखितांचे जतन केलेले नाही. ४ (४.८८%) ग्रंथालयांची या संदर्भात माहिती प्राप्त झाली नाही. ७५ (९४.९४%) तालुका ग्रंथालयांमध्ये इतर दुर्मिळ वाचन साहित्य उपलब्ध आहे तर केवळ ४ (५.०६%) ग्रंथालयांमध्ये इतर दुर्मिळ वाचन साहित्य उपलब्ध नाही. ३ (३.६६%) ग्रंथालयांची या संदर्भात माहिती प्राप्त झाली नाही.

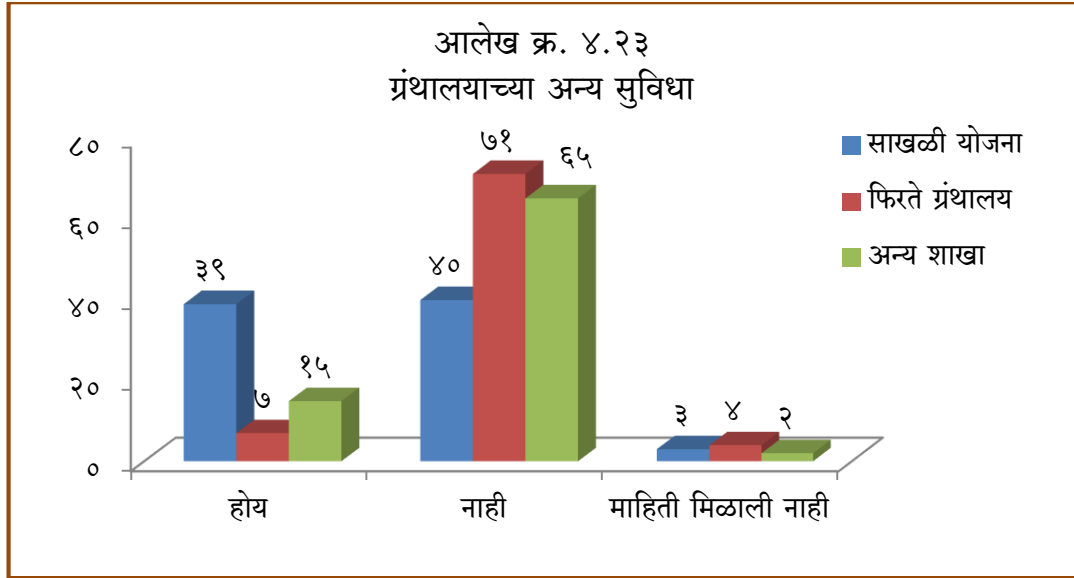
सर्वेक्षणात असे आढळून आले की, कल्याण येथील सार्वजनिक वाचनालयात महाराष्ट्रातील सर्व जिल्ह्यांचे गॅझेट आणि मराठी विश्वकोषाचे खंड सीडी स्वरूपात उपलब्ध आहेत. जळगाव जिल्ह्यातील चाळीसगाव येथील शेठ नारायण बंकट वाचनालय ज्ञानधारा विभागांतर्गत ऑडिओ कॅसेट लायब्ररी चालविली जाते. वर्धा जिल्ह्यातील आर्वी येथील लोकमान्य वाचनालयामध्ये २००० इतके सर्वाधिक तर रत्नागिरी जिल्ह्यातील चिपळूण येथील लोकमान्य टिळक स्मारक वाचन मंदिरात १४२९ हस्तलिखिते व दुर्मिळ ग्रंथ जतन केले आहेत.

प्रश्न क्र. १० ते १२ हे ग्रंथालयांचा वाढता विस्तार लक्षात घेता ग्रंथालये ग्रंथालयीन सेवेशिवाय आणखी कोणत्या प्रकारच्या सेवा वाचकांना देतात हे जाणून घेण्यासाठी विचारण्यात आले होते.

तक्ता क्र. ४.३७

ग्रंथालयाच्या अन्य सुविधा

| क्र. | स्वरूप | होय | शे.प्रमाण | नाही | शे.प्रमाण | माहिती मिळाली नाही | शे.प्रमाण |
|------|----------------|-----|-----------|------|-----------|--------------------|-----------|
| १ | साखळी योजना | ३९ | ४९.३७% | ४० | ५०.६३% | ३ | ३.६६% |
| २ | फिरते ग्रंथालय | ७ | ८.९७% | ७१ | ९१.०३% | ४ | ४.८८% |
| ३ | अन्य शाखा | १५ | १८.७५% | ६५ | ८१.२५% | २ | २.४४% |



वरील तक्ता क्र. ४.३७ व आलेख क्र. ४.२३ वरून असे दिसून येते की, संशोधनसाठी निवडलेल्या एकूण ८२ ग्रंथालयांपैकी ३९ (४९.३७%) ग्रंथालयांमध्ये साखळी योजना सुरू आहे. ४० (५०.६३%) ग्रंथालयांमध्ये साखळी योजना सुरू नाही तर उर्वरित ३ (३.६६%) ग्रंथालयांची माहिती उपलब्ध झाली नाही. फिरते ग्रंथालय हा उपक्रम ७ (८.९७%)

ग्रंथालयांमध्ये राबविला जातो आणि ७१ (९१.०३%) ग्रंथालयांमध्ये हा उपक्रम राबविला जात नाही तर या संदर्भात ४ (४.८८%) ग्रंथालयांची माहिती उपलब्ध झाली नाही. त्याचप्रमाणे संशोधनासाठी निवडलेल्या ग्रंथालयांपैकी १५ (१८.७५%) ग्रंथालयांच्या एकापेक्षा अधिक शाखा झाल्या आहेत. म्हणजेच या ग्रंथालयांचा विस्तार झालेला दिसतो. तर ६५ (८१.२५%) ग्रंथालयांच्या शाखा नाहीत. २ (२.४४%) ग्रंथालयांची माहिती उपलब्ध झाली नाही.

सर्वेक्षणात असे आढळून आले की, सातारा येथील श्री शिवछत्रपती वाचनालय साखळी योजनेअंतर्गत १० ग्रंथालयांशी जोडले गेले आहे. तर सोलापूर जिल्ह्यातील मंगळवेढा येथील नगर वाचनालय एक नाविण्यपूर्वक उपक्रम म्हणून ग्रंथालयात येणारी नियतकालिके (मासिके, साप्ताहिके) वाचून झाल्यावर रद्दी न घालता शहरातील कारागृहात कैद्यांना व तेथील कर्मचाऱ्यांना आणि शहरातील शासकीय रुग्णालयामधील रुग्ण, त्यांचे नातेवाईक व कर्मचाऱ्यांना मोफत वाचण्यासाठी ठेवली जातात.

जळगाव जिल्ह्यातील जामनेर येथील जैन ओस्वाल भगीरथीबाई वाचनालयाद्वारे फिरते ग्रंथालय या योजनेअंतर्गत फिरत्या गाडीद्वारे (मोबाईल व्हॅन) गरजू वाचकांना मोफत ग्रंथालय सेवा पुरविली जाते. यवतमाळ जिल्ह्यातील पुसद येथील देशभक्त शंकरराव सरनाईक सार्वजनिक वाचनालयाद्वारे मोबाईल व्हॅनद्वारे 'भरे पुस्तकांचा मेळा' हा विचार रुजवीत गावातील लोकांना ग्रंथालय सेवा दिली जाते.

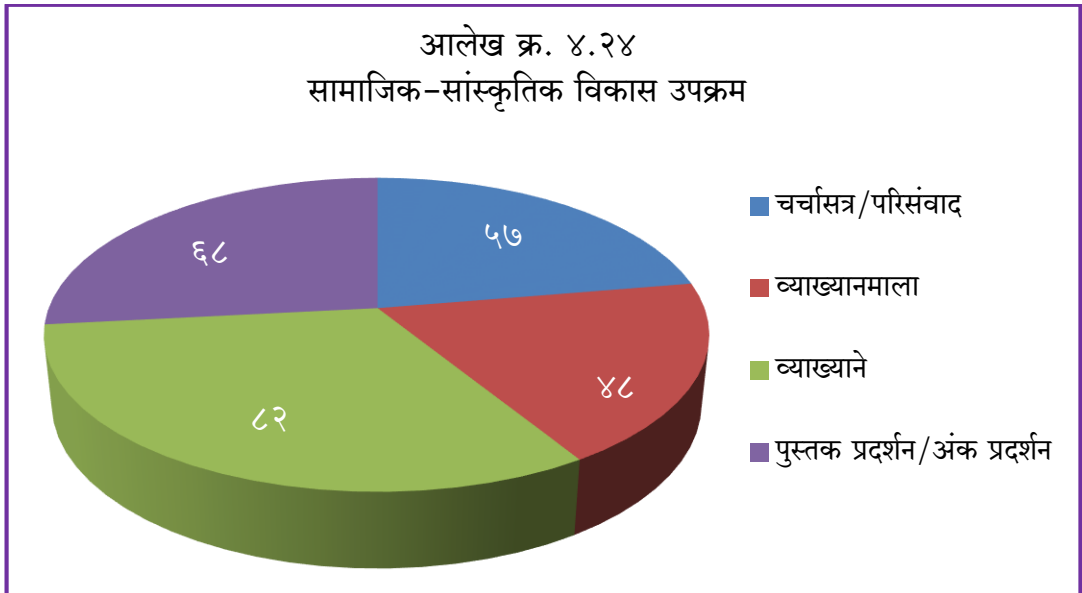
सातारा जिल्ह्यातील वाई येथील सार्वजनिक ग्रंथालयाद्वारे ज्येष्ठ नागरिक वाचकांसाठी अल्पावधीत घरपोच ग्रंथ सेवा दिली जाते. यासारखे समाजोपयोगी अभिनव उपक्रम राबविण्याचे श्रेय ग्रंथालयांच्या व्यवस्थापन मंडळाला व कर्मचारी वर्गास द्यावयास हवे. फिरत्या वाचनालयाचा खर्चाचा भार पेलवत नसल्यामुळे अनेक सार्वजनिक ग्रंथालयांनी नाईलाजाने ही योजना बंद केली आहे.

प्रश्न क्र. १३ ते १६ हे सामाजिक व सांस्कृतिक विकास उपक्रम राबविले जातात का, हे जाणून घेण्यासाठी विचारण्यात आले होते. त्याची माहिती तक्ता क्र. ४.३८ मध्ये दिलेली आहे.

तक्ता क्र. ४.३८

सामाजिक-सांस्कृतिक विकास उपक्रम

| क्र. | उपक्रम | होय | शे.प्रमाण | नाही | शे.प्रमाण |
|------|------------------------------|-----|-----------|------|-----------|
| १ | चर्चासत्र/परिसंवाद | ५७ | ६९.५१ | २५ | ३०.४९ |
| २ | व्याख्यानमाला | ४८ | ५८.५४ | ३४ | ४१.४६ |
| ३ | व्याख्याने | ८२ | १०० | ०० | ०० |
| ४ | पुस्तक प्रदर्शन/अंक प्रदर्शन | ६८ | ८२.९३ | १४ | १७.०७ |



वरील तक्ता क्र. ४.३८ व आलेख क्र. ४.२४ वरून असे आढळून येते की, सामाजिक, सांस्कृतिक माहितीचे विश्लेषण केले असता असे दिसून येते की, सदर संशोधनासाठी निवडलेल्या एकूण ८२ ग्रंथालयांपैकी ५७(६९.५१%) ग्रंथालयांत विविध

सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक विषयांवर चर्चासत्रे/परिसंवाद यांचे आयोजन केले जाते तर उर्वरित २५ (३०.४९%) ग्रंथालयांमध्ये चर्चासत्रे/परिसंवादांचे आयोजन केले जात नाही. व्याख्यानमालांचे आयोजन ४८(५८.५४%) ग्रंथालयांत केले जाते तर ३४(४१.४६%) ग्रंथालयांत व्याख्यानमालांचे आयोजन केले जात नाही. ग्रंथसप्ताह, जयंती, पुण्यतिथी, वर्धापनदिन व अन्य नैमित्तिक कारणांनी एकूण ८२ ग्रंथालयांपैकी सर्वच ग्रंथालयांमध्ये व्याख्यानांचे आयोजन केले जाते. पुस्तक प्रदर्शनाचा उपक्रम ६८(८२.९३%) ग्रंथालयांमध्ये राबविला जातो तर १४ (१७.०७%) ग्रंथालये पुस्तक प्रदर्शन उपक्रम राबवित नाहीत.

या विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, सदर संशोधनासाठी निवडलेल्या ग्रंथालयांमध्ये विविध शैक्षणिक, सामाजिक व सांस्कृतिक उपक्रमांचे आयोजन केले जाते.

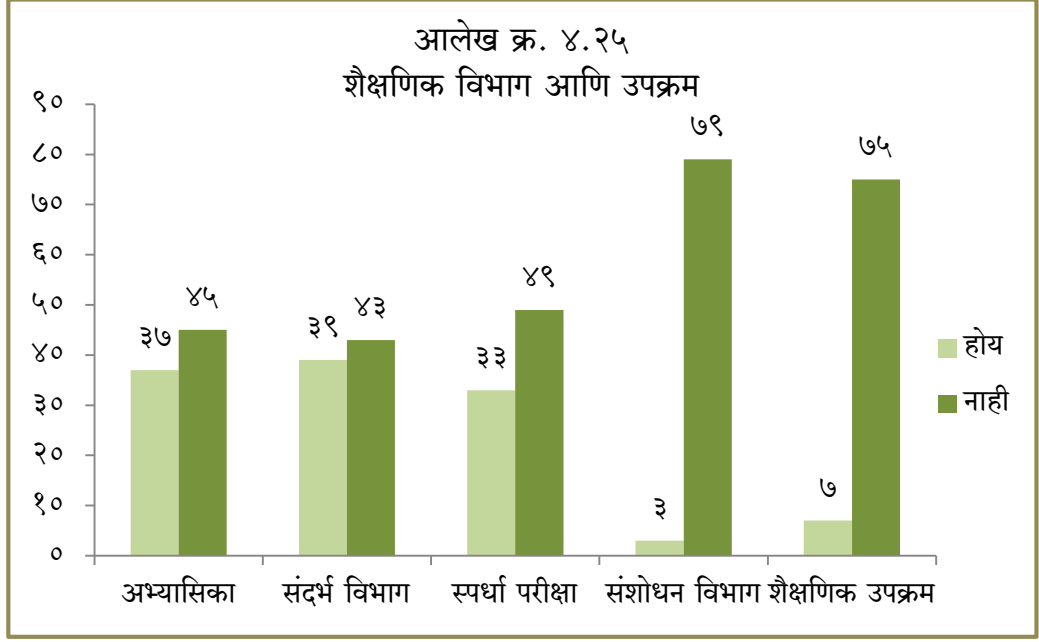
सर्वेक्षणावरून असे आढळून आले की, कराड येथील नगरपालिका नगरवाचनालय हे गेली ४१ वर्षे यशवंतराव चव्हाण व्याख्यानमाला आयोजित करते व निवडक व्याख्यानांची पुस्तके प्रकाशित केली जातात. त्यांपैकी १९७९ चे पुस्तक शिवाजी विद्यापीठाने व १९८० चे पुस्तक मुंबई विद्यापीठाने एम.ए.साठी अधिक वाचनासाठी संदर्भ ग्रंथ म्हणून निवडले आहे. मिरज येथील विद्यार्थी संघ वाचनालय खरे मंदिर वाचनालय 'वसंत व्याख्यानमाला' अंतर्गत आतापर्यंत ९० व्याख्यानमालांचे यशस्वी आयोजन केले आहे. व्याख्यानमालांच्या खर्चाचे अंदाजपत्रक सुमारे २ लाखापर्यंत असते.

प्रश्न क्र. १७ ते २१ हे शैक्षणिक विभाग आणि उपक्रमासंदर्भात विचारण्यात आले होते, त्या संदर्भातील माहिती तक्ता क्र. ४.३९ मध्ये दिली आहे.

तक्ता क्र. ४.३९

शैक्षणिक विभाग आणि उपक्रम

| क्र. | उपक्रम | होय | शे.प्रमाण | नाही | शे.प्रमाण |
|------|-----------------|-----|-----------|------|-----------|
| १ | अभ्यासिका | ३७ | ४५.१२ | ४५ | ५४.८८ |
| २ | संदर्भ विभाग | ३९ | ४७.५६ | ४३ | ५२.४४ |
| ३ | स्पर्धा परीक्षा | ३३ | ४०.२४ | ४९ | ५९.७६ |
| ४ | संशोधन विभाग | ३ | ३.६६ | ७९ | ९६.३४ |
| ५ | शैक्षणिक उपक्रम | ७ | ८.५४ | ७५ | ९१.४६ |



वरील तक्ता क्र. ४.३९ व आलेख क्र. ४.२५ वरून सार्वजनिक ग्रंथालये देत असलेल्या शैक्षणिक सुविधांच्या माहितीचे विश्लेषण केले असता असे आढळून आले की, संशोधनासाठी निवडलेल्या ग्रंथालयांपैकी ३७ (४५.१२%) ग्रंथालयांत अभ्यासिकाची सुविधा उपलब्ध आहे तर ४५ (५४.८८%) ग्रंथालयांत अभ्यासिकेची सुविधा नाही. ३९ (४७.५६%) ग्रंथालयांमध्ये संदर्भ विभाग कार्यरत आहे तर ४३ (५२.४३%) ग्रंथालयांमध्ये संदर्भ विभाग कार्यरत नाही. ३३ (४०.२४%) ग्रंथालयांमध्ये स्पर्धा परीक्षा विभाग कार्यरत आहे तर ४९ (५९.७५%) ग्रंथालयांमध्ये स्पर्धा परीक्षा विभाग कार्यरत नाही. एकूण ग्रंथालयांपैकी ३ (३.६६%) ग्रंथालयांत संशोधन विभाग कार्यरत असून उर्वरित ७९ (९६.३४%) ग्रंथालयांमध्ये संशोधन विभाग अस्तित्वात नाही. तसेच ७ (८.५४%) ग्रंथालयांत शैक्षणिक उपक्रम राबविले जातात तर ७५ (९१.४६%) ग्रंथालयांत शैक्षणिक उपक्रम राबविले जात नाही.

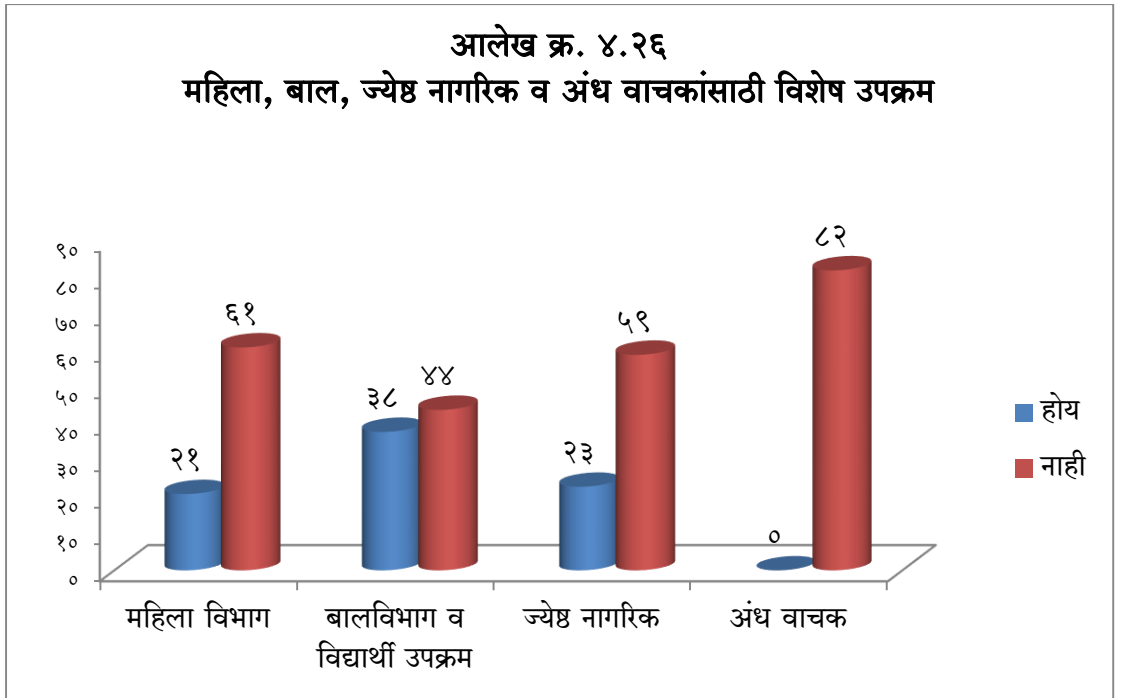
सर्वेक्षणात असे आढळून आले की, कराड येथील नगरपालिका नगरवाचनालय हे ग्रंथालय स्पर्धा परीक्षेच्या मुलांसाठी मोफत इंटरनेट सेवा देते. तसेच सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील सावंतवाडी येथील श्रीराम वाचन मंदिर व क्रीडा भुवन या ग्रंथालयांमध्ये यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठाच्या नाशिक यांचा बी.लिब. व एम.लिब. पदवी हा शैक्षणिक उपक्रम शिकविला जातो.

प्रश्न क्र. २२ ते २५ हे महिला, बाल, ज्येष्ठ नागरिक तसेच अंध वाचकांसाठी विशेष उपक्रमासंदर्भात विचारण्यात आले होते. त्या संदर्भात विचारलेली माहिती तक्ता क्र. ४.४० मध्ये दिलेली आहे.

तक्ता क्र. ४.४०

महिला, बाल, ज्येष्ठ नागरिक व अंध वाचकांसाठी विशेष उपक्रम

| क्र. | उपक्रम | होय | शे.प्रमाण | नाही | शे.प्रमाण |
|------|------------------------------|-----|-----------|------|-----------|
| १ | महिला विभाग | २१ | २५.६१% | ६१ | ७४.३९% |
| २ | बालविभाग व विद्यार्थी उपक्रम | ३८ | ४६.३४% | ४४ | ५३.६६% |
| ३ | ज्येष्ठ नागरिक | २३ | २८.०५% | ५९ | ७१.९५% |
| ४ | अंध वाचक | ०० | ०० | ८२ | १००% |



उपरोक्त तक्ता क्र. ४.४० व आलेख क्र. ४.२६ वरून असे लक्षात येते की, संशोधनासाठी निवडलेल्या एकूण ८२ ग्रंथालयांपैकी २१ (२५.६१%) सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये महिलांसाठी खास उपक्रम व स्पर्धा आयोजित केल्या जातात. त्यामध्ये पाककला, रांगोळी स्पर्धा, गायन स्पर्धा, हळदी कुंकू कार्यक्रम अशा प्रकारच्या कार्यक्रमांचा समावेश असतो तर ६१ (७४.३९%) ग्रंथालयांमध्ये महिलांसाठी असे खास उपक्रम व स्पर्धा घेतल्या जात नाहीत. विद्यार्थी वर्ग व बालकांसाठी ३८ (४६.३४%) ग्रंथालयांत उपक्रम व स्पर्धांचे आयोजन केले जाते. या स्पर्धांमध्ये हस्ताक्षर लेखन, पठण, वक्तृत्व, लेखन, चित्रकला, प्रश्नमंजुषा आदींचे आयोजन केले जाते तर ४४ (५३.६६%) ग्रंथालयांत बालक व विद्यार्थ्यांसाठी उपक्रम राबविले जात नाहीत. तसेच ज्येष्ठ नागरिकांच्या गरजा लक्षात घेऊन २३ (२८.०५%) ग्रंथालये मनोरंजन, गीतगायन, आरोग्यविषयक व्याख्यानाचे आयोजन करते तर ५९ (७१.९५%) ग्रंथालयांमध्ये ज्येष्ठ नागरिकांसाठी असे विशेष उपक्रम राबविले जात नाहीत. अंधांसाठी खास ब्रेल लिपीतील वाचन साहित्य कोणत्याही ग्रंथालयात उपलब्ध नाही.

सर्वेक्षणात असे आढळून आले की, आजरा येथील श्रीमंत गंगामाई वाचन मंदिराने २०१२ मध्ये २३ व्या अखिल भारतीय बालकुमार साहित्य संमेलनाचे यशस्वी आयोजन केले होते. सिल्लोड येथील कै. दादासाहेब अन्वीकर स्मारक ग्रंथालयात बालकांसाठी विना वर्गणी सभासद योजना सुरू आहे. तसेच इचलकरंजी येथील आपटे वाचन मंदिर वाचनालयातर्फे बालकांसाठी वाचन संस्कार शिबिराचे आयोजन केले जाते. वाई येथील लोकमान्य टिळक ग्रंथसंग्रहालयाने ज्येष्ठ नागरिकांसाठी अल्पखर्चात घरपोच ग्रंथ देण्याची सोय केली आहे.

तालुका ग्रंथालयात अंध वाचकांची संख्या अल्प असल्यामुळे व ब्रेल लिपीतील वाचनसाहित्य खर्चिक असल्यामुळे तालुका ग्रंथालयांना ते परवडत नाही. त्यामुळे तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयात अंध वाचकांसाठी स्वतंत्र दालन अस्तित्वात नाही.

प्रश्न क्र. २६ हा ग्रंथालयातील सभागृहाच्या उपलब्धतेसंदर्भात हा प्रश्न विचारला गेला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे.

तक्ता क्र. ४.४१

ग्रंथालयातील सभागृहाची उपलब्धता

| क्र. | उपक्रम | होय | शे.प्रमाण | नाही | शे.प्रमाण |
|------|--------|-----|-----------|------|-----------|
| १ | सभागृह | ११ | १३.४१ | ७१ | ८६.५९ |

वरील तक्त्यावरून असे आढळून येते की, सार्वजनिक ग्रंथालयातील इमारतीच्या सोयी-सुविधांचा विचार केला असता असे ध्यानात येते की, ११ (१३.४१%) ग्रंथालयांत सभागृहाची व्यवस्था आहे. तर ७१ (८६.५९%) ग्रंथालयांमध्ये सभागृहाची व्यवस्था नाही.

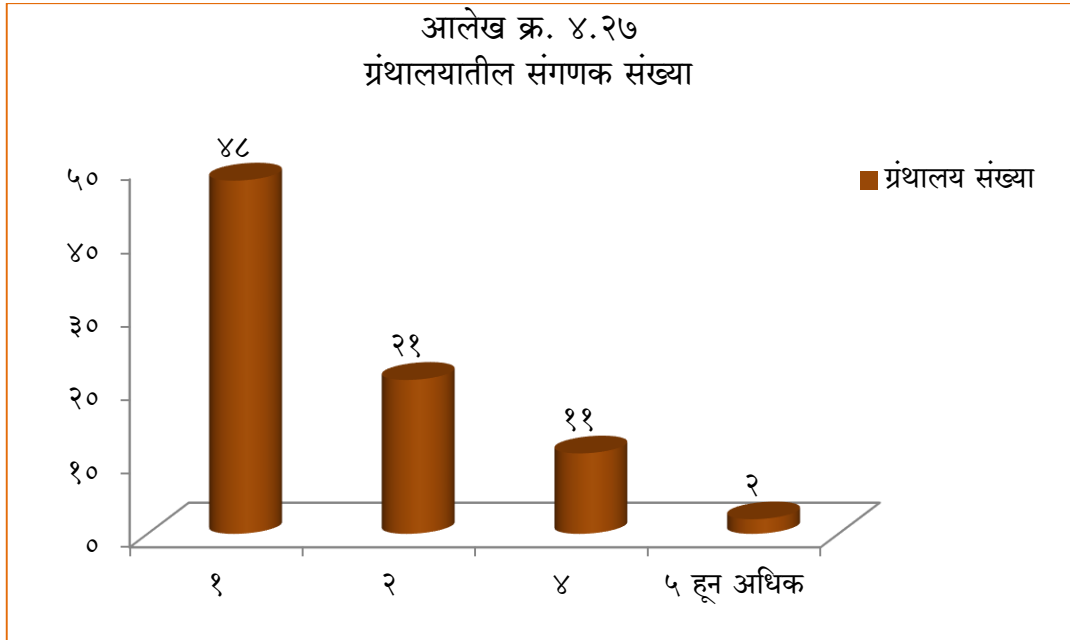
सर्वेक्षणात असे आढळून आले की, सभागृहाच्या बांधणीसाठी जागेची आणि आर्थिक निधीची उभारणी आवश्यक आहे. तसेच त्याचा देखभाल खर्च तालुका ग्रंथालयांना परवडत नाही. त्यामुळे तालुका ग्रंथालयांमध्ये सभागृहाची उपलब्धता कमी प्रमाणात दिसून आली. वाई येथील लोकमान्य टिळक ग्रंथसंग्रहालयात विविध कार्यक्रमांसाठी एल.सी.डी.सारख्या आधुनिक उपकरणाने सज्ज असे सभागृह आहे. भिवंडी येथील वाचन मंदिर ग्रंथालयात व आजरा येथील श्रीमंत गंगानाथ वाचन मंदिर ग्रंथालयात उत्तम पद्धतीचे सभागृह कार्यरत आहे.

प्रश्न क्र. २७ हा ग्रंथालयात किती प्रमाणात संगणक आहेत हे जाणून घेण्यासाठी विचारला गेला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे आहे.

तक्ता क्र. ४.४२

ग्रंथालयातील संगणक संख्या

| अ.क्र. | संगणक संख्या | ग्रंथालय संख्या | शेकडा प्रमाण |
|--------|--------------|-----------------|--------------|
| १ | १ | ४८ | ५८.५४% |
| २ | २ | २१ | २५.६१% |
| ३ | ४ | ११ | १३.४१% |
| ४ | ५ हून अधिक | २ | २.४४% |



तालुका ग्रंथालयात उपलब्ध असणाऱ्या संगणकांची संख्या जाणून घेण्यासाठी प्रश्न क्र. २७ ची योजना केली होती. उपलब्ध झालेल्या माहितीवरून असे दिसून येते की, सर्वच 'अ' वर्ग तालुका ग्रंथालयात संगणक आहेत.

ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञानासंबंधी उपयोजनांचा माहितीचे विश्लेषण केले असता वरील तक्ता क्र. ४.४२ व आलेख क्र. ४.२७ वरून असे लक्षात येते की, ४८ (५८.५४%) ग्रंथालयांमध्ये सर्वात कमी म्हणजे केवळ १ संगणक आहे तर २१ (२५.६१%) ग्रंथालयांमध्ये २ संगणक आहेत. ४ संगणक असलेली ग्रंथालये ११ (१३.४१%) आहेत. तर ५ हून अधिक संगणक असलेली केवळ २ (२.४४%) ग्रंथालये आहेत.

सर्वेक्षणात असे दिसून आले की, तालुका ग्रंथालयांमध्ये संगणकांचे प्रमाण कमी आहे, कारण संगणक सुविधा उपलब्ध करणे तसेच या उपकरणांची दुरुस्ती व देखभालीसाठी तंत्रकुशल मनुष्यबळ उपलब्ध होणे खर्चिक आहे.

कराड येथील नगरपालिका नगरवाचनालयात ७ संगणक तर इचलकरंजी येथील आपटे वाचन मंदिर येथील ग्रंथालयात ६ संगणक कार्यरत आहेत. तेथील व्यवस्थापन मंडळ आधुनिकतेवर भर देणारे असल्यामुळे येथील संगणकांची संख्या वाढलेली दिसते.

प्रश्न क्र. २८ हा ग्रंथालयातील संगणक कौशल्यप्राप्त कर्मचारी संख्या जाणून घेण्यासाठी विचारला गेला होता. त्यानुसार मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे.

तक्ता क्र. ४.४३

संगणक कौशल्यप्राप्त कर्मचारी संख्या

| क्र. | स्वरूप | होय | शे.प्रमाण |
|------|-------------------------------|-----|-----------|
| १ | संगणक कौशल्य प्राप्त कर्मचारी | ११७ | ३७.५ |
| २ | संगणक कौशल्य नसलेले कर्मचारी | १९५ | ६२.५ |
| | एकूण कर्मचारी | ३१२ | १०० |

वरील तक्त्यावरून असे आढळून येते की, तालुका ग्रंथालयांतील एकूण ३१२ कर्मचाऱ्यांपैकी ११७ कर्मचारी हे संगणक कौशल्य प्राप्त आहेत तर उर्वरित १९५ कर्मचाऱ्यांना

संगणक प्रशिक्षण मिळालेले नाही.

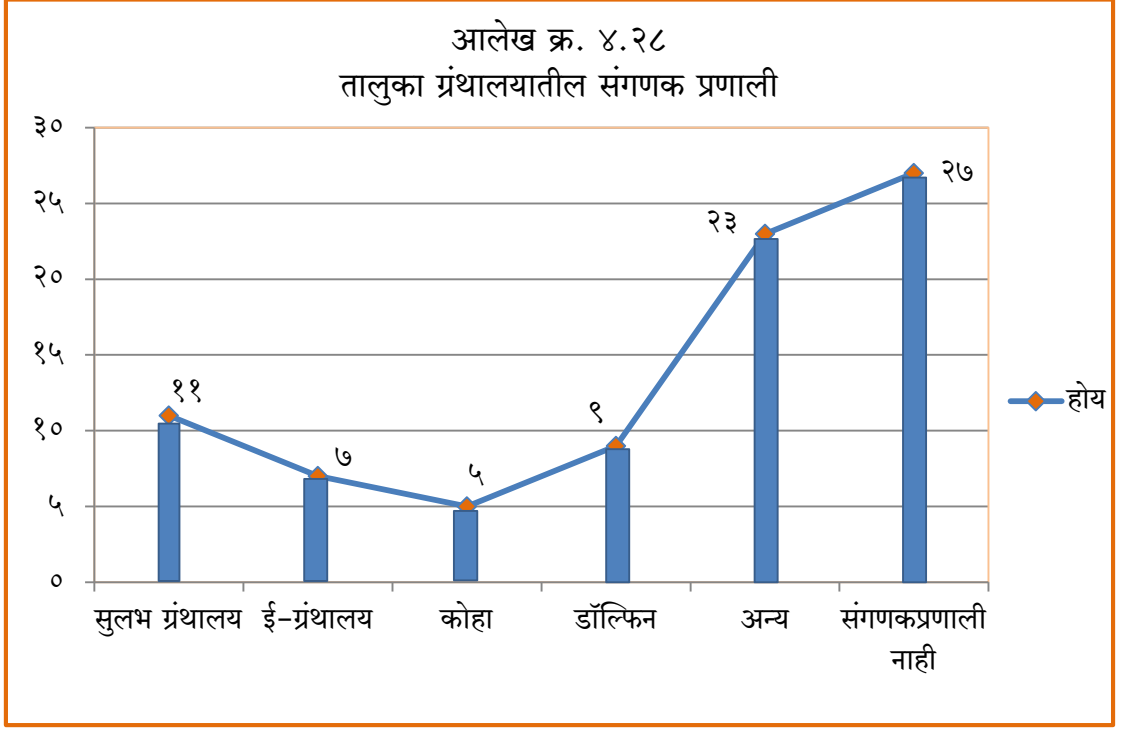
तालुका ग्रंथालयांना ग्रामीण आणि निमशहरी पार्श्वभूमी असते. या ग्रंथालयातील अर्धवेळ नोकरीचे स्वरूप व अल्पवेतन मोबदला यामुळे अल्पशिक्षित कर्मचारी उपलब्ध होतात. त्यामुळे संगणकीय तंत्रज्ञान आत्मसात करण्यासाठी ते फारसे उत्सुक नसतात. त्यामुळे ग्रंथालयातील संगणक प्रशिक्षित कर्मचाऱ्यांचे प्रमाण कमी आहे.

प्रश्न क्र. २९ हा ग्रंथालयाच्या आधुनिकीकरण संदर्भात माहिती मिळविण्यासाठी ग्रंथालयांचे संगणकीकरण झाले आहे काय? कोणती संगणक प्रणाली ग्रंथालयात उपयोजली जाते या संदर्भात विचारण्यात आला होता. त्याची माहिती खालील तक्त्यात दिली आहे.

तक्ता क्र. ४.४४

तालुका ग्रंथालयातील संगणक प्रणाली

| क्र. | स्वरूप | होय | शे.प्रमाण |
|------|-------------------|-----|-----------|
| १ | सुलभ ग्रंथालय | ११ | १३.४१ |
| २ | ई-ग्रंथालय | ७ | ८.५४ |
| ३ | कोहा | ५ | ६.०९ |
| ४ | डॉल्फिन | ९ | १०.९८ |
| ५ | अन्य | २३ | २८.०५ |
| ६ | संगणकप्रणाली नाही | २७ | ३२.९३ |



वरील तक्ता क्र. ४.४४ व आलेख क्र. ४.२८ वरून असे आढळून येते की, प्रस्तुत संशोधनासाठी निवडलेल्या एकूण ८२ ग्रंथालयांपैकी सर्वाधिक २३ (२८.०५%) ग्रंथालयांमध्ये अन्य संगणक प्रणाली वापरली जाते, तर त्याखालोखाल ११ (१३.४१%) ग्रंथालयांमध्ये सुलभ ग्रंथालय ही प्रणाली वापरली जाते. ९ (१०.९८%) ग्रंथालयांमध्ये डॉल्फिन, ५ (६.०९%) ग्रंथालयांमध्ये कोहा, ७ (८.५४%) ग्रंथालयांमध्ये ई-ग्रंथालय ही संगणक प्रणाली उपयोगात आणली जाते, तर उर्वरित २६ (३२.९३%) ग्रंथालयात कोणतीही संगणक प्रणाली वापरली जात नाही.

ग्रंथालयीन संगणकप्रणालीच्या उपयोजनासाठी व खरेदीसाठी अनेक तालुका ग्रंथालयांनी मोठी आर्थिक तरतूद केलेली आहे. परंतु कोहा व इतर ग्रंथालयीन उपयोगाच्या संगणक प्रणाली इंटरनेटवर मोफत उपलब्ध आहेत. वाचन मंदिर, भिवंडी ग्रंथालयाने स्वतःसाठी संगणक प्रणाली विकसित करून घेतली आहे.

प्रश्न क्र. ३० व ३१ हे ग्रंथालयातील ग्रंथ साहित्य नोंद व दुर्मिळ ग्रंथसंग्रहाचे संगणकीकरण संदर्भातील नोंदी झाल्या आहेत का हे जाणून घेण्यासाठी विचारण्यात आले होते. यातून मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे आहे.

तक्ता क्र. ४.४५

तालुका ग्रंथालयांतील संगणक नोंदीविषयक माहिती

| क्र. | घटक | पूर्ण | शेकडा प्रमाण | अंशतः पूर्ण | शेकडा प्रमाण | नाही | शेकडा प्रमाण | माहिती उपलब्ध नाही | शेकडा प्रमाण |
|------|---------------|-------|--------------|-------------|--------------|------|--------------|--------------------|--------------|
| १ | ग्रंथ | २१ | २५.६१ | ४३ | ५२.४४ | १८ | २१.९५ | - | - |
| २ | दुर्मिळ ग्रंथ | १९ | २५.०० | १२ | १५.७९ | ४५ | ५९.२१ | ६ | ७.३१ |

वरील तक्ता क्र. ४.४५ वरून असे निदर्शनास येते की, सदर संशोधनासाठी निवडलेल्या एकूण ८२ ग्रंथालयांपैकी २१ (२५.६१%) ग्रंथालयांत ग्रंथांचे संगणकीकरण पूर्ण झाले आहे तर ४३ (५२.४४%) ग्रंथालयांमध्ये ग्रंथांच्या संगणकीकरणाचे काम अंशतः पूर्ण झाले आहे. तसेच १८ (२१.९५%) ग्रंथालयांत ग्रंथांचे संगणकीकरण झालेले नाही. त्याचप्रमाणे दुर्मिळ ग्रंथांच्या संगणकीकरणाबाबतच्या प्रश्नावलीला ६ ग्रंथालयांकडून माहिती प्राप्त झाली नाही. उपलब्ध माहितीच्या विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, १९ (२५%) ग्रंथालयांनी दुर्मिळ ग्रंथांच्या संगणकीय नोंदी पूर्ण केल्या आहेत. १२ (१५.७९%) ग्रंथालयांनी सदर काम अंशतः पूर्ण केले आहे. तर ४५ (५९.२१%) ग्रंथालयांनी दुर्मिळ ग्रंथांचे संगणकीकरण केलेले नाही.

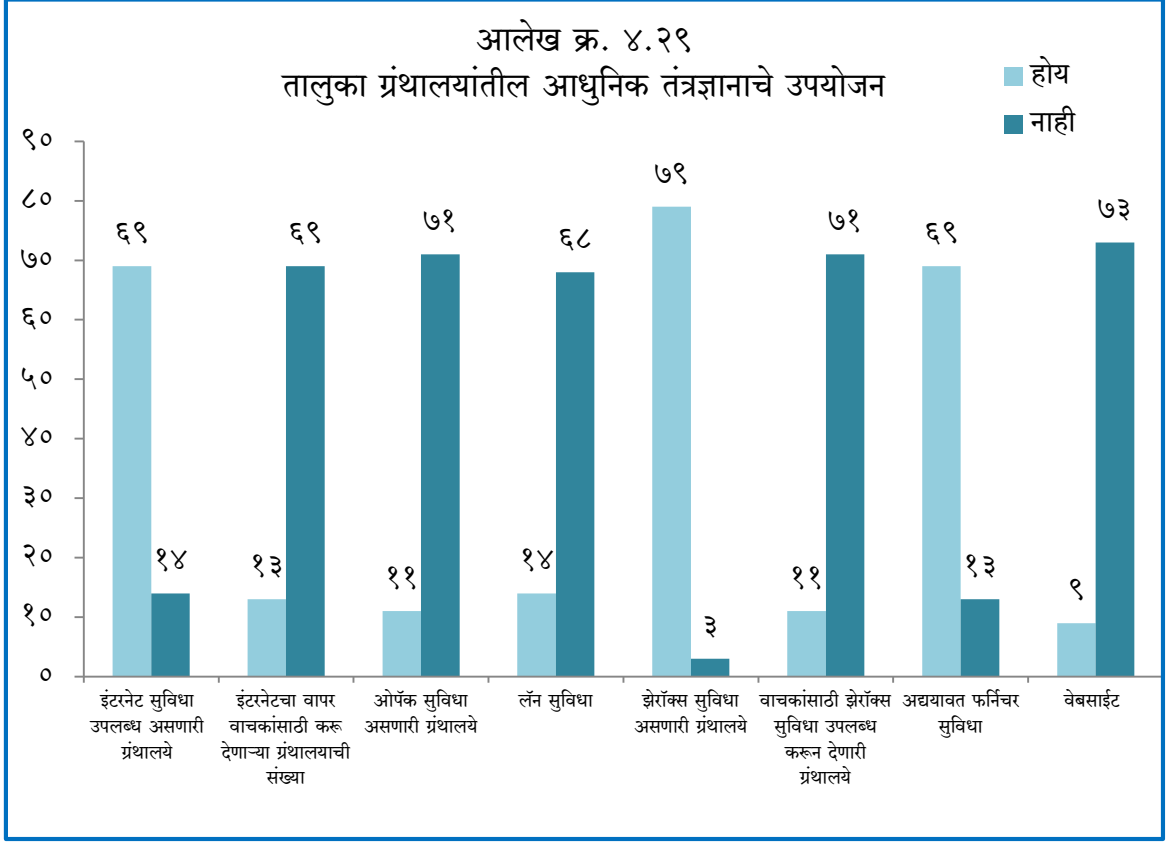
ग्रंथालयांत दरवर्षी नवीन वाचन साहित्याची भर पडत असते. संगणकीकरणासाठी संगणकांची संख्या वाढल्यास व तंत्रकुशल मनुष्यबळाची उपलब्धता झाल्यास संगणकीकरणाचे कार्य पूर्णत्वास जाईल. कल्याण येथील सार्वजनिक वाचनालयाने त्यांच्या ग्रंथालयातील दुर्मिळ ग्रंथांचे संगणकीकरण पूर्ण केले आहे.

प्रश्न क्र. ३२ व ३८ ची निवड आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या उपयोजनासंदर्भात माहिती मिळविण्यासाठी केली होती. यातून मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे आहे

तक्ता क्र. ४.४६

तालुका ग्रंथालयांतील आधुनिक तंत्रज्ञानाचे उपयोजन

| क्र. | सुविधा | होय | शे.प्रमाण | नाही | शे.प्रमाण |
|------|---|-----|-----------|------|-----------|
| १ | इंटरनेट सुविधा उपलब्ध असणारी ग्रंथालये | ६८ | ८२.९२% | १४ | १७.०७% |
| २ | इंटरनेटचा वापर वाचकांसाठी करू देणाऱ्या ग्रंथालयाची संख्या | १३ | १५.८५% | ६९ | ८४.१५% |
| ३ | ओपॅक सुविधा असणारी ग्रंथालये | ११ | १३.४१% | ७१ | ८६.५९% |
| ४ | लॅन सुविधा | १४ | १७.०७% | ६८ | ८२.९३% |
| ५ | झेरॉक्स सुविधा असणारी ग्रंथालये | ७९ | ९६.३४% | ३ | ३.६६% |
| ६ | वाचकांसाठी झेरॉक्स सुविधा उपलब्ध करून देणारी ग्रंथालये | ११ | १३.४१% | ७१ | ८६.५९% |
| ७ | अद्ययावत फर्निचर सुविधा | ६९ | ८४.१४% | १३ | १५.८५% |
| ८ | वेबसाईट | ९ | १०.९८% | ७३ | ८९.०२% |



उपरोक्त तक्ता क्र. ४.४६ व आलेख क्र. ४.२९ वरून असे दिसते की, आधुनिक काळाची गरज, वाचकांची गरज व मागणी पूर्ण करण्याच्या उद्देशाने ६८(८२.९३%) ग्रंथालये इंटरनेटची सुविधा उपलब्ध करून देताना दिसतात तर १४ (१७.०७%) ग्रंथालये इंटरनेटची सुविधा उपलब्ध करून देत नाहीत. १३(१५.८५%) ग्रंथालये ग्रंथालयात येणाऱ्या वाचकांसाठी इंटरनेटची सुविधा उपलब्ध करून देतात तर ६९ (८४.१५%) ग्रंथालये वाचकांसाठी इंटरनेटची सुविधा उपलब्ध करून देत नाहीत. तसेच ७९(९६.३४%) ग्रंथालयात झेरॉक्सची सुविधा उपलब्ध आहे तर ३ (३.६६%) ग्रंथालयात झेरॉक्सची सुविधा उपलब्ध नाही. ११(१३.४१%) ग्रंथालये ग्रंथालयात येणाऱ्या वाचकांसाठी झेरॉक्सची सुविधा उपलब्ध करून देतात तर ७१ (८६.५९%) ग्रंथालये ग्रंथालयात येणाऱ्या वाचकांसाठी झेरॉक्सची सुविधा उपलब्ध करून देत नाहीत. ग्रंथालयीन वेबसाईट निर्माण करणे आणि अद्ययावत ठेवण्यासाठी कुशल मनुष्यबळ व आर्थिक निधीची उपलब्धता न होणे या कारणामुळे संशोधनासाठी निवडलेल्या अधिकतम सार्वजनिक जिल्हा ग्रंथालयांमध्ये वेबसाईटचे (संकेतस्थळ) काम पूर्णत्वास गेलेले दिसत नाही.

९(१०.९८%) ग्रंथालयांमध्ये वेबसाईट सुविधा उपलब्ध आहे तर उर्वरित ७३(८९.०२%) ग्रंथालयांमध्ये वेबसाईटची सुविधा उपलब्ध नसलेली दिसून येते. संशोधनासाठी निवडलेल्या ग्रंथालयांपैकी ११(१३.४१%) ग्रंथालयांमध्ये ओपॅक सुविधा उपलब्ध आहे तर ७१ (८६.५९%) ग्रंथालये ही सुविधा देत नाहीत. १४ (१७.०७%) ग्रंथालये लॅन सुविधा पुरवितात तर ६८ (८२.९३%) ग्रंथालयांमध्ये लॅन सुविधा उपलब्ध नाही. तसेच ६९ (८४.१५%) ग्रंथालये अद्ययावत फर्निचरने सुसज्ज आहेत तर १३(१५.८५%) ग्रंथालयांमध्ये ही सुसज्जता नसल्याचे दिसून आले.

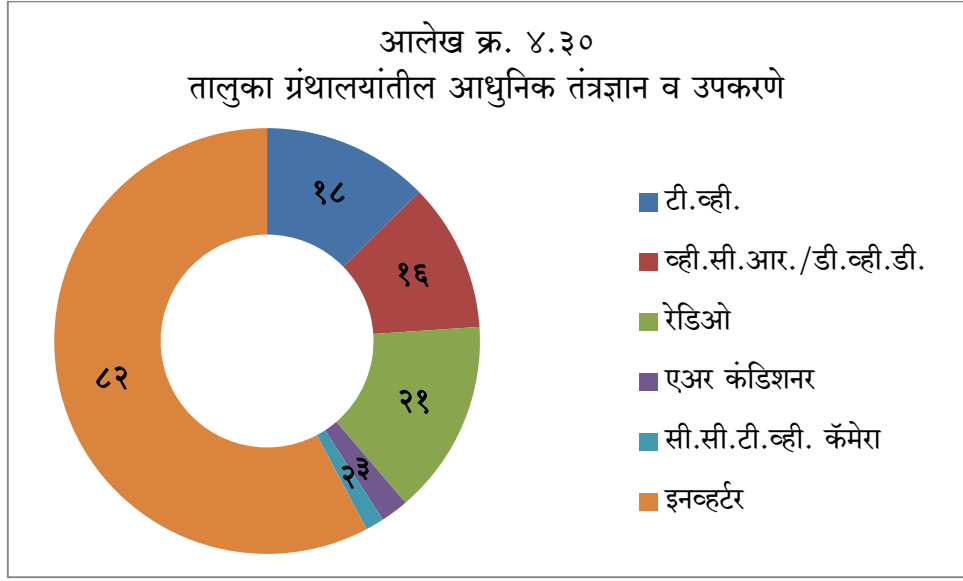
इंटरनेट कॅफे आणि मोबाईलद्वारे इंटरनेट सुविधा सर्वसामान्य लोकांना सहजपणे उपलब्ध होत आहे. ओपॅक आणि लॅन सुविधा वाचकांना न मिळण्यामागे सार्वजनिक ग्रंथालयातील संगणकांची मर्यादित संख्या तसेच कुशल मनुष्यबळाची अनुपलब्धता हे कारण दिसून येते.

प्रश्न क्र. ३९ हा ग्रंथालयातील उपलब्ध साधन सुविधा व उपकरणांची माहिती संदर्भात विचारण्यात आला होता. या संदर्भात मिळालेली माहिती पुढीलप्रमाणे आहे.

तक्ता क्र. ४.४७

तालुका ग्रंथालयांतील आधुनिक तंत्रज्ञान व उपकरणे

| अ.क्र. | उपकरणाचे नाव | ग्रंथालय संख्या | शेकडा प्रमाण |
|--------|-------------------------|-----------------|--------------|
| १ | टी.व्ही. | १८ | २१.९५% |
| २ | व्ही.सी.आर./डी.व्ही.डी. | १६ | १९.५१% |
| ३ | रेडिओ | २१ | २५.६१% |
| ४ | एअर कंडिशनर | ३ | ३.६६% |
| ५ | सी.सी.टी.व्ही. कॅमेरा | २ | २.४४% |
| ६ | इनव्हर्टर | ८२ | १००% |



वरील तक्ता क्र. ४.४७ व आलेख क्र. ४.३० वरून असे दिसून येते की, एकूण ३१ ग्रंथालयांपैकी १६ (२१.९५%) ग्रंथालयांत टी.व्ही. उपलब्ध आहे. व्ही.सी.आर./डी.व्ही.डी.ची सुविधा १६ (१९.५१%) ग्रंथालयांत उपलब्ध करून दिली आहे. एकूण ८२ ग्रंथालयांपैकी २१ (२५.६१%) ग्रंथालयांमध्ये वाचकांसाठी रेडिओची सुविधा आहे. एअरकंडिशनर ३ (३.६६%) ग्रंथालयांत बसविलेला आहे. सी.सी.टी.व्ही. कॅमेरा एकूण ८२ ग्रंथालयांपैकी २ (२.४४%) ग्रंथालयांत आहे तर संशोधनासाठी निवडलेल्या सर्वच म्हणजे ८२ (१००%) ग्रंथालयांमध्ये इनव्हर्टरची सुविधा उपलब्ध करून देण्यात आली आहे.

आजच्या काळात टी.व्ही. घराघरात पोहोचलेला आहे. मोबाईल व इंटरनेटच्या सुविधेमुळे टी.व्ही., व्ही.सी.आर., डी.व्ही.डी. इ.ची आवश्यकता कमी झालेली आहे. त्यामुळे त्यांची कमतरता जाणवत नाही. एअर कंडिशनर व सीसीटीव्ही कॅमेरा ही उपकरणे खरेदी व देखभालीच्या दृष्टीने खर्चिक आहेत. त्यामुळे केवळ ३.६६% ग्रंथालयांमध्ये एअर कंडिशनर आणि २.४४% ग्रंथालयांमध्ये सीसीटीव्ही कॅमेरा कार्यरत आहे.

विद्युत भारनियमनाच्या सततच्या अडचणीमुळे आणि राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठानाकडून इनव्हर्टर खरेदीसाठी आर्थिक साहाय्य मिळत असल्यामुळे इनव्हर्टरची उपलब्धता १००% ग्रंथालयांमध्ये असलेली दिसून येते.

सारांश :

सदर संशोधनातील महत्त्वाचा टप्पा हा सांख्यिकीय विश्लेषणाचा असल्याने संशोधनासाठी निवडलेल्या ३१ जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालये आणि ८२ तालुका सार्वजनिक ग्रंथालयांचे सर्वेक्षण करून तेथील ग्रंथपालांकडून जिल्हा ग्रंथालये व तालुका ग्रंथालयांसाठी तयार केलेल्या प्रश्नावली भरून घेतल्या. सदर प्रश्नावलींना प्राप्त झालेल्या प्रतिसादाप्रमाणे या प्रकरणात जिल्हा व तालुका ग्रंथालयांची माहिती सविस्तरपणे तक्ता व आलेख स्वरूपात मांडली आहे. प्रतिसादकांनी दिलेल्या प्रतिसादामुळे प्रत्येक प्रश्नाचे सांख्यिकीय विश्लेषण करता येणे शक्य झाले. त्यानुसार जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालये व तालुका सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या ग्रंथपालांकडून भरून घेतलेल्या प्रश्नावलीतील प्रत्येक प्रश्नाच्या मिळालेल्या प्रतिसादाप्रमाणे तक्त्याच्या स्वरूपात आकडेवारीची मांडणी करून बार ग्राफ, पाय ग्राफ, लाइन ग्राफ इ. आलेखांच्या मदतीने विश्लेषण केले आहे.

प्रकरण पाचवे
आदर्श ग्रंथालयासाठीचे प्रारूप

प्रकरण ५

आदर्श ग्रंथालयासाठीचे प्रारूप

| अ.क्र. | तपशील | पृष्ठ क्र. |
|--------|--|------------|
| ५.१. | प्रस्तावना | २२० |
| ५.२. | ग्रंथालयाची जागा | २२० |
| ५.३. | ग्रंथालयाची इमारत | २२१ |
| ५.४. | ग्रंथालयाची रचना व आंतरव्यवस्था | २२६ |
| ५.५. | ग्रंथालयाचा ग्रंथपाल आणि ग्रंथालय कर्मचारी | २३१ |
| ५.६. | वाचन साहित्यसंग्रह | २३२ |
| ५.७. | ग्रंथालयीन सेवा व विभाग | २३७ |
| ५.८. | सार्वजनिक ग्रंथालयाने वाचक वृद्धीसाठी राबवायचे उपक्रम व कार्यक्रम | २४५ |
| ५.९. | ग्रंथालय विस्तार योजना | २४६ |
| ५.१०. | सार्वजनिक ग्रंथालये आणि माहिती तंत्रज्ञानाचा स्वीकार | २४८ |
| | सारांश | २५६ |
| | संदर्भसूची | २५७ |

प्रकरण ५ वे

आदर्श ग्रंथालयासाठीचे प्रारूप

५.१. प्रस्तावना :

“नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्र इह विद्यते” ज्ञानासारखे पवित्र या जगात दुसरे काही नाही. भगवद्गीतेतील हा श्लोक प्राचीन काळी जेवढा सत्य मानला गेला, तेवढाच आजच्या आधुनिक युगातही सत्य आहे.

ग्रंथाचे आलय म्हणजे ग्रंथालय असा ग्रंथालयाचा अर्थ असला तरी काळाच्या ओघात ग्रंथालयाची कल्पना ही सतत बदलत गेलेली आहे व आज ग्रंथालयाचे कार्य हे केवळ ग्रंथांपुरते मर्यादित राहिलेले नसून ज्ञानोपासनेच्या सर्व साधनांचा त्यात समावेश केला जातो. आकाशवाणी, दूरचित्रवाणी, चित्रपट, दृकश्रुती, व्हिडीओ टेप्स, ध्वनिमुद्रिका, फिती आणि कॉम्प्युटर व इंटरनेट ज्ञानसुद्धा ग्रंथालयात उपलब्ध व्हावे अशी आजच्या सार्वजनिक ग्रंथालयांकडून अपेक्षा केली जाते आहे.

सार्वजनिक ग्रंथालयांचे कार्य इतर प्रकारच्या ग्रंथालयांपेक्षा बरेच व्यापक स्वरूपाचे असते. हे कार्य या ग्रंथालयांना योग्यप्रकारे करता येण्यासाठी त्यांना मुलभूत सोयी-सुविधांची अनुकूलता असणे आवश्यक असते. या सोयी-सुविधांची अनुकूलता जेवढी अधिक तेवढा या ग्रंथालयाचा वापर अधिक होतो.

ज्याप्रमाणे ग्रंथालयाची कल्पना बदललेली आहे, त्याप्रमाणे वाचकांचीही कल्पना बदललेली आहे. केवळ ग्रंथ वाचणाराच नव्हे, तर या सर्व आधुनिक साधनांनी ज्ञान मिळवू इच्छिणारा वाचक आज सार्वजनिक ग्रंथालयात येत आहे. त्यादृष्टीने आधुनिक काळाला साजेसे आदर्श ग्रंथालय प्रारूप पुढीलप्रमाणे असावे.

५.२. ग्रंथालयाची जागा :

सार्वजनिक ग्रंथालये ही ज्ञानदानाचे कार्य करणाऱ्या सेवाभावी संस्था आहेत. या संस्थेला आपले कार्य अनुकूल वातावरणात चांगल्या प्रकारे पार पाडता यावे म्हणून ग्रंथालयाची

जागा सभासदांच्या सोयीच्या दृष्टीने त्यांना तेथे सहज, विनासायास पोहोचता येईल अशा गावाच्या मध्यवर्ती ठिकाणी असावे. वाचकांना ग्रंथालयात बसून निवांतपणे वाचन करता यावे म्हणून ग्रंथालयाच्या ठिकाणी धूळ, धूर व आवाज यांचा उपद्रव नसावा. जागेची निवड करताना ग्रंथालय चालकांनी ग्रंथालय ही वर्धिष्णू संस्था आहे, तिची वाढ होत राहणार आहे हे लक्षात ठेवायला हवे. अपुऱ्या जागेमुळे भविष्यात ग्रंथालयांची वाढ खुंटते. म्हणून ग्रंथालय समितीने ग्रंथालयीन धोरण आणि गरजांनुसार प्रचलित मानकांप्रमाणे एकूण किती जागा लागेल याची माहिती वास्तू विशारदाला द्यायला हवी. ग्रंथालयाच्या आजूबाजूचा परिसर शांततापूर्ण असावा भोवताली हिरवी झाडे, फुलांची बाग असल्यास वातावरण प्रसन्न राहते.

५.३. ग्रंथालयाची इमारत :

सार्वजनिक ग्रंथालय इमारतीचा आराखडा तयार करताना प्रामुख्याने दोन दृष्टीकोनांतून विचार करावा लागेल.

१. बाह्य परिसराबाबत विचार : यामध्ये ग्रंथालयाचे आवार, त्याच्या आसपासच्या परिसरातील वातावरण, हवामान वैगरे.
२. अंतर्गत बाबींच्या नियोजनाबाबत विचार: यामध्ये ग्रंथसंग्रहाचा आकार, त्याच्या वाढीचे स्वरूप, दैनंदिन वाचकांची व उपयोगकर्त्यांची संख्या, ग्रंथालयाच्या कार्याचे स्वरूप, अपेक्षित वार्षिक वाढीचे स्वरूप वैगरे.
३. ग्रंथपालाने व व्यवस्थापनाने ग्रंथसंग्रह, वाचनव्यवस्था यासंदर्भातील जागेसाठी प्रचलित मानकांप्रमाणे किती व्यवहार्य जागा लागेल याची कल्पना वास्तुतज्ज्ञाला दिली पाहिजे. वास्तुतज्ज्ञाने पुढील बाबींचा विचार करून इमारत आराखडा तयार करावा.
 १. ग्रंथालयाची ऐतिहासिक पार्श्वभूमी.
 २. ग्रंथसंग्रहाचा आकार व त्यातील अपेक्षित वाढ.
 ३. वाचक व उपयोगकर्त्यांची संख्या.
 ४. ग्रंथालयाचे उद्दिष्ट, कार्य, महत्व व समाजातील स्थान.
 ५. बांधकामासाठी वापरावयाचे अपेक्षित तंत्रज्ञान.
 ६. जागेचा आराखडा, पर्यावरण व प्रदुषण नियंत्रण.

७. ग्रंथपाल व ग्रंथालय कर्मचारी यांचे स्थान.
८. देणगीदार असल्यास त्यांच्या इच्छेनुरूप करावयाच्या गोष्टी.
९. योग्य प्रकाशव्यवस्था, अग्निशमन व्यवस्था, स्वच्छतागृह, सांडपाणी व्यवस्था.
१०. आराखडयामध्ये सुचवायचे बांधकामाचे टप्पे.

राज्यशासनाच्या मुख्य वास्तुशास्त्रज्ञांनी त्यांच्या वर्गनिहाय नमुना आराखडयामध्ये पुढीलप्रमाणे बांधकाम सुचविले आहे.

अ वर्ग ग्रंथाकरिता ५०० चौरस मीटर

ब वर्ग ग्रंथाकरिता २५६ चौरस मीटर

क वर्ग ग्रंथाकरिता ११० चौरस मीटर

ड वर्ग ग्रंथाकरिता ६२ चौरस मीटर

सार्वजनिक ग्रंथालयांसाठी अपेक्षित बांधकाम किती असावे याबाबत पाश्चिमात्य देशातील आकडेवारी पाहिली तर तेथील बांधकामासाठी एकूण लोकसंख्या या घटकास प्राधान्य दिल्याचे आढळते.^१

सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या इमारतींची उभारणी त्या ग्रंथालयांचे कार्य, त्यांची उद्दिष्टे लक्षात घेऊन करायला हवी. ग्रंथालयासाठी इमारत बांधताना ग्रंथालय चालकांनी वाचकांचा विचार करायला हवा. ग्रंथालयाच्या विविध कार्यांसाठी एकूण किती जागा लागेल याचाही विचार त्यांनी केला पाहिजे. हा विचार करताना ग्रंथालयाची एकूण सभासदसंख्या, साहित्यसंग्रह, ग्रंथालय कर्मचारी, ग्रंथालयाची विविध कार्ये, ग्रंथालयातील विविध विभाग इ. गोष्टी लक्षात घेतल्या पाहिजेत. ग्रंथालयाची इमारत लोकांना आकर्षित करून घेणारी, असायला हवी. ग्रंथालयाच्या विविध विभागांचा वापर करताना वाचकांना कोणताही अडथळा येणार नाही याची काळजी घ्यायला हवी. ग्रंथालयाचा दर्शनी भाग वाचकांना ग्रंथालयाकडे आकर्षित करेल असा असला पाहिजे. ग्रंथालयाच्या इमारतीचे प्रवेशद्वार सर्वांना दिसेल अशा ठिकाणी असावे या प्रवेशद्वारावर ग्रंथालयाच्या नावाचा फलक असावा.

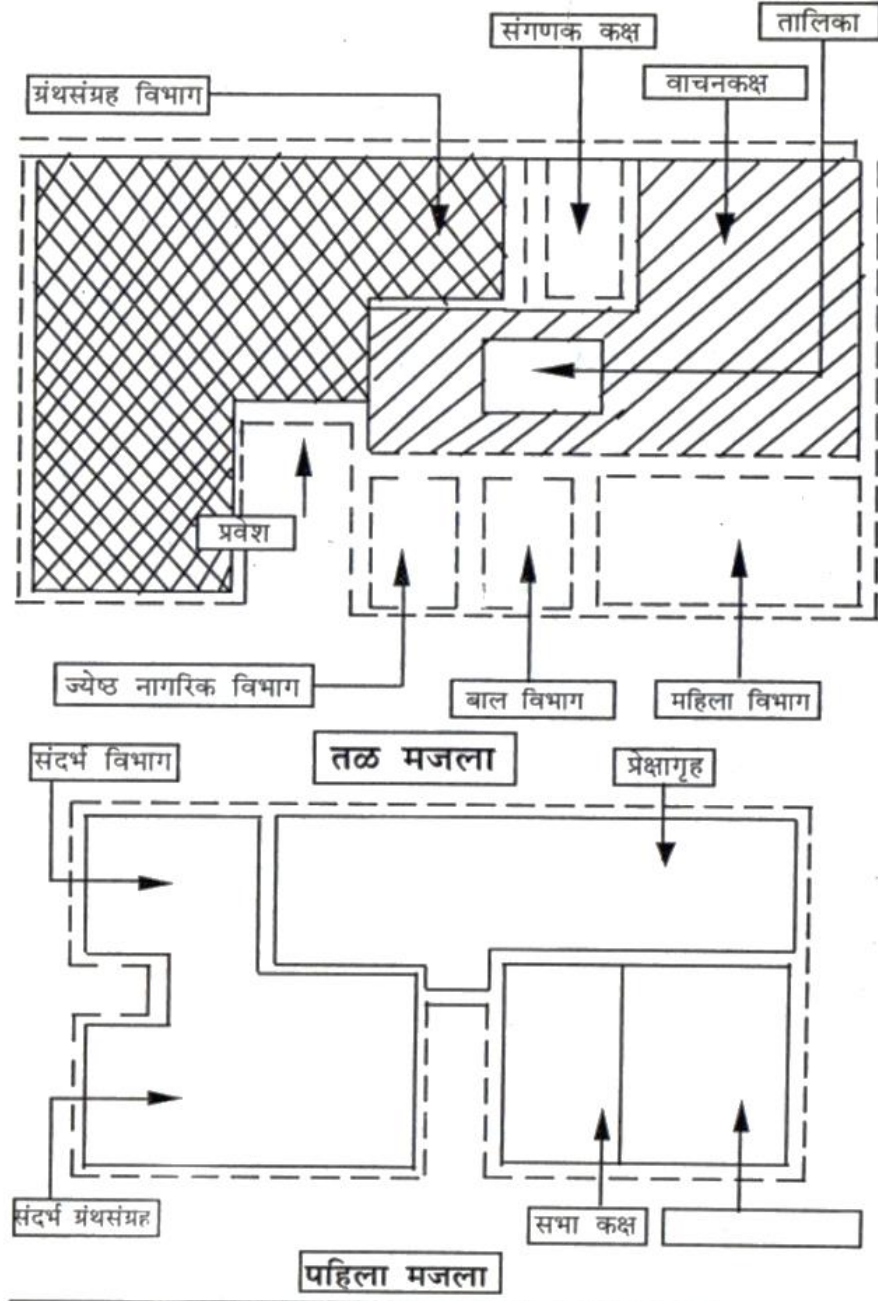
सार्वजनिक ग्रंथालय हे केवळ ग्रंथसंग्रह करण्याचे ठिकाण नाही तर ते एक सामाजिक व सांस्कृतिक केंद्र आहे. म्हणून सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या इमारतीची रचना त्या दृष्टीने करावी. सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या इमारतीचा उपयोग सांस्कृतिक, शैक्षणिक कार्यक्रम, प्रदर्शन, नाट्यप्रयोग, चित्रपट व इतर दृक-श्राव्य कार्यक्रम यासारख्या विविध उपक्रमासाठी करता आला पाहिजे. स्वतंत्र सभागृह असल्यास उत्तम.

भारतीय मानक ब्यूरोच्या सार्वजनिक ग्रंथालय मानक क्र. ५३३९ : २००३ नुसार इमारत वातानुकूलित नसल्यास या इमारतीची छतापर्यंत उंची १०.६ फुटांपेक्षा जास्त असणे आवश्यक आहे. या इमारतीत नैसर्गिक उजेड, हवा भरपूर असावी. तसेच इमारतीची वास्तू प्रदूषणविरहित वातावरणामध्ये बांधली जावी. बालविभाग, ज्येष्ठ नागरिक विभाग, तळमजल्यावर असावेत. म्हणजे त्यांना ग्रंथालयीन सेवा सहजपणे मिळवता येईल. ग्रंथालयीन भिंतीना सौम्य आल्हाददायक रंग असावा. त्याच पद्धतीने पडद्यांची निवड करावी. उपयुक्त व अद्यावत स्वरूपाचे फर्निचर असावे. बालविभाग आणि जेष्ठांसाठी सोयीचे होईल अशी त्यांची रचना करावी.

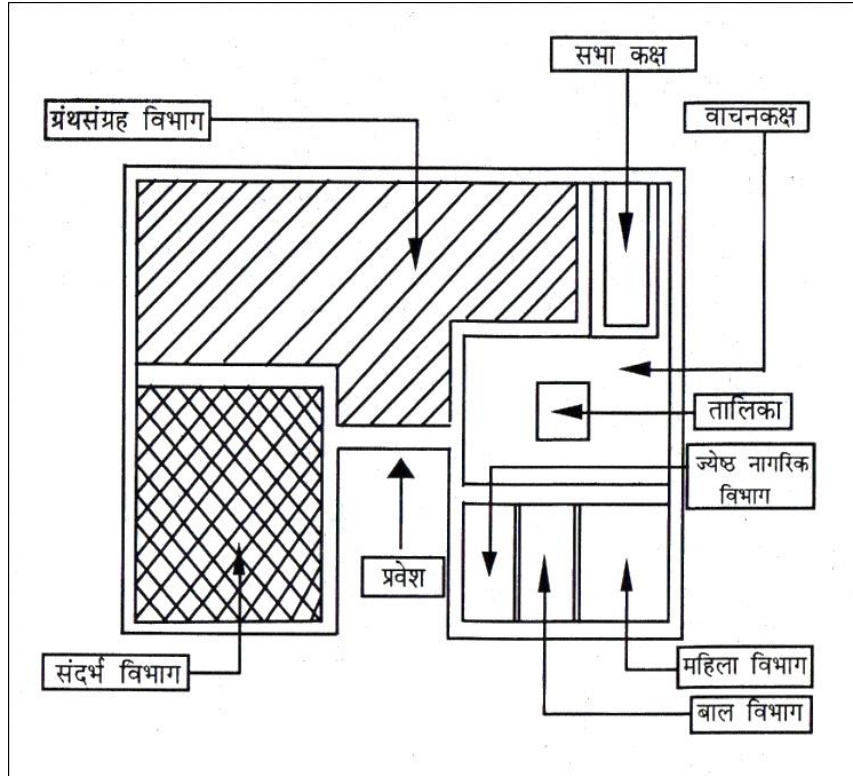
डॉ. रा.शं. बालेकर यांनी 'सार्वजनिक ग्रंथालय सद्यस्थिती आणि बदलते स्वरूप' या ग्रंथात सार्वजनिक ग्रंथालय इमारत आराखड्याचे श्रेणीनिहाय पुढीलप्रमाणे प्रारूप सुचविले आहे.^२

आकृती क्र. ५.१

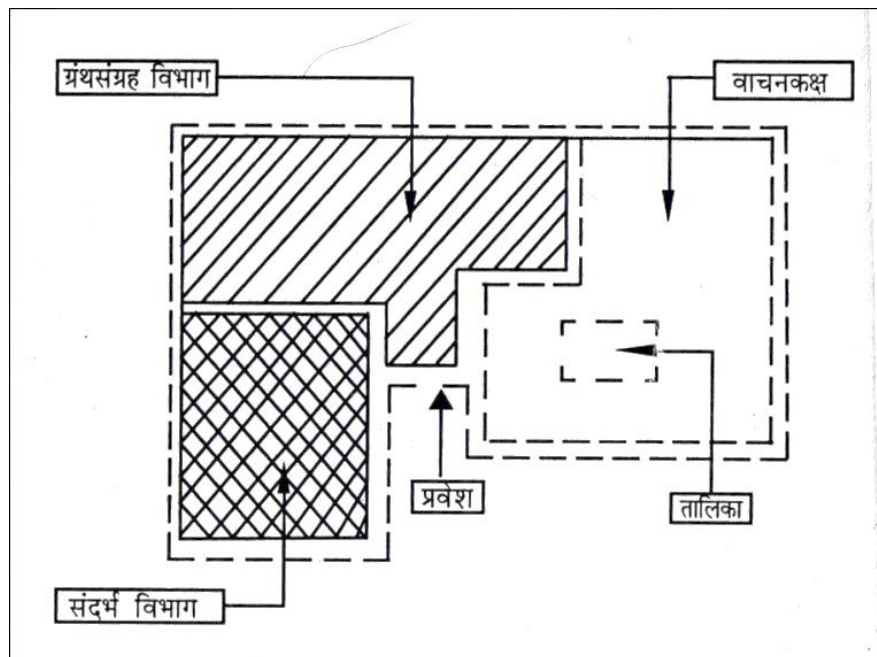
अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय



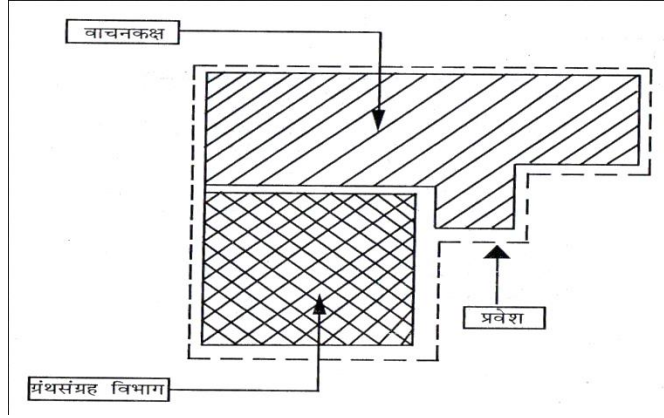
आकृती क्र.५.२
 ब वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय



आकृती क्र.५.३
 क वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय



आकृती क्र. ५.४
ड वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय



५.४. ग्रंथालयाची रचना व आंतरव्यवस्था :

ग्रंथालयासाठी जी जागा उपलब्ध असेल त्या जागेमध्ये ग्रंथालय चालकांनी आंतररचना योजनाबद्ध पद्धतीने करण्यास हवी. ग्रंथालयांना आपले कार्य कार्यक्षमतेने करता येण्यासाठी या विभागांची रचना कशाप्रकारे करायला हवी याचा विचार ग्रंथालय चालकांनी या विभागासाठी जागा उपलब्ध करून देताना करावा. ग्रंथालयाच्या प्रवेशद्वाराजवळ वाचकांसाठी एक तक्रारपेटी ठेवावी. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या इमारतींत किती जागा कुठल्या वापरासाठी राखून ठेवावी याचीही शिफारस भारतीय मानक ब्यूरोने केली आहे. ती अशी

| | | |
|--|---|----------------------------|
| ४० पुस्तकांसाठी अलमारीची जागा | - | १ मीटर |
| प्रत्येक वाचकासाठी जागा | - | २.३३ स्क्वे. मीटर |
| प्रत्येक व्यवस्थापकीय कर्मचार्यासाठी जागा | - | ५ स्क्वे. मीटर |
| प्रत्येक तांत्रिक काम करणाऱ्या कर्मचार्यासाठी जागा | - | ९ स्क्वे.मीटर ^३ |

१.ग्रंथसंग्रह कक्ष :

ग्रंथालयात एकूण किती ग्रंथ आहेत. या ग्रंथसंख्येत दरवर्षी अंदाजे किती वाढ होणार आहे हे लक्षात घेऊन ग्रंथकक्षेसाठी पुरेशा जागेची तरतूद करावयास हवी. ग्रंथांच्या सुरक्षिततेच्या दृष्टिने सूर्यप्रकाश ग्रंथांवर पडणार नाही, धूळ, धूर यांचा उपद्रव त्यांना होणार नाही अशी या विभागाची रचना असावी.

२. वाचनविभाग :

सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या चालकांनी ग्रंथालयाचे एकूण सभासद व सभासदांची संभाव्य वाढ लक्षात घेऊन या विभागाचा आकार निश्चित करायला हवा. वाचनविभाग ग्रंथ कक्षाच्या जवळ असावा. त्यामुळे वाचकांची वर्दळ कमी होते. वाचनविभागातील वातावरण शांत व वाचनासाठी पोषक असे असावे. वाचनविभागामध्ये पुरेसा नैसर्गिक प्रकाश येईल अशी त्याची रचना असावी. त्याचबरोबर कृत्रिम प्रकाशाचा योग्यप्रकारे वापर करावयास हवा.

३. ग्रंथपाल व ग्रंथालय सेवक विभाग:

ग्रंथपालाला ग्रंथालयाच्या दैनंदिन प्रशासनाची जबाबदारी विविध प्रकारची कामे करावी लागतात. ही कामे त्याला कार्यक्षमतेने करता येण्यासाठी ग्रंथालय चालकांनी ग्रंथपालाला स्वतंत्र कक्ष द्यायला हवा. ग्रंथालय सेवकांना ग्रंथालयाची विविध स्वरूपाची कामे करावी लागतात. ही दैनंदिन तांत्रिक कामे त्यांना योग्यप्रकारे करता यावीत म्हणून त्यांच्यासाठी स्वतंत्र जागा असणे आवश्यक असते.

४. देवघेव विभाग :

ग्रंथालय सेवांमध्ये ग्रंथ देवघेव ही महत्त्वाची सेवा आहे. ही सेवा वाचकांना चांगल्याप्रकारे उपलब्ध करून देता येण्यासाठी ग्रंथालयात स्वतंत्र देवघेव विभाग असणे आवश्यक असतो. या विभागात ग्रंथाची देवाण-घेवाण होत असल्यामुळे गर्दी होण्याची शक्यता गृहित धरून या विभागासाठी पुरेश्या जागेची सोय करावयास हवी. या विभागात संगणक, बारकोडिंगसाठी प्रिंटर आणि रीडरसारख्या साधनांसाठी जागा असावी.

५. नियतकालिक विभाग :

ग्रंथालयात ग्रंथाबरोबर नियतकालिके व वृत्तपत्रे हे महत्त्वाचे साहित्य असते. सार्वजनिक ग्रंथालयांचे वाचक या साहित्याचा सर्वाधिक वापर करतात. या साहित्याचा वापर वाचकांना योग्य प्रकारे करता येण्यासाठी ग्रंथालयात या साहित्यासाठी स्वतंत्र विभाग असायला हवा. या विभागात नियतकालिकांच्या व वृत्तपत्रांच्या प्रदर्शनी रॅक्ससाठी जागा असावी.

६. ग्रंथदुरुस्ती विभाग :

ग्रंथालये ग्रंथबांधणीचे काम व्यावसायिक बांधणीकाराकडून करून घेतात पण ग्रंथालयांतच दुरुस्ती करता येतील अशी जी पुस्तके असतात त्याची दुरुस्ती ग्रंथालयातच केली जाते. त्याकरिता ग्रंथालयात ग्रंथदुरुस्तीसाठी स्वतंत्र विभाग असायला हवा.

७. सभागृह :

सार्वजनिक ग्रंथालय ही एक सामाजिक संस्था असल्यामुळे ती व्याख्याने, चर्चासत्रे, प्रदर्शने या सारखे विविध प्रकारचे समाजोपयोगी उपक्रम आयोजित करित असते. हे उपक्रम व्यवस्थितरित्या पार पाडता येण्यासाठी आणि ग्रंथालयाला बैठका, सभा घेता येण्यासाठी छोटे सभागृह, प्रदर्शनी हॉल आणि इतर सोयी उपलब्ध करून द्यायला हव्यात. या सभागृहात वाचकांसाठी/विद्यार्थ्यांसाठी दृक-श्राव्य माध्यमांद्वारे विविध कार्यक्रम आयोजित करता येतात, त्यासाठी प्रोजेक्टरची व्यवस्था असावी.

जिल्हा ग्रंथालयाचा विस्तार व्यापक असून या ग्रंथालयाकडे स्वतःचे प्रशस्त व सोई सुविधांनी युक्त सभागृह असणे गरजेचे आहे. त्यामुळे विविध सांस्कृतिक उपक्रमांना हक्कांचे व्यासपीठ मिळते. म्हणून जिल्हा ग्रंथालयांचे सभागृह व नाट्यगृह असावयास हवे. सार्वजनिक ग्रंथालय, नाशिक आणि श्री. हिराचंद नेमचंद वाचनालय, सोलापूर ह्यांचे प्रशस्त सभागृह आणि नाट्यगृह एम्पीथेटर कार्यरत आहे ही बाब इतर ग्रंथालयांसाठी अनुकरणीय आहे.

८. ग्रंथालयातील फर्निचर आणि उपस्कर :

ग्रंथालय इमारतीला जेवढे महत्त्व आहे. तेवढेच अधिक महत्त्व ग्रंथालयातील फर्निचर व इतर साहित्याला आहे. ग्रंथालयातील कपाटे, टेबले, खुर्च्या, ग्रंथ देवघेवीचा काऊंटर आणि इतर फर्निचर आकर्षक, मजबूत आणि उपयुक्त असायला हवे. “भारतीय मानक ब्युरोने ISI 829, ISI 883 आणि IS4 116 या मानकांमध्ये ग्रंथालयामधील फर्निचरसाठी शिफारस केली आहे.”^४

फर्निचर यामध्ये ग्रंथसंग्रहणासाठी उपयोगात आणले जाणारे साहित्य जसे कपाट, रॅक, बुक केस इत्यादी, वाचन कक्षातील टेबल, खुर्च्या, वृत्तपत्र स्टँड, नियतकालिक प्रदर्शन रॅक, देवघेव काऊंटर, सूचना फलक वैगरे यांचा समावेश होतो.

उपस्कार यामध्ये तालिकापेटी, झेरॉक्स मशीन, टंकलेखन यंत्रे, टेपरेकॉर्डर, दूरदर्शन संच, टेलिफोन, टेलेक्स, फॅक्स मशीन, दृक-श्राव्य ध्वनिफिती, अग्निशमन साधने, वातानुकूलित यंत्रणा, संगणकप्रणाली यांचा समावेश होतो. यात आधुनिक तंत्रज्ञानामुळे विकसित झालेली सर्व साधने येतात.

९. कपाटे-अलमाच्या :

ग्रंथालयाला ग्रंथसंग्रहासाठी, नियतकालिकांच्या बांधणी अंकासाठी आणि इतर साहित्य ठेवण्यासाठी बऱ्याच कपाटांची आणि अलमाच्यांची (रॅक्स) गरज असते. ग्रंथालयात लोखंडी कपाटांचा वापर अधिक प्रमाणात केला पाहिजे. कारण ती कपाटे मजबूत असतात आणि त्यांच्यामुळे किटकांचा उपद्रव टाळता येतो. आज निरनिराळ्या आकाराची, विविध प्रकारची दुहेरी काचेची व लोखंडी कपाटे सहज उपलब्ध होऊ शकतात. त्याव्यतिरिक्त आज सरकते शेल्फ उपलब्ध होत आहेत. त्या कपाटांचा वापर केला तर जागेचीही बचत होते. टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे, गुलटेकडी येथील विद्यापीठ ग्रंथालयामध्ये या पद्धतीचा शेल्फचा उत्तम वापर केला आहे. ग्रंथालयातील बालविभागात बालकांना ग्रंथ सहज दिसतील तसेच हाताळता येईल म्हणून कमी उंचीची कपाटे घेणे आवश्यक आहे.

१०. टेबल-खुर्च्या :

सार्वजनिक ग्रंथालयात मोठ्या प्रमाणात वाचकवर्ग येत आहे. वाचकांना ग्रंथालयात बराच वेळ बसून वाचन करायचे असल्यामुळे त्यांना त्रास होणार नाही अशा टेबल-खुर्च्या ग्रंथालयाच्या वाचनकक्षामध्ये असाव्यात. आज प्लॅस्टिकच्या तसेच लाकडाच्या विविध प्रकारच्या, आकाराच्या खुर्च्या उपलब्ध आहेत त्याची निवड ग्रंथालयांनी करावी. बालविभागातील बालकांसाठी त्यांना सोयीस्कर होईल अशा लहान आकाराच्या खुर्च्या व टेबले वापरावीत. लाकडी, खुर्च्या वापरल्यास पर्यावरणपूरक - आरोग्यास हितकारक ठरतील.

११. ग्रंथ देवघेव काऊंटर :

कोणत्याही ग्रंथालयातील ग्रंथ देवघेव विभाग सर्वात अधिक गर्दीचा आणि महत्त्वाचा विभाग असतो. ग्रंथ देवघेव करण्यासाठी लागणाऱ्या काऊंटरचा आकार ग्रंथालयाच्या वाचकांची

संख्या लक्षात घेऊन ठरवावा. या काऊंटरवर वाचकांना ग्रंथ देण्यासाठी आणि त्यांनी परत आणलेले ग्रंथ ठेवण्यासाठी तसेच पूरक संगणकीय सामग्रीसाठी पुरेशी जागा असावी.

१२. नियतकालिकांच्या रॅक्स :

ग्रंथालयातील नियतकालिके वाचकांच्या दृष्टीस पडावी, त्यांना ती सहज वाचता यावी म्हणून ती ठेवण्यासाठी ग्रंथालयात कप्पे असलेले रॅक्स असावेत. या रॅक्सच्या आतल्या बाजूला जुने अंक व पुढच्या बाजूला नवीन अंक ठेवण्यासाठीची सोय असावी.

१३. वृत्तपत्रांसाठी स्टॅंडस् :

वाचकांना वृत्तपत्रे सहज वाचता यावीत म्हणून ती ठेवण्यासाठी स्वतंत्र स्टॅंडस् तयार करून घ्यायला हवेत. भिंतीला किंवा उभ्या स्टॅंडला लावलेल्या उतरत्या फळीवर लाकडी किंवा लोखंडी पट्टीच्या साहाय्याने वृत्तपत्रे ठेवल्यास ती वाचकांना वाचता येतात. वृत्तपत्रांची अक्षरे छोटी असतात त्यामुळे पुरेसा, उजेड राहिल अशी जागा निवडावी.

१४. इतर साधनसामग्री :

ग्रंथालयासाठी पुढील साधन सामग्रीची गरज असते ती ग्रंथालयात असणे आवश्यक आहेत.

- प्रतिलिपी काढण्याचे फोटोकॉपी यंत्र
- ग्रंथालयात ग्रंथांची ने आण करण्यासाठी ग्रंथढकल गाडी (ट्रॉली)
- नव्याने आलेली पुस्तके प्रदर्शित करण्यासाठी काचफलक, ग्रंथप्रदर्शनासाठी रॅक्स
- सूचना फलक
- तक्रार पेटी व सूचनापेटी
- कात्रणे, पुस्तिका ठेवण्यासाठी व व्हर्टिकल फाइल्ससाठी कपाटे
- संगणक व संगणकाच्या ट्रॉली
- सीडी/डीव्हीडीज ठेवण्यासाठी काचेची कपाटे.
- नकाशे व तत्सम साहित्य ठेवण्यासाठी योग्य कपाटे असावीत
- विविध प्रकारची दृक-श्राव्य साधने ठेवण्यासाठी आधुनिक फर्निचर असावे.

५.५. ग्रंथालयाचा ग्रंथपाल आणि ग्रंथालय कर्मचारी :

सार्वजनिक ग्रंथालयाला आपल्या वाचकांना विविध प्रकारच्या सेवा द्याव्या लागतात या सेवा आत्मीयतेने आणि सेवाभावी वृत्तीने देण्यासाठी तसेच ग्रंथालयाचे व्यवस्थापन व प्रशासन योग्यप्रकारे करता येण्यासाठी प्रशिक्षित, कार्यक्षम आणि कर्तव्यदक्ष ग्रंथपाल आणि इतर कर्मचाऱ्याची गरज असते.

१. ग्रंथपाल – वाचकांना आवश्यक असलेल्या विविध प्रकारच्या अत्याधुनिक ग्रंथालयसेवा उपलब्ध करून देण्याची जबाबदारी सार्वजनिक ग्रंथालयावर असते. ही जबाबदारी पार पाडता येण्यासाठी ग्रंथपालाजवळ बौद्धिक, व्यावसायिक आणि प्रशासकीय क्षमता असणे आवश्यक आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयात समाजाच्या निरनिराळ्या स्तरांतील भिन्न भिन्न अभिरूचीचे वाचक येत असतात. ग्रंथपालांनी कोणताही भेदभाव न करता सर्व वाचकांना निःपक्षपातीपणे वागणूक द्यायला हवी. वाचकांना संदर्भसेवा, माहितीसेवा देता येण्यासाठी त्यांना सर्व माहिती साधनांची उपयुक्तता व त्यांच्या वापराचे ज्ञान असले पाहिजे.

ग्रंथालयाचे व्यवस्थापन ग्रंथपालाच्या व्यावसायिक ज्ञानावर अवलंबून असते. सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या कार्याचे स्वरूप लक्षात घेता या ग्रंथालयांचे ग्रंथपाल ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्रातील पदवी किंवा पदव्युत्तर पदवीधारक (बी.लिब./एम.लिब.) असला पाहिजे. शिवाय त्याला संगणकाचे योग्य ज्ञान असणे गरजेचे आहे. त्याने ज्ञान क्षेत्रात घडणाऱ्या घटनांबद्दल, क्षेत्रांतील नवीन प्रवाहांबद्दल सदोदित जागरूक राहिले पाहिजे. अधिकाधिक लोकांनी ग्रंथालयाचा वापर करावा म्हणून ग्रंथपालांनी सतत प्रयत्नशील रहावे. वाचकांच्या समस्या समजून घेऊन ग्रंथालय समितीच्या नजरेस आणून त्या सोडविण्यासाठी ग्रंथालय कार्यकारिणीला उद्युक्त करणे हे ग्रंथपालांचे महत्त्वाचे काम असते. आज इंटरनेटमुळे दूरवरच्या वाचकांपर्यंत पोहोचून त्यांना सभासद करून घेणे सहज शक्य झाले आहे. फेसबुक, ब्लॉग, ट्विटर, व्हॉट्स अॅप इत्यादी माध्यमांमधून आपल्या सभासदांशी व्यक्तिगत संपर्क साधून प्रदर्शने व इतर कार्यक्रमांची माहिती वाचकांना देणे, ग्रंथालयाची स्वतःची वेबसाईट तयार करून त्यावर ग्रंथालयाची माहिती अद्ययावत ठेवणे इ. कार्ये आजच्या ग्रंथपालाने संगणकाच्या साहाय्याने करून जनसंपर्क वाढविणे अगत्याचे आहे.

२. ग्रंथालय कर्मचारी : कोणत्याही ग्रंथालयाच्या व्यवस्थापनात आणि दैनंदिन कामात ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांचा सहभाग फार महत्वाचा असतो. सार्वजनिक ग्रंथालयांना आपल्या वाचकांना विविध प्रकारच्या सेवा देण्यासाठी आणि आपली उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी निष्ठेने, तत्परतेने व सेवाभावी वृत्तीने काम करणाऱ्या प्रशिक्षित ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांची आवश्यकता असते. त्यांनी ग्रंथ आणि वाचक यांच्यामधील दुवा बनले पाहिजे.

ग्रंथालयांच्या स्वरूपामध्ये काळानुरूप बदल झाले आहेत. पण ग्रंथालय प्रमाणपत्र शिक्षणक्रमामध्ये व्हावे तसे आणि तेवढे बदल झालेले नाहीत. आज फारच तुरळक सार्वजनिक ग्रंथालयांतून ग्रंथालयशास्त्राचे पदवीधारक ग्रंथपाल काम करतात. या शिक्षणात बदल होणे ही काळाची गरज आहे. ग्रंथपालन शिक्षणातून खऱ्या अर्थाने व्यावसायिक ग्रंथपाल निर्माण व्हायला पाहिजेत. ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र अभ्यासक्रमामध्ये अभ्यासक्रम पूर्ण झाल्यावर विद्यार्थ्यांना विविध ग्रंथालयांत पाठवून अंतर्गत व्यावसायिक प्रशिक्षणाची सोय केली पाहिजे.

सार्वजनिक ग्रंथालये खऱ्या अर्थाने सार्वजनिक होण्यासाठी त्यांना कार्यक्षम, जाणकार ग्रंथपाल आणि ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांची गरज असते. ही गरज भागविण्यासाठी त्यांना अंतर्गत प्रशिक्षण देणे गरजेचे आहे. या प्रशिक्षणामुळे ग्रंथालय सेवांची गुणवत्ता वाढते. म्हणून प्रत्येक ग्रंथालयात प्रशिक्षणाची सोय असायला हवी. उत्तम सेवाकार्य करणाऱ्या सेवकांचा सत्कार - सन्मान झाल्याने सकारात्मक-जाणवा निर्माण होतात. ग्रंथालयीन वातावरणामध्ये उत्साह वाढतो.

५.६. वाचन साहित्यसंग्रह :

कोणत्याही ग्रंथालयाची गुणवत्ता त्या ग्रंथालयातील साहित्यसंपदेवर अवलंबून असते. ग्रंथालयातील साहित्य हे ग्रंथालयाची आधारशीलाच असते. सार्वजनिक ग्रंथालयात समाजाच्या वेगवेगळ्या थरांतील, व्यवसायातील, वयोगटातील माणसे येत असतात. त्यांच्या आवडी निवडी वेगवेगळ्या असतात. त्यांना हवे असलेले, त्यांच्या गरजा भागविणारे सर्व प्रकारचे वाचन साहित्य उपलब्ध करून देणे हे सार्वजनिक ग्रंथालयाचे प्रमुख उद्दिष्ट आहे. साहित्यसंग्रहाच्या सर्वसमावेशकतेवरून ग्रंथालयाची गुणवत्ता आजमावली जाते. सार्वजनिक ग्रंथालय हे खऱ्या

अर्थाने ज्ञानकेंद्र, माहितीकेंद्रे होण्यासाठी या ग्रंथालयाच्या साहित्यसंग्रहात पुढील प्रकारचे साहित्य असायला हवे.

१. ग्रंथ :

ग्रंथ हा ग्रंथालयाचा आत्मा आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयांनी आपल्या ग्रंथालयात चांगला ग्रंथसंग्रह निर्माण करण्याचे उद्दिष्ट डोळ्यापुढे ठेवले पाहिजे.

ग्रंथालयातील ग्रंथाची विपुलता व वैविध्यता यामुळे स्थानिक तसेच इतर प्रांतातूनही वाचक, अभ्यासक, संशोधक ग्रंथालयाकडे आकृष्ट होतात. जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालयाकडे जिल्ह्यातील लोकसूमह आणि अन्य ग्रंथालये आदराने पाहात असतात. त्यामुळे जिल्हा ग्रंथालयात विविध विषयावरील ग्रंथ, कोशवाङ्मय, सूची, नकाशे आणि वाचनसाहित्य विपुलतेने असावे. त्यांची जिल्हा ग्रंथालयासाठी किमान संख्या १,००,००० असावी. तालुका ग्रंथालयांसाठी ही संख्या किमान ७०, ००० असावी.

२. संदर्भग्रंथ :

समृद्ध संदर्भ ग्रंथसंग्रह हा कोणत्याही ग्रंथालयाचा आधार असतो. कारण ग्रंथालय सेवेची गुणवत्ता बरीचशी ग्रंथालयातील संदर्भग्रंथसंग्रहावर व ग्रंथालयातून दिल्या जाणाऱ्या संदर्भसेवेवर अवलंबून असते. सार्वजनिक ग्रंथालयांचे वाचक समाजाच्या विविध स्तरांतील, क्षेत्रांतील असतात त्यामुळे त्यांच्या माहितीच्या गरजा वेगवेगळ्या असतात या गरजा भागविता येण्यासाठी आवश्यक असलेले विविध विषयांवरील संदर्भग्रंथ सार्वजनिक ग्रंथालयांत असायला हवेत. संदर्भग्रंथांची रचना वाचकांना कोणतीही माहिती तात्काळ सुलभतेने शोधता येईल अशी असली पाहिजे. संदर्भग्रंथांतील माहिती अपेक्षित वाचकवर्गाला सहजतेने समजेल अशा पद्धतीने दिलेली असावी. संदर्भग्रंथ हे इतर ग्रंथांच्या तुलनेने वारंवार हाताळले जातात. त्यामुळे ते लवकर फाटण्याची शक्यता असते. म्हणून या ग्रंथांची बांधणी आणि कागदाच्या टिकारूपणाकडेसुद्धा लक्ष देणे आवश्यक आहे. मोठ्या प्रमाणात माहितीच्या प्रसारामुळे व संदर्भग्रंथांच्या किंमतीमुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांना सर्वच चांगले, उपयुक्त संदर्भग्रंथ आपल्या ग्रंथालयांत ठेवता येत नाहीत. त्यामुळे ग्रंथालय चालकांनी संदर्भग्रंथाचे महत्त्व व वाचकांची मागणी लक्षात घेऊन उपयुक्त संदर्भग्रंथांचा संग्रह वाढविण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. अभ्यासकांना संशोधनासाठी संदर्भग्रंथांची

उपलब्धता करून दिली पाहिजे. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या कार्याच्या दृष्टीने त्यांनी आपल्या वाचकांना संदर्भग्रंथांचा वापर करण्याची संधी प्राप्त करून दिल्यास या ग्रंथालयात मोठ्या प्रमाणात विद्यार्थी, अभ्यासक व संशोधक वर्ग आकर्षित होईल.

३. नियतकालिके :

नियतकालिके सातत्याने, नियमितपणे प्रसिद्ध होतात. वाचकांना हवी असलेली विविध विषयांवरील, घडामोडींवरील ताजी माहिती नियतकालिकांतून लवकर उपलब्ध करून देता येते. आजच्या ज्ञानविस्फोटाच्या काळात वाचकांना हवी असलेली माहिती उपलब्ध करून देण्यासाठी ग्रंथालयांत चांगली नियतकालिके असणे आवश्यक असते.

नियतकालिकांतून उपलब्ध होणारी माहिती ग्रंथाच्या माहितीपेक्षा बरीचशी अद्ययावत व नावीण्यपूर्ण असते. नियतकालिकांतील माहितीतील विविधता आणि व्यापकतेमुळे ग्रंथालयात नियतकालिके आवश्यक व उपयुक्त असतात. सार्वजनिक ग्रंथालयाचे वाचक विविध क्षेत्रांतील, व्यवसायांतील असतात. त्यांच्यात अभ्यासक व संशोधकही असतात. त्यांच्या विविध विषयांवरील माहितीच्या गरजा भागविण्यासाठी ग्रंथालयांत आवश्यक ती नियतकालिके असली पाहिजेत.

सार्वजनिक ग्रंथालयात बालवाचक येतात त्यांच्यासाठी चंपक, चांदोबा, कॉमिक्स व अन्य चित्रमय पुस्तके असावीत. ग्रंथालयात येणाऱ्या वाचकांमध्ये स्त्रियांचेही प्रमाण मोठे असते त्यांच्यासाठी खास आरोग्य, पाकशास्त्र व योगविषयक अंक असावेत. काही वाचक केवळ करमणूक म्हणून वाचतात. त्यांच्यासाठी कथा, विनोदी लेख, कविता, कादंबरी व नाटक इत्यादींची पुस्तके असावीत. स्पर्धा परीक्षांचा अभ्यास करणाऱ्यांसाठी चालु घडामोडींवरील मासिके, अंक, प्रश्नपत्रिका संच यांना वाढती मागणी आहे. आवश्यकतेनुसार त्याच्या जादा प्रती आणाव्यात. ग्रंथ व नियतकालिके खरेदी करत असताना ती केवळ मराठी भाषेतील न घेता हिंदी, इंग्रजी भाषेतीलही घ्यावी. याव्यतिरिक्त दिवाळी अंक हे वाचकांची आग्रही मागणी असलेले साहित्य आहे, खरेदीमध्ये यांचाही विचार अगत्याने करावा.

जिल्हा व तालुका अ वर्ग ग्रंथालयात येणाऱ्या वाचकांचे प्रमाण जास्त आहे. या ग्रंथालयाचा ५१ नियतकालिकांचा निकष आहे. परंतु वाचकांची वाढती संख्या, वाढती गरज

लक्षात घेऊन ग्रंथालयांनी १०० तरी नियतकालिके ग्रंथालयात घ्यावीत. या व्यतिरिक्त १०० दिवाळी विशेषांक ग्रंथालयात उपलब्ध करून द्यावेत. जुनी झालेली नियतकालिके व अंक ग्रंथालयाने रद्दी न काढता त्यातील उपयुक्त लेख वाचकांसाठी कात्रण काढून फाईलमध्ये ठेवणे गरजेचे आहे. जुनी झालेली नियतकालिके जवळच्या हॉस्पिटल मध्ये रूग्णांना, किंवा एखाद्या तुरुंगातील कैद्यांना वाचावयास द्यावीत.

४. वृत्तपत्रे :

वृत्तपत्रे ही दैनंदिन घडामोडींचा आरसा आहेत. कारण त्यांच्यामधून जगातील विविध प्रदेशात, विविध क्षेत्रांत घडणाऱ्या घटनांची अद्ययावत माहिती वाचकांना होत असते. वृत्तपत्रांच्या दैनंदिन वाचने वाचकांच्या सामान्यज्ञानात भर पडते. म्हणजेच वाचकांच्या विकासाला हातभार लावणारे वृत्तपत्र हे फार मोठे प्रभावी साधन आहे. रविवारच्या वृत्तपत्रांच्या पुरवण्या या विशेष महत्त्वाच्या आहेत. यातून येणारी खास सदरे, परीक्षणे कित्येकदा माहितीच्या दृष्टीने उपयुक्त ठरतात. त्यामुळे वृत्तपत्राला वाचकांची सर्वाधिक पसंती असते. वृत्तपत्रांचे महत्त्व लक्षात घेऊन सार्वजनिक ग्रंथालयांनी आपल्या वाचकांना चांगली वृत्तपत्रे उपलब्ध करून द्यायला हवी. भारत आणि महाराष्ट्रात विभिन्न भाषा, बोली बोलणारे विभिन्न संस्कृतीचे लोकसमूह राहतात. त्यामुळे ग्रंथालयात केवळ मराठी भाषेतीलच वृत्तपत्रे न ठेवता हिंदी, इंग्रजी व इतर स्थानिक भाषांतील वृत्तपत्रे ठेवली तर अधिकाधिक वाचकांना त्यांचा लाभ घेता येईल, वृत्तपत्रांना आजचे साहित्य नि उद्याची रद्दी असे संबोधले गेले असले तरी ती प्रासंगिक प्रश्नावर प्रकाशझोत टाकत असल्याने प्रत्येक ग्रंथालयात वाचकांसाठी कात्रणसंग्रह उपलब्ध करून दिल्यास वाचकांना तो उपयुक्त ठरेल.

सोलापूर येथील हिराचंद नेमचंद वाचनालयाने सोलापूर जिल्हयातील वृत्तपत्रांच्या जुन्या फाईल्स जतन केल्या आहेत. तसेच काही दैनिकांचे मायक्रोफिल्मींग करून ठेवलेले आहे.

५. हस्तलिखित ग्रंथ :

सार्वजनिक ग्रंथालयांनी आपला ग्रंथसंग्रह निर्माण करताना आणि तो वाढविताना केवळ मुद्रित ग्रंथापुरतीच आपली दृष्टी मर्यादित न ठेवता हस्तलिखित स्वरूपात जे ग्रंथ आहेत त्यांचाही संग्रह करण्याची दृष्टी बाळगली तर या दुर्मिळ ग्रंथांचे जतन होऊ शकते. ग्रंथालयाने आपल्या या

कार्याची माहिती त्यांच्या वार्षिक अहवालात दिल्यास आणि आवाहन केल्यास ज्यांच्या संग्रही दुर्मिळ ग्रंथ, हस्तलिखिते, पोथ्या, पुराणे, दोलामुद्रिते असतील ते लोक ग्रंथालयाकडे ती सुपूर्द करायला तयार होतील. म्हणूनच प्रकाशित ग्रंथाबरोबर ही जुनी ज्ञानसाधने संग्रहित करून ती वाचविण्याचे, त्यांचे संरक्षण करण्याचे आणि संशोधकांना ती उपलब्ध करून देण्याचे महत्त्वाचे कार्य सार्वजनिक ग्रंथालयांनी केले पाहिजे असे कार्य काही जिल्हा ग्रंथालयांनी पूर्ण केले आहे. त्यामुळे ते अनुकरणीय आहे. आज मोठ्या प्रमाणात सार्वजनिक ग्रंथालयात संगणकाचा वापर करून ग्रंथालयातील ग्रंथाचे संगणकीकरण केले जाते आहे. त्याचप्रमाणे हस्तलिखित ग्रंथांचेही संगणकीकरण (डिजिटलायझेशन) करणे गरजेचे झाले आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयांनी ते करावे.

हस्तलिखितांबरोबरच प्राचीन ताम्रपट, शिलालेख, कलाविष्कार, शस्त्रे व प्राचीन वस्तू यांचे जतन व संग्रहण करण्यासाठी सार्वजनिक वाचनालय, नाशिक या ग्रंथालयाने खास तळ मजल्यावर वस्तुसंग्रहालय स्थापन केले आहे. ही बाब प्रशंसनीय व अनुकरणीय आहे.

६. ग्रंथेत्तर साहित्य :

सार्वजनिक ग्रंथालयांना आपले सामाजिक कार्य योग्य प्रकारे करता यावे म्हणून त्यांच्या साहित्यसंग्रहात ग्रंथ, नियतकालिके, वृत्तपत्रांबरोबर कात्रणे, चित्रे, नकाशे, पुस्तिका, शासकीय प्रकाशने, यांसारख्या साहित्याद्वारे वाचकांना हवी असलेली माहिती तत्परतेने दिली पाहिजे. मुंबई फोर्ट येथील एशियाटिक लायब्ररीने परिसरातील प्राचीन लोकसंस्कृतीवर संशोधन करून उत्खननात मिळालेल्या वस्तूंचे योग्यप्रकारे जतन व संवर्धन केले आहे. यामुळे आपल्या गौरवशाली इतिहासाचा सार्थ अभिमान देशवासियांच्या मनात निर्माण होतो.

७. संगणकीय व दृक्श्राव्य साधने :

ग्रंथालयातील ज्ञानसाहित्य केवळ लिखित स्वरूपातच असते, हा विचार आता मागे पडला असून विज्ञान आणि तंत्रज्ञानाने निर्माण केलेल्या विविध प्रकारच्या दृक्श्राव्य तसेच संगणकीय साहित्याचा विचार आता ग्रंथालयांनी करणे गरजेचे आहे. आपल्या ग्रंथालयसेवेमध्ये सुधारणा करण्यासाठी नव्याने आलेल्या ग्रंथासोबत ध्वनिफिती, चित्रफिती, सीडीज्, डीव्हीडीज्, व्हिडीओ, स्लाईडस्, दूरदर्शन, आकाशवाणी यांसारख्या तांत्रिक साधनांचा अधिकाधिक वापर ग्रंथालयांनी केला पाहिजे.

ग्रंथ हे कोठेही सहज उपलब्ध होऊ शकणारे एक महत्त्वाचे ज्ञानसाधन आहे. पण ग्रंथाच्या काही मर्यादा आहेत, त्यामुळे संगणकीय साहित्य व दृक्श्राव्य साधने यांचा वापर करण्याची संधी आपल्या वाचकांना उपलब्ध करून द्यायला हवी. आज डीव्हीडीज् ह्या माहिती प्रसारणाचे अत्यंत सशक्त माध्यम ठरल्या असून त्या अत्यंत टिकाऊ तर आहेतच, त्याचबरोबर पुस्तके, नियतकालिके, डेटाबेसेस, चित्रपट, संगीत अशा अनेक गोष्टी यामध्ये साठवून ठेवता येतात. माहितीची साठवणूक करण्याची त्यांची क्षमता प्रचंड असून त्या ठेवण्यासाठी जागाही कमी लागते. शिवाय त्यांची सुलभपणे ने-आणही करता येते. आज कित्येक संदर्भग्रंथ, विश्वकोश, पुस्तके, डेटाबेसेस सी.डी. तसेच डी.व्ही. डी. वर उपलब्ध आहेत. सार्वजनिक ग्रंथालयातील उपलब्ध साहित्याचे संगणकीय माध्यमात परिवर्तन करणेही शक्य आहे. साहित्य संपदा हक्क कायद्याचे भान राखून या गोष्टी अमलात आणल्या पाहिजेत.

२१ व्या शतकातील तंत्रज्ञानात झालेल्या प्रगतीमुळे आजच्या सार्वजनिक ग्रंथालयांना आपल्या वाचकांच्या गरजा भागविण्यासाठी संगणकीय उपकरणांचा वापर करणे गरजेचे झाले आहे. या उपकरणांचा ग्रंथालयाच्या साहित्य संग्रहात समावेश असला पाहिजे.

५.७. ग्रंथालयीन सेवा व विभाग :

आज सार्वजनिक ग्रंथालये देत असलेल्या सेवा / सुविधांमध्ये काळानुसार होत जाणारा बदल तसेच सेवा देताना समाजातील विविध घटक ग्रंथालयांनी लक्षात घेणे गरजेचे आहे.

१. ग्रंथ देवघेव :

ग्रंथालयाच्या वाचकांना वाचायला हवे असतील ते ग्रंथ त्यांना उपलब्ध करून देणे हे ग्रंथालयाचे महत्त्वाचे कार्य असते. वाचकांना ग्रंथ देवघेव विभागात अधिक वेळ थांबावे लागू नये. म्हणून त्यांनी निवडलेले ग्रंथ त्यांना त्वरित नोंद करून घ्यायला हवेत. आज आधुनिक तंत्रज्ञानामुळे अंकीय ग्रंथालये आपले ई-साहित्य वाचकांना घरबसल्या संगणकांवर उपलब्ध करून देऊ शकतात. यामुळे वाचकांचा वेळ तर वाचतोच, त्याचबरोबर एक ग्रंथ एकाच वेळी हजारो वाचक वाचू शकतात.

सार्वजनिक ग्रंथालयांनी इतर ग्रंथालयांशी संबंध प्रस्थापित करून आपल्या जवळ नसलेले ग्रंथ दुसऱ्या ग्रंथालयातून मागवून सभासदांची गरज भागवावी. तसेच आपल्या ग्रंथालयातील ग्रंथ इतर ग्रंथालयांना पाठवून आंतरग्रंथालयीन देवघेवीला चालना देऊन ग्रंथालय सहकार वाढवावा. ग्रंथपालाने आंतर ग्रंथालयीन देवघेवीची नियमावली तयार करून ती ग्रंथालय समितीपुढे मांडून संमत करून घ्यावी.

२. संदर्भसेवा :

ग्रंथालयांच्या वाचकांना विविध विषयांवर हव्या असलेल्या माहितीचा शोध घेण्यासाठी आणि ती त्यांना उपलब्ध करून देण्यासाठी ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांनी त्यांना केलेले व्यक्तिगत सहाय्य म्हणजे संदर्भ सेवा. “नेमका वाचक व त्याला हवे असलेले नेमके वाचनसाहित्य याची योग्य वेळेत सांगड घालून देण्याचे व्यक्तिगत पातळीवरून केलेले प्रयत्न म्हणजे संदर्भसेवा” अशी डॉ. रंगनाथन यांनी संदर्भसेवेची व्याख्या केली आहे.

ग्रंथालयाच्या गुणवत्ता वाढीसाठी संदर्भसेवेची आवश्यकता असते. आजच्या वैज्ञानिक युगात सर्व ज्ञान शाखांमध्ये प्रगती होत आहे. या प्रगतीमुळे ग्रंथालयातील संदर्भसेवेची गरज वाढली आहे. आज सार्वजनिक ग्रंथालयांना फार महत्त्वाची भूमिका पार पाडायची आहे. केवळ ग्रंथ देवाणघेवाण करण्यात समाधान न मानता त्यांना आता माहिती केंद्र म्हणून काम करावे लागणार आहे. त्यांनी जिज्ञासू वाचकांना हवी असलेली विविध विषयांवरील माहिती संदर्भसेवेद्वारे उपलब्ध करून द्यायला हवी.

सार्वजनिक ग्रंथालयातील वाचकांची वाचनाची आवड लक्षात घेऊन सर्व प्रकारचे अद्ययावत संदर्भसाहित्य ग्रंथालयात उपलब्ध करून द्यायला हवे. प्रमाणभूत साहित्याशिवाय प्रभावी संदर्भसेवा देता येत नाही. परंतु आर्थिक मर्यादांमुळे हे साहित्य खरेदी करण्यास मर्यादा येत असल्या, तरी उपलब्ध आर्थिक तरतुदीतून आवश्यक ते संदर्भसाहित्य घ्यायला हवे. आज संदर्भसेवेची व्याप्ती वाढली आहे. म्हणून सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या ग्रंथपालांनी केवळ मुद्रित साहित्यावर अवलंबून न राहता विविध प्रकारच्या दृक-श्राव्य आणि संगणकीय माध्यामांचाही वापर करून आपल्या वाचकांना हवी असलेली माहिती उपलब्ध करून देण्याचे काम कर्तव्यनिष्ठेने पार पाडले पाहिजे.

वाचकांच्या मागणीनुसार माहिती तसेच संदर्भ उपलब्ध करून देण्यापलीकडे जाऊन वाचकांच्या गरजांचा वेध घेऊन विवक्षित विषयांवरील साहित्याची सूची तयार करणे, विशिष्ट विषयांवरील साहित्याचा सारांश तयार करणे, निवडक नियतकालिकांच्या अनुक्रमणिकांच्या प्रती काढणे, कात्रणसेवा व भाषांतरसेवा देणे, स्थानिक जनतेला उपयुक्त माहितीसेवा पुरविणे अशा कित्येक सेवा सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या ग्रंथपालांनी दिल्यास समाजाला ज्ञानात्मक गतीमानता प्राप्त होईल.

संदर्भसेवेचे परिमाण आज पूर्णतः बदलले आहे. संगणकीय महाजालामुळे ही सेवा कुठेही त्वरित पुरविता येते. ग्रंथपाल संगणकीय संदर्भ सेवा वाचकांना थेट त्यांच्या संगणकावर पाठवू शकतात. ही सेवा ग्रंथालयाच्या संकेत स्थळावरून दिली जाते. वेब २.० तंत्रज्ञानाच्या Blog Rss feed यांसारख्या साधनांमुळे ही सेवा अधिक परस्परसंवादी झाली आहे. यांमुळे अपंग, ज्येष्ठ नागरिकांना घरच्या घरी संदर्भसेवा मिळू शकतात. तसेच शब्दकोश, ज्ञानकोश यांसारखे संदर्भसाहित्य महाजालकावर मोफत उपलब्ध आहे. एखाद्या विषयांच्या डेटाबेसमधील समग्र साहित्य वाचकांना थेट पुरविणेही आता शक्य झाले आहे. आधुनिक काळासोबत सार्वजनिक ग्रंथालयांनी मार्गक्रमण करणे ही काळाची गरज आहे.

३. वंचितांना विशेष ग्रंथालयसेवा :

समाजाच्या सर्वांगीण विकासाला हातभार लावणे, हे सार्वजनिक ग्रंथालयाचे उद्दिष्ट असते. म्हणून त्यांनी समाजात अपंग, ज्येष्ठ नागरिक, रूग्ण, कैदी यांसारखे लोक जे ग्रंथालयात येऊन ग्रंथालयाचा लाभ घेऊ शकत नाहीत, अशा वाचकांना ग्रंथालयांनी हवे असलेले ग्रंथ व इतर साहित्य, ग्रंथालयसेवा त्यांच्या दारी उपलब्ध करून दिल्या पाहिजेत. सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या भिंतीपलीकडे जाऊन अशा वंचितांना ग्रंथालय साहित्य वापरण्याची संधी प्राप्त करून द्यावी. या सेवा देता येण्यासाठी त्यांनी आर्थिक तरतूद केली पाहिजे. आता तंत्रज्ञानधिष्ठित ऑनलाईन सेवा इंटरनेटमार्फत पुरवून ग्रंथालये वाचकांपर्यंत गेल्यामुळे ग्रंथालयसेवेचा लाभ या वंचिताना मिळू शकेल.

४. कैद्यांना ग्रंथालयसेवा :

आज तुरुंग या संकल्पनेत व कैद्यांकडे पाहण्याच्या दृष्टिकोनात बदल होत आहे. त्यांना झालेल्या शिक्षेच्या काळात तुरुंगात त्यांच्यावर चांगले संस्कार करून त्यांना चांगले नागरिक बनविण्याचे प्रयत्न केले जात आहेत. या प्रयत्नात सार्वजनिक ग्रंथालयांनी साथ द्यायला हवी. ज्या कैद्यांना आपले शिक्षण चालू ठेवायचे असेल त्यांना तुरुंगाधिकाऱ्यांच्या मदतीने त्यांच्या शिक्षणात सार्वजनिक ग्रंथालयांनी मदत करावी. फिरत्या वाचनालयाद्वारे तुरुंगात ग्रंथाच्या पेट्या पाठविण्याची व्यवस्था करावी. काही तुरुंगांमध्ये कैद्यांसाठी ग्रंथालयाची सोय आहे. या वाचकांसाठी योग्य अशा वाचनसाहित्याची निवड करून सार्वजनिक ग्रंथालये त्यांना वाचनोपचार देऊ शकतात.

सार्वजनिक ग्रंथालये आपल्याकडील जुने झालेले अंक, नियतकालिके, वृत्तपत्रे रद्दीत काढतात. असे साहित्य रद्दीत न काढता कैद्यांसाठी तुरुंगात वाचावयास पाठवले, तर त्याचा फायदा त्यांना होईल. अहमदनगर जिल्हा वाचनालय, अहमदनगर या जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालयाद्वारे कैद्यांसाठी वाचन सुविधा पुरविल्या जातात. नगर वाचनालय, मंगळवेढा हे तालुका 'अ' वर्ग वाचनालय सामाजिक उपक्रम म्हणून ग्रंथालयात येणारी नियतकालिके वाचून झाल्यावर रद्दी न काढता कारागृहातील कैद्यांना व तेथील कर्मचाऱ्यांना मोफत वाचण्यासाठी ठेवतात.

५. रूग्णांसाठी ग्रंथालयसेवा :

काही रूग्णांना त्यांच्या व्याधींमुळे उपचारांसाठी रूग्णालयात राहावे लागत असल्यामुळे त्यांच्यामध्ये एकाकीपणा व मानसिक दुर्बलता येते. ती दूर करण्यासाठी सार्वजनिक ग्रंथालयांनी रूग्णांना त्यांच्या आवडीचे, उपयोगाचे वाचनसाहित्य उपलब्ध करून देण्याचे प्रयत्न करावेत. रूग्णांना मनोरंजनाचे व उपयुक्त असे साहित्य दिले की, ते वाचनात मग्न राहतात. त्यांचे मन उत्हासित होऊन त्यांना विरंगुळा मिळतो. आजारी माणसाना 'ग्रंथांचे औषध' फारच उपयोगी पडते, हे ध्यानात घेऊन सार्वजनिक ग्रंथालयांनी रूग्णांना हे औषध देण्यासाठी प्रयत्न केला पाहिजे. सार्वजनिक ग्रंथालयांनी फिरत्या वाचनालयाद्वारे डॉक्टरांच्या मार्गदर्शनाखाली निरनिराळ्या आजारांवरील उपचाराच्या पुस्तिका, माहितीपत्रिका, ध्वनिफिती व चित्रफिती रूग्णांना व त्यांच्या आत्मांना उपलब्ध करून द्यायला हव्यात.

आज बहुसंख्य रूग्णालयात ग्रंथालये नसल्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांनी रूग्णांना सेवा देण्याची सामाजिक जबाबदारी स्वीकारली पाहिजे. ही जबाबदारी पार पाडता येण्यासाठी त्यांनी रूग्णालय प्रमुखांचे व अन्य सेवाभावी संस्थांचे सहकार्य घ्यायला हवे. नगर वाचनालय, मंगळवेढा हे तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक वाचनालय ग्रंथालयात येणारी नियतकालिके वाचून झाल्यावर रद्दीत न काढता शहरातील शासकीय रूग्णालयात पेशंटना व त्यांच्या नातेवाईकांना, कर्मचाऱ्यांना वाचण्यासाठी देतात. दर दहा दिवसांनी हे साहित्य बदलून दुसरे ठेवले जाते. हा उपक्रम महाराष्ट्रात पहिल्यांदाच या ग्रंथालयाने सुरू केला आहे. म्हणून हा उपक्रम आदर्श ग्रंथालय प्रारूपामध्ये समाविष्ट करण्यायोग्य आहे, असे वाटते.

६. अपंगांसाठी ग्रंथालयसेवा :

समाजात कर्णबधीर, बहिरे, मुके, शारीरिक अपंगत्व असलेले, मानसिकदृष्ट्या दुर्बल असलेले असे विविध प्रकारचे अपंगत्व असलेले नागरिक असतात. सार्वजनिक ग्रंथालये सुदृढांना ज्या सेवा देतात, त्या सेवा त्यांनी अपंगांनाही द्यायला हव्यात. या सेवा देण्यामध्ये ज्या अडचणी असतात, त्या ग्रंथालय चालकांनी दूर कराव्यात. अपंग लोकांशी संपर्क ठेवून त्यांच्याशी संवाद साधून त्यांना कोणत्या प्रकारच्या सेवेची गरज आहे, हे जाणून आवश्यक असलेल्या सेवा आणि साहित्य उपलब्ध करून देण्याचे सहानुभूतीपूर्वक प्रयत्न करावेत. जे अपंग वाचक ग्रंथालयात जाऊन साहित्याचा लाभ घेऊ शकत नाहीत, त्यांना हवे असलेले साहित्य घरी पोहोचविण्याची व्यवस्था सार्वजनिक ग्रंथालयांनी करावी.

ग्रंथालयात येणाऱ्या वाचकांसाठी ऑडिओ, व्हिडिओ स्वरूपातील आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर करावा. सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या चालकांनी या कामी अपंगांसाठी कार्य करणाऱ्या सामाजिक संस्था व कार्यकर्ते यांच्याशी संपर्क साधून अपंगांना ग्रंथालयांचा वापर करायला प्रवृत्त करायला हवे. संगणक व मोबाईल तंत्राद्वारेही अपंगांना डिजिटल ग्रंथालय सेवा देणे उपयुक्त ठरेल.

७. अंधांसाठी ग्रंथालयसेवा :

सार्वजनिक ग्रंथालयांनी अंधाना व दृष्टिदोष असणाऱ्यांना आवश्यक असलेले साहित्य ब्रेललिपीत सॉफ्टवेअर उपलब्ध करून द्यायला हवे. सार्वजनिक ग्रंथालयांनी अंध वाचकांना हवी

असलेली माहिती ध्वनीमुद्रित माध्यमाद्वारे किंवा ब्रेल लिपीच्या ग्रंथांद्वारे उपलब्ध करून द्यायला हवी. सार्वजनिक ग्रंथालयांनी अंध वाचकांसाठी ब्रेल लिपीतील ग्रंथसंग्रहासाठी वेगळा विभाग तयार करून ग्रंथाचे ध्वनिमुद्रण व बोलक्या पुस्तकांचा वापर करून त्यांच्या अध्ययनात मदत केली पाहिजे. 'JAWS' सारखे खास अंधांना उपयुक्त ठरेल, असे सॉफ्टवेअर आज उपलब्धही झाले आहे. नॅशनल असोसिएशन फॉर द ब्लाइंड (NAB) यांसारख्या संस्थांच्या मदतीने ग्रंथालयांना अशा सुविधा पुरविता येतील.

सार्वजनिक ग्रंथालयांनी अंध आणि अपंग वाचकांच्या समस्या जाणून घेऊन त्यांना ग्रंथालयांचा, माहिती सेवांचा वापर करता यावा, म्हणून ग्रंथालयात आवश्यक सुविधा उपलब्ध करून द्याव्यात. अपंगांना ग्रंथालयात येण्यासाठी पायऱ्यांऐवजी उताराची व उद्वाहकाची व्यवस्था असावी. करवीरनगर वाचन मंदिर, कोल्हापूर या जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालयाने अंधवाचकांसाठी खास ब्रेल लिपीतील ग्रंथ ठेवले आहेत. त्यांनी अंध वाचकांसाठी अब्रार संगणक प्रणाली तयार केली आहे. अहमदनगर जिल्हा वाचनालय, अहमदनगर या जिल्हा सार्वजनिक ग्रंथालयाने अंधांसाठी ब्रेल लिपीतील ग्रंथ उपलब्ध करून दिले आहेत. हे ग्रंथालय अंधांसाठी विनामूल्य सेवा देत आहे. सर्व जिल्हा व तालुका ग्रंथालयांनी अंध वाचकांना सेवा व सुविधा दिल्या पाहिजेत. त्यासाठी शासनाने ग्रंथालयांना वेगळे अनुदान देणे गरजेचे आहे.

८. ज्येष्ठ नागरिकांसाठी ग्रंथालयसेवा :

समाजातील सर्व वयोगटातील वाचकांना ग्रंथालय सेवा देणे हे सार्वजनिक ग्रंथालयाचे उद्दिष्ट असल्यामुळे त्यांनी आपल्या सेवांमध्ये ज्येष्ठ नागरिकांना ग्रंथालयसेवा द्यावी. ज्येष्ठांमध्ये वयोमानामुळे आलेली असहाय्यता, मानसिक उदासिनता, दुर्बलता घालविण्यासाठी त्यांना चांगले साहित्य उपलब्ध करून द्यावे. ज्येष्ठ नागरिकांची संख्या बरीच असून या नागरिकांपुढे फावला वेळ कसा घालवावा, ही एक समस्या असते. त्यांच्या आवडी-निवडी वयोमानाप्रमाणे वेगळ्या असतात. त्यांच्या आवडीचे तसेच त्यांना उपयुक्त असे आरोग्य, हक्क आणि विशेष सवलतींविषयक माहितीचे साहित्य ग्रंथालयांनी पुढाकार घेऊन पुरवावे. तसेच त्यांच्यासाठी ग्रंथालयात आरोग्यविषयक व्याख्याने आयोजित करावीत. ज्येष्ठ नागरिक मोठ्या प्रमाणात वृत्तपत्र वाचण्यासाठी येत असतात. त्यामुळे त्यांच्या सोयीसाठी ग्रंथालयाने वृत्तपत्र विभाग ग्रंथालयाच्या तळमजल्यावरच ठेवावा.

काही ज्येष्ठ वाचकांना वयामुळे ग्रंथालयात येणे शक्य होत नाही. त्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांनी अशा वाचकांच्या घरी त्यांच्या आवडीचे वाचन साहित्य पोहोचविण्याची व्यवस्था करावी. वृद्धाश्रमात राहणाऱ्या वृद्धांना त्यांच्या आवडीचे ग्रंथ व इतर साहित्य उपलब्ध करून देण्यासाठी या ग्रंथालयांनी वृद्धाश्रमांच्या चालकांबरोबर चर्चा करायला हवी. फिरत्या वाचनालयाद्वारे वृद्धाश्रमात ग्रंथांच्या पेट्या पाठविल्यास उपयुक्त ठरेल. लोकमान्य टिळक ग्रंथसंग्रहालय, वाई येथील तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय ज्येष्ठ नागरिकांसाठी अल्पखर्चात घरपोच ग्रंथ सेवेची सोय उपलब्ध करून देत आहे ही गोष्ट अनुकरणीय आहे.

९. बालकांसाठी ग्रंथालयसेवा :

सार्वजनिक ग्रंथालयात येणाऱ्या वाचकांत बालवाचकही असतात. ग्रंथालय चालकांनी आपल्या ग्रंथालयात स्वतंत्र बालग्रंथालय विभाग स्थापन केला पाहिजे. बालग्रंथालयाचा लाभ किती मुले घेणार आहेत, याचा सर्वप्रथम अंदाज बांधून मुलांना पुस्तकांचा मुक्तपणे वापर करता येईल, अशी पुरेशी जागा त्यांनी उपलब्ध करून द्यायला हवी. या विभागातील फर्निचर मुलांच्या वयाला साजेसे असावे. ग्रंथ कक्षेतील कपाटे मुलांचे हात सहज पोहचतील एवढ्या उंचीची असावीत. मुलांना पुस्तके आरामशीर, मोकळेपणाने बसून वाचता येण्यासाठी त्यांच्या वयोगटाप्रमाणे लहान खुर्च्या, टेबले असावीत. ग्रंथपालांनी ग्रंथालयातील साहित्याची मांडणी आकर्षक पद्धतीने केली पाहिजे. बालविभागाला सुसंगत अशी रंगसजावट आणि आकर्षक चित्रे तेथे असावीत.

मुलांना आपण राष्ट्राचे आधारस्तंभ मानतो. हे आधारस्तंभ सुजाण व्हावेत, म्हणून त्यांच्यामध्ये लहानपणीच वाचनाची आवड निर्माण करून देण्याची महत्त्वाची सामाजिक जबाबदारी सार्वजनिक ग्रंथालयांनी स्वीकारावी. त्यांनी आपल्या ग्रंथालयात स्वतंत्र बालग्रंथालय विभाग निर्माण करून मुलांना त्यांच्या आवडीच्या वाचन साहित्याचा वापर करण्याची संधी प्राप्त करून द्यायला हवी. त्यांच्यासाठी करमणूकीच्या पुस्तकांबरोबरच सामान्य ज्ञान, कोडी, खेळ, विज्ञान, प्रयोग इत्यादी विषयांवरही पुस्तके खरेदी करावी. मुलांना सचित्र नियतकालिके, मासिके वाचायलाही आवडतात. त्यामुळे ती त्यांना ग्रंथालयात उपलब्ध करून द्यायला हवीत.

ग्रंथालयाचा उपयोग जास्तीत जास्त बालकांनी घ्यावा. म्हणून ग्रंथालयांनी बालकांना विना वर्गणी/ अल्प वर्गणी सभासद योजना सुरू केली पाहिजे. ग्रंथपालांनी आपल्या परिसरातील शाळांना भेटी देऊन शिक्षकांना आणि विद्यार्थ्यांना या ग्रंथालय विभागाची आणि त्यांच्या विविध उपक्रमांची माहिती करून घ्यायला हवी. विद्यार्थी समुह ग्रंथालय भेट उपक्रम राबविल्यास उपयुक्त ठरेल. शाळांना जेव्हा मोठ्या सुट्ट्या असतात, त्या काळात ग्रंथपालांनी मुलांसाठी वाचनाची विशेष सोय केली पाहिजे. बालवाचकांसाठी संस्कार शिबीराचे आयोजन केले पाहिजे. ग्रंथालयांनी कथाकथन, श्लोकपठण, कवितावाचन, वाचनस्पर्धा, सुंदर हस्ताक्षर स्पर्धा, निबंध स्पर्धा, चित्रकलास्पर्धा, अनुभवकथन इत्यादी स्पर्धांचे आयोजन केले पाहिजे. उत्तम बालवाचक पुरस्कार योजना आखून दरवर्षी काही चांगल्या बालवाचकांना पुरस्कार द्यावे. तसेच बालवाचकांना विनावर्गणी सभासदत्व दिले जावे. त्यामुळे बालवयात वाचन संस्कार निर्माण होऊन वाचनप्रेमी नागरिक निर्माण होतील.

१०. स्त्रियांसाठी ग्रंथालयसेवा :

स्त्रिया या समाजातील एक महत्त्वाचा घटक आहेत. त्यांनी सार्वजनिक ग्रंथालयांचा अधिकाधिक वापर करावा म्हणून त्यांच्यासाठी आवश्यक त्या ग्रंथालय सेवा आणि स्त्री जीवनाशी निगडित असलेले बालसंगोपन, पाकशास्त्र, शिवणकाम, विणकाम अशा विविध विषयांवरील साहित्य उपलब्ध करून द्यायला हवे. त्यासाठी सार्वजनिक ग्रंथालयांनी स्त्रियांच्या समस्या, त्यांच्या गरजा, त्यांच्या वाचनाच्या सवयी यांची माहिती करून घ्यायला हवी. स्त्रियांना ग्रंथालयांचा अधिकाधिक वापर करायला प्रवृत्त करण्यासाठी पाककला स्पर्धा, रांगोळी स्पर्धा, गायन स्पर्धा इत्यादींचे आयोजन केले पाहिजे. त्यांच्यामध्ये वाचनाची आवड निर्माण करण्यासाठी तसेच रूढी, अपसमजुती, अंधश्रद्धांविषयी स्त्रियांमध्ये जागृती करण्यासाठी स्त्री संघटनांच्या सहकार्याने विविध उपक्रम व माध्यमांद्वारे विशेष प्रयत्न करावेत. बदलत्या काळात स्त्रियांचे आरोग्य, हक्क आणि रोजगारविषयक उपलब्ध वाचनसाहित्य संग्रहित करण्यावर भर असावा. साधारणतः स्त्रियांना दुपारची वेळ ही मोकळी असते. त्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांनी शक्यतो दुपारी ग्रंथालय उघडे ठेवावे. म्हणजे महिलांना सोयीचे पडेल. सार्वजनिक ग्रंथालयात महिला वाचकांचे प्रमाण मोठ्या प्रमाणात आहे. त्यामुळे ग्रंथालयांनी महिलांसाठी खास स्वतंत्र विभाग स्थापन करणे गरजेचे आहे.

५.८. सार्वजनिक ग्रंथालयाने वाचक वृद्धीसाठी राबवायचे उपक्रम व कार्यक्रम :

ग्रंथालयातील साहित्यसंग्रहाचा अधिकाधिक वाचकांनी वापर करावा, म्हणून वाचकांना साहित्यसंग्रहाची माहिती करून देण्यासाठी ग्रंथालयांनी विविध उपक्रमांचे आयोजन केले पाहिजे.

बऱ्याच सभासदांना ग्रंथालय देत असलेल्या सेवांची, ग्रंथालयात उपलब्ध असलेल्या साहित्याची माहिती नसते. त्यामुळे ते ग्रंथालयाचा हवा तेवढा वापर करीत नाहीत. म्हणूनच जे ग्रंथालयाचा वापर करतात आणि जे करीत नाहीत त्यांना ग्रंथालय देत असलेल्या सेवांच्या स्वरूपासंबंधी पुढील उपक्रमांद्वारे माहिती करून देता येते.

- ग्रंथालयाच्या सभासदांनी ग्रंथालयाचा वापर अधिक करावा, म्हणून ग्रंथालय चालकांनी व्याख्याने, चर्चासत्रे, ग्रंथप्रदर्शने, ग्रंथदिंड्या, ग्रंथचर्चा यांसारख्या विविध उपक्रमांचे आयोजन करावे. वाचकांना सदोदित डोळ्यांपुढे ठेवून केलेल्या या उपक्रमांमुळे ग्रंथालयाचा वापर वाढतो.
- महत्त्वाच्या विषयावर परिसंवाद, व्याख्यानमाला आयोजित करून त्या निमित्ताने ग्रंथप्रदर्शने भरवावीत.
- ग्रंथालयांतील साहित्यसंग्रहाला प्रसिद्धी देण्यासाठी काही अभिनव मार्गांचा अवलंब करावा. या साहित्याला वृत्तपत्रांतून तसेच नियतकालिकांतून प्रसिद्धी द्यावी.
- साहित्यसंग्रहात उपलब्ध असलेल्या ग्रंथांची ज्यांना गरज आहे, अशा संभाव्य वाचकांना या ग्रंथांच्या याद्या तयार करून पाठवाव्या.
- ग्रंथालयात असलेल्या ग्रंथांचे वेगवेगळ्या कार्यक्रमांच्या निमित्ताने प्रदर्शन भरवून वाचकांना ग्रंथ हाताळण्याची संधी प्राप्त करून द्यावी.
- ग्रंथालयात नव्याने येणाऱ्या ग्रंथांची वाचकांना सहज दिसतील, अशा ठिकाणी आकर्षक पद्धतीने मांडणी करावी म्हणजे त्यांना ग्रंथ प्रत्यक्ष पाहण्याची संधी मिळेल, त्यामुळे ते ग्रंथांचा निश्चित वापर करतील. ग्रंथालयात नव्याने येणाऱ्या ग्रंथांची वेष्टने काचफलकावर किंवा भित्तिपत्रकावर ठळकपणे लावली की वाचकांची उत्सुकता वाढते व ते ग्रंथांचा वापर करतात. या वेष्टनांची छोटी छायाचित्रे ई-मेल द्वारेही वाचकांना पाठविता येतील.

- नव्याने सभासद झालेल्या वाचकांसाठी ग्रंथालयाची फेरी घडवून आणली की, त्यांच्या मनात ग्रंथालयाबद्दल आदर, आस्था निर्माण होईल आणि ते ग्रंथालयाचा अधिक वापर करतील.
- फेसबुकसारख्या ई-सामाजिक माध्यमांचा उपयोग करून ग्रंथालयाचे खाते उघडता येईल. यात ग्रंथालयाविषयी माहिती देऊन वाचकांशी हितगुज करता येईल.
- ग्रंथालयात अधिकाधिक वाचकांनी यावे, म्हणून ग्रंथ वाचनस्पर्धेचे आयोजन करावे. सर्वाधिक वाचन करणाऱ्या वाचकाला 'उत्कृष्ट वाचक पारितोषिक' द्यावे.
- संदर्भग्रंथ संदर्भविभागातील कपाटात ठेवलेले असतात. या ग्रंथांचे वर्षभरात एकदा प्रदर्शन भरवून वाचकांना ते हाताळण्याची संधी प्राप्त करून द्यावी. या संदर्भग्रंथांची रचना कशी आहे, ते कसे वापरावे याची माहिती वाचकांना करून द्यावी.

● वृत्तपत्रे कात्रणसंग्रह :

वृत्तपत्रे ही अद्ययावत माहितीची साधने आहेत. म्हणून वृत्तपत्रात आलेल्या विविध विषयांवरील लेखांची कात्रणे काढून त्यांचा संग्रह करावा. विषयवार कात्रण फाईल्स तयार कराव्या. या फाईल्स अद्ययावत ठेवाव्या. कात्रणसंग्रहाचा संशोधनासाठी चांगला उपयोग होतो.

आपल्या ग्रंथालयाचे स्वतंत्र संकेतस्थळ निर्माण करून त्यावर ई-पुस्तके उपलब्ध करून द्यावी, आपल्या ग्रंथालयाची व उपक्रमांची माहिती देऊन वाचकांशी संपर्क ठेवणे या सर्व गोष्टी आज इंटरनेटमुळे सहज शक्य झाल्या आहेत. या सुविधांचा उपयोग ग्रंथपालांनी जरूर करावा.

५.९. ग्रंथालय विस्तार योजना :

सार्वजनिक ग्रंथालयांचा वापर अधिकाधिक लोकांना करता यावा, म्हणून सार्वजनिक ग्रंथालयांनी पुढील योजनांचा अवलंब करावा.

१. शाखा ग्रंथालये :

आज शहरांची, उपनगरांची वाढ होत असल्यामुळे शाखा ग्रंथालये ही आजची गरज झाली आहे. ही स्थापना करणे खर्चिक असले, तरी ग्रंथालय साहित्य अधिकाधिक लोकांना

उपलब्ध करून देण्यासाठी तसेच जे नागरिक ग्रंथालयापासून दूर राहतात, त्यांच्यासाठी ग्रंथालयाने शाखा ग्रंथालये स्थापन करावीत. ही शाखा ग्रंथालये आंतर ग्रंथालयीन देवघेवाच्या तत्त्वाने जोडून घ्यावीत. यामुळे ग्रंथालयाचा वापर वाढेल. म्हणून ग्रंथालय शाखांची संख्या वाढवावी. सार्वजनिक ग्रंथालयांनी आपल्या शाखा उघडण्यासाठी शाळा, महाविद्यालये, नगरपालिका, वस्तुसंग्रहालये यांसारख्या संस्थांकडून जागा मिळवून त्यांचे सहकार्य मिळविण्याचे प्रयत्न करावेत.

मुंबई मराठी ग्रंथसंग्रहालय, मुंबई या जिल्हा ग्रंथालयांनी आपल्या ग्रंथालयाच्या ३१ शाखा काढल्या आहेत. अहमदनगर जिल्हा वाचनालय, पंढरपूर नगर वाचन मंदिर व कल्याण येथील सार्वजनिक वाचनालयांनी आपल्या ग्रंथालयांची शाखा वृद्धी केली आहे.

२. फिरती वाचनालये :

ग्रंथांचा वापर ही केवळ काहीजणांचीच मक्तेदारी आहे. हा विचार मागे पडून प्रत्येकाला आपला ग्रंथ मिळाला पाहिजे. हा विचार प्रत्यक्षात आणण्याच्या प्रयत्नांतून सार्वजनिक ग्रंथालये अस्तित्वात आली आहेत. ग्रंथालयांपर्यंत पोहोचू न शकणाऱ्या लोकांना या ग्रंथालयांच्या सेवांचा लाभ मिळू शकत नाही. म्हणून ग्रंथालयांपासून दूरवर राहणाऱ्या लोकांना ग्रंथालयसेवा उपलब्ध करून देण्याच्या हेतूने फिरत्या ग्रंथालयाची कल्पना अस्तित्वात आली. युरोपातील काही देशांत आणि अमेरिकेमध्ये १९ व्या शतकांत ही ग्रंथालये अस्तित्वात आली. या ग्रंथालयाची परंपरा या देशांत रूजली व बहुतेक प्रगत देशांत आज ही ग्रंथालये दूरवर राहणाऱ्या लोकांना ग्रंथालयसेवा उपलब्ध करून देण्याचे मोलाचे कार्य अजूनही सुव्यवस्थितपणे करीत आहेत. विसाव्या शतकात अनेक देशात फिरत्या वाचनालयांची झपाट्याने वाढ झाली आणि ती चालू राहिली. भारतात प्रथम बडोदा आणि त्यानंतर दिल्ली येथील दिल्ली सार्वजनिक ग्रंथालयामार्फत फिरत्या ग्रंथालयांची योजना सुयोग्यपणे राबविली गेली.

आज सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या कार्याबद्दलच्या संकल्पनेत आमुलाग्र बदल झाला आहे. ग्रंथालयसेवांचा, साहित्याचा लाभ दूरवर राहणाऱ्या लोकांनाही मिळावा, हा विचार आता रूढ व्हायला लागला आहे. ग्रंथालयांपासून दूरवर राहणाऱ्या लोकांना, ज्येष्ठ नागरिक तसेच अपंगांना ग्रंथालय सेवांचा लाभ घेता यावा, यासाठी फिरत्या ग्रंथालयांचा उपक्रम हा ग्रंथालय

चळवळींच्या कार्याचा महत्त्वाचा टप्पा आहे, महाराष्ट्राची प्रादेशिक रचना भौगोलिक स्थिती लक्षात घेता, हा उपक्रम उपयुक्त वाटतो.

यवतमाळ येथील नगर वाचनालय हे फिरत्या वाचनालयाची सेवा पुरविते व त्यांचे ८३० सभासद आहेत. वाशीम येथील राजे वाकाटक सार्वजनिक वाचनालय दूरच्या वस्तीतील वाचकांसाठी घरपोच पुस्तक उपलब्ध करून देते. गोंदिया येथील श्री. शारदा वाचनालयाने रिक्षातून फिरते ग्रंथालय चालू केले आहे. त्यासाठी त्यांना वार्षिक एक लाख रुपये खर्च येतो. पुसद येथील देशभक्त शंकरराव सरनाईक सार्वजनिक वाचनालय 'वाचनालय आपल्या दारी' या उपक्रमांतर्गत हे ग्रंथालय व्हॅनद्वारे ४०० पुस्तके, १०० नियतकालिके घेऊन गावातील वाचकांना घरपोच सेवा पुरविते. जामनेर येथील जैन ओस्वाल भगीरथीबाई वाचनालयाने मोबाईल व्हॅनद्वारे फिरत्या ग्रंथालयाची सेवा सुरू केली आहे. यामध्ये ग्रंथालय वाचकाकडून ३००/- रुपये डिपॉझिट घेते. जेव्हा वाचक सहभाग काढून घेतील, तेव्हा पूर्ण डिपॉझिट परत दिले जाते. तसेच अन्य फी देखील आकारली जात नाही

५.१०. सार्वजनिक ग्रंथालये आणि माहिती तंत्रज्ञानाचा स्वीकार :

माहिती तंत्रज्ञानाच्या क्षेत्रात झालेल्या प्रगतीमुळे सर्वच क्षेत्रांत मुलगामी बदल घडून येत आहेत. ग्रंथालय क्षेत्र त्याला अपवाद नाही. विविध विषयांवरील माहिती जमा करून ती योग्य प्रकारे सांभाळून वाचकांना त्यांच्या मागणीनुसार उपलब्ध करून द्यायची अशी पद्धत ग्रंथालयांत प्रचलित होती. पण आधुनिक युगात माहिती तंत्रज्ञानामुळे माहिती केवळ मुद्रित साधनांपुरतीच मर्यादित राहिलेली नाही. ती आता नव्याने आलेल्या इलेक्ट्रॉनिक व संगणकीय साधनातून मिळू लागली आहे. त्यामुळे उपलब्ध होणाऱ्या माहितीवर नियंत्रण ठेवण्यासाठी संगणकीय माध्यमांचा, तंत्रांचा वापर करणे आज क्रमप्राप्त झाले आहे. त्यासाठी आवश्यक भौतिक साधनसामग्री आणि प्रशिक्षित कर्मचाऱ्यांची गरज आहे. संगणकीय माध्यमांनी सुसज्य अशा ग्रंथालयातील संदर्भसाहित्य, प्रलेख, अभिलेख हे संगणक, सी.डी., डी. व्ही. डी. व पेन ड्राईव्ह यांसारख्या इलेक्ट्रॉनिक माध्यमामध्ये साठवून वाचकांना विनाविलंब उपलब्ध करून देता येते. माहितीची साठवणूक करण्याच्या व ती त्वरित उपलब्ध करून देण्याच्या संगणकांच्या क्षमतेमुळे ग्रंथालयक्षेत्रात क्रांती घडून आली आहे.

दृक्-श्राव्य माध्यमांचे १९७० च्या दशकातील आगमन, तसेच संगणकाचे १९८० च्या दशकातील आगमन, इंटरनेटच्या १९९० च्या दशकातील प्रभाव यामुळे ग्रंथालये कात टाकू लागली आहेत. ई-साहित्याच्या उपलब्धतेमुळे ती झपाट्याने बदलत आहेत. ई-ग्रंथवाचनयंत्रांमुळे वाचकांना एकाचवेळी कुठेही एकाच ग्रंथाचे वाचन शक्य झाले आहे. वेब २.० तंत्रज्ञानामुळे ग्रंथालयांना वाचकांशी संवाद साधण्यासाठी फेसबुकसारखी सामाजिक जाळी, ब्लॉग, आर. एस. एस. फीड यांसारखी साधने उपलब्ध झाली आहेत. यामुळे वाचकांना चोवीस तास अखंड सेवा पुरविणे शक्य आहे. संगणक आणि संप्रेषण तंत्रज्ञानाच्या युतीमुळे आभासी संदर्भसेवा पुरविता येते. संगणक व इंटरनेटच्या माध्यमातून वाचक व ग्रंथपाल यांमधील परस्परसंवाद अधिक सुकर होण्याची चिन्हे दिसू लागली आहेत. व्हिडिओ कॉन्फरन्सिंगद्वारा विविध कार्यक्रमांतर्गत वाचकांचा सहभाग घेणे शक्य झाले आहे. आर. एफ. आय. डी. या रेडिओ फ्रिक्वेन्सी तंत्रज्ञानामुळे ग्रंथालयांच्या सुरक्षेचा प्रश्न सुटला आहे. तसेच जलद गतीने वाचकांना साहित्य पुरविण्याचे काम सुकर झाले आहे. क्यू. आर. कार्ड सारख्या नव्या तंत्रज्ञानाच्या उपयोजनामुळे वाचकांना भ्रमणध्वनीवर ग्रंथालयांच्या साहित्यातील माहिती तसेच तालिका उपलब्ध होणे शक्य झाले आहे.

अंकीय तंत्रज्ञानामुळे ग्रंथालयाकडील दुर्मीळ साहित्याचा ठेवा माहितीरूपात जतन करणे सहज शक्य झाले आहे. यामुळे कागदाच्या नश्वरतेमुळे नाहीशी होऊ लागलेल्या पुस्तकाचे संरक्षण करणे फारसे कठीण राहिले नाही. आपला सांस्कृतिक ठेवा आपण माहिती तंत्रज्ञान पुढच्या पिढीपर्यंत पोहोचवू शकतो. सार्वजनिक ग्रंथालयांनी त्या दृष्टीने पाऊल उचलले पाहिजे.

माहिती तंत्रज्ञानामुळे संगणकीय जाळ्यात सहभागी झालेल्या ग्रंथालयामध्ये परस्परसंवाद व सहकार साधता येतो. यामध्ये सहभागी झालेल्या ग्रंथालयांना संगणकीय जोडण्यांच्या साहाय्याने एकमेकांशी थेट संपर्क साधता येत असल्यामुळे त्यांना इतर ग्रंथालयात असलेल्या ज्ञानसाधनांची माहिती मिळू शकते. वाचकांना हवी ती माहिती त्वरित उपलब्ध करून देता येते. ही माहिती ऑनलाईन उपलब्ध होत असल्यामुळे ती अद्ययावत असते. इंटरनेटच्या साहाय्याने माहिती कोठेही त्वरेने उपलब्ध होत असल्यामुळे माहितीची देवाणघेवाण करणे सोपे जाते. इंटरनेटमुळे ग्रंथालयातील साहित्यसंग्रहाची झेप आता अमर्याद स्वरूपात वाढली आहे.

ग्रंथालयात असलेल्या साहित्याचा वापर दूरवर राहणाऱ्या वाचकांना घरबसल्या सहजपणे करता येतो.

इतर ग्रंथालयात असलेली माहिती आपल्या वाचकांना उपलब्ध करून देणे, ग्रंथालयामधील संगणकीय जाळ्यामुळे (Networks) शक्य झाले आहे. त्यामुळेच इंटरनेट या महाजाळ्याला महत्त्व प्राप्त झाले आहे. त्यामुळेच सार्वजनिक ग्रंथालयांनी आज वाचकांची गरज लक्षात घेऊन त्यांच्यासाठी इंटरनेट सेवा उपलब्ध करून दिली पाहिजे.

जगाच्या कानाकोपऱ्यातील माहिती क्षणार्धात वाचकांना पुरविणे आज ग्रंथालयांना शक्य झाले आहे. संगणकाच्या साहाय्याने घरच्या घरी ग्रंथालयांच्या ऑनलाईन तालिका (OPAC) बघणे तसेच ग्रंथालयातील अंकीय साहित्य घरी बसून वाचता येणेही वाचकांना शक्य आहे. यामुळे ज्येष्ठ नागरिक तसेच अपंग वाचक या सर्वांना ग्रंथालयात न येता ग्रंथालयातील साहित्य वाचनाचा लाभ घेता येतो. अंकीय ग्रंथालये आता २४ × ७ अशा अखंडित सेवा पुरवू शकतात. सार्वजनिक ग्रंथालयांना यामुळे जगभरातले वाचक मिळू शकतात. त्यांच्या सेवा अधिकाधिक व्यापक होऊ शकतात.

ग्रंथालय क्षेत्रात माहिती तंत्रज्ञानाने घडवून आणलेले हे परिवर्तन प्रगतिशील आणि वाचकांच्या दृष्टीने निश्चितच हितावह आहे. म्हणूनच सार्वजनिक ग्रंथालयांनी त्यांच्या ग्रंथालयसेवांच्या मर्यादा दूर करून त्या सेवांमध्ये गुणवत्ता आणण्यासाठी, वाचकांच्या वाढत्या गरजा भागविता येण्यासाठी आणि ग्रंथालयाची विविध कामे त्वरेने करतायेण्यासाठी माहिती तंत्रज्ञानाच्या माध्यमांचा स्वीकार करणे आवश्यक झाले आहे. आजच्या सार्वजनिक ग्रंथालयांनी वाचकांना चांगल्या सेवा देण्यासाठी संगणकाचा वापर करणे गरजेचे आहे. जलद गतीने नोंदी करण्यासाठी व शोधण्यासाठी संगणक अतिशय उपयुक्त साधन आहे. प्रत्येक जिल्हा ग्रंथालयात किमान १० संगणक व संगणकाचा वेगळा विभाग असावा.

संगणकासोबत ग्रंथालयाशी संबंधित संगणक प्रणाली आवश्यक आहे. संगणकीकरणासाठी लागणारी उपकरणे बरीच महाग असल्यामुळे तसेच ती अल्पावधीत कालबाह्य होत असल्यामुळे त्यांच्या खरेदीवर होणारा खर्च सार्वजनिक ग्रंथालयांना परवडणारा नाही. त्यासाठी सार्वजनिक ग्रंथालयांनी आर्थिक समस्या सोडविण्यासाठी विविध मार्गांनी आणि

अनुदानातून निधी मिळविण्याचे प्रयत्न करावेत. राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या आधुनिकीकरणासाठी विविध योजनांद्वारा आर्थिक निधी उपलब्ध करून देते. या योजनांचा लाभ सार्वजनिक ग्रंथालयांनी घ्यायला हवा. समाजातील दानशूर व्यक्तींना आवाहन केल्यास त्यांच्याकडून निश्चितच ग्रंथालयांच्या संगणकीकरणासाठी देणग्यांच्या रूपाने आर्थिक मदत मिळू शकेल. तसेच आज 'कोहा', 'ई-ग्रंथालय' यांसारखी सॉफ्टवेअर, संगणक प्रणाली इंटरनेटवरून विनाशुल्क उपलब्ध आहेत. अशा सॉफ्टवेअरचा उपयोग सार्वजनिक ग्रंथालयांनी ग्रंथालयाचे संगणकीकरण करण्यासाठी करावा.

सार्वजनिक ग्रंथालयांनी आपल्या ग्रंथालयाचे संकेतस्थळ (वेबसाईट) निर्माण करून सेवा द्यावी. अमेरिकेतील कित्येक सार्वजनिक ग्रंथालये ई-साहित्याबरोबर ग्रंथवाचनयंत्रे वाचकांना घरी देतात. अशा सुविधा ग्रंथालय आज देऊ शकतात. सध्या टाटा, आदित्य बिरला समूह, इन्फोसिस यांसारख्या खाजगी कंपन्या ग्रंथालयांना आर्थिक मदत देतात. अशा कंपन्यांकडून सार्वजनिक ग्रंथालयांनी अर्थ सहाय्य मिळविण्याचा प्रयत्न करावा.

- ग्रंथालयामध्ये हायस्पीड इंटरनेट कनेक्शन उपलब्ध करून घ्यावे व वाचकांच्या मागणीनुसार त्यास अल्पदरात इंटरनेट सुविधा उपलब्ध करून द्यावी.
- (OPAC) सुविधांची सोय वाचकांसाठी ग्रंथालयाने उपलब्ध करून द्यावी.
- ग्रंथालयात (LAN) सुविधा असावी.
- ग्रंथालयात झेरॉक्सची सुविधा असावी आणि वाचकांच्या मागणीनुसार अल्प दरात झेरॉक्सची सुविधा त्यांना उपलब्ध करून द्यावी.
- ग्रंथालयांनी स्वतःची वेबसाईट करून त्यावर ग्रंथालयातील ग्रंथ, नियतकालिके व दुर्मिळ ग्रंथांची यादी द्यावी. ग्रंथालयात नवीन ग्रंथसाहित्याची माहिती अद्ययावत ठेवावी.
- दुर्मिळ ग्रंथ हा महत्त्वाचा ठेवा आहे. अभ्यासकांच्या मागणीनुसार त्यांना तो उपलब्ध करून देणे गरजेचे आहे. या ग्रंथांचे मायक्रोफिल्मिंग करून ते संगणक प्रणालीद्वारे जतन करून ठेवावेत.

- ग्रंथालयात टी. व्ही., रेडिओ, डी. व्ही. डी., इंटरनेट सारखी आवश्यक उपकरणे असावीत. शक्य असल्यास (A.C.) ची वातानुकुलीत यंत्राची सोय असावी. तसेच सुरक्षतेच्या दृष्टीने (C.C.T.V.) कॅमेरा आवश्यक आहे.

भविष्यकाळात सार्वजनिक ग्रंथालयांची, गुणवत्ता केवळ त्यांच्या साहित्यसंग्रहावर अवलंबून राहणार नाही, तर ती ग्रंथालये आपल्या वाचकांना योग्य व अचूक माहिती किती तत्परतेने उपलब्ध करून देतात, यावर अवलंबून राहणार आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयात माहिती तंत्रज्ञानाचे महत्त्वाचे वळण आले आहे. त्यामुळे ग्रंथालयाजवळ जी माहिती उपलब्ध नाही, ती इंटरनेटच्या मदतीने मिळवून ती आपल्या वाचकांना पुरविण्याची व्यवस्था आजच्या सार्वजनिक ग्रंथालयांना करावी लागणार आहे. राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालयांपासून प्रत्येक गावातील ग्रंथालयात उपलब्ध असलेल्या साहित्याचा साठा कसा आहे, हे स्पष्ट करणारा डेटाबेस सार्वजनिक ग्रंथालयांना तयार करावा लागणार आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या या नेटवर्कशी सर्व प्रकारची ग्रंथालये व अंतिमतः राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय नेटवर्क जोडावे लागणार आहे. या काळात ग्रंथपालांनी आपले अस्तित्व टिकवून ठेवण्यासाठी आपल्या पारंपरिक भूमिकेत बदल करून माहिती तंत्रज्ञानाचा स्वीकार करण्याची मानसिक तयारी ठेवली पाहिजे. ज्ञानप्राप्तीची जी अत्याधुनिक इलेक्ट्रॉनिक माध्यमे अस्तित्वात आहेत. त्यांचा स्वीकार करून त्यांचा लाभ आपल्या वाचकांना मिळवून दिला पाहिजे. शहरी ग्रंथालयांचे आता झपाट्याने संगणकीकरण होत आहे. ग्रामीण ग्रंथालयांनीही या दृष्टीने पावले उचलणे गरजेचे आहे. विचारपूर्वक आराखडा तयार करून नियोजनपूर्ण संगणकीकरण सुरू करावे. त्यासाठी ग्रंथालयाच्या चालकांनी आपल्या कर्मचाऱ्यांना माहिती तंत्रज्ञानाचे प्रशिक्षण देण्याची व्यवस्था करावी. तसेच तंत्रज्ञानाचे सतत बदलणारे स्वरूप पाहता त्यांच्या प्रशिक्षणात सातत्य ठेवावे. आज ग्रंथालयीन प्रमाणपत्र शिक्षणक्रमात पारंपरिक पद्धतीने शिक्षण दिले जाते. त्यामध्ये बदल करून माहिती तंत्रज्ञान, नेटवर्कींग, संकेतस्थळ निर्मिती, अंकीय ग्रंथालये इत्यादी विषयांचा समावेश केल्यास ग्रंथालयांना सक्षम ग्रंथपाल व कर्मचारी मिळू शकतील.

आधुनिक ज्ञान तंत्रज्ञानावर डिजिटल बुक, ओडिओ, व्हिडिओ साहित्यकृती बाजारात उपलब्ध होत आहेत. अमेरिकेसारख्या देशात हा प्रकार अल्पावधित लोकप्रिय बनला आहे. भारतातही यादृष्टीने वाचकांची मागणी वाढू लागली आहे. मोबाईल, आयपॅड यांसारख्या

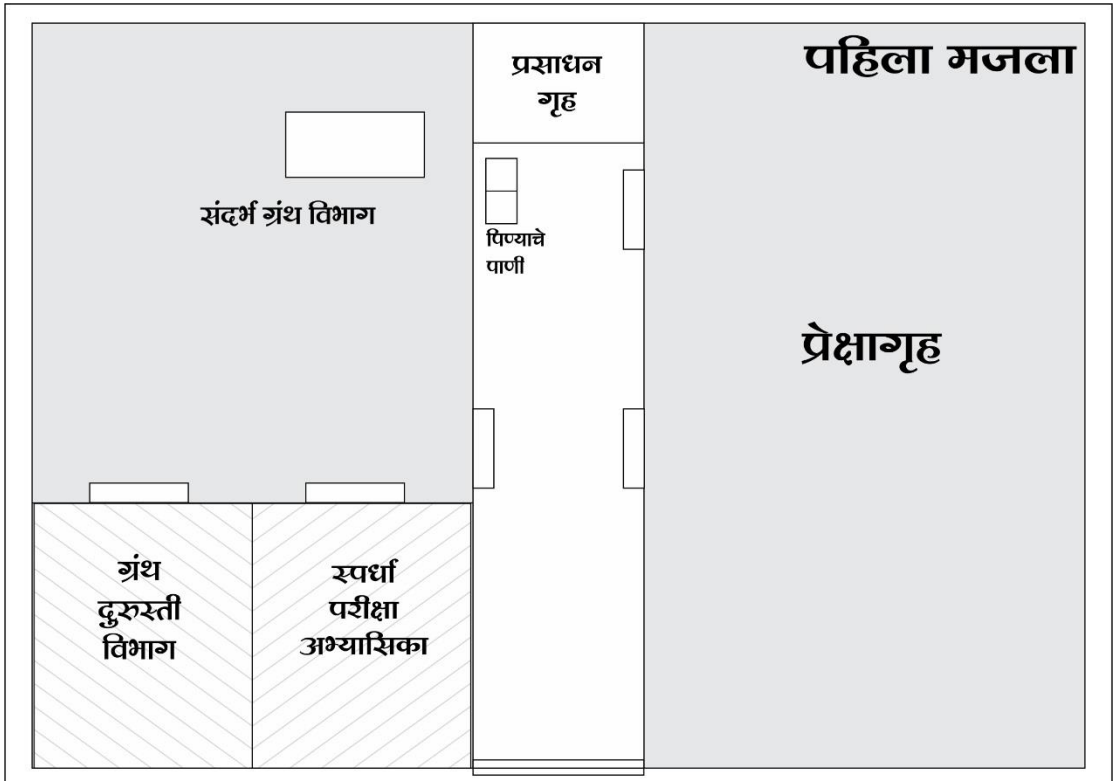
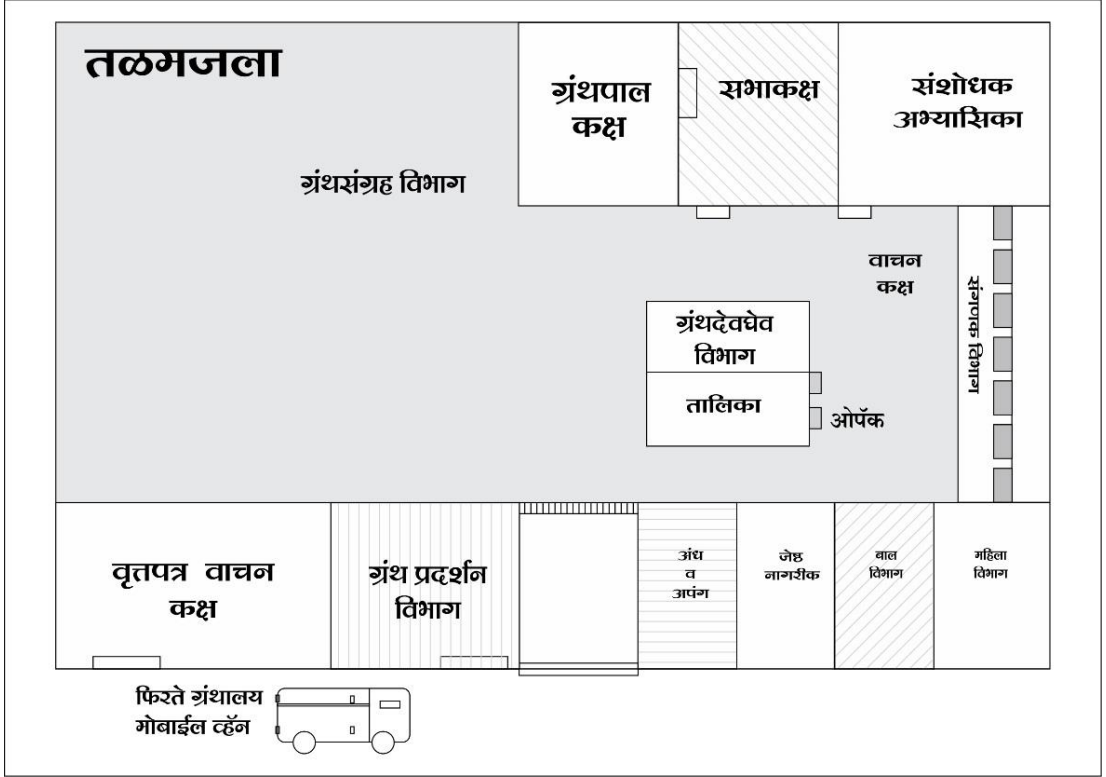
उपकरणांवर माहिती सेवा उपलब्ध करून देण्याच्या दृष्टीने सार्वजनिक ग्रंथालयांनी प्रयत्न करावयास हवेत.

आजच्या २१ व्या शतकामध्ये सार्वजनिक ग्रंथालयांनी माहिती तंत्रज्ञानाने निर्माण केलेल्या साधनांचा वापर करणे अपरिहार्य झाले आहे. अधिकाधिक लोक ग्रंथालयाकडे आकृष्ट होतील, या दृष्टीने सार्वजनिक ग्रंथालयांनी प्रयत्न करणे, ही आजच्या काळाची गरज आहे.

या प्रकरणात वर्णन केलेले विविध विभाग व सेवा यांचा एकत्रित विचार करून संशोधकाने पुढीलप्रमाणे प्रारूप (Model) विकसित केले आहे. या प्रारूपामध्ये काळानुरूप व आवश्यकतेनुसार अनेक बदल करण्याचे स्वातंत्र्य त्या-त्या ग्रंथालयांना असणार आहे.

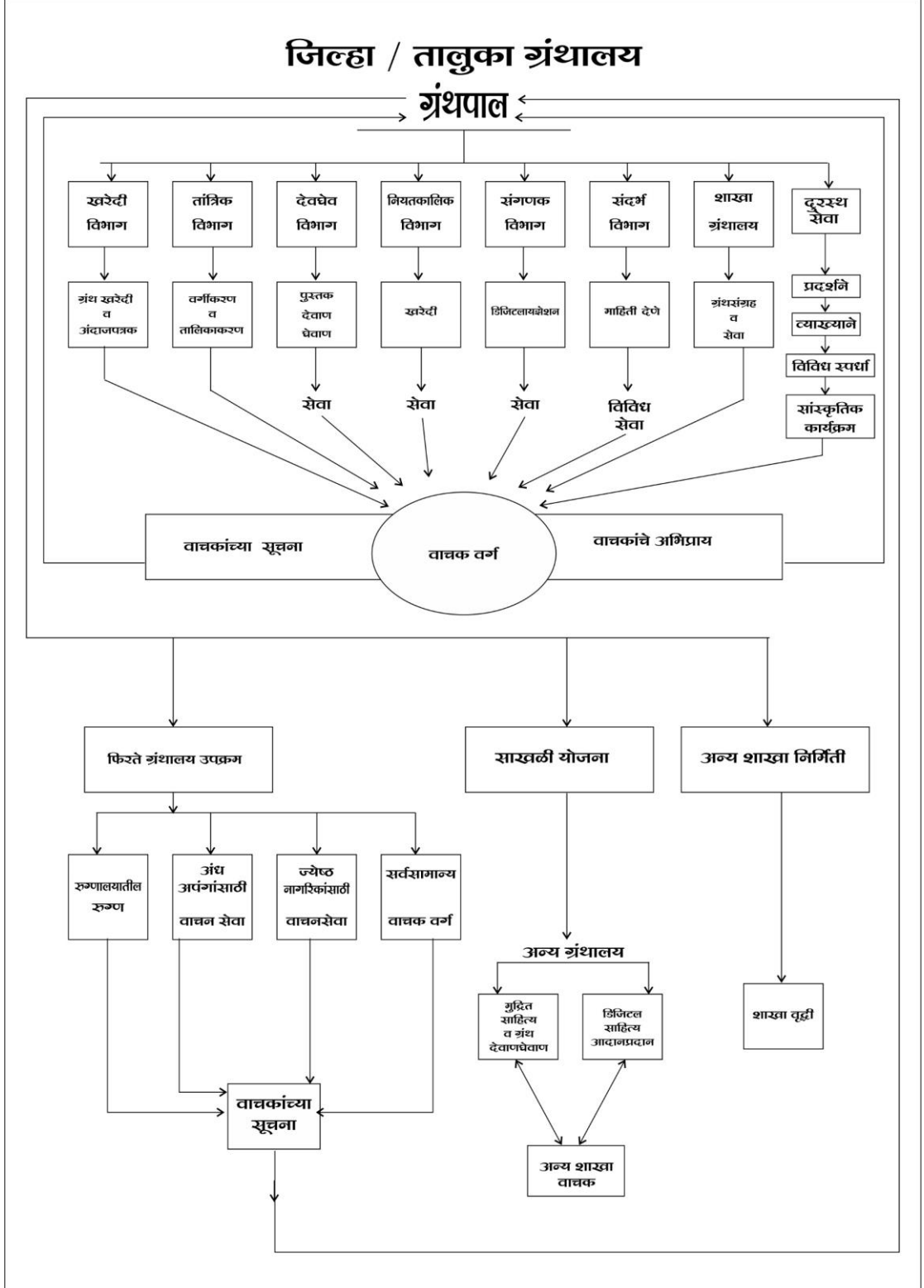
आकृती क्र. ५.५

संशोधकाने सार्वजनिक ग्रंथालयासाठी सुचविलेला प्रारूप आराखडा (मॉडेल)



तक्ता क्र. ५.१

आदर्श ग्रंथालयासाठी संशोधकांनी सूचविलेला प्रारूप आराखडा



सारांश :

वरील प्रारूपावरून जिल्हा अथवा तालुका अ वर्ग ग्रंथालय तयार करतांना कोणत्या बाबी विचारात घेणे आवश्यक आहे. त्याची तपशिलवार माहिती सदरच्या प्रकरणातून उपलब्ध होत आहे. त्याचप्रमाणे सदरच्या प्रारूपावरून सार्वजनिक ग्रंथालयात कोणकोणत्या सेवा व सुविधा वाचकांना द्यावा लागतात, याची माहिती मिळते.

संदर्भसूची :

१. आर्वीकर, भा.बा. आणि सातारकर, सु.प्र. (संपा.) (२००७) सार्वजनिक ग्रंथालये :
सद्यस्थिती आणि बदलते स्वरूप. औरंगाबाद : शांभवी प्रिंटर्स पब्लिशर्स, पृ.१५७
२. तत्रैव, पृ.१६५-१६८.
३. पौडवाल, सुषमा व सावे, वसंत (२०१४) सार्वजनिक ग्रंथालये : प्रगती आणि वस्तुस्थिती.
पुणे : माधवी प्रकाशन, पृ.४६.
४. तत्रैव, पृ.४९.

प्रकरण सहावे
निष्कर्ष आणि शिफारशी

प्रकरण ६ वे

निष्कर्ष आणि शिफारसी

| अ.क्र. | तपशील | पृष्ठ क्र. |
|--------|--|------------|
| ६.१. | प्रस्तावना | २५९ |
| ६.२. | निष्कर्ष | २५९ |
| | जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाचे निष्कर्ष | २५९ |
| | तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाचे निष्कर्ष | २६४ |
| ६.३. | शिफारशी | २६९ |
| ६.४. | उद्दिष्टांची पडताळणी | २८० |
| ६.५. | गृहितकांची पडताळणी | २८२ |
| ६.६. | पुढील संशोधनासाठी दिशा | २८३ |
| | सारांश | २८४ |

प्रकरण ६ वे

निष्कर्ष आणि शिफारशी

६.१. प्रस्तावना :

महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकासांतर्गत जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयांचा अभ्यास करीत असताना प्रश्नावली व अन्य ग्रंथांद्वारे उपलब्ध झालेल्या माहितीचे विश्लेषण करून निरीक्षणे आणि निष्कर्ष या प्रकरणात नोंदविले आहेत. हे निष्कर्ष नोंदवितांना प्रथमतः जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालयांचे व नंतर तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयांचे निष्कर्ष नोंदविले आहेत. यासोबत सार्वजनिक ग्रंथालयांसाठी आवश्यक वाटलेल्या शिफारसी नोंदवून संशोधनाच्या उद्दिष्टांची व गृहितकांची पडताळणी या प्रकरणात केली आहे.

६.२. निष्कर्ष :

जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाचे निष्कर्ष

१) महाराष्ट्रात 'अ' वर्ग जिल्हा ग्रंथालये ३५ होती. आता ३४ जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालय कार्यरत आहेत. त्यामध्ये अमरावती विभागात ५, औरंगाबाद विभाग ८, नागपूर विभागात ६, नाशिक विभागात ५, पुणे विभागात ५, मुंबई विभागात ६ अशी ग्रंथालये आहेत. १ ऑगस्ट २०१४ रोजी मुंबई विभागात पालघर या ३६ व्या जिल्हयाची निर्मिती महाराष्ट्र शासनाने केली. परंतु अद्यापही तेथे जिल्हा ग्रंथालय अस्तित्वात आलेले नाही.

२) जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या दैनंदिन कामकाज निकष ६ तास आहे. तर सर्वच ग्रंथालये ही निकषांहून अधिक वेळ दैनंदिन कामकाज करतात. यामध्ये ७ तास दैनंदिन कामकाज करणारी ५४.८४% ग्रंथालये आहेत, तर सर्वात जास्त १० तासापेक्षा जास्त दैनंदिन कामकाज करणारी ९.६८% ग्रंथालये आहेत.

- ३) जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांना साप्ताहिक एक दिवस सुट्टी घेण्याची तरतूद असूनही, १९.३५% ग्रंथालये साप्ताहिक केवळ अर्धा दिवस सुट्टी घेऊन वाचकांना सेवा देतात.
- ४) जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये एकूण २३३ कर्मचारी कार्यरत आहेत. त्यापैकी १२९ स्त्री कर्मचारी असून १०४ पुरुष कर्मचारी आहेत. पुरुषांच्या तुलनेत स्त्री कर्मचाऱ्यांचे प्रमाण जास्त आहे.
- ५) एकूण ग्रंथालयांपैकी ९.६८% ग्रंथालयात विहित आराखडयानुसार पूर्ण कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता झालेली नाही तर ९०.३२% ग्रंथालयात पूर्तता झालेली आहे.
- ६) सार्वजनिक ग्रंथालयांतील ग्रंथपालाच्या शैक्षणिक पात्रतेवरून असे दिसून आले की, ग्रंथालयातील ३२.२६% ग्रंथपालांनी एल.टी.सी. हा अल्पकालीन कोर्स पूर्ण केलेला आहे. तर ५४.८४% ग्रंथपालांनी पदवी शिक्षण बी.लिब. पूर्ण केले आहे. तर १२.९०% ग्रंथपालांनी पदव्युत्तर शिक्षण एम.लिब. पूर्ण केले आहे.
- ७) महाराष्ट्र शासनाकडून शासकीय तरतूदीनुसार सर्वच १००% ग्रंथालयांना वेतन व वेतनेत्तर अनुदान प्राप्त होते, तर राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठानाकडून ९३.५४% ग्रंथालयांना आर्थिक साहाय्य झाले आहे, तर ३८.७०% ग्रंथालयांना आमदार, खासदार व मुख्यमंत्री निधीतून अर्थसाहाय्य प्राप्त झाले आहे.
- ८) सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये २०१ ते ३०० पर्यंत दैनंदिन वाचकसंख्या असलेल्या ग्रंथालयांचे प्रमाण सर्वाधिक म्हणजे ३२.२६% आहे, तर ४०० पेक्षा अधिक वाचक संख्या असलेल्या ग्रंथालयांचे प्रमाण १६.१३% आहे.
- ९) जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालयाचा शासकिय नियमाप्रमाणे १५००० ग्रंथालयांचा निकष सर्वच म्हणजे १००% ग्रंथालये पूर्ण करतात. सार्वजनिक ग्रंथालयामधील ४०,००१ ते

६०,००० ग्रंथसंख्या असलेल्या ग्रंथालयांचे प्रमाण सर्वाधिक म्हणजे २२.५८% आहे, १,४०,००० पेक्षा अधिक ग्रंथसंख्या असलेल्या ग्रंथालयांचे प्रमाण ६.४५% आहे. मुंबई मराठी जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालयाची ग्रंथसंख्या सर्वाधिक आहे.

१०) नियतकालिकसंबंधीचा ५१ संख्येचा निकष सर्वच ग्रंथालये पूर्ण करतात. ५१ ते ७५ नियतकालिक असणाऱ्या ग्रंथालयांचे प्रमाण सर्वाधिक म्हणजे ३५.४८% आहे, तर १२५ पेक्षा अधिक नियतकालिके असणारी ९.६८% ग्रंथालये आहेत. सोलापूर येथील श्री.हिराचंद नेमचंद वाचनालयातील नियतकालिकांची संख्या सर्वाधिक १४५ आहे.

११) वृत्तपत्रासंबंधीचा १६ संख्येचा निकष सर्वच ग्रंथालये पूर्ण करतात. १६ ते २५ वृत्तपत्र संख्या असणाऱ्या ग्रंथालयांचे प्रमाण सर्वाधिक ४८.३९% आहे, तर ४६ ते ५५ दरम्यान संख्या असणाऱ्या ग्रंथालयांचे प्रमाण सर्वात कमी ९.६८% आहे.

१२) जिल्हा अ वर्ग ग्रंथालयामध्ये ग्रंथेतर साहित्य संपदे अंतर्गत १००% ग्रंथालयांमध्ये सी.डी./डी.व्ही.डी. उपलब्ध आहे.

१३) जिल्हा अ वर्ग ग्रंथालयामधील ९०.३२% ग्रंथालयांमध्ये हस्तलिखिते उपलब्ध आहेत. तर १००% म्हणजेच सर्वच ग्रंथालयांत दुर्मिळ पुस्तके उपलब्ध आहेत.

१४) सार्वजनिक ग्रंथालयांनी आपल्या वाचकांना मोठ्या प्रमाणात सेवा देता याव्या म्हणून ६७.८६% ग्रंथालये साखळी योजना राबवितात. तर दूरवर असणाऱ्या वाचकांसाठी ५५.५६% ग्रंथालये फिरत्या ग्रंथालयामार्फत सेवा पुरविते. तर ४८.२८% ग्रंथालयांनी आपल्या ग्रंथालयांच्या शाखा चालू केल्या आहेत. मुंबई मराठी ग्रंथसंग्रहालयाने आपल्या ग्रंथालयांच्या ३१ शाखा सुरू केल्या आहेत.

१५) सार्वजनिक ग्रंथालये समाज प्रबोधन आणि समाज विकासासाठी विविध उपक्रम राबवितात. या उपक्रमाबाबत मिळालेल्या माहितीच्या विश्लेषणावरून असे दिसून येते

की, ८०.६५% ग्रंथालयात चर्चासत्रे/परिसंवादाचे आयोजन केले जाते. तसेच ९०.३२% ग्रंथालयात व्याख्यानमालांचे आयोजन केले जाते. तसेच १००% ग्रंथालयात अभ्यास आणि तज्ज्ञ व्यक्तित्तीची विविध विषयांवरील व्याख्याने आयोजित केली जातात. ९३.५५% ग्रंथालयात वाचकांसाठी पुस्तक प्रदर्शन/अंक प्रदर्शनचे आयोजन केले जाते.

१६) सार्वजनिक ग्रंथालये अभ्यासू वाचकांना तसेच विद्यार्थ्यांना शैक्षणिक सेवा मोठया प्रमाणात देतात, यासंदर्भात मिळालेल्या माहिती विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, १००% ग्रंथालयात विद्यार्थ्यांसाठी अभ्यासिकेची सुविधा उपलब्ध आहे. ७७.४२% ग्रंथालयात संदर्भ विभाग आहे. ६७.७४% ग्रंथालयांमध्ये स्पर्धापरीक्षा विभाग कार्यरत आहे. सर्वच जिल्हा ग्रंथालये तज्ज्ञ वक्त्यांची व्याख्याने आयोजित करतात. ३५.४८% ग्रंथालयात संशोधन विभाग कार्यरत आहेत. तर ४१.९४% ग्रंथालयात ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र अभ्यासक्रमांतर्गत एल.टी.सी., बी.लिब. व एम.लिब. वर्गाचे आयोजन केले जाते.

१७) एकुण सार्वजनिक ग्रंथालयांपैकी ७०.९७% ग्रंथालये महिलांसाठी विशेष उपक्रम राबवितात. बालवाचक आणि विद्यार्थ्यांसाठी ५१.६१% ग्रंथालये विशेष उपक्रमाचे तसेच विविध स्पर्धांचे आयोजन करतात. ज्येष्ठ नागरिकांसाठी ७७.४२% ग्रंथालयात विशेष उपक्रमाचे आयोजन केले जाते. तर १९.३५% ग्रंथालयात अंध वाचकांसाठी खास ब्रेल लिपीतील वाचन साहित्याची उपलब्धता आहे. कोल्हापूर येथील करवीरनगर वाचन मंदिर या ग्रंथालयाने अंध वाचकांसाठी ब्रेल लिपीतील वाचन साहित्यासोबत श्रवणपद्धतीवर आधारित विशेष अब्रार संगणकप्रणाली उपयोजिली आहे.

१८) ग्रंथालयातील इमारतीच्या सोयी-सुविधांवरून असे दिसून येते की, ६७.७४% ग्रंथालयात सभागृहाची व्यवस्था आहे. नाशिक येथील सार्वजनिक वाचनालयाचे नाटयगृह व वस्तुसंग्रहालय उत्तम स्थितीत कार्यरत आहे.

- १९) संगणक हे सर्वच ग्रंथालयात आहेत. २ संगणक सर्वात जास्त २९.०३% ग्रंथालयात आहेत तर १० पेक्षा अधिक संगणक १६.१३% ग्रंथालयात आहेत. या ग्रंथालयांनी स्वतःचा स्वतंत्र संगणक विभाग स्थापन केला आहे.
- २०) सार्वजनिक ग्रंथालयात एकुण कर्मचारी २३३ आहेत. त्यापैकी ९१(३९.०६%) कर्मचारी संगणक कौशल्य प्रशिक्षित आहेत. तर १४२ (६०.९४%) कर्मचारी संगणक कौशल्य प्रशिक्षित नाहीत.
- २१) ग्रंथालय सॉफ्टवेअर हे ९६.७७% ग्रंथालयात वापरतात. त्यामध्ये सर्वात जास्त २२.५८% ग्रंथालयात ई-ग्रंथालय हे सॉफ्टवेअर वापरतात तर ३५.४८% ग्रंथालयात स्थानिक किंवा ग्रंथालयांनी स्वतःविकसित करून घेतलेले सॉफ्टवेअर वापरले जाते.
- २२) ग्रंथालयातील ग्रंथाच्या संगणकाच्या नोंदीविषयक माहितीवरून असे निदर्शनास येते की, ६१.२९% ग्रंथालयात ग्रंथाच्या संगणकीय नोंदी पूर्ण झाल्या आहेत तर २५.८१% ग्रंथालयात ग्रंथ नोंदीचे काम सुरु आहे. तर ७४.१९% ग्रंथालयात दुर्मिळ अशा ग्रंथांच्या संगणकीय नोंदी पूर्ण करण्याचे काम पूर्ण झाले आहे तर ९.६८% ग्रंथालयात हे काम सुरु आहे.
- २३) सार्वजनिक ग्रंथालयात वाचकांना आधुनिक तंत्रज्ञानांतर्गत दिली जाणारी महत्त्वाची सेवा म्हणजे इंटरनेट सुविधा होय. १००% ग्रंथालयात इंटरनेट सुविधा उपलब्ध आहे, परंतु ८७.१०% ग्रंथालयांनी वाचकांना इंटरनेट सुविधा उपलब्ध करून दिली आहे. ४५.१६% ग्रंथालयांनी ओपॅक सुविधा व ५१.६१% ग्रंथालयांनी लॅन सुविधा वाचकांना उपलब्ध करून दिली आहे. ग्रंथालयातील संगणकाची मर्यादीत संख्या तसेच कुशल मनुष्यबळाची कमतरता असल्यामुळे सर्वच ग्रंथालयांना इंटरनेट सेवा देणे शक्य होत नाही.

२४) जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयातील सर्वच ग्रंथालयात, झेरॉक्स सुविधा उपलब्ध आहे. परंतु ७४.१९% ग्रंथालये वाचकांसाठी झेरॉक्स सुविधा उपलब्ध करून देतात.

२५) सार्वजनिक ग्रंथालयांतील एकूण ग्रंथालयांपैकी ७०.९७% ग्रंथालयांनी ग्रंथालयाची स्वतंत्र वेबसाईट तयार करून त्यावर ग्रंथालयातील ग्रंथ, साहित्याची माहिती वेळोवेळी अद्ययावत ठेवली आहे.

२६) ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञानाचा आढावा घेतल्यास असे दिसून येते की, ८०.६५% ग्रंथालयात दूरदर्शन संच (टी.व्ही.) व ४५.१६% ग्रंथालयात व्ही.सी.आर./डी.व्ही.डी ही सुविधा उपलब्ध आहे. त्याचबरोबर ५१.६१% ग्रंथालयात रेडीओ ही सुविधा उपलब्ध आहे. तसेच १२.९०% ग्रंथालयात एअर कंडिशनर आहे. तर १००% ग्रंथालयात इनव्हर्टर उपलब्ध आहे.

२७) सार्वजनिक ग्रंथालयांनी सुरक्षिततेच्या बाबतीत २९.०३% ग्रंथालयात सी.सी.टी.व्ही. कॅमेरा उपलब्ध आहे.

● **तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाचे निष्कर्ष :**

१) महाराष्ट्रात ११० 'अ' वर्ग तालुका सार्वजनिक ग्रंथालये आहेत. त्यामध्ये अमरावती विभागात १०, औरंगाबाद विभागात २२, नागपूर विभागात ६, नाशिक विभागात १९, पुणे विभागात ३१, मुंबई विभागात २२ अशी ग्रंथालये आहेत.

२) तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या दैनंदिन कामकाज निकष ६ तास आहे, तर सर्वच ग्रंथालये ही निकषांप्रमाणे किंवा त्यातून अधिक दैनंदिन कामकाज करतात. यामध्ये ६ तास दैनंदिन कामकाज करणारी ३१.७१% ग्रंथालये आहेत, तर सर्वात जास्त १० तासांपेक्षा जास्त दैनंदिन कामकाज करणारी ४.८८% ग्रंथालये आहेत.

- ३) तालुका अ वर्ग ग्रंथालयांना एक पूर्ण दिवस सुट्टीची तरतूद असूनही केवळ अर्धा दिवस साप्ताहिक सुट्टी घेणारी २८.०५% एवढी सार्वजनिक ग्रंथालये आहेत.
- ४) तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयामध्ये एकूण ३१२ कर्मचारी कार्यरत आहेत. त्यापैकी पुरुष कर्मचाऱ्यांचे प्रमाण २१४ इतके आहे, तर स्त्री कर्मचारी ९८ इतके आहेत. एकूणच पुरुषांच्या तुलनेत स्त्री कर्मचाऱ्यांचे प्रमाण कमी आहे.
- ५) एकूण १७.०७% ग्रंथालयात विहित आराखड्यात पूर्ण कर्मचारी आकृतिबंधाची पूर्तता झालेली नाही, तर ८२.९३% ग्रंथालयात कर्मचारी पूर्तता झालेली आहे.
- ६) तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयातील ६२.१९% ग्रंथपालांनी एल. टी. सी. हा अल्पकालीन कोर्स पूर्ण केलेला आहे, तर २६.८३% ग्रंथपालांनी पदवी शिक्षण (बी. लिब.) पूर्ण केले आहे, तर १०.९८% ग्रंथपालांनी पदव्युत्तर शिक्षण एम. लिब. पूर्ण केले आहे.
- ७) महाराष्ट्र शासनाकडून शासकीय तरतूदीनुसार सर्वच १००% ग्रंथालयांना वेतन व वेतनेतर अनुदान प्राप्त होते, तर राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठानकडून ८७.८०% ग्रंथालयांना आर्थिक साहाय्य झाले आहे, तर ४१.४६% ग्रंथालयांना आमदार, खासदार व मुख्यमंत्री निधीतून अर्थसाहाय्य प्राप्त झाले आहे.
- ८) सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये १०१ ते २०० पर्यंत दैनंदिन वाचकसंख्या असलेल्या ग्रंथालयांचे प्रमाण सर्वाधिक म्हणजे ५८.५३% आहे, तर ३०१ हून अधिक वाचक संख्या असलेल्या ग्रंथालयांचे प्रमाण सर्वात कमी म्हणजे ८.५४% आहे.
- ९) तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयाच्या शासकीय नियमाप्रमाणे १५००० ग्रंथसंख्येचा निकष सर्वच म्हणजे १००% ग्रंथालये पूर्ण करतात. सार्वजनिक ग्रंथालयांमधील २०,००१ ते

४०,००० ग्रंथसंख्या असलेल्या ग्रंथालयाचे प्रमाण सर्वाधिक म्हणजे ६७.०७% आहे, तर ६०,००१ ते ८०,००० ग्रंथसंख्या असलेली सर्वात कमी १०.९८% ग्रंथालये आहेत.

१०) नियतकालिकांसंबंधीचा ५१ संख्येचा निकष सर्वच ग्रंथालये पूर्ण करतात. ५१ ते ७५ नियतकालिके असणाऱ्या ग्रंथालयांचे प्रमाण सर्वाधिक म्हणजे ३७.८०% आहे, तर १२५ हून अधिक नियतकालिके असणारी १७.०७% ग्रंथालये आहेत.

११) वृत्तपत्रासंबंधीचा १६ संख्येचा निकष सर्वच ग्रंथालये पूर्ण करतात. १६ ते २५ वृत्तपत्रसंख्या असणाऱ्या ग्रंथालयांचे प्रमाण सर्वाधिक ६२.१९% आहे, तर ४६ ते ५५ दरम्यान संख्या असणाऱ्या ग्रंथालयाचे प्रमाण सर्वात कमी १.२२% आहे.

१२) तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालयांमध्ये ग्रंथेतर साहित्य संपदेअंतर्गत १००% ग्रंथालयांमध्ये सी.डी./डी.व्ही.डी. उपलब्ध आहे.

१३) हस्तलिखितांसंबंधीच्या माहिती विश्लेषणावरून असे दिसून आले की, ३४.६२% ग्रंथालयांमध्ये हस्तलिखिते उपलब्ध आहेत.

१४) ग्रंथालयांमधील दुर्मिळ साहित्यासंबंधीच्या माहिती विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, ९४.९४% ग्रंथालयांत दुर्मिळ पुस्तके उपलब्ध आहेत.

१५) सार्वजनिक ग्रंथालयांमधील सेवा जास्तीत जास्त वाचकांना देता याव्यात म्हणून ४९.३७% ग्रंथालयांमध्ये साखळी योजना सुरु आहेत. तर ८.९७% ग्रंथालयांमध्ये वाचकांसाठी फिरते ग्रंथालय हा उपक्रम राबविला जातो. १८.७५% ग्रंथालयांच्या एक किंवा एकापेक्षा अधिक शाखा आहेत.

१६) सार्वजनिक ग्रंथालये समाजप्रबोधन आणि समाजविकासासाठी उपक्रम राबवितात. या उपक्रमाबाबत मिळालेल्या माहितीच्या विश्लेषणावरून असे दिसून येते की, १००% ग्रंथालयात अभ्यास आणि तज्ज्ञ व्यक्तींची व्याख्याने आयोजित केली जातात. ६९.५१% ग्रंथालयात चर्चासत्र/परिसंवादाचे आयोजन करतात. ५८.५४% ग्रंथालयात व्याख्यानमालाचे आयोजन केले जाते. ८२.९३% ग्रंथालयात वाचकांसाठी पुस्तक प्रदर्शन-अंक प्रदर्शनचे आयोजन केले जाते.

१७) तालुका अ वर्ग ग्रंथालयांमध्ये ४५.१२% ग्रंथालय वाचकांसाठी अभ्यासिकेची सुविधा उपलब्ध करून दिली आहे. ४७.५६% ग्रंथालयांमध्ये संदर्भ विभाग आहे. तर ४०.२४% ग्रंथालयांमध्ये स्पर्धा परीक्षा विभाग कार्यरत आहे. सर्वच ग्रंथालये तज्ज्ञ वक्त्यांची व्याख्याने घेतात तर ३.६६% ग्रंथालयात संशोधन विभाग कार्यरत आहे. तर ८.५४% ग्रंथालयात ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र अभ्यासक्रमांतर्गत बी.लिब. व एम.लिब. च्या वर्गांचे आयोजन केले जाते.

१८) एकूण सार्वजनिक ग्रंथालयांपैकी २५.६१% ग्रंथालये महिलांसाठी विशेष उपक्रम राबवितात. बालवाचक व विद्यार्थ्यांसाठी ४६.३४% ग्रंथालये विविध स्पर्धांचे आयोजन करतात. अंधांसाठी खास ब्रेल लिपीतील वाचन साहित्य कोणत्याही ग्रंथालयात उपलब्ध नाही.

१९) ग्रंथालयातील इमारतीच्या सोयी-सुविधांचा विचार केला असता असे लक्षात येते की, १३.४१% ग्रंथालयात सभागृहाची व्यवस्था आहे.

२०) संगणक हे सर्वच ग्रंथालयात आहेत. एक संगणक ५८.५४% ग्रंथालयात आहे. तर ५ पेक्षा अधिक संगणक २.४४% ग्रंथालयात आहेत.

२१) एकूण ग्रंथालयांमधील कर्मचाऱ्यांपैकी ११७ (३७.५%) कर्मचारी संगणक कौशल्य प्रशिक्षित आहेत. तर १९५ (६२.५%) कर्मचारी संगणक कौशल्य प्रशिक्षित नाहीत.

२२) ग्रंथालय सॉफ्टवेअर ६७.०७% ग्रंथालयात वापरतात. त्यामध्ये सर्वात जास्त १३.४१% ग्रंथालयात सुलभ ग्रंथालय हे सॉफ्टवेअर वापरतात तर २८.०५% ग्रंथालयात अन्य सॉफ्टवेअर वापरतात.

२३) ग्रंथालयातील ग्रंथ साहित्य व दुर्मिळ ग्रंथसंग्रहांच्या संगणकीय नोंदी विषयक माहितीवरून असे दिसून येते की, २५.६१% ग्रंथालयात ग्रंथाच्या संगणकीय नोंदी पूर्ण झाल्या आहेत. तर ५२.४४% ग्रंथालयात नोंदीचे काम अंशतः पूर्ण झाले आहे. तर दुर्मिळ अशा वाचन साहित्याच्या नोंदी २५% ग्रंथालयात पूर्ण झाल्या आहेत. तर १५.७९% ग्रंथालयात अंशतः पूर्ण झाले आहे.

२४) सार्वजनिक ग्रंथालयात वाचकांना आधुनिक तंत्रज्ञानांतर्गत दिली जाणारी महत्वाची सेवा म्हणजे इंटरनेट सुविधा होय. ८२.९३% ग्रंथालयात इंटरनेट सुविधा उपलब्ध आहे. परंतु १५.८५% ग्रंथालयात वाचकांना इंटरनेट सुविधा उपलब्ध करून दिली जाते. १३.४१% ग्रंथालयांनी ओपॅक सुविधा व १७.०७% ग्रंथालयांनी लॅन सुविधा वाचकांना उपलब्ध करून दिली आहे. या सर्व सेवेसाठी ग्रंथालयात संगणकाचे प्रमाण जास्त असणे आवश्यक आहे. संगणकाचे प्रमाण कमी असल्यामुळे ग्रंथालये वाचकांना ऑनलाईन सेवा देऊ शकत नाहीत.

२५) एकुण ग्रंथालयांपैकी ९६.३४% ग्रंथालयात झेरॉक्सची सुविधा उपलब्ध आहे, परंतु १३.४१% ग्रंथालये वाचकांना झेरॉक्सच्या सुविधा देतात.

२६) सार्वजनिक ग्रंथालयांतील एकुण ग्रंथालयांपैकी १०.९८% ग्रंथालयांनी स्वतःच्या ग्रंथालयाची स्वतंत्र वेबसाईट तयार करून त्यावर ग्रंथालयातील वाचन साहित्याबाबत माहिती दिली आहे.

२७) ग्रंथालयांतील आधुनिक तंत्रज्ञानाचा आढावा घेतल्यास असे दिसून येते की, २१.९५% ग्रंथालयात दूरदर्शन संच (टी.व्ही.) व १९.५१% ग्रंथालयात व्ही.सी.आर. व

२५.६१% ग्रंथालयात रेडीओ ही सुविधा उपलब्ध आहे. त्याबरोबर ३.६६% ग्रंथालयात एअर कंडिशनर आहे. तसेच सुरक्षेच्या बाबतीत २.४४% ग्रंथालयात सी.सी.टी.व्ही. कॅमेरा उपलब्ध आहे. तर सर्वच ग्रंथालयात इनव्हर्टर उपलब्ध आहे.

६.३. शिफारशी :

“महाराष्ट्रातील अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाचा विकास” या विषयावरती संशोधन करीत असताना संकलित केलेल्या माहितीच्या विश्लेषणावरून संशोधकाला निष्कर्ष प्राप्त झाले. त्या निष्कर्षाच्या अनुषंगाने संशोधकाने सार्वजनिक ग्रंथालयांसाठी पुढील शिफारशी केलेल्या आहेत.

१. १९६७ साली संमत झालेल्या महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियमांत महत्वपूर्ण बदल करणे आवश्यक आहे. सध्याच्या अधिनियमांमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालयांसाठी प्रत्यक्ष कर/ उपकरांची तरतुद नाही. त्यामुळे भरीव आर्थिक निधी उपलब्ध होत नाही. प्रत्यक्ष कर, उपकर लागू करावा आणि ग्रंथालयांसाठी भरीव आर्थिक तरतुद करावी. या आर्थिक निधीचा विनियोग सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या विकासासाठी व्हावा. ग्रंथालयाच्या विकासासाठी महाराष्ट्र शासनाने स्वतंत्र मंत्रालय-खाते निर्माण करावे. (महाराष्ट्र शेजारील कर्नाटक राज्यात ग्रंथालयांच्या विकासासाठी प्रत्यक्ष कर/ उपकराची तरतुद तसेच स्वतंत्र मंत्रालय/खाते कार्यरत आहे.)
२. डॉ. रंगनाथन यांनी शासन प्रतिवर्षी शिक्षणावर जेवढी रक्कम खर्च करते त्या रकमेच्या ६% इतकी रक्कम सार्वजनिक ग्रंथालयांवर खर्च करावी असे सुचविले आहे. शिक्षणावर होणारा खर्च राष्ट्र उभारणीच्या कामासाठी केला जातो असे मानले जाते. शिक्षणाच्या या कार्यामध्ये सार्वजनिक ग्रंथालयांचा वाटा ही फार मोठा असतो. म्हणून शिक्षणावर होणाऱ्या खर्चाचा ६% हिस्सा ग्रंथालयांच्या वाटयाला यायला पाहिजे.
३. महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियमानुसार राज्यातील नागरिकांना ग्रंथालय सेवा देण्यासाठी राज्यशासन कटीबद्ध आहे. ‘गाव तेथे ग्रंथालय’ हे शासनाचे घोषवाक्य आहे. हे घोषवाक्य कागदोपत्री न राहता ते प्रत्यक्षात यावे.

४. महाराष्ट्रातील पालघर जिल्हयात जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालय नाही तसेच २५३ तालुक्यांमध्ये तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय नाही तरी संशोधक अशी शिफारस करत आहे की पालघर जिल्हयात जिल्हा 'अ' वर्ग ग्रंथालय आणि २५३ तालुक्यात तालुका 'अ' वर्ग ग्रंथालये शासनाकडून सुरु करण्यात यावीत. ज्या तालुका ग्रंथालयांचा 'ब' दर्जा आहे त्यांनी दर्जावृद्धीसाठी प्रयत्न करावेत आणि शासनाकडून त्यांना प्रोत्साहन मिळावे.
५. सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियमांच्या तरतुदीनुसार महाराष्ट्र शासनाकडून नविन सार्वजनिक ग्रंथालयांना मान्यता आणि अनुदान मिळत होते. परंतु राज्यशासनाने २०१२ पासून नविन ग्रंथालयांना मान्यता व अनुदान देणे बंद केले आहे. त्यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या संख्यात्मक विकासाला खिळ बसली आहे. शासनाने नविन ग्रंथालयांना मान्यता व अनुदान द्यावे.
६. ग्रंथालय शास्त्रांचे जनक डॉ.शि.रा. रंगनाथन यांची प्रसिद्ध पंचसूत्री सार्वजनिक ग्रंथालयात प्रदर्शित केलेली दिसत नाही. त्यामुळे संशोधक अशी शिफारस करत आहे की, रंगनाथन यांची पंचसूत्री सार्वजनिक ग्रंथालयांनी दर्शनी भागात लावावीत व त्यांची योग्य अंमलबजावणी व्हावी. यामुळे वाचकांना व ग्रंथालय सेवकांना आपल्या हक्क व कर्तव्याची जाणीव होईल.
७. सार्वजनिक ग्रंथालयांनी प्रवेशद्वाराजवळ वाचकांसाठी सूचना पेटी लावावी. योग्य सूचनांचा स्विकार करून अंमलबजावणी करावी.
८. महाराष्ट्रातील लोकसंख्येची होणारी वाढ व सार्वजनिक ग्रंथालयातील वाढणारा वाचक वर्ग यांची गरज लक्षात घेऊन सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या वेळेच्या आराखड्यात बदल करून ग्रंथालय किमान ८ तासापेक्षा अधिक सेवा देईल असा निकष करावा.

९. सार्वजनिक ग्रंथालयातील विहित आराखडयानुसार कर्मचारी आकृतीबंधाप्रमाणे सेवक भरतीची पूर्तता झालेली दिसून येत नाही तरी ग्रंथालयातील कर्मचाऱ्यांची रिक्त पदे भरण्याबाबत शासकीय मान्यतेची पूर्तता त्वरीत व्हावी व ही पदे लवकर भरली जावीत.
१०. सार्वजनिक ग्रंथालयातील ग्रंथपाल व कर्मचाऱ्यांची नोकरी पूर्णवेळेची असावी त्यानुसार त्यांना योग्य वेतन मिळावे.
११. सध्या जिल्हा ग्रंथालयाच्या ग्रंथपालांना ग्रंथालयशास्त्र पदवी (बी.लिब.) पात्रतेची अट आहे. त्याऐवजी जिल्हा ग्रंथपालासाठी ग्रंथालय शास्त्र पदव्युत्तर पदवी (एम. लिब.) ची अट करावी. तर तालुका ग्रंथालयांतील ग्रंथपाल पदासाठी ग्रंथालयशास्त्र पदवी किंवा ग्रंथपालन प्रमाणपत्र (एल.टी.सी.) ची अट आहे. त्याऐवजी बी.लिब. किंवा एम.लिब. ही शैक्षणिक पात्रता अट असावी.
१२. महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालय कायदानुसार, जिल्हा परिषदांनी ग्रामवाचनालयाकडे पहावे ही अपेक्षा असली तरी सर्व ठिकाणी फारसे लक्ष देणे त्यांना शक्य होत नाही म्हणून जिल्हयासाठी तूर्त एक खास ग्रंथपाल नेमुन त्याचेकडून ग्रंथालय नसलेल्या गावांत नवी ग्रंथालये स्थापन करणे व जुन्या ग्रंथालयाची तपासणी करणे त्यांच्या संवर्धनासंबंधी मार्गदर्शन करणे ही कामे करणे गरजेचे आहे. शासनाने ग्राम वाचनालयापासून जिल्हा वाचनालयापर्यंत शासनाची सर्व प्रकाशने वाचनालयांना मोफत पाठवावीत.
१३. राजा राममोहन रॉय, कोलकत्ता यांच्याकडून सर्व ग्रंथालयांना विकास निधी मिळतो. परंतु बऱ्याच ग्रंथालयांना याची योग्य माहिती नसते. त्यामुळे ग्रंथालय संचनालयाकडून सर्व सार्वजनिक ग्रंथालयांना योग्य मार्गदर्शन व्हावे तसेच ग्रंथालयांनीही विविध योजनेची माहिती घेऊन त्यांचे सहकार्य घ्यावे.

१४. आमदार, खासदार स्थानिक विकास निधीमध्ये ग्रंथालयांसाठी खास तरतुद शासनाने केली आहे. तर सार्वजनिक ग्रंथालयातील ग्रंथपाल व व्यवस्थापकांनी आमदार, खासदारांच्या स्थानिक विकास निधीमधून तसेच मुख्यमंत्री आर्थिक निधीमधून अर्थसहाय्य मिळविण्याकरिता प्रयत्न करावेत.
१५. सार्वजनिक ग्रंथालयातील ज्या ग्रंथालयांची सभासद संख्या कमी आहे, त्यांनी सभासद वाढीसाठी विशेष प्रयत्न केले पाहिजे. ज्यांची दैनंदिन वाचक संख्या १०० पेक्षा कमी आहे अशा ग्रंथालयांनी दैनंदिन वाचक वृद्धीसाठी प्रयत्न करावे.
१६. ग्रंथाची आवड निर्माण करण्यासाठी ग्रंथालयाने वेगवेगळे कार्यक्रमाचे आयोजन करावे. त्यामध्ये ग्रंथप्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, चर्चासत्रे, लेखन-वाचन मेळावा, ग्रंथदिंडी इत्यादी उपक्रमांमुळे वाचक ग्रंथालयांकडे आकर्षित होईल व वाचनाची आवड निर्माण होईल. सभासद फी कमी करून आणि अल्प अनामत रक्कम घेऊन वाचकांना ग्रंथालयीन पुस्तके उपलब्ध करून दिल्यास वाचक वर्ग मोठ्या प्रमाणात ग्रंथालयाकडे आकर्षित होईल.
१७. ग्रंथालय समितीमध्ये प्रत्यक्ष वाचक प्रतिनिधींचा समावेश करून घेणे आवश्यक आहे. तसे केल्याने समितीमध्ये सर्वप्रकारचे प्रतिनिधी येतील व समितीचा समतोल राखला जाईल.
१८. ग्रंथालयातील वाचन साहित्यांची माहिती ग्रंथनाम, सहग्रंथकार, वर्गांक अशा प्रकारच्या सूची करून त्या वाचकापर्यंत पोहचविण्याचा प्रयत्न केला जावा.
१९. आजचे युग हे माहितीचे युग आहे. वाचकांना मोठ्या प्रमाणात माहितीची गरज भासत आहे म्हणून फार मोठ्या प्रमाणात वाचक वर्ग सार्वजनिक वाचनालयाकडे येत आहे. तर अशा वाचकांची ज्ञानाची गरज भागविण्यासाठी ग्रंथालयांनी जास्तीत-जास्त ग्रंथ आपल्या ग्रंथालयात घेणे आज काळाची गरज बनलेली आहे.

२०. सार्वजनिक ग्रंथालयातील 'अ' वर्ग श्रेणीच्या ग्रंथालयात शासनमान्य कर्मचारी पदे ०६ आहेत व पुस्तकसंख्या १५,००० अशी अट आहे. जादा ग्रंथसंख्या असल्यास ग्रंथालय व्यवस्थापनावर अतिरिक्त ताण येतो. त्यामुळे संशोधक अशी शिफारस करत आहे की, ग्रंथालयात एक लाखाहून अधिक ग्रंथसंख्या असेल व सभासद संख्या ५०० असेल तर त्या ग्रंथालयासाठी १ लिपीक व १ शिपाई अशी एकूण २ पदे जादा मंजूर करावीत.
२१. वाचकांची गरज लक्षात घेऊन सार्वजनिक ग्रंथालयांनी जास्तीतजास्त नियतकालिके वाढविण्यासाठी प्रयत्न करावेत. तसेच जुने बांधणी केलेले नियतकालिकांचे अंक घरी वाचण्यासाठी द्यावेत. जुनी नियतकालिके रद्दी न काढता आसपासच्या रुग्णालयात किंवा कारागृहात वाचावयास द्यावी.
२२. सार्वजनिक ग्रंथालयात वर्तमानपत्र वाचणाऱ्या वाचकांची संख्या अधिक असते. प्रादेशिक आवडी-निवडीनुसार वाचकांची मागणी ध्यानी घेऊन काही वर्तमानपत्रांच्या जादा प्रती आवश्यक असल्यास त्या ग्रंथालयात वाचकांना उपलब्ध करून द्याव्या.
२३. ग्रंथालयात दररोज मोठ्या संख्येने येणाऱ्या वृत्तपत्रांमुळे मोठ्या प्रमाणात रद्दी निर्माण होते, त्यामुळे ग्रंथालयांना जागेची अडचण निर्माण होते. रद्दी विक्री करण्याबाबत ग्रंथालय संचलनालयाचा आदेश येईपर्यंत मोठ्या प्रमाणात रद्दी साठते, त्यामुळे दोन महिन्या नंतरच्या कालावधीतील वृत्तपत्रांची रद्दी विक्रीसाठी शासनाकडून कायमस्वरूपी परवानगी मिळावी.
२४. ग्रंथालयातील दुर्मिळ साहित्याबद्दल वाचकांमध्ये जागरूकता निर्माण करावी, ज्यायोगे या साहित्याचा जास्तीतजास्त वाचक लाभ घेतील.
२५. ग्रंथालयातील पुस्तके मोठ्या प्रमाणात वाचकांकडून गहाळ होतात आणि कालांतराने त्यांना सापडतात. अशा वेळी अमेरिकेत एक खास उपक्रम राबविला जातो तो म्हणजे

अमेरिकेतील ग्रंथालये वर्षाच्या शेवटी ग्रंथालयात सूचना लावतात. वाचकांना आवाहन करतात की, कुणी चुकून पुस्तके घरी नेली असल्यास ती प्रवेशद्वाराजवळील बॉक्समध्ये टाकावीत. त्याबद्दल कोणतीही कारवाई केली जाणार नाही. याला उत्तम प्रतिसाद मिळतो आणि अनेक वाचक त्या बॉक्समध्ये ग्रंथ आणून टाकतात. ग्रंथालयाचाही फायदा होतो. भारतामधील ग्रंथालयात हा उपक्रम उपयुक्त ठरू शकतो.

२६. वाचकास हवा असणारा ग्रंथ ग्रंथालयात उपलब्ध नसल्यास दुसऱ्या ग्रंथालयातून मिळवून द्यावा त्यासाठी आंतर ग्रंथालयीन सेवा उपलब्ध करून द्यावी.

२७. ग्रंथालयांनी आजूबाजूच्या भागातल्या वाचकांची वाचनाची गरज लक्षात घेवून त्यांच्यासाठी फिरते ग्रंथालय किंवा जवळच्याच भागात एखादी ग्रंथालयाची शाखा काढून सेवा पुरवावी व या सर्वांसाठी शासनाने स्वतंत्र अनुदान द्यावे.

२८. सार्वजनिक ग्रंथालय समाजासाठी विविध उपक्रम राबवित असतात. त्यातील एक म्हणजे चर्चासत्र/परिसंवाद. सर्वच ग्रंथालयांनी याचे आयोजन करणे गरजेचे आहे. त्यामुळे ज्ञानात्मक प्रक्रिया गतिमान होते.

२९. समाजाच्या सांस्कृतिक जडणघडणीसाठी ग्रंथालयातर्फे मान्यवरांच्या व विद्वानांच्या व्याख्यानमाला आयोजित केल्या जाव्यात त्यातून समाज प्रबोधनाबरोबरच वाचनालयाबद्दल आकर्षण निर्माण होईल.

३०. सार्वजनिक ग्रंथालयाने शहराचे सांस्कृतिक केंद्र बनण्याच्या दृष्टीने प्रयत्नशील असावे. त्या दृष्टीने ग्रंथालयाने ग्रंथप्रदर्शन, वाचनसंस्कृतीवर चर्चा, परिसंवाद, स्पर्धा, नववाचकांच्या भेटी, सवलतीच्या दरात पुस्तक विक्री याचे आयोजन करावे.

३१. सार्वजनिक ग्रंथालये सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक विकासाची महत्वपूर्ण केंद्रे आहेत. बदलत्या काळातील गरजा ओळखून ग्रंथालयामध्ये अभ्यासिका, संदर्भ विभाग, स्पर्धा परीक्षा विभाग, संशोधन विभाग व शैक्षणिक उपक्रमांचे आयोजन होणे गरजेचे आहे.

३२. सार्वजनिक ग्रंथालय सभासद संख्येत वाढ होण्याच्या दृष्टीने सार्वजनिक ग्रंथालयांनी वाचक, बाल वाचक, विद्यार्थी, जेष्ठ नागरिकांसाठी खास उपक्रम व विविध स्पर्धांचे आयोजन केले पाहिजे.
३३. सर्वसाधारणपणे महाविद्यालयीन व शालेय विद्यार्थी तसेच नोकरदार वर्गाला रविवारी साप्ताहिक सुट्टी असते. काही सार्वजनिक ग्रंथालये रविवारी सुट्टी घेतात. त्यामुळे मोठा वाचक समुदाय ग्रंथालयीन सेवेपासून वंचित राहतो. म्हणून सार्वजनिक ग्रंथालयांनी रविवार वगळून अन्य दिवशी साप्ताहिक सुट्टी घ्यावी.
३४. ग्रंथालयीन वेळेत बदल करावा- दुपारी ग्रंथालये उघडी ठेवली असता महिलावर्गाला ग्रंथालयाचा अधिक उपयोग होऊ शकेल. त्याप्रमाणे पाकशास्त्र, हस्तकला यांसारखी महिलांना उपयुक्त पुस्तके वाचनसंग्रहात समाविष्ट करावीत. त्याप्रमाणे हळदी-कुंकु कार्यक्रम, रांगोळी स्पर्धा इ. स्पर्धांचे ही आयोजन करावे.
३५. बालवाचकांसाठी छान छान गोष्टीची चित्रमय पुस्तके, कॉमिक्स त्याचप्रमाणे नवनवीन खेळांविषयी माहिती देणारी पुस्तके, चित्रे यांचा पुस्तकांच्या संग्रहात समावेश करावा. बालवाचकांसाठी कमी उंचीची कपाटे ग्रंथालयात ठेवून त्यावरून आकर्षकरित्या पुस्तकांची मांडणी केली जावी.
३६. विद्यार्थी वर्गालाही उपयोगी पडतील असे संदर्भ ग्रंथ, क्रमिक पुस्तके, नकाशे यांचा संग्रह ग्रंथालयांनी करावा. विद्यार्थ्यांचा व्यक्तिमत्व विकास व्हावा. त्यांचे भाषिक कौशल्य, सामान्य ज्ञान समृद्ध व्हावे यासाठी ग्रंथालयांनी वक्तृत्व, निबंध, सुंदर-हस्ताक्षर, चित्रकला, यासारख्या स्पर्धांचे आयोजन करावे. तसेच ग्रंथपालांनी परिसरातील शाळा व महाविद्यालयांना भेटी देऊन ग्रंथालय याविषयी माहिती सांगावी तसेच विद्यार्थी समुहाची ग्रंथालयाला भेट घडवून आणावी. या माध्यमातून विद्यार्थीवर्ग ग्रंथालयांशी जोडला जाईल.

३७. ग्रंथालयात येत असलेल्या जेष्ठ नागरिकांसाठी त्यांच्या गरजा लक्षात घेऊन त्यांना घरपोच ग्रंथ देण्याची सेवा ग्रंथालयांनी दिली पाहिजे.
३८. ग्रंथालयात अंध वाचकांचे प्रमाण जास्त असेल तर अंध वाचकांसाठी ब्रेल लिपीतील साहित्य व ऑडिओ बुक सुविधा ग्रंथालयाने उपलब्ध करून दिली पाहिजे. शासनाने यासाठी ग्रंथालयांना विशेष अनुदान देणे गरजेचे आहे.
३९. विविध प्रकारचे सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक उपक्रम राबविण्याकरता सभागृहाची आवश्यकता असते. त्यादृष्टीने ग्रंथालयांनी सभागृहासाठी प्रयत्न करावे त्यासाठी दानशूर व्यक्तींचे साहाय्य घ्यावे.
४०. वाढत्या लोकसंख्येमुळे वाचकांची वाढणारी संख्या व वाचकांच्या वाढत्या गरजा भागविण्यासाठी वाचकांना द्याव्या लागणाऱ्या सेवा-सुविधांचा विचार करता सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये माहिती सेवा विकसित करण्यासाठी संगणकाचा वापर वाढवावा. ग्रंथालयांचे आधुनिकीकरण, इंटरनेट सेवा, ओपॅक, लॅन इत्यादी साठी मोठ्या प्रमाणात ग्रंथालयात नवीन तंत्रज्ञानयुक्त संगणक असणे गरजेचे आहे. त्यासाठी त्यांची संख्या वाढवावी.
४१. आधुनिक काळात ग्रंथालय व माहिती सेवांच्या क्षेत्रात तंत्रज्ञानाचा वाढता वापर पाहता वाचकांना जलद गतीने सेवा देण्याकरिता संगणक प्रशिक्षित कर्मचाऱ्यांची सार्वजनिक ग्रंथालयाला आवश्यकता आहे. त्यामुळे या प्रमाणात वाढ होणे गरजेचे आहे. नविन सेवक भरती प्रक्रियेत याचा विचार केला जावा व पूर्वीच्या सेवकांना संगणक प्रशिक्षण द्यावे.
४२. सर्वच सार्वजनिक ग्रंथालये संगणकीकृत होणे गरजेचे झाले आहे. ग्रंथालयांसाठी उपयुक्त असे काही सॉफ्टवेअर विनामूल्य इंटरनेटवर उपलब्ध आहे. ग्रंथालयांनी या सॉफ्टवेअरचा उपयोग करून ग्रंथालयाचे संगणकीकरण करावे.

४३. ग्रंथालय सेवेत संगणकाचा वापर करताना ग्रंथालयातील प्रशिक्षित सेवक, संगणकासाठी आवश्यक तेवढी जागा, ग्रंथालयाची आर्थिक क्षमता, ग्रंथसंग्रह संख्या यावरून कोणत्या सेवा संगणकावर आणणे योग्य होईल याचा ग्रंथालय व्यवस्थापकाने विचार करावा.
४४. जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांमध्ये मोठ्या प्रमाणात दुर्मिळ, अतिदुर्मिळ, हस्तलिखिते, पोथ्या आणि पुस्तके उपलब्ध आहेत. एका अर्थाने हा महाराष्ट्राचा आणि भारताचा ज्ञानात्मक ठेवा आहे. हा ठेवा जतन करण्यासाठी योग्य तंत्रज्ञान आणि साधन-सुविधांची माहिती ग्रंथालय प्रशासनाला असणे गरजेचे आहे. दुर्मिळ ग्रंथांचे जतन ही प्रक्रिया खर्चिक असल्याने अनेक ग्रंथालयांचे त्याकडे दुर्लक्ष होत आहे. परिणामी दुर्मिळ, अनमोल ग्रंथसंपदा नष्ट होण्याचा धोका निर्माण झाला आहे. ग्रंथालय संचलनालयाने या कामी तातडीने मार्गदर्शन व तंत्रज्ञानात्मक सहकार्य करावे.
४५. सार्वजनिक ग्रंथालयात फार मोठ्या प्रमाणात विद्यार्थी वाचक येतात त्यामुळे ग्रंथालयांनी स्पर्धा परीक्षेच्या मुलाच्या व इतर वाचकांच्या गरजा लक्षात घेऊन त्याच्या मागणीनुसार योग्य शुल्क आकारून इंटरनेटसारखी सुविधा द्यावी, त्यातून ग्रंथालयास आर्थिक उत्पन्न मिळेल.
४६. ओपॅक (ऑनलाईन पब्लिक एक्सेस), लॅन (लोकल एरिया नेटवर्क) तसेच झेरॉक्स सुविधा वाचकांच्या आवश्यकतेनुसार ग्रंथालयांनी उपलब्ध करून दिल्या पाहिजेत.
४७. जिल्हा व तालुका 'अ' वर्गात येणारा वाचक वर्ग मोठ्या प्रमाणात असतो. त्यामुळे ग्रंथालयांनी स्वतःची वेबसाईट तयार करावी व त्यावर ग्रंथालयातील ग्रंथाची यादी, दुर्मिळ पुस्तकाची यादी, हस्तलिखिते यादी टाकावी. त्याचप्रमाणे ग्रंथालयात नवीन ग्रंथ आल्यास ती वेबसाईट अपडेट करावी. त्यामुळे वाचकांचा वेळ वाचतो व त्याला जलद सेवा मिळते.

४८. आधुनिक तंत्रज्ञान माहितीच्या युगात सर्वच ग्रंथालयांकडे दूरदर्शन संच, डि.व्ही.डी., सी.सी.टी.व्ही. कॅमेरे असणे गरजेचे आहे.
४९. राज्यात सार्वजनिक ग्रंथालयाचा विकास न होण्यामागच्या कारणांचा शोध घेतला असता जाणवते की सार्वजनिक ग्रंथालयांचे महत्व लक्षात घेऊन शासन आणि समाज या दोघांनीही सार्वजनिक ग्रंथालये ही प्राधान्यक्रमाची जबाबदारी म्हणून स्वीकारणे आवश्यक आहे. अनेक सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या इमारती जीर्ण झाल्या आहेत, त्यांचे नुतनीकरण करणे अथवा नविन इमारती बांधणे आवश्यक आहे. इमारत बांधकामासाठी ही शासनाकडून विशेष आर्थिक निधी ग्रंथालयांना उपलब्ध करून द्यावा.
५०. ग्रामीण भागातील सार्वजनिक ग्रंथालयांना जागा उपलब्ध होते पण बांधकामासाठी आर्थिक निधी आवश्यक असतो अशा ग्रंथालयांना शासनाने इमारत विकास निधी उपलब्ध करून द्यावा.
५१. शहरी भागातील ग्रंथालयांच्या विस्तारासाठी जागेची मुख्य अडचण जाणवते. त्यासाठी शासनाने (नगर विकास मंत्रालय) सार्वजनिक ज्ञानविकास साधणाऱ्या लोकोपयोगी ग्रंथालयांसाठी जमीन किंवा जादा F.S.I. मंजूर करावा. यामुळे शहरांमध्ये ग्रंथालयांचा विकास होणे शक्य होईल.
५२. काही जिल्हे व तालुक्यांमध्ये सार्वजनिक ग्रंथालये अस्तित्वात नाहीत. अशा प्रादेशिक परिसरात तसेच आदिवासी बहुल प्रदेशात शासनाने भूमी व सार्वजनिक ग्रंथालय इमारत निधी या दोन्ही अंगाने सहकार्य करावे यामुळे सार्वजनिक ग्रंथालयांचा संख्यात्मक विकास जलदपणे घडून येणे शक्य होईल.
५३. इमारतीचा वाचनालय वर्गवारी प्लॅन तयार करावा, इमारत फर्निचर यावर खर्चाच्या ७५% असे वेगळे अनुदान द्यावे.

५४. महाराष्ट्रातील विदर्भामध्ये पूर्वी जीपगाडीच्या माध्यमांतून पुस्तकांची ने-आण करून, विविध गावांतील वाचकांसाठी 'फिरते ग्रंथालय' योजना कार्यरत होती. महाराष्ट्रातील दुर्गम प्रादेशिक भागात तसेच आदिवासी बहुल प्रांतांत आजही ही योजना फलदायी ठरेल.

५५. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासांमध्ये ग्रंथालयीन कर्मचाऱ्यांचा मोठा वाटा आहे. त्यांच्या सेवाभावी वृत्तीमुळे वाचकांना ग्रंथालयामार्फत उत्तम सेवा पुरविल्या जातात. त्यामुळे ग्रंथालयीन कर्मचाऱ्यांच्या विविध समस्या सोडविण्यासाठी शासनाकडून प्राधान्य दिले जावे. त्यासाठी

- ग्रंथालयांसदर्भात नेमलेल्या मा.पतकी समितीने अहवालात केलेल्या शिफारसींवर ग्रंथालय संघाशी चर्चा करून कार्यवाही करावी.
- ग्रंथालय कर्मचारी कामकाजाच्या वेळेत वाढ करून त्यांना पूर्णवेळ नियुक्ती आणि त्यानुसार वेतनवाढ मिळावी.
- आधुनिक काळातील गरजांप्रमाणे कर्मचारी वर्गासाठी शैक्षणिक पात्रतेच्या अटी लागू करून नवीन पद भरतेवेळी त्याचा काटेकोर विचार करावा. संगणक कौशल्याची पात्रता असणे आवश्यक असावे.
- जिल्हा आणि तालुका ग्रंथालयातील ग्रंथपालांना बी.लिब्. व एम्.लिब्. परीक्षा किमान ५५% गुणांनी पास असणे बंधनकारक असावे. ग्रंथपालांच्या नियुक्तीसाठी 'ग्रंथपाल निवड मंडळ' असावे. शासनाकडून उमेदवारांच्या गुणवत्तेनुसार निवड केली जावी. सेवाशर्ती व सेवा नियमांची निश्चिती व्हावी, शैक्षणिक पात्रतेप्रमाणे सुधारित वेतनश्रेणी मिळावी.
- ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांना मोफत वैद्यकीय उपचार लाभ व विमा संरक्षण सुविधा उपलब्ध व्हावी.
- सार्वजनिक ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांना व्यवस्थापन मंडळात प्रतिनिधित्व मिळावे. शासनाने उपरोक्त शिफारसी स्वीकारल्यामुळे त्यांना समाजात मानाने जगता येईल. अन्य सेवा-सुविधा उपलब्ध करून दिल्याने त्यांचे शारीरिक व मानसिक

तसेच कौटुंबिक स्वास्थ्य उत्तम राहिल. समाधानी असलेला कर्मचारी अधिक उत्साहाने आणि जबाबदारीने आपले कर्तव्य पार पाडील.

५६. समाजाच्या सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक उन्नतीसाठी सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या संख्येत वाढ होणे आवश्यक आहे. ग्रंथालयांनी लोकसहभाग वाढविण्यासाठी जाणीवपूर्वक प्रयत्न करावेत त्याचप्रमाणे जनतेने तसेच लोकप्रतिनिधींनी सार्वजनिक ग्रंथालयांप्रती सकारात्मक दृष्टीकोन बाळगून सढळ हस्ते आर्थिक पाठबळ देऊन सहकार्य करावे.

६.४. उद्दिष्टांची पडताळणी :

● उद्दिष्ट क्र. १. : महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा अभ्यासणे.

महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालय अधिनियम कायदा १९६७ नुसार महाराष्ट्रातील विविध सार्वजनिक ग्रंथालयांना मान्यता देऊन त्यांची नोंदणी करून त्यांना शासनाकडून वेतन व वेतनेतर आर्थिक अनुदान प्रदान केले जाते. तसेच केंद्र शासनाकडून राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठानच्या वतीने विविध प्रकारचे अनुदान प्रदान करण्यात येते. शासकीय कायद्याच्या माध्यमातून महाराष्ट्रातील ग्रंथालय चळवळ आणि सार्वजनिक ग्रंथालयांचा विकास घडून आला. त्यामुळे ग्रंथालय कायदा, त्यातील महत्त्वपूर्ण तरतूदी, त्यात झालेले बदल आणि नवीन ग्रंथालयांना मान्यता व अनुदान बंद करण्याचा शासकीय निर्णय याची माहिती महाराष्ट्र ग्रंथालय संचालनालय, शासकीय आदेश याद्वारे मिळविण्यात आली आणि त्या आधारे ग्रंथालयांच्या विकासावर त्याच्या झालेल्या बऱ्या-वाईट परिणामांचा अभ्यास केला गेला. त्यामुळे या उद्दिष्टांची पूर्तता झालेली आहे.

● उद्दिष्ट क्र. २. : महाराष्ट्रातील शासनमान्य जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांतील सद्यस्थितीचा अभ्यास करणे.

महाराष्ट्रातील जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांचा दर्जा, स्थापना वर्ष, ग्रंथालयातील सेवक संख्या, त्यांची शैक्षणिक पात्रता, ग्रंथालयातील वाचनसाहित्य, ग्रंथेत्तर साहित्य बाबतची माहिती प्रश्नावलीद्वारे मिळविली. त्याप्रमाणे मिळालेल्या माहितीचे विश्लेषण

करून ग्रंथालयाच्या सद्यःस्थितीचा अभ्यास केला. त्यामुळे महाराष्ट्रातील 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांतील सद्यः स्थितीचा अभ्यास करणे या उद्दिष्टांची पूर्तता झाली.

● **उद्दिष्ट क्र. ३. : जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांमार्फत दिल्या जाणाऱ्या सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक योगदानाचा आढावा घेणे.**

महाराष्ट्रातील जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांमार्फत वाचकांना दिल्या जाणाऱ्या ग्रंथालयीन सेवा, सुविधा यांमध्ये संदर्भविभाग, संशोधनविभाग, स्पर्धापरीक्षा विभाग, अभ्यासिकेची सोय आणि ग्रंथालयांमार्फत राबविल्या जाणाऱ्या ग्रंथालय पदवी शैक्षणिक अभ्यासक्रम इत्यादी उपक्रमांची माहिती घेतली. तसेच सामाजिक विकासासाठी ग्रंथालयाकडून आयोजित करण्यात आलेल्या व्याख्यानमाला, परिसंवाद, चर्चासत्रे, पुस्तक प्रदर्शने, काव्यवाचन स्पर्धा आणि महिला, बालविकास तसेच ज्येष्ठ नागरिक आणि अंध वाचकांसाठी राबविल्या जाणाऱ्या उपक्रमांची माहिती मिळविली. त्यामुळे जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांमार्फत दिल्या जाणाऱ्या सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक उपक्रमांचा आढावा घेणे, या उद्दिष्टांची पूर्तता झाली.

● **उद्दिष्ट क्र. ४. : सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या उपयोजनांचा आढावा घेणे.**

महाराष्ट्रातील जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयातील संगणकाची संख्या, ग्रंथालयातील ग्रंथसाहित्य व दुर्मिळ ग्रंथांचे संगणकीकरण, त्यासाठीची प्रणाली, वाचकांसाठी इंटरनेट सेवा, ओपॅक सेवा, लॅनसेवा, झेरॉक्स सुविधांची उपलब्धता तसेच ग्रंथालयातील इतर उपकरणे जसे रेडिओ, दूरदर्शन, डी. व्ही. डी., वातानुकूलन यंत्र, सी. सी. टी. व्ही कॅमेरा, इनव्हेटर इत्यादीची माहिती मिळविली. मिळालेल्या माहितीचे विश्लेषण करून ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञानाचा अभ्यास केला. त्यामुळे महाराष्ट्रातील जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयातील आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या उपयोजनाचा आढावा घेणे या उद्दिष्टांची पूर्तता झाली.

● **उद्दिष्ट क्र. ५. : जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विविध समस्यांचा अभ्यास करणे.**

जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाची प्रश्नावलीद्वारे माहिती मिळवित असताना ग्रंथालयातील ग्रंथपालांना जाणविणाऱ्या विविध समस्यांची माहितीही संकलीत करण्यात आली. त्यामध्ये प्रामुख्याने ग्रंथालय विकासासाठी येणारी आर्थिक निर्धींची व जागेची कमतरता, कर्मचाऱ्यांना मिळणारे अपुरे वेतन, वेतन निश्चिती व सेवाशर्तीचा अभाव भविष्य निर्वाह निर्धींची नसलेली व्यवस्था, ग्रंथसंरक्षण करण्यासाठी वापरण्यात येणाऱ्या घातक रसायनांमुळे ग्रंथालयीन कर्मचाऱ्यांनी जाणवणाऱ्या आरोग्यविषयक समस्यांचा अभ्यास केला. त्यामुळे उपरोक्त उद्दिष्टांची पूर्तता झाली.

● **उद्दिष्ट क्र. ६. : सार्वजनिक ग्रंथालयांचा समाजासाठी अधिक उपयोग होण्याच्या दृष्टीने आदर्श नमुन्याचे प्रारूप सादर करणे.**

महाराष्ट्रातील जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाविषयीची माहिती संकलित करित असताना ग्रंथालये राबवित असलेल्या विविध नाविन्यपूर्ण योजना, उपक्रमांची माहिती संकलित झाली. त्याचप्रमाणे ग्रंथालयांना जाणवणाऱ्या विविध समस्यांची माहितीही मिळाली. त्या आधारे उत्कृष्ट उपक्रमांचे अनुकरण आणि ग्रंथालयांना जाणविणाऱ्या विविध समस्यांचे निराकरण होण्याच्या दृष्टीने ग्रंथालयाच्या आदर्श नमुन्याचे प्रारूप संशोधकाने सादर केले आहे. त्यामुळे या उद्दिष्टांचीही पूर्तता झालेली आहे.

६.५. गृहितकांची पडताळणी :

गृहितक :

समाजाच्या सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक विकासात सार्वजनिक ग्रंथालयांचे योगदान महत्त्वपूर्ण असते. या दृष्टीने जिल्हा व तालुका स्तरावरील 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांमधून माहिती व अन्य योग्य त्या सेवा वाचकांना दिल्या जातात.

महाराष्ट्रात सार्वजनिक ग्रंथालयांची प्रदीर्घ परंपरा आहे. सामाजिक सेवाभावी दृष्टीकोनातून या ग्रंथालयांमार्फत कायद्याद्वारे ठरवून दिलेल्या वेळेपेक्षा अधिक काळ समाजासाठी

ग्रंथालयीन माहिती सेवा दिल्या जातात. सामाजिक हिताच्या दृष्टीने सार्वजनिक ग्रंथालये, ज्येष्ठ नागरिक विभाग, महिला विभाग, बाल विभागासाठी विविध उपक्रम राबवितात. तर सांस्कृतिक उपक्रमांतर्गत विविध कला-क्रिडा संबंधित स्पर्धांचे तसेच महत्वपूर्ण विषयांवर तज्ज्ञ व्यक्तींच्या व्याख्यानांचे आणि व्याख्यानमालांचे आयोजन करतात. हस्तलिखिते आणि दुर्मिळ ग्रंथ साधन सामुग्री जतन केल्यामुळे संस्कृतीच्या संवर्धनास सहाय्य होते. समाजाच्या शैक्षणिक प्रगतीसाठी सार्वजनिक ग्रंथालयाद्वारे संदर्भ विभाग, संशोधन विभाग, अभ्यासिकेची सुविधा दिली जाते. काही ग्रंथालये रुग्णालयातील रुग्ण, तुरुंगातील कैदी, जेष्ठ नागरिक यांनाही फिरत्या ग्रंथालयामार्फत ग्रंथालय सेवा देतात. माफक फी मध्ये ग्रंथालयीन माहिती सेवांच्या सहज उपलब्धतेमुळे समाजातील सर्व जातीधर्मातील व सर्व थरातील लोकांना ज्ञानात्मक प्रगती साधता येते. एकुणच समाजाच्या सर्वांगीण विकासात सार्वजनिक ग्रंथालयांचे अतिशय महत्वपूर्ण योगदान आहे. यामुळे संशोधनासाठी निवडलेले गृहितक सिद्ध होत आहे.

६.६. पुढील संशोधनाची दिशा

- महाराष्ट्रातील जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयातील व्यवस्थापन अनुदान आणि सेवांचा अभ्यास
- महाराष्ट्रातील शासकीय जिल्हा ग्रंथालय व सार्वजनिक जिल्हा ग्रंथालय यांचा तौलनिक अभ्यास
- महाराष्ट्रातील शतकोत्तर 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या उभारणीत संस्था चालकांचे योगदान : एक अभ्यास
- महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांमधील हस्तलिखिते, दोलामुद्रिते आणि दुर्मिळ ग्रंथ साहित्याचा अभ्यास.
- सार्वजनिक ग्रंथालयातील वाचन संस्कृती व वाचकांच्या सवईचा अभ्यास
- महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा आणि भारतातील अन्य राज्यांतील ग्रंथालय कायदा : तौलनिक अभ्यास.
- महाराष्ट्रातील ग्रंथालय चळवळींचा सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासातील योगदान.

सारांश :

संशोधनासाठी ठरविण्यात आलेल्या उद्दिष्टांनुसार नियोजनपूर्ण संशोधन कार्य पूर्ण केले आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या संशोधनात्मक अभ्यासामधून विश्लेषण आणि निरीक्षणामधून काढलेले निष्कर्ष नोंदविले आहेत. तसेच सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासासाठी व ही ग्रंथालये अधिक लोकाभिमुख होण्यासाठी उपयुक्त वाटणाऱ्या शिफारशी सुचविल्या आहेत त्याचा उपयोग ग्रंथपाल, ग्रंथालय व्यवस्थापन, ग्रंथालये संचलनालयास होणार आहे.

सदर संशोधनासाठी निश्चित केलेली गृहीतके सिद्ध झाली असून ठरविलेल्या उद्दिष्टांची पूर्तता ही योग्य पद्धतीने केली आहे. सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासाचा अभ्यास करताना या विषयासंदर्भात महत्त्वपूर्ण वाटणाऱ्या आणि संशोधनाच्या दृष्टिने दुर्लक्षित राहिलेल्या विषयांना अनुसरून पुढील संशोधनाची दिशा ठरविण्यात आली आहे. या क्षेत्रात संशोधन करू इच्छिणाऱ्या अभ्यासकांना त्याचा निश्चितच उपयोग होईल. सार्वजनिक ग्रंथालयाविषयीच्या सदर संशोधन अभ्यासामधून एक दर्जेदार संदर्भ ग्रंथ प्रसिद्ध करण्याचाही संशोधकाचा मानस आहे.

परिशिष्टे

परिशिष्टे

अ. ग्रंथपाल प्रश्नावली

ब. जिल्हा अ वर्ग व तालुका अ वर्ग ग्रंथालयांची सूची

क. महाराष्ट्रातील शासनमान्य जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांची यादी

ड. महाराष्ट्रातील शासनमान्य तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांची यादी

इ. शतकोत्तर जिल्हा अ वर्ग व तालुका अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांची सूची

ई. नागरिकांची सनद ग्रंथालय संचालनालय, महाराष्ट्र राज्य, मुंबई

उ. जिल्हा व तालुका अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय स्थानदर्शक नकाशे

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

विद्यानिष्णात (पीएच.डी.) अभ्यासक्रमासाठी प्रश्नावली

विषय: “महाराष्ट्रातील अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयाचा विकास”

सन२०१०-२०११ या सालानुसार सदरची माहिती मिळावी

सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या ग्रंथपालांसाठीची प्रश्नावली

१. ग्रंथालयाचे पूर्ण नाव : -----
२. ग्रंथालयाच्या कामाची वेळ व कामाचे तास : -----
३. साप्ताहिक सुट्टीचा वार आणि सुट्टीची वेळ : -----
४. ग्रंथालयातील एकूण कर्मचारी : -----

| अ.क्र | स्वरूप | आकडेवारी |
|-------|-----------------|----------|
| १ | स्त्री कर्मचारी | |
| २ | पुरुष कर्मचारी | |
| ३ | एकूण | |

५. शासन आराखड्यानुसार कर्मचारी आकृतीबंध पूर्तता आहे काय.

होय नाही.

६. ग्रंथपालाची शैक्षणिक पात्रता :-----

७. ग्रंथालयाला अनुदान प्रदान करणारे घटक

| अ.क्र | अनुदान प्रदान करणारे घटक | होय | नाही |
|-------|-------------------------------|-----|------|
| १ | महाराष्ट्र ग्रंथालय संचलनालय | | |
| २ | राजा राममोहन रॉय प्रतिष्ठाण | | |
| ३ | आमदार/खासदार/मुख्यमंत्री नीधी | | |

८. ग्रंथालयातील दैनंदिन वाचकांची सरासरी संख्या

९. ग्रंथालयातील वाचन साहित्या संबंधीची माहिती.

| अ.क्र | वाचन साहित्याचे स्वरूप | आकडेवारी |
|-------|------------------------|----------|
| १ | ग्रंथसंख्या | |
| २ | नियतकालिके | |
| ३ | दैनिके | |
| ४ | सी.डी. | |
| ५ | हस्तलिखिते | |
| ६ | इतर | |

१०. अन्य ग्रंथालयासोबत ग्रंथसाहित्य देवाण घेवाण केली जाते का ?

होय नाही

११. ग्रंथालयात फिरते ग्रंथालय केंद्र आहे काय ?

होय नाही

१२. ग्रंथालयाच्या अन्य शाखा आहेत काय ?

होय नाही

१३. ग्रंथालयामार्फत परिसंवाद/चर्चासत्रांचे आयोजन केले जाते का ?

होय नाही

१४. ग्रंथालयामार्फत व्याख्यानमालांचे आयोजन केले जाते का ?

होय नाही

१५. ग्रंथालयामार्फत व्याख्यानांचे आयोजन केले जाते का ?

होय नाही

१६. ग्रंथलायामार्फत पुस्तक प्रदर्शनांचे आयोजन केले जाते का ?

होय नाही

१७. ग्रंथालयात अभ्यासिकेची सुविधा आहे काय ?

होय नाही

१८. ग्रंथालयात संदर्भ विभाग स्वतंत्र आहे काय ?

होय नाही

१९. ग्रंथालयातील अभ्यासकांसाठी स्पर्धा परिक्षेसाठी उपयुक्त वाचनसाहित्याची उपलब्धता आहे का ?

होय नाही

२०. ग्रंथालयात स्वतंत्र संशोधन विभाग आहे काय ?

होय नाही

२१. ग्रंथालयामार्फत शैक्षणिक अभ्यासवर्गाचे आयोजन केले जाते काय ?

होय नाही

होय असल्यास,

१) एल.टी.सी २) बी.लिब् ३) एम.लिब्

२२. महिला वाचक वर्गासाठी खास उपक्रमांचे व स्पर्धांचे आयोजन केले जाते काय ?

होय/नाही.

असल्यास कोणत्या ?

.....
.....

२३. बालविभाग व विद्यार्थी वर्गासाठी खास उपक्रम व स्पर्धांचे आयोजन केले जाते काय ?

होय/नाही.

असल्यास कोणत्या ?

.....
.....

२४. जेष्ठ नागरिकांसाठी वेगळ्या प्रकारचे उपक्रम आयोजित केले जातात काय?
होय/नाही.
असल्यास कोणत्या?

.....
.....

२५. अंध वाचकांसाठी वाचनसाहित्याची उपलब्धता आहे काय?

होय नाही

२६. ग्रंथालयात सभागृहाची उपलब्धता आहे काय?

होय नाही

२७. ग्रंथालयातील संगणकाची संख्या-

२८. संगणक कौशल्य प्राप्त कर्मचारी संख्या-

| अ.क्र | स्वरूप | आकडेवारी |
|-------|-------------------------------|----------|
| १ | एकूण कर्मचारी | |
| २ | संगणक कौशल्य प्राप्त कर्मचारी | |

२९. ग्रंथालयाचे संगणकीकरण झाले आहे काय?

होय नाही

असल्यास कोणत्या प्रणालीचे उपयोजन होते. ?

.....

३०. ग्रंथसाहित्य नोंदीचे संगणकीकरण झाले आहे काय?

अ) पूर्ण झाले आहे. ब) अंशतः झाले आहे. क) झालेले नाही.

३१. अ) आपल्या ग्रंथालयात दुर्मिळ ग्रंथसंग्रह आहे काय?

होय नाही

ब) असल्यास त्यांचे संगणकीकरण झाले आहे काय?

अ) पूर्ण झाले आहे. ब) अंशतः झाले आहे. क) झालेले नाही.

३२. अ) ग्रंथालयत इंटरनेट सुविधा आहे काय ?
 होय नाही
- ब) वाचकांसाठी इंटरनेटसुविधा उपलब्ध आहे काय ?
 होय नाही
३३. ग्रंथालयात ओपॅक (ऑनलाईन पब्लिक एक्सेस) सुविधा आहे काय ?
 होय नाही
३४. ग्रंथालयात लॅन (लोकल एरिया नेटवर्क) उपलब्ध आहे काय ?
 होय नाही
३५. अ) ग्रंथालयात झेरॉक्स सुविधा उपलब्ध आहे काय ?
 होय नाही
- ब) वाचकांसाठी झेरॉक्स सुविधा उपलब्ध आहे काय ?
 होय नाही
३६. ग्रंथालयात अद्ययावत फर्निचर सुविधा आहे काय ?
 होय नाही
३७. ग्रंथालयात वीज गेल्यास पर्यायी उपाय म्हणून इनव्हेटर सुविधा आहे काय ?
 होय नाही
३८. आपल्या ग्रंथालयाची वेबसाईट आहे काय ?
 होय नाही
३९. ग्रंथालयातील साधन सुविधा व उपकरणांची माहिती-

| अ.क्र | स्वरूप | आकडेवारी |
|-------|-------------------------|----------|
| १ | दूरदर्शन | |
| २ | व्ही.सी.आर./डी.व्ही.डी. | |
| ३ | रेडिओ | |
| ४ | वातानुकूलियंत्र A/C | |
| ५ | सी.सी.टी.व्ही. कॅमेरा | |
| ६ | इनव्हेटर | |

४०. ग्रंथालयाविषयाची अन्य माहिती/समस्या

ग्रंथपाल स्वाक्षरी

ग्रंथालयाचा शिक्का

ब. जिल्हा अ वर्ग व तालुका अ वर्ग ग्रंथालयांची सूची

| अ. क्र. | जिल्हा | जिल्हा अ | तालुका अ | अ. क्र. | जिल्हा | जिल्हा अ | तालुका अ |
|---------|------------|----------|----------|---------|-------------|----------|----------|
| १. | अकोला | १ | १ | १९. | वर्धा | १ | ३ |
| २. | अमरावती | १ | ४ | २०. | अहमदनगर | १ | ३ |
| ३. | बुलढाणा | १ | २ | २१. | जळगाव | १ | ६ |
| ४. | यवतमाळ | १ | २ | २२. | धुळे | १ | ३ |
| ५. | वाशिम | १ | १ | २३. | नंदूरबार | १ | ० |
| ६. | उस्मानाबाद | १ | ४ | २४. | नाशिक | १ | ७ |
| ७. | औरंगाबाद | १ | २ | २५. | कोल्हापूर | १ | ७ |
| ८. | जालना | १ | १ | २६. | पुणे | १ | ९ |
| ९. | नांदेड | १ | ३ | २७. | सांगली | १ | ३ |
| १०. | परभणी | १ | ३ | २८. | सातारा | १ | ४ |
| ११. | बीड | १ | ४ | २९. | सोलापूर | १ | ८ |
| १२. | लातूर | १ | ३ | ३०. | ठाणे | १ | ४ |
| १३. | हिंगोली | १ | २ | ३१. | मुंबई उपनगर | १ | ० |

| | | | | | | | |
|-----|----------|---|---|------|------------|----|-----|
| १४. | गडचिरोली | १ | ० | ३२. | मुंबई शहर | १ | ० |
| १५. | गोंदीया | १ | ० | ३३. | रत्नागिरी | १ | ४ |
| १६. | चंद्रपूर | १ | ० | ३४. | रायगड | १ | ९ |
| १७. | नागपूर | १ | ३ | ३५. | सिंधुदुर्ग | १ | ५ |
| १८. | भंडारा | १ | ० | एकूण | | ३५ | ११० |

क. महाराष्ट्रातील शासनमान्य जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांची यादी :

अमरावती विभाग

१. अकोला जिल्हा - बाबुजी देशमुख वाचनालय, टिळक रोड, ताजनापेठ, अकोला,
२. अमरावती जिल्हा - अमरावती नगर वाचनालय, अमरावती
३. बुलढाणा जिल्हा - गर्दे वाचनालय, बुलढाणा
४. यवतमाळ जिल्हा - नगर वाचनालय, यवतमाळ
५. वाशिम जिल्हा - राजे वाकाटक सार्वजनिक वाचनालय, वाशिम

औरंगाबाद विभाग

६. उस्मानाबाद जिल्हा - नगर वाचनालय, मेन रोड, उस्मानाबाद
७. औरंगाबाद जिल्हा - बलवंत मोफत वाचनालय, औरंगपुरा, औरंगाबाद
८. जालना जिल्हा - टिळक सार्वजनिक वाचनालय, नगर परिषद, जालना
९. नांदेड जिल्हा - कै. डॉ. राम मनोहर लोहिया वाचनालय, म.न.पा. नांदेड
१०. परभणी जिल्हा - गणेश वाचनालय, नानल परभणी
११. बीड जिल्हा - ए. एच. वाडीया सार्वजनिक वाचनालय, बीड
१२. लातूर जिल्हा - बलभीम वाचनालय, लातूर
१३. हिंगोली जिल्हा - नूतन साहित्य मंदिर, सार्वजनिक वाचनालय, हिंगोली

नागपूर विभाग

१४. गडचिरोली जिल्हा - शिवाजी सार्वजनिक वाचनालय, गडचिरोली
१५. गोंदिया जिल्हा - श्री. शारदा वाचनालय, गोंदिया
१६. चंद्रपूर जिल्हा - महात्मा गांधी वाचनालय, न. प. चंद्रपूर
१७. नागपूर जिल्हा - राजाराम सीताराम दीक्षित वाचनालय, सीताबर्डी, नागपूर
१८. भंडारा जिल्हा - सार्वजनिक वाचनालय, गांधी चौक, भंडारा
१९. वर्धा जिल्हा - सत्यनारायण बजाज सार्वजनिक वाचनालय (ग्रंथालय), वर्धा

नाशिक विभाग

२०. अहमदनगर जिल्हा - अहमदनगर जिल्हा वाचनालय, चितळे रोड, अहमदनगर
२१. जळगाव जिल्हा - वल्लभदास वालजी जिल्हा वाचनालय, जळगाव
२२. धुळे जिल्हा - धोंडो शामराव गरूड सार्वजनिक वाचनालय, धुळे
२३. नंदूरबार जिल्हा - लोकमान्य टिळक वाचनालय, नंदूरबार
२४. नाशिक जिल्हा - सार्वजनिक वाचनालय, टिळकपथ नाशिक

पुणे विभाग

२५. कोल्हापूर जिल्हा - करवीरनगर वाचन मंदिर, ५१० सी वॉर्ड, राजाराम रोड
२६. पुणे जिल्हा - पुणे मराठी ग्रंथालय, ४३७ ब, नारायण पेठ, पुणे
२७. सांगली जिल्हा - सांगली जिल्हानगर वाचनालय, ९७२ राजवाडा चौक, मिरज
२८. सातारा जिल्हा - नगर वाचनालय, ३६ भवानीपेठ, राजवाडा चौक, सातारा
२९. सोलापूर जिल्हा - श्री. हिराचंद नेमचंद वाचनालय, १३४ मुरारजीपेठ, सोलापूर

मुंबई विभाग

३०. ठाणे जिल्हा - मराठी ग्रंथालय, सुभाषपथ, ठाणे
३१. मुंबई उपनगर - नॅशनल लायब्ररी, बांद्रा, मुंबई
३२. मुंबई शहर - मुंबई मराठी ग्रंथसंग्रहालय, नायगाव, दादर
३३. रत्नागिरी जिल्हा - रत्नागिरी जिल्हा नगरवाचनालय
३४. रायगड - सार्वजनिक वाचनालय आणि जिल्हा ग्रंथालय अलीबाग
३५. सिंधुदुर्ग - रा. ब. अनंत शिवाजी देसाई वाचनालय, कुडाळ

ड. महाराष्ट्रातील शासनमान्य तालुका 'अ'वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांची यादी

अमरावती विभाग

अकोला विभाग

१. श्री. सनातन धर्मसभा पुस्तकालय, जुना कापड बाजार, ता. अकोला
अमरावती जिल्हा
२. सार्वजनिक वाचनालय, अचलपूर शहर, ता. अचलपूर
३. श्री. अंबादेवी संस्थान, ता. अमरावती
४. लालबहादूरशास्त्री नगर वाचनालय, ता. मोर्शी
५. देशबंधुदास सार्वजनिक वाचनालय, ता. वरूड

बुलढाणा जिल्हा

६. दस्तुर रतनजी ग्रंथालय, रेल्वे स्टेशनजवळ, खामगाव
७. सरस्वती वाचनालय, पातुडी, ता. संग्रामपूर

यवतमाळ जिल्हा

८. देशभक्त शंकरराव सरनाईक सार्वजनिक वाचनालय, पुसद, ता. पुसद
९. नगर वाचनालय, वणी, ता. वणी

वाशिम जिल्हा

१०. स्व. श्री. वसंतराव नाईक सार्वजनिक ग्रंथालय, मंगरूळपीर, ता. मंगरूळपीर

औरंगाबाद विभाग

उस्मानाबाद जिल्हा

११. जनता वाचनालय, ता. उमरगा
१२. विजय वाचनालय, तुळजापूर, ता. तुळजापूर
१३. रवींद्रनाथ टागोर न. प., ग्रंथालय, भूम
१४. लोकवाचनालय, लोहारा

औरंगाबाद जिल्हा

१५. जीवन विकास ग्रंथालय, टिळकनगर औरंगाबाद
१६. कै. दादासाहेब अन्वीकर स्मारक ग्रंथालय, सिल्लोड, ता. सिल्लोड

जालना जिल्हा

१७. ग्रंथ संग्रहालय श्रीराम वाचनालय, जालना

नांदेड जिल्हा

१८. विचार विकास मंदिर, कंधार
१९. श्री. समर्थ वाचनालय, देगलूर
२०. सार्वजनिक वाचनालय, नगर परिषद, बिलोली

परभणी जिल्हा

२१. नगर परिषद वाचनालय, जितूर
२२. मौ. अब्दुल कलाम आझादनगर, वाचनालय, परभणी
२३. स्वामी रामानंद तीर्थ हिंदी-मराठी ग्रंथालय, सेलू

बीड जिल्हा

२४. साहित्य निकेतन सार्वजनिक वाचनालय, अंबाजोग, ता. अंबाजोगाई
२५. सार्वजनिक वाचनालय, केज
२६. श्री. स्वामी विवेकानंद वाचनालय, शक्तिकुंज वसाहत, परकी, ता. परळी वैजनाथ
२७. आदर्श सार्वजनिक वाचनालय, माजलगाव

लातूर जिल्हा

२८. शामलाल वाचनालय, उदगीर
२९. विकास वाचनालय, औसा
३०. श्री. मारवाडी नवयुवक वाचनालय, लातूर

हिंगोली जिल्हा

३१. सार्वजनिक वाचनालय, वसमत
३२. कविवर्य विश्वास वसेकर ग्रंथालय, सेनगाव

नागपूर विभाग
नागपूर जिल्हा

३३. सार्वजनिक वाचनालय, नरखेड
३४. श्रीनवयुवक स्नेह मंडळ वाचनालय, लाकडीपूल नागपूर, ता. नागपूर (ग्रामीण)
३५. राजाराम सीताराम दीक्षित लायब्ररी, धरमपेठ नागपूर, ता. नागपूर (शहर)

वर्धा जिल्हा

३६. लोकमान्य वाचनालय, आर्वी
३७. सिद्धार्थ नवयुवक वाचनालय, पुलगाव, ता. दवेळी
३८. गांधी ज्ञान मंदिर वाचनालय, सिव्हील लाईन, वर्धा, ता. वर्धा

नाशिक विभाग
अहमदनगर जिल्हा

३९. स्वामी विवेकानंद वाचनालय, नगरपरिषद, राहुरी
४०. महात्मा सार्वजनिक वाचनालय, शेवगाव
४१. लोकमान्य टिळक वाचनालय आणि ग्रंथसंग्रहालय, न. प. श्रीरामपूर

जळगाव जिल्हा

४२. पु. सानेगुरुजी ग्रंथालय व मोफत वाचनालय, अमळनेर
४३. शेट नारायण बंकट वाचनालय, चाळीसगाव
४४. नगरवाचन मंदिर, चोपडा
४५. जैन ओस्वाल भगीरथीबाई वाचनालय, जामनेर
४६. कै. ह. ना. आपटे मोफत वाचनालय, नगरपालिका, पारोळा, ता. पारोळा
४७. सार्वजनिक वाचनालय, तापीरोड भुसावळ, ता. भुसावळ

धुळे जिल्हा

४८. सत्कार्योत्तेजक सभा मुक्तद्वार ग्रंथालय, धुळे
४९. महात्मा गांधी वाचनालय, नगरपालिका शिरपूर, ता. शिरपूर
५०. श्री. छत्रपती शिवाजी वाचनालय, साक्री

नाशिक जिल्हा

५१. कै. पंडुबाबा बेजकर सार्वजनिक वाचनालय, कळवण
५२. सार्वजनिक वाचनालय, चांदवड
५३. सुभाष सार्वजनिक वाचनालय, सुभाष पेठ, नाशिक, ता. नाशिक
५४. श्री. माणकेश्वर वाचनालय, निफाड
५५. प. बा. काकाणी नगर वाचनालय, मालेगाव
५६. महात्मा गांधी वाचनालय, न. पा. सटाणा, ता. सटाणा
५७. सार्वजनिक वाचनालय, सिन्नर

पुणे विभाग

पुणे जिल्हा

५८. जयहिंद वाचनालय, धामणी, ता. आंबेगाव
५९. इंदापूर तालुका शिक्षण प्रसारक मंडळाचे, इंदापूर तालुका वाचनालय
६०. सार्वजनिक वाचनालय, राजगुरूनगर, ता. खेड
६१. नगर वाचनालय, जुन्नर
६२. सिद्धार्थ मोफत वाचनालय आणि ग्रंथालय, पुणे शहर, पुणे
६३. कविवर्य मोरोपंत वाचनालय, नगरपालिका, बारामती
६४. श्रीमंत सौ. गंगुताई साहेब पंतसचिव वाचनालय, भोर
६५. सेवाधाम ट्रस्ट ग्रंथालय व वाचनालय, तळेगाव दाभाडे, ता. मावळ
६६. कै. चंद्रकांत दांगट उर्फ चंद्र पाटील सार्वजनिक वाचनालय, वडगाव, बुद्रुक

सातारा जिल्हा

६७. नगरपालिका नगरवाचनालय, कराड, यशवंतराव स्मृतिसदन
६८. श्री. नागोजीराव पाटणकर स्मारक वाचनालय, पाटण
६९. लोकमान्य टिळक ग्रंथसंग्रहालय, वाई, ५९१ गणपती आळी, वाई
७०. श्री. शिवछत्रपती वाचनालय, सातारा, अजिंक्यतारा सहकारी गृहनिर्माण कॅम्प, पवई नाका

सांगली जिल्हा

७१. स्वामी विवेकानंद मोफत वाचनालय, पलूस, गोंदिलवाडी
७२. मिरज विद्यार्थी संघ वाचनालय खरे मंदिर, मिरज
७३. तरुण मित्र मंडळ (तालुका) वाचनालय, शिराळा

कोल्हापूर जिल्हा

७४. श्रीमंत गंगाबाई वाचन मंदिर, आजरा
७५. पूज्य सानेगुरुजी सार्वजनिक मोफत वाचनालय गडहिंगलज, नगरपरिषद
७६. कविवर्य मोरोपंत ग्रंथालय, नगरपालिका, पन्हाळा
७७. श्री. शाहू वाचनालय, गारगोटी
७८. सार्वजनिक वाचनालय, मलकापूर, ता. शाहूवाडी
७९. राजर्षी शाहूनगर वाचन मंदिर, शिरोळ
८०. आपटे वाचन मंदिर, इचलकरंजी, राजवाडा चौक

सोलापूर जिल्हा

८१. श्रीमंत शहाजीराजे भोसले वाचनालय, अक्कलकोट
८२. श्री. ज्ञानेश्वर वाचन मंदिर मुक्तद्वार वाचनालय, ता. करमाळा, नगरपालिका
८३. नगरवाचन मंदिर, पंढरपूर तालुका, उद्धव घाट
८४. श्री. वर्धमान जैन सार्वजनिक तालुका वाचनालय, बाशी, तालुका बाशी
८५. नगरवाचनालय मंगळवेढा, ता. मंगळवेढा
८६. शिवलाल रामचंद्र वाचनालय, माढा, ता. माढा
८७. व्यापारी मोफत वाचनालय, मोहळ, ता. मोहळ
८८. नगरवाचन मंदिर, सांगोला, ता. सांगोला

मुंबई विभाग

ठाणे जिल्हा

८९. ग्रंथाभिसरण मंडळ, अंबरनाथ, ता. अंबरनाथ
९०. सार्वजनिक वाचनालय, कल्याण
९१. ठाणे नगर वाचन मंदिर, टेंभीनाका, ठाणे शहर
९२. वाचन मंदिर, भिवंडी, जि. ठाणे

रत्नागिरी जिल्हा

९३. खेड नगर वाचनालय, खेड, ता. खेड
९४. लोकमान्य टिळक स्मारक वाचन मंदिर, चिपळुण
९५. नगर वाचनालय, राजापूर
९६. श्री. सद्गुरू लोकमान्य टिळक वाचनालय, देवरूख, ता. संगमेश्वर

रायगड जिल्हा

९७. लक्ष्मीकांत सार्वजनिक वाचनालय, कर्जत
९८. राष्ट्रसेवा तालुका वाचनालय, खालापूर
९९. के. गो. लिमये सार्वजनिक वाचनालय आणि ग्रंथालय, महाड
१००. महात्मा गांधी ग्रंथालय आणि वाचनालय, पेण
१०१. मूलचंद रामनारायण करवा सार्वजनिक वाचनालय आणि ग्रंथालय, महाड
१०२. वि. रा. मेता सार्वजनिक वाचनालय, गोरेगाव, ता. माणगाव
१०३. सार्वजनिक वाचनालय, जंजिरा, मुरुड, ता. मुरुड
१०४. भाटे सार्वजनिक वाचनालय, रोहा
१०५. सार्वजनिक वाचनालय, श्रीवर्धन

सिंधुदुर्ग जिल्हा

१०६. नगर वाचनालय, कणकवली
१०७. उमाबाई बर्वे लायब्ररी व ग्रंथसंग्रहालय, देवगड
१०८. नगर वाचन मंदिर, मालवण
१०९. नगर वाचनालय, वेंगुर्ला
११०. श्रीराम वाचन मंदिर व क्रीडाभवन, सावंतवाडी

इ. शतकोत्तर जिल्हा अ वर्ग व तालुका अ वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालयांची सूची :

| अ. क्र. | ग्रंथालयाचे नाव व पत्ता | दर्जा / वर्ग | स्थापना / वर्ष |
|---------|---|--------------|----------------|
| १. | रत्नागिरी जिल्हा नगर वाचनालय, रत्नागिरी | जिल्हा-अ | १८२८ |
| २. | अहमदनगर जिल्हा वाचनालय, अहमदनगर | जिल्हा-अ | १८३८ |
| ३. | सार्वजनिक वाचनालय, टिळकपथ, नाशिक | जिल्हा-अ | १८४० |
| ४. | करवीरनगर वाचनमंदिर, कोल्हापूर | जिल्हा-अ | १८५० |
| ५. | नगर वाचनालय, सातारा | जिल्हा-अ | १८५० |
| ६. | ठाणे नगर वाचन मंदिर, ठाणे | तालुका-अ | १८५० |
| ७. | श्रीराम वाचन मंदिर, सावंतवाडी | तालुका-अ | १८५२ |
| ८. | श्री. हिराचंद नेमचंद वाचनालय, सोलापूर | जिल्हा-अ | १८५३ |
| ९. | नगरपालिका नगर वाचनालय, कराड | तालुका-अ | १८५७ |
| १०. | धोंडो शामराव गरूड जिल्हा वाचनालय, गरूड | जिल्हा-अ | १८५४ |
| ११. | बाबुजी देशमुख वाचनालय, अकोले | जिल्हा-अ | १८६० |
| १२. | रा. ब. अनंत शिवाजी देसाई वाचनालय व ग्रंथसंग्रहालय, कुडाळ, जि. सिधुदुर्ग | जिल्हा-अ | १८६० |
| १३. | वाचनमंदिर भिवंडी, जि. ठाणे | तालुका-अ | १८६३ |

| | | | |
|-----|---|----------|------|
| १४. | प. भा. काकाणी नगर वाचनालय, मालेगाव | तालुका-अ | १८६४ |
| १५. | लोकमान्य टिळक स्मारक मंदिर, चिपळूण | तालुका-अ | १८६४ |
| १६. | लोकमान्य वाचनालय, आर्वी, जि. वर्धा | तालुका-अ | १८६५ |
| १७. | अमरावती नगर वाचनालय, अमरावती | जिल्हा-अ | १८६७ |
| १८. | नगर वाचनालय, राजापूर, जि. रत्नागिरी | तालुका-अ | १८६७ |
| १९. | राजाराम सीताराम दीक्षित वाचनालय, सीताबर्डी, नागपूर | जिल्हा-अ | १८६९ |
| २०. | सांगली नगर वाचनालय, जि. सांगली | जिल्हा-अ | १८६९ |
| २१. | सत्यनारायण बजाज सार्वजनिक ग्रंथालय, वर्धा | जिल्हा-अ | १८७० |
| २२. | सार्वजनिक वाचनालय, तापीरोड, भुसावळ, जि. जळगाव | तालुका-अ | १८७० |
| २३. | आपटे वाचन मंदिर, इचलकरंजी, ता. हतकणंगले, जि. कोल्हापूर | तालुका-अ | १८७० |
| २४. | नगर वाचनालय, वेंगुर्ले, जि. सिंधुदुर्ग | तालुका-अ | १८७१ |
| २५. | पूज्य सानेगुरुजी ग्रंथालय व मोफत वाचनालय, अंमळनेर, जि. जळगाव | तालुका-अ | १८७२ |
| २६. | पूज्य सानेगुरुजी सार्वजनिक मोफत वाचनालय, न. पा. गडहिंगलज, जि. कोल्हापूर | तालुका-अ | १८७४ |
| २७. | नगर वाचन मंदिर, उद्धवघाट, पंढरपूर, जि. सोलापूर | तालुका-अ | १८७४ |

| | | | |
|-----|--|----------|------|
| २८. | श्री. शाहू वाचनालय, गारगोटी, ता. भूदरगड, जि. कोल्हापूर | तालुका-अ | १८७६ |
| २९. | श्रीमंत सयाजीराजे भोसले वाचनालय, अक्कलकोट, जि. सोलापूर | तालुका-अ | १८७६ |
| ३०. | वल्लभदास वालजी जिल्हा वाचनालय, जळगाव | जिल्हा-अ | १८७७ |
| ३१. | राजश्री शाहू नगर वाचन मंदिर, शिरोळ, जि. कोल्हापूर | तालुका-अ | १८७७ |
| ३२. | सार्वजनिक वाचनालय, कल्याण, जि. ठाणे | तालुका-अ | १८७८ |
| ३३. | लोकमान्य सार्वजनिक वाचनालय, नंदूरबार | जिल्हा-अ | १८८३ |
| ३४. | महात्मा सार्वजनिक वाचनालय, शेवगाव, जि. अहमदनगर | तालुका-अ | १८८५ |
| ३५. | नगर वाचन मंदिर, चोपडा, जि. जळगाव | तालुका-अ | १८८५ |
| ३६. | देशभक्त शंकरराव सरनाईक सार्वजनिक वाचनालय, पुसद, जि. यवतमाळ | तालुका-अ | १८८६ |
| ३७. | नगर वाचनालय, यवतमाळ | जिल्हा-अ | १८८७ |
| ३८. | दस्तुर रतनजी ग्रंथालय, खामगाव, जि. बुलढाणा | तालुका-अ | १८८९ |
| ३९. | सार्वजनिक वाचनालय, भंडारा | जिल्हा-अ | १८९१ |
| ४०. | मराठी ग्रंथसंग्रहालय, ठाणे | जिल्हा-अ | १८९३ |
| ४१. | सार्वजनिक वाचनालय, अचलपूर, जि. अमरावती | तालुका-अ | १८९५ |

| | | | |
|-----|--|----------|------|
| ४२. | महात्मा गांधी सार्वजनिक वाचनालय, हिंगणघाट, जि. वर्धा | तालुका-अ | १८९५ |
| ४३. | मुंबई मराठी ग्रंथसंग्रहालय, दादर | जिल्हा-अ | १८९८ |
| ४४. | राजे वाकाटक सार्वजनिक वाचनालय, वाशिम | जिल्हा-अ | १८९९ |
| ४५. | गणेश वाचनालय, परभणी | जिल्हा-अ | १९०१ |

ई.नागरिकांची सनद ग्रंथालय संचालनालय, महाराष्ट्र राज्य, मुंबई

प्रास्ताविक:-

या संचालनालयातर्फे महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा १९६७ व त्या अंतर्गत नियमांची अंमलबजावणी करून त्यानुसार राज्यातील ग्रंथालयांचे नियोजन, स्थापना, परिरक्षण, व्यवस्थापन व विकास साधण्याची जबाबदारी पार पाडली जाते. राज्यातील सार्वजनिक ग्रंथालयांना शासनमान्यता देणे, ग्रंथालय चळवळीच्या प्रोत्साहनार्थ योजना तयार करणे, राज्य मध्यवर्ती ग्रंथालयापासून विभागीय, जिल्हा, तालुका व ग्राम पातळीपर्यंत ग्रंथालयाचे व ग्रंथालय सेवांचे जाळे निर्माण करणे, राज्यात प्रसिद्ध झालेल्या मराठी ग्रंथांची वर्गीकृत वार्षिक सूची तयार करणे, दुर्मिळ ग्रंथ व हस्तलिखितांचा संग्रह जतन करणे, शासकीय व सार्वजनिक ग्रंथालयांच्या विकासास उत्तेजन देणे, राज्य ग्रंथालय निधीतून सार्वजनिक ग्रंथालयांना अनुदान मंजूर करणे, राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान योजनेद्वारे सार्वजनिक ग्रंथालयांना अर्थसाहाय्य पुरवणे इत्यादी कामे महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालये अधिनियम, १९६७ च्या तरतुदीस अधीन राहून केली जातात.

या क्षेत्रात गुणवत्तेला प्रोत्साहन व वाव मिळावा यासाठी राज्यातील उत्कृष्ट सार्वजनिक ग्रंथालयांना दरवर्षी डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर उत्कृष्ट सार्वजनिक ग्रंथालय पुरस्कार प्रदान करणे तसेच ग्रंथालय चळवळीत कार्यरत असलेल्या उत्कृष्ट कार्यकर्ता व सेवक यांना भारतीय ग्रंथालय शास्त्राचे जनक डॉ.एस.आर.रंगनाथन् यांच्या नावाने 'ग्रंथमित्र' पुरस्कार देण्याची योजना राबविण्यात येत आहे.

भाग एक सार्वजनिक ग्रंथालये

१.१ "ग्रंथ हेच आपले गुरू आहेत" या लोकमान्य बाळ गंगाधर टिळक यांच्या उक्तीनुसार आजच्या काळात अपेक्षित ज्ञानधिष्ठित समाज निर्माण करण्यासाठी भारतातील अधिकाधिक नागरिकांना सुसंस्कृत करण्यासाठी प्रत्येक गावात किमान एक तरी ग्रंथालय असणे ही काळाची गरज बनली आहे.

ग्रंथालयाची गरज लक्षात घेता हे ग्रंथालय कसे असावे, कुणी स्थापन करावे, त्यात कोणत्या सेवा असाव्यात, आपले सरकार या बाबतीत कोणती मदत करू शकते ही सर्व माहिती देणारा महाराष्ट्र सार्वजनिक ग्रंथालये अधिनियम (कायदा), १९६७ नागरिकांना उपयुक्त ठरतो.

१.२ या कायदानुसार ज्या गावची लोकसंख्या ५००पेक्षा जास्त आहे व ज्या गावी ग्रामपंचायत किंवा सार्वजनिक विश्वस्त व्यवस्था किंवा संस्था नोंदणी कायदान्वये नोंदणीकृत स्वतंत्र ग्रंथालय म्हणून स्थापन झालेल्या ग्रंथालय संचालनालय, मुंबई यांच्या अधिपत्याखालील विभागीय सहायक ग्रंथालय संचालकांकडे रीतसर विहित अर्ज मुदतीत सादर करून मान्यता घेता येऊ शकते.

अशा प्रकारचे ग्रंथालय सुरू करताना ग्रंथालयाच्या विश्वस्त मंडळाने महाराष्ट्र ग्रंथालय अधिनियमातील व त्या अनुषंगाने तयार झालेल्या सार्वजनिक ग्रंथालये नियम, १९७० मधील तरतुदीनुसार वा वेळोवेळी त्या संदर्भातील शासननिर्णयानुसार ग्रंथालय चालवण्याचा ठराव संमत करून ग्रंथालयासाठी अंदाजपत्रक ठरवून आवश्यक ती वृत्तपत्रे/नियतकालिके/ग्रंथ/जागा/देणगी व वर्गणीच्या रूपाने होऊ शकणारी आर्थिक तरतूद याबाबत गावातील प्रतिष्ठित नागरिक उदा.शिक्षक, सरपंच, डॉक्टर, वकील, शेतकरी व इतर वाचकप्रेमी मंडळींच्या सल्ल्याने असे ग्रंथालय सुरू करून रीतसर शासनमान्यता व अनुदान घ्यावे.

ग्रंथालय सुरू करण्याचा ठराव सर्वानुमते संमत झाल्यावर आपल्या विभागाच्या सहायक ग्रंथालय संचालकांकडे संपर्क साधण्यात येऊन, आपल्या ग्रंथालयास शासनमान्यता मिळण्यासाठी आवश्यक नमुना अर्ज मागवून तो दोन प्रतीत किमान ३०० ग्रंथसंख्या (किंमत रू.२५०००/-)अशा ग्रंथांची यादी, वृत्तपत्रे-४, नियतकालिके-६ यादीसह, वर्गणीदार सभासद-२६, ग्रामपंचायतीच्या लोकसंख्येचा दाखला, ठरावाची प्रत, जागेबद्दलची माहिती, आर्थिक तरतुदीसंबंधी माहिती अशी सर्व कागदपत्रे दोन प्रतीत आपल्या विभागाशी संबंधित सहायक ग्रंथालय संचालकांकडे शासनमान्यता व अनुदानासाठी सादर करावीत. राज्यातील सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या व्यवस्थापनासंबंधी कामे करण्यासाठी महसुली विभागानुसार परिशिष्ट क्र १.मध्ये नमूद केल्याप्रमाणे सहायक ग्रंथालय संचालकांची कार्यालये स्थापन करण्यात आली आहेत.

विभागीय सहायक ग्रंथालय संचालकांकडे अर्ज सादर झाल्यानंतर देण्यात आलेल्या वेळापत्रकानुसार सदर ग्रंथालयाची समक्ष तपासणी करून, निधीच्या अधीन राहून शासनमान्यता व अनुदानासंबंधीचा निर्णय घेतला जातो. शासनमान्यता मिळाल्यास, पहिल्या वर्षी संपूर्ण तदर्थ अनुदान एका हप्त्यात मंजूर केले जाते व नंतरच्या वर्षी ३० जूनपर्यंत वार्षिक अहवाल सादर केल्यावर ऑगस्ट महिन्यात अनुदानाचा पहिला हप्ता व फेब्रुवारी ते मार्च महिन्यात चार्टर्ड अकाऊन्टचा लेखा परिक्षित अहवाल व वार्षिक तपासणीनंतर दुसरा हप्ता मंजूर केला जातो.

१.३ शासनमान्यता व अनुदान पद्धतीची माहिती पुढील तक्त्यात दिली आहे. शासनमान्य ग्रंथालयांना त्यांच्या अनुज्ञेय खर्चाच्या १० टक्के शासकीय अनुदान (किंवा त्या ग्रंथालयाच्या वर्गासाठी निश्चित केलेले कमाल अनुदान) यापैकी जे कमी ते दिले जाते. उर्वरित १० टक्के खर्चाची तरतूद संस्थेस करावी लागते. या अनुदानापैकी ५० टक्के रक्कम वेतनासाठी व ५० टक्के वेतनेतर खर्चासाठी असते. याचा तपशील पुढीलप्रमाणे:-

ग्रंथालय संचालनालयातर्फे शासनमान्य सार्वजनिक ग्रंथालयांना त्यांच्या वर्गवारीनुसार देण्यात येणाऱ्या परिरक्षण अनुदानाचे (वेतन/वेतनेतर) वार्षिक दर खालीलप्रमाणे आहेत.

१.४ तदर्थ अनुदान:- मान्यतेच्या प्रथम वर्षासाठी वर्ग 'अ', 'ब', 'क' किंवा 'ड' मधील मान्यताप्राप्त ग्रंथालयांना किमान रूपये ५०० चे अनुदान देता येईल.

१.५ प्रोत्साहक अनुदाने:- परिरक्षण अनुदानाखेरीज ग्रंथालयांना, खाली निर्दिष्ट केलेल्या दराने व त्या प्रयोजनासाठी, प्रोत्साहक अनुदाने देता येतील.

अ. अतिरिक्त सभासदांच्या नाव नोंदणीसाठी प्रोत्साहक अनुदान-पुढील शर्तीस अधीन राहून ज्या वर्षासाठी परिरक्षण अनुदान देण्यात आले असेल त्या वर्षामध्ये, प्रत्येक अतिरिक्त सभासदाच्या नावे नोंदणीसाठी रूपये ६ अनुदान मिळेल.

(१) अतिरिक्त सभासद हा ग्रंथालयाचा सतत एक वर्षाच्या कालावधीसाठी सभासद असेल.

(२) अतिरिक्त सभासदाने त्याच्या सदस्यत्वाच्या संपूर्ण कालावधीची पूर्ण वर्गणी दिली असेल, परंतु अतिरिक्त सभासदासाठी असलेली प्रोत्साहक अनुदानाची रक्कम ही त्या वर्षात अतिरिक्त सभासदाने दिलेली वर्गणी रूपये ६ पेक्षा कमी असेल तर त्या वर्गणीइतकी असेल.

ब. पुस्तकांच्या खरेदीसाठी प्रोत्साहक अनुदान-

मान्यताप्राप्त ग्रंथालयांना खाली विनिर्दिष्ट केलेल्या दराने अतिरिक्त अनुदान देता येईल, मात्र संचालकाने जारी केलेल्या पुस्तकांच्या याद्यांतून अधिकाधिक पुस्तके ग्रंथालयाने खरेदी केली पाहिजेत.

ग्रंथालयाचा वर्ग ज्या दराने जादा अनुदान देय असेल तो दर

'ब' जादा खरेदी केलेल्या पुस्तकांच्या खर्चाच्या २५ टक्के, परंतु १५,००० किंवा त्या पेक्षा अधिक पुस्तके असलेले, सार्वजनिक ग्रंथालय, पुस्तके खरेदी करण्यासाठी असलेल्या प्रोत्साहक अनुदानास पात्र असणार नाही.

‘क’ जादा खरेदी केलेल्या पुस्तकांच्या खर्चाच्या ५० टक्के, परंतु ५,००० किंवा त्यापेक्षा अधिक पुस्तके असलेले सार्वजनिक ग्रंथालय, पुस्तके खरेदी करण्यासाठी असलेल्या प्रोत्साहक अनुदानास पात्र असणार नाही.

‘ड’ जादा खरेदी केलेल्या पुस्तकांच्या खर्चाच्या ७५ टक्के, परंतु १,००० किंवा त्यापेक्षा अधिक पुस्तके असलेले सार्वजनिक ग्रंथालय, पुस्तके खरेदी करण्यासाठी असलेल्या प्रोत्साहक अनुदानास पात्र असणार नाही. आणखी असे की-

(एक) निकटतर वरील वर्गात वर्गीकरण होण्यास पात्र होईतोपर्यंतच केवळ ग्रंथालयाला पुस्तकांवरील प्रोत्साहक अनुदान देण्यात येईल. (दोन) ग्रंथालयाला अनुज्ञेय असलेले नियत अनुदान व प्रोत्साहक अनुदान यांची एकूण रक्कम ही निकट वरच्या वर्गाच्या ग्रंथालयाला अनुज्ञेय असलेल्या अनुदानापेक्षा अधिक असणार नाही.

क. विशेष प्रयोजनांसाठी अनुदान:-

राज्य ग्रंथालय परिषदेने शिफारस केल्यानंतर, एखाद्या मान्यताप्राप्त ग्रंथालयास १०,००० रूपयांहून अधिक नसेल इतक्या रकमेचे, विशेष अनुदान (परिरक्षण अनुदान, प्रोत्साहक अनुदान, इमारत व साधनसामग्री अनुदान इत्यादीशिवाय असलेले अनुदान) विशेष प्रयोजनांसाठी देता येईल, म्हणजेच-

(एक) संचालकाच्या मते जो महान असेल अशा एखाद्या लेखकाच्या शताब्दी महोत्सवाच्या विशेष प्रसंगी, पुस्तके खरेदी करण्यासाठी.

(दोन) मान्यताप्राप्त सार्वजनिक ग्रंथालयाने अनेक वर्षे केलेल्या सेवांच्या स्मरणार्थ रजत, सुवर्ण किंवा शताब्दी इत्यादी सारखे महोत्सव समारंभ आयोजित करण्यासाठी.

(तीन) मान्यताप्राप्त ग्रंथालयामध्ये संचालकाच्या मते महान असलेल्या किंवा असामान्य गुणवत्ता असलेल्या अशा ग्रंथकाराच्या किंवा व्यक्तींच्या स्मृतिप्रित्यर्थ एखादा विशेष विभाग उघडण्यासाठी.

१.६ इमारत अनुदान

निधी उपलब्ध असतील तर मान्यता प्राप्त ग्रंथालय, ग्रंथालयासाठी इमारत बांधण्यासाठी, तिच्या पुनर्बांधणीसाठी, त्यात वाढ करण्यासाठी किंवा ती विकत घेण्यासाठी अनुदान देता येईल.

१.७ इमारत अनुदानाचा दर

नियम ३५ च्या उपबंधास अधीन राहून, खाली विनिर्दिष्ट केलेल्या दराने इमारत अनुदान मंजूर करता येईल. परंतु एक लाखापेक्षा अधिक लोकसंख्या असलेल्या ठिकाणी ग्रंथालय असेल तर देय अनुदानाची कमाल रक्कम संचालकांकडून निश्चित करण्यात येईल.

१.८ साधनसामग्री अनुदान-

निधी उपलब्ध असतील तर मान्यता प्राप्त ग्रंथालयास, नवीन फर्निचर खरेदी करणे, किंवा विद्यमान फर्निचरऐवजी दुसरे घेणे, पुस्तकांचे पुनर्स्थापन करणे, वेगवेगळ्या वर्गातील ग्रंथालयांकरिता, संचालकांकडून वेळोवेळी विनिर्दिष्ट करण्यात येईल अशी साधनसामग्री खरेदी करणे किंवा दुर्मिळ पुस्तके व नियतकालिके यांचा संग्रह करणे व त्याचे जतन करणे यासाठी साधनसामग्री अनुदान देता येईल.

१.९ साधनसामग्री अनुदानाचा दर-

ग्रंथालयाची निगा राखली जावी व त्याचा विकास व्हावा यासाठी तो प्रकल्प खरोखरीच आवश्यक आहे आणि अंदाजित खर्च अत्याधिक नाही अशी संचालकांची खात्री पटल्यावर, त्या प्रकल्पाच्या अंदाजित खर्चापैकी ५० टक्क्यांपेक्षा अधिक नसेल इतका खर्च, नियम ३५ च्या उपबंधाच्या अधीन मंजूर करता येईल. अनेक अभ्यासकांना सार्वजनिक ग्रंथालयाच्या विविध व्याख्या मांडलेल्या आहेत. त्यांपैकी श्री.विलीयम एबर्ट यांनी केलेली व्याख्या-

“जे ग्रंथालय जनतेद्वारे स्थापित, जनतेला समर्पित, जनतेच्या मनोरंजना-करिता निश्चित नियमांद्वारे स्थापित व जनतेच्या खर्चाने संचालित असेल त्या ग्रंथालयांना सार्वजनिक ग्रंथालय म्हणतात.”

उ. जिल्हा व तालुका 'अ' वर्ग सार्वजनिक ग्रंथालय स्थानदर्शक नकाशे

नकाशा क्र.१

जिल्हा 'अ' वर्ग सार्वजनिकग्रंथालय स्थान दर्शक नकाशा



नकाशा क्र. २

तालुका अ वर्ग सार्वजनिकग्रंथालय स्थान दर्शक नकाशा



संदर्भसूची

संदर्भसूची :

ग्रंथः

१. आगलावे, प्रदीप (२०००) संशोधन पद्धतीशास्त्र व तंत्रे. नागपूर : विद्या प्रकाशन.
२. आर्वीकर, भा. बा. व सातारकर, सु. प्र. (२००७) सार्वजनिक ग्रंथालय : सद्यस्थिती आणि बदलते स्वरूप. औरंगाबाद : शांभवी प्रिंटर्स अँड पब्लिशर्स.
३. करमरकर, प्रकाश गणेश (१९९६) आदर्श ग्रंथालय संघटन. मुंबई : मंगेश प्रकाशन.
४. कन्हडे, स. दा. (१९९७) संशोधन सिद्धांत आणि पद्धती. मुंबई : लोकवाड्मयगृह.
५. कुलश्रेष्ठ, अजय (१९८८) सार्वजनिक पुस्तकालय संघटन. जयपूर : रचना प्रकाशन.
६. कुंभार, राजेंद्र (२००८-०९) राष्ट्रीय ज्ञान आयोग आणि सार्वजनिक ग्रंथालय. ज्ञानगंगोत्री, सप्टें. - फेब्रु.
७. कोण्णूर, एम. बी. आणि इतर (२००८) ग्रंथालय व माहितीशास्त्रकोश. पुणे : डायमंड पब्लिकेशन्स.
८. कांबळे, एन. बी (२००८-०९) महाराष्ट्र राज्य सार्वजनिक ग्रंथालय कायद्यातील नियमांत झालेले बदल. ज्ञानगंगोत्री, सप्टें.- फेब्रु.
९. गुरव, अनंत (१९९८) विश्व ग्रंथालयाचे. डोंबिवली : आरती प्रकाशन.
१०. चिकटे, राजेंद्र (२०१२) संशोधन अहवाल लेखनाची तंत्रे. ज्ञानगंगोत्री, जून-नोव्हें.
११. चितळे, चि. भा. (१९९०) ग्रंथालय प्रशासन तत्त्व आणि व्यवहार. मुंबई : मंगेश प्रकाशन.
१२. जगताप, तारा. पा. आणि पौडवाल, सुषमा (२००९) माहिती सेवा आणि तंत्रे. नाशिक. यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ.
१३. जैन, प्रकाश व इतर (२००९) सुलभ ग्रंथालयशास्त्र. नागपूर : विश्व पब्लिशर्स अँड डिस्ट्रीब्युटर्स.
१४. झोडगे, दि. भा. (२००९) राजा राममोहन रॉय ग्रंथालय प्रतिष्ठान कोलकत्ता आणि ग्रंथालय संचालनालय. महाराष्ट्र राज्य अंतर्गत अर्थसहाय्याच्या विविध योजनांची माहिती पुस्तिका. कोल्हापूर : शासकिय जिल्हा ग्रंथालय.
१५. थिटे, पुरुषोत्तम (२०००) समाजकार्य संशोधन आणि प्रबंध लेखन. पुणे : विद्या प्रकाशन.
१६. दाइंगडे, श्याम जनार्दन (२०१६) भारतातील सार्वजनिक ग्रंथालय कायदे. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.

१७. नरगुंदे, रेवती (२०१३) ग्रंथालये आणि सामाजिक विकास. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.
१८. नाडगौड, गुरूनाथ द. (१९८६) सामाजिक संशोधन पद्धती. कोल्हापूर : फडके प्रकाशन.
१९. नातु, श्रीराम (१९८४) सर्वांसाठी ग्रंथालये. पुणे: मोदीखाना.
२०. नीकोसे, सत्यप्रकाश (२००७) ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र संशोधन पद्धती. नागपूर : प्रज्ञा प्रकाशन.
२१. पाटील, रवींद्र (२०१४) महाराष्ट्रातील शतायू अक्षरदालने. सांगली : नाग-नालंदा प्रकाशन.
२२. पाटील, सी.श्री. (२००५) विश्व महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयांचे. सिंधुदुर्ग : स्नेहल एजन्सीज.
२३. पारखी, गंगाधर र. (२००८) ग्रंथालयशास्त्र परिचय. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.
२४. पारखी, रघुनाथ शतानंद (१९३३) ग्रंथालय शास्त्राचा ओनामा. पुणे : समर्थ भारत.
२५. पौडवाल, सुषमा व सावे, वसंत (२०१४) सार्वजनिक ग्रंथालये : प्रगती आणि वस्तुस्थिती. पुणे : माधवी प्रकाशन.
२६. फडके, द.ना. (२००७) ग्रंथालय संगणकीकरण आणि आधुनिकीकरण. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.
२७. बर्वे, प्रकाश आणि महाले, संजीवनी (२०१२) संशोधनातील विविध टप्प्यांत ग्रंथालयाचे उपयोजन. ज्ञानगंगोत्री, डिसें - मे.
२८. बारसे, नारायण (२०११) ग्रंथालय संगणकीकरण उपक्रम. ज्ञानगंगोत्री, मार्च - मे.
२९. बालेकर, राजशेखर शं. (२०१२) सार्वजनिक ग्रंथालय : एक अभ्यास. नांदेड : संगत प्रकाशन.
३०. बावनकर, हर्षदा (२०१०) ग्रंथालय : संघटन. पुणे : श्लोक पब्लिकेशन.
३१. बुवा, जी.ए. (२००७) व्यवस्थापनाचे नवे प्रवाह. बांद्रा : श्री. साई प्रकाशन.
३२. बुवा, जी.ए. आणि वायंगणकर, सायली (२००७-०८) स्टार्टल मॅन्युअल्य. ज्ञानगंगोत्री, डिसें.-फेब्रु.
३३. भांडारकर, पु.ल. (१९८१) सामाजिक संशोधन पद्धती. नागपूर : महाराष्ट्र विद्यापीठ ग्रंथ निर्मिती मंडळ.
३४. भिंताडे, वि.रा. (२००६) शैक्षणिक संशोधन पद्धती. पुणे : नित्यनूतन प्रकाशन.
३५. मराठे, ना.बा. (१९७९) भारतीय ग्रंथालयांचा इतिहास. मुंबई : अभिनव प्रकाशन.
३६. महाजन, शां.गं. (२०११) महाराष्ट्राच्या ग्रंथालय चळवळीचे शिल्पकार. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.

३७. महाजन, शां.गं. (२०११) महाराष्ट्रातील सार्वजनिक ग्रंथालयाचे व्यवस्थापन. पुणे : पुणे विद्यार्थीगृह प्रकाशन.
३८. मुळे, रा.शं. आणि उमाठे, वि.तु. (१९८७) शैक्षणिक संशोधनाची मुलतत्त्वे. नागपूर : महाराष्ट्र विद्यापीठ ग्रंथ निर्मिती मंडळ प्रकाशक.
३९. मोरे, कुंडलिक बापू (२०१०) सार्वजनिक ग्रंथालयाचे प्रबोधन. अकलुज : शिवसृष्टी प्रकाशन.
४०. रिसवाडकर, म.रा. (२०००) संशोधन प्रक्रिया आणि पद्धती. नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ.
४१. रेहपाडे, रीना आणि पराडकर, अश्विनी (२००९) ए.पी.ए.एम.एल.ए. आणि सी.एम.एस. या लेखनशैली मार्गदर्शिकांचा तुलनात्मक अभ्यास. ज्ञानगंगोत्री, सप्टें. - फेब्रु.
४२. लेले, वंसत वि (२०१२) ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्रातील पैलू. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन.
४३. सोनावणे, कल्पना आणि पाटील, प्रदीप (२०१३) संशोधनाचे नीतीशास्त्र (Research Ethies) ज्ञानगंगोत्री, डिसेंबर - मे.
४४. हचांटे, राजकुमार (२००५) सार्वजनिक ग्रंथालयमार्गदर्शिका. सोलापूर : नंदादिप बुक सर्व्हिसेस.

इंग्रजी सूची :

1. Bremer, Suzanne W. (1994) Long Range Planning : A how-to-do-it manual for public Libraries. New York : Neal-Schuman.
2. Gradner, Frank M. (1978) Public Library Legislation : A Comparative Study. Paris : H.C. Campbell.
3. Kothari, C.R. Research Methodology Method and Techniques'. New Delhi: New Oxford Advanced learner dictionary. Oxford : oxford University press.
4. Mahajan S.G. (1984) History of Public Library Movement in Maharashtra Pune : Shubhada Saraswat.
5. Princeton, N. J. (1958) PLANNING THE PUBLIC LIBRARY. NEW YOUR: Remington Rand.
6. Ranganathan , S.R. (1961) Reference Service. Bombay, Page.63.

7. Sadhu , A.N. and Singh (1993) Research Methodology in Social Science, Bombay : Himalaya Publication.
8. Thomas, V. K. (2005) Public Library Financing Analysis of RRRIF Scheme of Assistance. Kolkata: RRRIF Publisher.
9. Widdowson, Henry (1968) New oxford Advanced learners dictionary. Oxford: University Press.

दैनिक :

१. करमरकर, विनायक (१३ नोव्हें. २०११) पुणे मराठी ग्रंथालय ग्रंथाइतकेच कार्यकर्त्यांचेही वैभव दै. लोकसत्ता. सोलापूर आवृत्ती.
२. कुलकर्णी, मिलिंद (४ एप्रिल २०११) ग्रंथालयातल्या कपाटात गुदमरलेल्या पुस्तकांना मिळेल चिमुटभर प्रकाश, थोडा वारा आणि वाचकांचा स्पर्श. दै. लोकमत. सोलापूर आवृत्ती.
३. गोगटे, मनोज (२६ मार्च २०१६) सार्वजनिक ग्रंथालय कायदा कालबाह्य. दै. लोकसत्ता.
४. ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांची फाईल लटकली मंत्रालयात (६ डिसें. २०१०) दै. सकाळ, सोलापूर आवृत्ती.
५. ग्रंथालयांच्या प्रश्नाचे काय? (२८ नोव्हें. २०१७) दै. लोकमत, पुणे आवृत्ती.
६. जागेचं काय करायचं (२३ एप्रिल २०११) दै. लोकमत, सोलापूर आवृत्ती.
७. जोशी, शेखर (२०१२) परवड ग्रंथ सेवकांची. लोकप्रभा, मुंबई : द इंडियन एक्सप्रेस लिमिटेड.
८. पानसरे, प्रसाद (२५ फेब्रु. २०१३) लायब्ररीही आता होताहेत 'हायटेक'. दै. महाराष्ट्र टाईम्स, पुणे आवृत्ती.
९. येतसेकर, गोविंद (११ मार्च २०११) ग्रंथालय अनुदानात वाढीची शक्यता. दै. सकाळ, मुंबई आवृत्ती.
१०. राज्यातील ग्रंथालय अनुदान ५० टक्के वाढले. (२८ जाने. २०१२) दै. लोकमत, सोलापूर आवृत्ती.
११. वाचन संस्कृतीच्या संवर्धनासाठी सार्वजनिक ग्रंथालयाची आवश्यकता (२८ डिसेंबर २०१०) दै. लोकसत्ता, पुणे आवृत्ती.